हम्द 786/92 नाअत

मनाकिबे ख्वाजा महमूद दरियाइ

रहमतुल्लाह अलयहे

आस्तान-ए ख्वाजा महमूद महबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा

रहमतुल्लाह अलयहे - बिरपुर शरीफ

प्रकाशक

सुन्नी मुस्लिम कमिटी

इमाम अहमद रझा मंझील, वेरी दरवाजा, गोंडल-360311 (गुजरात)

फोन : 02825-224786

अस्सलामुअलयकुम

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेवकरके ना रखे बल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला कीजिये और आगे दुसरो को भी शैर करे, किताब बहुत शानदार है |

इस किताब को मेने (मोहम्मद हुसैन) ने इस किताब के संकलन कर्ता सैयद गुलाम अब्बास पीरजादा अल मारुफ पीर सैयद अलहाज मोहम्मद मदनी बावा दरीयाई, कुत्बी, अशरफी के हुकम से पीडीएफ(PDF) मे बनाइ है

दुआ की गुजारिश

मोहम्मद हुसैन कमरी,दरीयाई (सुरत,गुजरात)

मो.नं. :- 8460009265

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना किम्ती वक़्त दे और इस किताब का मुताला करे और मुज गुनाहगार को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे..

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम

अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन ○ अर्रहमा निर्रहीम ○ मालिकि यौमिद्दीन ○ इय्या-क नअ-बुदु वइय्या-क नस्तईन ○ इह-दिनस सिरातल मुस्तकीम ○ सिरातल लझी-न अन्अम-त अलैहिम ○ गैरिल मग्दूबि अलैहिम व-लद दाल्लीन ○ आमीन.

तरजुमा : नामसे अल्लाह के बडा महेरबान बख्शनेवाला।
सारी हम्द अल्लाह ही के लिये परवरदिगार सारे जहानोंका ○ बळा महेरबान बख्शनेवाला ○ मालिकि रोझे जझाका ○ तुज ही को हम पूजें और तेरी ही मदद चाहें ○ चला हमको रास्ता सीधा ○ रास्ता उनका के इन्आम फरमाया तूने जिन पर ○ न उनका के गजब फरमाया गया जिन पर और न गुमराहो का ○ (मआरेफुल कुर्आन)

ये कुरआने पाक तमाम दुनिया के लिये नसीहत बनकर आया है.

हजरत उस्मान बिन अफ्फान गनी रदीयल्लाहो तआला अन्हो रिवायत करते हैं कि हजरत नबी अे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने फरमाया कि सबसे बहेतर वो शख्स है जिसने कुरआन शरीफ सीखा और दूसरों को सिखाया. (बुखारी शरीफ)

दुरूदे इब्राहीम

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम

अल्लाहुम-म सल्ले अला मोहम्मदिंव व-अला आले मोहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इब्राहीम-म व-अला आले इब्राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद. अल्लाहुम-म बारिक अला मोहम्मदिंव व-अला आले मोहम्मदिन कमा बारक-त अला इब्राही-म व-अला आले इब्राही-म इन्न-क हमीदुम मजीद.

तरजुमा : नामसे अल्लाह के बळा महेरबान बख्शनेवाला ।

अय अल्लाह । हझरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी आल पर सल्वात भेज । जीस तरह तूने हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर और हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलामकी आल पर सल्वात भेजी । बेशक तू तारीफ किया गया बुजुर्ग है । अय अल्लाह हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी आल को बरकत दे । जिस तरह तुने हजरत इब्राहीम अलयहिस्सलाम और उनकी आल को बरकत दी । बेशक तू तारीफ किया गया बुजुर्ग है ।

ताजदारे मदीना राहते कल्बो सीना सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इर्शाद फरमाया कि जो कोई शख्स किसी किताब लिखते वक्त मुझ पर दुरुद शरीफ लिखे तो जहां तक वो किताब में मेरा नाम होगा वहां तक मलाइका (फरिश्ते) वो शख्स के लिये रहमतकी दुआ करते रहेंगे.

अस्सलामो अलयकुम,

मनाकिबे ख्वाजा महमूद दरियाइ - ये किताब में हझरत आदम अलयहिस्सलाम से हुझूर रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम तक. नबी-अे करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम से लेकर खुल्फाअे राशेदीन, उम्मुल मोमीनीना, पंजतने पाक, सहाबाअे किराम रिदवानुल्लाह तआला अलयहे अजमइन तक और वहांसे लेकर ताबेइन-तबअे-ताबेइन इमामे इस्लाम-हनफी-साफेइ-मालीकी-हम्बली तक वहां से सिलसिला-अे कादरिय्याह, सोहरवर्दीय्याह, चिश्तीय्याह, नकशबंदीया, जलालीय्याह, अशरफीय्याह, शाहीय्याह, दरियाइय्याह तक और वहां से लेकर अकाबेरीने उम्मत मेरे मशाइखीन मेरे वालीदैन, उस्तान, दीनके रहबरो को....

ये किताब मन्सुब करता हुं.

इन जानोकी समाआतो-नशीहतो-सोहबतो-बा-बरकतों और दुआओं के असर से ये किताब आपकी खिदमतमें पेश कर रहा हुं.

अल्लाह तआला अेहले बैत, आले पाक, गौषो-ख्वाजा महमूदो मख्दूमो का साया मुझ पें हर-दम रख्खें. आमीन

संकलन कर्ता
महबूबुल मशाइख, नुरुल औलिया, गुलाम अब्बास अल मारुफ
पीर सैयद अल्हाज मोहम्मद मदनीबाबा अेफ. दरियाइ
कुत्बी अशरफी चिश्ती सोहरवर्दी कादरी अल हाश्मी
खलीफ-अे शैखुल इस्लाम व खलीफ-अे शैखुल मशाइख

हम्द 786/92 नाअत

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

शहीदे आझम सैयदेना हझरत इमाम हुसैन रदियल्लाहो त्आला अन्हो
और करबला के तमाम जांनिसार शहीदो की मुबारक यादमें
ये किताबें साये करनेमें आती है ।

मनाकिबे ख्वाजा महमूद दरियाइ

रहमतुल्लाह अलयहे

प्रकाशक

सुन्नी मुस्लिम कमिटी

इमाम अहमद रझा मंझील, वेरी दरवाजा, गोंडल-360311 (गुजरात)

फोन : 02825-224786

झेरे सरपरस्त

हझरत पीरे तरीकत शैखुल मशाइख उस्तादुल उलमा

अल्हाज सैयद कमरुद्दीन बावा साहब

दरियाइ अशरफी कारंटवी (फाझीले शाही)

किताब का नाम : मनाकिबे ख्वाजा महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे

संकलन : महबूबुल मशाइख, नुरुल औलिया, गुलाम अब्बास अल मारुफ
पीर सैयद अल्हाज मोहम्मद मदनीबाबा अेफ. दरियाइ
कुत्बी अशरफी चिश्ती सोहरवर्दी कादरी अल हाश्मी
खलीफ-ऐ शैखुल इस्लाम व खलीफ-ऐ शैखुल मशाइख
अता-ऐ शाहजी - 2, अम्मार टेनामेन्ट, संजर पार्क से पहले,
देनाबेंक लाइन, विशाला सर्कल, जुहापुरा सरखेज रोड,
अहमदआबाद-380055 मो.091 - 9879181156

आवृत्ति : प्रथम

प्रत : 5,000

प्रकाशन नं. : 308

प्रकाशन वर्ष : हिजरी सन 1435 इ.स.2014

मुद्रक : डीझाइन डोट प्रिन्टर्स (मदनी ग्राफीकस) नडियाद.

हदीया : नीचे दीये गये पते पर पोस्ट कार्ड लीखके मुफत मंगाये.
(मंगानेवाले को पोस्ट कार्ड अवश्य लिखना होगा)

प्रमुख : अल्हाज सुलेमानभाई जुम्माभाई इसाणी बरकाती दरियाइ

उपप्रमुख : पीरे तरीकत व खलीफ-ऐ मुफ्तीऐ गुजरात
अल्हाज सैयद मोहम्मदमियां हाजी अब्दुलमजीदमियां नागाणी

इमाम अहमद रझा मंझील, वेरी दरवाजा, गोंडल-360311 (गुजरात)
फोन : 02825-224786

मन्कबत

मदह दरशाने हझरत महबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा (रहमतुल्लाह अलयह)

अझ कलम : शायरे खानकाहे दरियाइ, हझरत अल्लामा मौलाना,
पीर, सैयद, शाह: गुलाबुद्दीन गुलाब दरियाइ सोहरवर्दी कादरी
(रहमतुल्लाह अलयह) मदफन : बीरपुर शरीफ

हामिये दीने नबी, खास्सओ सुब्हानी थे,
आरिफो अहलेसफा, वासिले रब्बानी थे ।

गौषुल हिन्द, कुत्बेझमां थे वोही महेबूबे इलाह,
आशिको-शाहिदो-मश्हूद वोह रहमानी थे ।

राहबर, राहनुमा पीर, वराहे नबवी,
रहमनुमाइमें वो चू सैयदे जीलानी थे ।

खल्कमें शोहरओ आफाक थे और खुल्कमें वोह,
मिस्ले सालारे रसूल अहले महेरबानी थे ।

इनका बीच वोह चुं बुझरो-सल्माने नोअमान,
झोहदो-ताआत में चुं शिब्लीये आवानी थे ।

फैझ बख्शीमें वोह चुं अब्रे बहारीये फैयाझ,
दिल रुबाइमें वोह चुं युसुफे किन्आनी थे ।

गुलशने फिक्रके वोह तूतिये शीरीं झबां,
हुदहुदे काशिफे असूरारे खुदा दानी थे ।

किब्लओ अहले जहां कातिले नफसो शयतां,
आलीमो-व-आमिल खुश मझहबे नोअमानी थे ।

अमूल्य सेवा !!!

इदे मिलाद के मौके पर अपने
मकानो, दुकानो, मोहल्लो, मस्जिदो, मद्रसोमें रौशनी करे

आजकी ये मेंहगाई के दोरमें जहां प्रिन्टींगके, पेपर के, पोस्ट के भाव आसमान पे है उन सबके बीचमें सुन्नि मुस्लिम कमिटी, गोंडल फ्री (मुफत) पोस्टसे पीछले ४८ सालसे दीनी किताब की शकलमें घर-घर दीन की बातो को पहुंचा रही है।

दीनकी इस शम्आ को रौशन रखने के लिये कलमरुपी युगमें दीनी किताबें जैसे सवाबे-जारियह के नेक काममें फूल नहीं तो फूल की पंखडी के रुपमें मदद करके खुशी और गमके मौके पर याद करके झकात, सदका, फीत्रा, खैरात, लिल्लाह, अकीका, कुरबानीकी खालें विगेराह तरीकेसे इमदाद आज ही भेजके, मझहबे अेहले सुन्नतकी सच्ची खिदमत करनेमें साथ दें.

फेहरिस्त

हम्दे बारी तआला मुनाजाते बारी तआला

अज : हजरत सय्यिदुना ख्वाजा महमूद महबूबुल्लाह कादिरी सुहरवर्दी रदियल्लाहु अन्हु

अलीमुन अन-त तअ्लमु वज्‌उ सद्री
शिफाउल वज्इ गै-र-क लय-स इन्दी

तरजुमा : अय अलीम । तू मेरे दिल की घबराहट को जानता है । घबराहट की शिफा तेरे सिवा मेरे नझदीक कुछ नहीं ।

बकिय्यतु वग्त-तन फी सबीलि इश्कि-क
नसीतुल आ-न हुब्बु-क कै-फ हाली ?

तरजुमा : बाकी रेह गया मैं इत्तिफाकन तेरे इश्क की राह में, भूल गया इस वक्त तेरी महब्बत को, कैसा है मेरा हाल ?

बकिय्यतु दाइमन सिर्रव व जह्‌रन
इलै-कन्ना-द इस्मु-क या हबीबी

तरजुमा : रोता हूं मैं हमेशा बातिन और झाहिर में तुज ही को पुकारा, तेरे ही नाम से, अय मेरे हबीब ।

क-मज्नूनिन कुन्तु फी यवमिन व लैला
करीमुन, सातिरुन, इग्फिर जुनूबी

तरजुमा : मजनूं की तरह हूं मैं रात में और दिन में अय करीम ! अय सत्तार ! मेरे गुनाहों की मग्फिरत फरमा !

अ-नल महमूद मश्गूलुन बि-हम्दि-क
सिवा-क लै-स फी कल्बी व ऐनी

तरजुमा : में महमूद मश्गूल हुं तेरी हम्द में, तेरे सिवा मेरे दिल और मेरी नजरमें कुछ नहीं है ।

नात शरीफ

अज : हजरत सय्यिदुना ख्वाजा महमूद महबूबुल्लाह
रदियल्लाहु अन्हु कादिरी सुहरवर्दी

1. **साजन आया गली हमारे, खिली मेरी दहिया रे**

तरजुमा : महबूब हमारी गलियों में आए (उनके आनेसे) मेरे दिल की कलियां खिल गईं।

2. **लोग सभाया देखन आया-उगा पूनम चन्दा रे**

तरजुमा : लोग जब देखने आए आप को, तो केह दिया के आप पूनम के चाँद जैसे हैं।

3. **जिन ने देखा उन्ने शीश नमाया, होकर रहियां बन्दा रे**

तरजुमा : आपको जिस किसीने भी देखा उसने सर झुका लिया और आपका गुलाम बन कर रेह गया।

4. **जग भाग "महमूद" के वोह नबी, नबी "महमूद" पाया रे**

तरजुमा : "महमूद" का नसीबा जाग उठा के जो नबी पाए वोह नबी भी "महमूद" पाए हैं।

(ब-हवाला : महमूद खानी, मफातीहुल कुलूब फारसी)

(हजरत दरियाई दूल्हा रहमतुल्लाह अलैहि ने हुझूरे पाक सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम मिलाद की आमद पर ये नात शरीफ का जिक्र गुजरी जबानमें किया है जो कदीम (प्राचीन) उर्दु ही का एक रुप है जिसे हिन्दुस्तानी भी कहा जाता है।)

प्यारा मदीना

अज : पीरे तरीकत सैयद अल्हाज मोहम्मद मदनी बाबा दरियाई, अशरफी, चिश्ती, कादरी, मु.बीरपूर शरीफ

(1) नुर से लबरेझ आपका मदीना
हबीबे खुदा का प्यारा मदीना

(2) जा रहे है सारे के सारे काफले
देखो जानिबे सफर मदीना

(3) थाक सफर का सारा उतर जायेगा
देख लो जी भर के नझर से मदीना

(4) कोइ चीझ की यहां कब कमी है
बरकतो से रहमतो से बस भरा मदीना

(5) कदम रखना संभल के ओ जानेवालो
एहतिराम के लायक है शहर मदीना

(6) नजर भर के गुंबदे खिजरा देखो
समा जाये दिल के अंदर मदीना

(7) ये रियाझुलजन्नह को देखो
जन्नत से कम है कया मदीना

(8) वो नहीं और है इनकी हाजरी
उनसे अलग था कब मदीना

(9) फना हो कर गये जो रझा ए इलाही
इन दिवानो का जीगर मदीना

(10) मदनी के "मदनी" की बस ये तमन्ना
बने इसका मदफन प्यारा मदीना

मन्कबत

दर शाने पीराने पीर रौशन झमीर गौसुस समदानी, शैख सय्यिद मुहिय्युद्दीन अब्दुल कादिर जीलानी (रदियल्लाहु तआला अन्हु)

अज : आशिके अहले बैत मुजद्दीदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रजा खां अल मुखातिब आला हजरत फाझिले बरेल्वी रहमतुल्लाह अलैह

तू है वोह गौस के हर गौस है शैदा तेरा
तू है वोह गौस के हर गौस है शैदा तेरा

जो वली कब्ल थे और बाद हुवे या होंगे
सब अदब रखते है दिलमें मेरे आका तेरा

सारे अक्ताब जहां करते हैं का'बे का तवाफ
काबा करता है तवाफे शहे वाला तेरा

तू है नौशा, बराती है येह सारा गुल्झार
लाई है फस्ले चमन गूंथ के सेह्रा तेरा

मरकझे-चिश्तो-बूखारा-ओ इराको अजमेर
कौन सी किश्त पे बरसा नहीं झाला तेरा

डालियां झूमती हैं रक्से खुशी जोश पे है
बुल्बुलें झूमती हैं गाती हैं तराना तेरा

दिले आ'दा को रजा तेज नमक की धुन है
एक जरा और छिडकता रहे खामा तेरा

पेश लफ्ज़

अझ : फख्रे कलम, हजरत मुफ्ती, पीरे तरीकत अल्लामा अल्हाज

सैयद कमरुद्दीन अे. पीरझादा बावा कारंटवी साहब दरियाइ, अशरफी, रफाकती

हजरत ख्वाज-अे-ख्वाजगान, काझीयुल कुझात, कुदवतनुल अस्फेया, झुब्दतुल अवलीया, मुजद्दीदे सिलसिल-अे सुहरवर्दीया, शाहीया हुझूर पीराने पीर दस्तगीर महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाहे अलैहे की शानमें दो-दो सतरें पेश की हंय। गर कबूल उफत मेहे इझझो-शर्फ

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम

नहमदोहु व नुसल्ली अला रसूलेहिल करीम

अम्मा बाद ! अल्लाह पाक का लाख लाख शुक्रो अहेसान हय के, उसने हमारी हिदायत के लीअे, हुझूरे पाक हादिये आझम, खलीफतुल्लाह आझम हझरत आलिमे माकाना वमायकुन हझरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैहे वआलेहि व सल्लमको पैदा फरमाया और हमारी हिदायत फरमाइ और हमें दिने इस्लामकी तब्लीग और हिदायतो-नजात के लिये सहाबाअे किराम, ताबेइन-तबअ ताबेइन, गौषो-ख्वाजा, उल्माअे रब्बानीयीन, व मुफतीयाने दीनेमती अता फरमाअे - अलहम्दोलिल्लाह।

हुझूरे पाक सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की अता और करम फरमाइ के बारेमें आला हझरत इमामे अेहले सुन्नत, आशिके रसूल मौलाना शाह अहमद रझा फाझिले बरेल्वी मुहद्दीसे इस्लाम रहमतुल्लाहे तआला अलैहे फरमाते हंय

फैज हय या शहे तस्नीम निराला तेरा
आप प्यासों के तजस्सुसमें हय दरिया तेरा
अग्नीया पलते हंय दरसे वोह हय बाळा तेरा,
अस्फेया चलते हंय सरसे वोह हय रस्ता तेरा

सुब्हानल्लाह ! अवलियाअे किराम को जो करामतो, फझीलतो, इनायते हांसिल हय वोह हुझूर साहिबे कौषर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के दरसे ही हांसिल हय। आपके बताये हुअे सीधे रास्ते पर चलनेही से और अमल करने ही से, दीने इस्लाम की तब्लीग करनेसेही हांसिल हय।

कुर्आन शरीफमें अवलीयाअे किराम की फझीलत और बुलंदीये शान, इस तरीके से बयान फरमा हय अल्लाह पाक कुर्आन शरीफ में फरमाता हय,

अला इन्न अवलिया अल्लाहे ला खौफुन अलैहिम वलाहुम यहझनून

तरजुमा : खबरदार बेशक अल्लाह के दोस्तों को कोइ खौफ डर और रंजो गम नहीं हय। अल्लाह पाके वली वोह होते हंय जो खौफे खुदा रखते हंय और शरीअते रसूले पाक सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर अमल करते हंय और उम्मते रसूल को दीन की दावत

देते हंय । हकीकत तो येह हय के अवलियाओ किराम की महेनतो और तब्लीगों की वजह से इस्लाम दूर दूर तक फैला दिया ।

इस वकतमें आपके सामने हमारे बिरादरे अझीझ और सिलसिलओ सुफीयाओ मुन्सलीक, जनाब मौलाना शुफी नकीबुल अवलिया, आशिके अस्फीया गव्वासे बहरे दरियाइ दुल्हा, मुहतरम अल्हाज पीर सैयद गुलाम अब्बास उर्फे मोहम्मद मदनीमियां इब्ने सुफी फतेहमुहम्मद साहब सुहरवर्दी, कादरी, अशरफी, दरियाइ महमूदी सल्लम रब्बोहुकी तव्लीफ करदा किताबे मुस्तताब मनाकिब ख्वाजा महमूद दरियाइ ब-झुबाने उर्दू-हिन्दी, हिन्दी लिपि में पेश कर रहे हंय । उस्की दीलो-जान से मुबारकबाद पेश करता हुं के आपने हमारे जद्देअमजद-गौषुल हिन्द हझरत शाह ख्वाजा मियां महमूद दरियाइ दुल्हा बीरपुरी सुहरवर्दी कादेरी के जिनको 14 खानवादों की इजाझतो खिलाफतो-करामतो-विलायतें हांसिल थी । जिसको पढ़कर आपका दिल अवलीयाओ किराम की मुहब्बतो अकीदतसे लबरेझ हो जाओगा । माशा अल्लाह । भाइ अझीझ मदनीमियां जो 8-10 सालसे खुब खुब जुस्तजु करके हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे के हालातो करामात की किताबों का मुताओला करते रहे और आपकी याददाश्त डायरीओं में दरजे करते रहे, उसके इलावा दादा सैयद शाह ख्वाजा दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाहे अलैहेने जहां जहां कियाम फरमाया, जहां जहां आपने चिल्ला कशी की, जहां जहां आपने दीनी दावत के लीओ तशरीफ ले गओ, वहां वहां के चिल्लों की भी जानकारी हांसिल की और वहां के फोटो भी पेश कीओ हंय ।

मंयने भी इस किताब के मझामीन को बहोत गेहराइसे पढ़ा और पढ़कर बहोत महफूझ हुवा के आपने खुब से खुब तर काम अंजाम दिया हय । मंय आपका तहसीने खिराज पेश करता हुं ।

येह ओक इस किताब की मकबूलीयत, मालुमात और दस्तावेजी तसावीर को देखकर पढ़कर पढ़नेवालोंको और आनेवाली नस्ल को खुब मालुमात हांसिल होगी । येह बात अबतक आपकी शानमें लिख्खी हुइ जितनी भी किताबें हंय, उसमें मुमताझ नझर आओगी. भाइ मदनी बाबा, जीस तरीकेसे तलाश कर करके और जुस्तजु में जो महेनत की हय वोह काबिले तहसीन हय, हझरत दरियाइ दादा को कहां कहां से फैझ हांसिल हुवा और कहां कहां आपने फैझ तकसीम किया, कहां कहां इस्लामी जंगो में शामिल हुओ और कैसी कैसी करामते सादिर फरमाइ इसका बिल्कुल खुलासेवार तहरीर फरमाकर खानदाने दरियाइ दुल्हा को और आशिकाने दरियाइ दुल्हाको मालुमात का समंदर गोया कुझे में दरिया समेटकर पेश कर दीया हय उसमें कोइ शक नहिं । गुजराती, उर्दू, इंग्लीश, फारसीमें तो आपकी शानमें बहोत बहोत किताबे नझमो-नजर में शाओब हुइ हंय, ता हम आपने हिन्दी में येह किताब मुस्तताब : मनाकिबे ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा शाओअ (छापकर) करके खुब खुब जानकारी मुहिय्या की जीसका फायदा भारत की हिन्दी जबान जाननेवाले हझरात राजस्थान, ओम.पी., महाराष्ट्र, युपी, बिहार वगैरा स्टेट के बसनेवालोंको खुब खुब मालुमात

होगी। अल्हम्दो लिल्लाह हम आपकी किताब लीखकर आपको नहीं चमका रहे हंय बल्के हमारी ज्ञातको आपसे चमक मील रही हय। हम अपने आपको चमका रहे हंय। आपकी शान तो बहोत नीराली हय। हम आपका बयान कर सकते हंय। पुरे गुजरातमें आपके उर्स शरीफ जैसा कहीं अैसा शानदार -उर्स नझर नहीं आता हय येह सबको मालुम हय।

हमारे दादा मादरी (जन्मजात) वली होने के बावजुद आप मुहद्दिस, हाफिझे कुर्आन और इस्लामी शायर थे। आपने सुना ही होगा के जो हझरात हाफेझ कुर्आन होते हंय उन्का मर्तबा कित्ना बुलंदोबाला होता हय। हुझूरे पाक रसूले मुअझझम सल्लल्लाहो त्आला अलैहै व सल्लम फरमाते हंय, **मनकाना लिल्लाहे कानल्लाहो लहु** जो अल्लाह वाला हो जाता हय तो फिर अल्लाह उस्का हो जाता हय : मौलाना रुम फरमाते हंय **गुफतओ उ गुफत अल्लाह बुवद, गरचे अझ हल्कुमे अब्दुल्लाह बुवद** इसी हदीसे कुदसीमें अल्लाह त्आला फरमाता हय **मन आद ली वलीय्यन फकद आझन्तहु बिल हस्बे जीस** (बदनसीबने) मेरे किसी वलीसे अदावत की उस्को मेरी तरफसे अेअलाने जंग हय। (मिश्कात शरीफ पेज-197)

हाफिझे कुरआन जो सुन्नी सहीहुल अकीदा हो उस्का जिस्म नहीं सळता, इमाम जलालुद्दीन सुयुती रहमतुल्लाहे त्आला अलैहे, हझरत जाबिर बिन अब्दुल से रिवायत करते हंय। काल रसूलुल्लाहे सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम : **इझा मात हामिलुल कुर्आन अवहेयल्लाहो इलल-अर्दे अन ला ताकोली, लहमहू फतकुलल अर्दा इ रब्बे कैफ आकोलो लहमहु व कलामोका फी जोफेहि**। तरजुमा : हुझूर अलैहिस्सलातो व स्सलामने फरमाया, जिस वकत हाफेझे कुर्आन इन्तेकाल करता हय, तो अल्लाह त्आला झमीनको हुकम देता हय के इस हाफेझ के गोश्त को न खाअे, झमीन दरबारे खुदावंदीमें अर्झ करती हय, अय परवरदिगार मंय किस तरह उस्का गोश्त खा शकती हुं जब के उस्के सीनेमें तेरा कलाम (कुर्आन शरीफ) मौजुद हय। चुं के हाफिझे कुर्आन कलामे इलाहीको अपने सीनेमें हिफाझत करता हय। इस लीअे खुदावंदे कुद्दूस कब्रमें उस्के जिस्मकी हिफाझत फरमाता हय। अलहम्दो लिल्लाह ! हमारे जद्देअमजद गौषुल हिन्द ख्वाजामियां महमूद रहमतुल्लाहे अलैहे हाफिझे कुर्आन और मुहद्दीसे इस्लाम थे। और आपकी येह करामत और दुआओं को भी आज कैसे भुला शकते हंय के हर दौरमें आपकी नस्लो-खानदानमें जय्यद आलिम, हाफिझे कुर्आन, मुहद्दीस और इस्लामी मुबल्लीग पैदा होते रहे जो आप इस किताब में मुतालेआ फरमाअेंगे। आपकी बेशुमार करामतों में अेक करामत जो आझादीये भारत तक खासो आमकी नझरों ने देखी हय, वोह येह हय के, संदल ११मी रबीउल आखीर की रातको आपकी शानमें मन्कबत पळहते पळहते सीळहीयें चळहते थे तब खंभाती ताला टूट कर, जंझीर खुलकर निचे गीर जाता था। मझारे अकदस से फुल की पंखळीयां उछलकर आपके कब्र शरीफसे मझार में बारिश की बरसती थीं अलहम्दोलिल्लाह।

और आपके खानदान पर आपकी येह करमनवाझी रही के आज तक सबके सब अहले सुन्नत व जमाअत में रहे, न कोइ शीआ-राफेझी बना न वहाबी देवबंदी बेअदब हुवा । येह सब आपकी दुआ और करामतों का ही नतीजा हंय अलहम्दोलिल्लाह ।

आप इस किताब को पढ़ेंगे तो इमान ताझा हो जाएगा, दिलमें वलीयोंकी मुहब्बत ठाठें मारने लगेंगी, हमारे भाइने अपने पुख्ता कलम के झरीअे जो महेनत की हय, वोह दादके काबिल हय । उस्के इलावह इझ जखीम किताब को छपाने के लिअे हमारी सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल ने जो बीडा उठाया हय, उस्के भी हम मम्नुनो मश्कुर हंय के हर वकत आप हमारी किताबों को शाअेअ कराके सुन्नी अवाम तक पहोंचाते हंय, उस्में भी खुसुसन हमारे दोस्त जनाब हाजी मोहम्मद सुलेमान जे. इसाणी बरकाती दरियाइ और जनाब सैयद हाजी मुहम्मदमीयां नागाणी साहेब बरकाती दरियाइ साहब का हम तहे दिलसे शुक्रीया अदा करते हय । आपकी इस साइअे बलीग को खुब खुब कामीयाबी मिले येही हमारी दुआ हय । व सल्लल्लाहो तआला अला खैरा खल्केहि मुहम्मदीं व आलेहि व सल्लम बे रहमतेका या अरहमर्राहिमीन ।

फकत दुआगो व दुआजु -

सैयद पीर हाजी कमरुद्दीन बावा कादेरी दरियाइ अशरफी

सरपरस्त : सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल तथा

माजी सहतंत्री : तयबाह मासिक अहमदाबाद

ठे. कुतुब नगर, नूरी मंजिल, मु.पो.कारंटा, ता.खानपुर, वा.लुणावाडा,
जी.महीसागर-389230 गुजरात मो.09723678178
चांद ३ जमादीउल आखर हि.1435,
वकते असर बरोझ जुमेरात - ता.4-4-2014

अेक नाचीझ गुनाहगारके दो अल्फाझ

वली-अे कामिल, गौसे झमां, कुत्बे आलम, सर-चश्मअे हिदायत, शम्अे बझमे वासेलीन, पेशवाअे काफलाअे आशेकीन, रौशन-झमाइर, गवसुल खल्क, मर्झअे इल्मो इर्फान, हझरत ख्वाजा महमूदशाह दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाहे तआला अलयहे की सीरते मुबारेका पर ये किताब जो आपके हाथोमें महक रही है इसको शाये करानेका काम अंजाम फरमाया उस मुकद्दस हस्ती, जिनको लोग खलीफ-अे शैखुल इस्लाम, शेहजादाअे दरियाइ दुल्हा, फख्रे अंजुमने सादात, पेशवाअे कौमे मिल्लत, सैयद मदनीबावा दरियाइ के नामसे जानती, पेहचानती और मानती है। उन्हीं की कोशिशों और काविशोंका समरा है के आज इतनी मुतबर्रिक किताब मंझरे आम पर आइ है।

हझरत ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा अलैहिर्रहमतो व रिदवान उन औलियामेंसे हैं जिनकी विलायत, गौसीयत, कुत्बीयत, मेहबूबीयत, शाने करामत, रफीउद-दर्जा अझमत, बुलंदोबाला रिफअत, खानदानी शराफत, बेमिशाल सखावत, इर्फानो मोहब्बत, विजदानो कैफियत, सर-चश्मअे फैझो रहमत, खुदादाद चश्मे बसीरत, रुहानी हुकूमत और हद-दर्जा पाबंदीअे सुन्नतो शरीअत के अफलाक शाहिद हैं और देखकर हामिलाने अर्शे इलाही अंगुश्त दर देदां हैं और अेहले इदराक हैरानो परेशां है।

आपके अवसाफो शख्सीयत के बारेमें कुछ लिखना ये मुझ जैसे गुनाहगारके लिये अैसा ही के कतरे को समन्दर के बारेमें लिखनेको कहा है, झर्रे को सूरज की पैमाइशे ला-मुहालका काम सौंपा जाअे, खुश्क पत्ती को गुलझार की शनाख्त पूछी जाअे !! रेगिस्तान के गर्म झौकों को जन्नत की बहारों का मिझाज पूछा जाअे !

हझरत ख्वाजा महमूदशाह दरियाइ दूल्हा का फैझान सारे आलम को पहोंचा। सारे जिन्नो बशर आपके शैदाइ, हूरो मलक आपके तमन्नाइ केहकशाओंने आपकी राहोंमें आंखे बिछाइं, चांदनीने चादरे अकीदत बिछाइ। फूलोंनें आपकी मिदहत सुनाई कलियोंनें आपकी तौसीफ गुनगुनाइ।

ख्वाजा महमूदशाह दरियाइ दुल्हासे हम मिरझापूर कुरैश जमाअत के कबीलेवालोंकी भी खास निस्बत है। इसका किस्सा ये है के ख्वाजा महमूद दरियाइ दूल्हा के हकीकी चचाजान, अताअे मुस्तफा ,करामते शाहे आलम हझरत सरकार सैयदना शाह हम्माद रहमतुल्लाहे अलयहे जिनका आस्ताना शरीफ सरसपूरमें है तो हमारी कुरैश जमाअत की कइ कबीले अैसे हैं जिनमें हमारे पुरखों (वडवाओ, पूर्वजो) और बडे-बुढे बुझुर्गों के पुराने झमानेसे ये रिवाज आज तक काइम है के बच्चा ४ साल, ४ माह, ४ दिनका हो तो सरसपुर हझरत शाह हम्माद रहमतुल्लाहे अलैहे के आस्ताने पर जाकर बच्चेकी बिस्मिल्लाहख्वानी की जाती है। ये रिवाज बरसों पुराना है और इस मुकद्दस आस्तानेकी निस्बत और फैझानसे बचपन ही से हमारे बच्चे मालामाल हो जाते हैं सुब्हानल्लाह ! माशा अल्लाह ! इसी तरह हमारे बच्चों के अकीका के लिये हमारी कुरैश जमाअतके कइ कबीलोंमें पुरखोंसे ये रिवाज है के बच्चों का अकीका सरखेज : आस्तान-अे शैख अहमद खट्टु पर जाकर अकीका किया जाअे सुब्हानल्लाह !

आखिरमें बारगाहे ख्वाजा महमूदशाह दरियाइ दुल्हामें नझरानअे अकीदत के तौर पर चंद अश्आर पेश कर रहा हूं :

ख्वाजअे महमूद का फैझे असर
संगरेझे हो गअे रश्के कमर
आपके कदमों की बरकत से हुझूर !
खुश्क शाखों पे लगे शीरीं समर
कीजिये हम पर निगाहे इल्तिफात
अय रसूलल्लाह के लख्ते जिगर
आपका सानी कहां से लाअें हम !
आप हैं काने विलायत के गुहर
हैदरो हसनैनो झोहरा के तुफैल !
देख लें हम सब दरे खैरुल-बशर
आ गया जैसे मदीना रु-ब-रु
आपका दर है दरे खैरुल-बशर
आप हैं गवसुल खलाइक, अय वली !
आप हैं रौशन-झमाइर सर-बसर
अर्शकी तस्वीर है रौझा तेरा
लोह की तहरीर पळ्हती है नझर
लब-कुशाइ की नहीं जुर्अत मुझे
सब मेरे अहवाल हैं पेशे नझर
दोनों आलम हैं नझर के सामने
अल्लाह ! अल्लाह ! वो फरासत की नझर
दो जहां में लाज रेह जाअे, हुझूर !
आपके शैदा पे हो अैसी नझर

गुलामे सैयद - जनाब उस्मानगनी शैदा कुरैशी

माजी संपादक - अल अशरफ (माहनामा)

खलीफ-अे शैखुल इस्लाम -कुरैशवाड, मिरझापुर, अहमदआबाद

चांद 6 रजजब 1435 ता.6-5-2014 बरोज मंगल बाद नमाझे मगरिब

नोट : शहेर अहमदआबादके कालुपुर दरियापुर जमालपुर तीन दरवाजे वगैराह इलाकोंके मुस्लिम यहां अपने बच्चोके अकीके करते है और बिस्मिल्लाह शरीफ की रश्म अदा कराते है। यहां हिब्ज जुबान (तोतलापन) के इलाज के लिये यहां दुआ की जाती है। आस्तान-अे हुझूर सैयदना शाह हम्माद बीन शाह मोहंमद बीन शाह महमूद दादा कारंटवी मु.शाह हम्माद दरगाह - चार टोळा कब्रस्तान के लाइनमें सरसपुर, सारंगपुर अहमदआबाद

दो-लफ्झ

अस्सलामो अलयकुम,

बीरादराने मिल्लत

पीर कुछ न कुछ मुरीदो को, खिदमत का सीला देते है,

गफलतके हटाकर पर्दे, रब से बंदे को मीला देते है

नहमदुहु व नुसल्ली अला रसुलीहील करीम

मेरे चाचा बुझुर्गवार हझरत पीर सैयद अल्हाज मोहंमद मदनीबाबा अेफ. दरियाइ, कादरी के दस्ते मुबारक से ये किताब मनाकिबे ख्वाजा महमूद दरियाइ दिन-परस्त, नुर-अफरोझ, हिकमत, व तारीखे सुफीया हिन्दुस्तानमें कैसे आये । सिलसिलाने चिश्तियाह, कादरियाह, सोहरवर्दीय्याह, नकशबंदिय्याह वगेरे बुझुर्गो के हालात और सियासी पहेलुंओ पर भी आपने अच्छा अंदाज पेश कीया है।

इस किताब के लिये (संपादक) साथ हमारे खानदान के बुझुर्गोकि आये हुवे गुजरात के अलग-अलग जगहओंकी फोटोग्राफी के लिये मुझे ही साथ रख्खा । जब पता चला की खानदाने दरियाइ दुल्हा व आपके अकाबेरीन ने दीने-इस्लाम के लीये कीतनी महेनत की है। आज भी कहीं अैसी जगह मौजुद है जहां अकेले इन्सान के लिये मुश्किल पेश नजर आती है। ये अल्लाह तआला के सच्चे पकके वली अे कामिल लोग का ही काम था जो इस्लाम की तब्लीग व इशाअत का काम अंजाम दे गये । जगह-जगह दर ब दर जाना जहां कोइ हमारा नहीं । गेरजुबान अलग-अलग रास्ते, अलग-अलग खाने पीनेके तरीके, कीसी भी तरह का कोइ कोम्युनीकेशन नहीं । मगर फीर भी अपने दीने-इस्लाम की अल्लाह तआला के दीने मतीन की तब्लीग की और लोगोंको इस्लाम कबुल करने पर आमदा कीया। ख्वाजा दरियाइ सरकार का ये फैझान है की आज भी ५५० साल से जयादा गुजरात, अेमपी, राजस्थान की गैर इस्लामी कौम आपसे फैझ हांसिल करती है और इन लोगोंमें आपकी दीली मोहब्बत पाइ जाती है।

संपादक ने अपनी अेक अझीम मोहीम को आज पूरा किया ये किताब खानदाने दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाहे अलयहे के अलावा दिगर तारीख के रिसर्च करनेवालोंको फायदा पहुंचायेगी । और हमारे खानदाने

दरियाइ के आगे आनेवाले मल्फुझात से इल्म रखनेवालो को अेक अझीम दस्तावेजी जखीरा मीलेगा । आपने इस किताबमें हमारे जद्दे-आला ख्वाजा दरियाइ सरकार पर काफी रिचर्स किया है । आप कहीं भी कभी भी दरियाइ सरकार की किताब या उनकी जाते बाबरकत से लगते सेमीनारमें जाते रहते है ।

ये किताब मशाइखे तरीकत के लिये तोहफ-अे हयात व शुकन का झरिया बनेगी कौम को नया अंदाज मिलेगा । आखीरमें ये किताब के लिये मुझे पसंद कीया अपने तास्सुरात के लिये में उस लीये किताब के संपादक व सुन्नि मुस्लिम कमिटी गोंडल का बेहद तहेदिलसे शुक्र गुजार हुं । अल्लाह तआला अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के सदके गौषो-ख्वाजा मख्दुमो-दरियाइ की नझरे करम करे । इस तरहा दीन के अवलीया अल्लाह के हालात, वाकीय्यात से हमे नवाझते रहे । इन तमाम की उम्रमें, रोझीमें, इल्ममें इझाफा करे । आमीन ।

जींदगी को संवारेगी, इनायत पीर की
कैद कर लो अपने सीनेमें, मोहब्बत पीर की
सरसे लेकर पांव तक, तौहिद में रंगीन है
मुझ से पुछो मैंने तो देखी है रंगत पीर की

दुआगो

पीरझादा सैयद हाजी हमीदुद्दीन अेम. दरियाइ कादरी

खलीफ-अे मुफ्तीअे गुजरात (कमरुद्दीन बावा)

(अेडवोकेट) (ट्रस्टी-ख्वाजा महमूद दरियाइ दरगाह शरीफ ट्रस्ट)

मु.पो.धोळका, जी.अहमदआबाद

चांद 16 जमादीउल आखर हिजरी 1435 - ता.17-4-2014

उर्स-सरकारे शाहे आलम बरोझे जुमेरात वकते-जोहर

दिबाचा - संपादक की कलमसे...

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

नहमदोहु वनोसल्ली अला रसुलेहील करीम व अला आलेही व अस्हाबेही अजमइन

व-अम्मा-बे-नेअमते-रब्बेका फहदिदष

तर्जुमा : और अपने रब की नेअमत का खूब चर्चा करो - कन्झुल इमान

अंबिया-अे किराम के तझकेरा करना इबादत है और औलिया व स्वालेहिन का झिक्र करना गुनाहोंका कफफारा है। (जामेउल हदीष नं.12503 कन्झुल उम्माल हदीस नं.32247)

अपने अस्लाफ की तारीख फरामोश न कर
बझमें तौहिदो-रिसालत को सजादे मुस्लिम
जीसकी आवाझ में पिन्हां है हयाते अबदी
वो पयगाम फिर अेक बार सुनादे मुस्लिम
- अल्लामा डॉ. ईकबाल

तमाम तारीफ, इबादत और हम्दो शना अल्लाह तबारक व तअला अझझो जल्लके लिये जो निहायत रहम करनेवाला बडा महरबान है तमाम इश्को अदब, मोहब्बत और करोडों दरुदो सलाम अल्लाह तआला के प्यारे महेबूब, नुरे मुजस्सम हुझूर रहमते आलम सैयदुल लौलाक, नबीये करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के लिये और तमाम अदबो अहेतराम तमाम खुल्फाओ राशेदीन, सहाबाओ किराम, ताबेइन और तबे ताबेइन रिदवानुल्लाहे अलयहिम अजमइन तमाम शोहदा व स्वालेहीन और आली मुकाम अवलिया अल्लाह के लिये जिनका दामन कयामत के रोझ हमारी नजात का झरीया होगा इन्शाअल्लाह।

अल्लाह तआला के फझलो करमसे में जो कइ सालोसे मनसुबा (प्रोग्राम) बनाके चला था व जो इरादा किया था वो बडी मुद्दत के बाद इफततेताम पर पहोंचा। में अपनी ये नायाब किताब में अेक ही रिशाले में सारे इन पहेलुंओंको शामिल करलुं इस नुस्खेंमें, तवारीख, सुफीया अवलीया सिलसिला अे तरीकत, शुफिया कैसे बनें , हिन्द व गुजरात के सियासी व इस्लामी अदबो-तहेझीब के साथ मेरे जद्द-आलाओ की खिदमात अझमत तब्लीगो, इशाअत के वाकियात साथ-साथ इन पहेलो को भी शामिल कीया जो

मेनें आगे लिख्खा है। मैंने दरियाइ सरकार अपने हयाती जिन्दगी के जो दिन-रात गुजरे थे इन गांव शहेरोमें जा-जाकर आजके हालात कैसे है वो पूरा प्रोग्राम पीछे सफाहत पर आपको पढ़ने मीलेगा। तमाम सिलसिलोकी सवानेह-हयात का तझकेरह किया गया हय और ये किताब लीखनेका तरीका व इरादा मुजे और उम्मते इस्लामीया को कया फायदा देगा व होगा वो कुछ इस तरहा हय। इस किताब मनाकिबे ख्वाजा महमूद दरियाइ के हिन्दी, रस्मुलखत (तरझुमा) करने का अहद किया ताके ये तझकेरह मशाइखे सिलसीलो से लौग फायदा उठाये और हमारे आस्ताना-अे पाक हुझूर सैयदना शाह ख्वाजा महमूद दरियाइ मुकाम बीरपुर शरीफ की हदे राजस्थान, मध्यप्रदेश व उपरकी जानिब महाराष्ट्र के लोगों का भी डीमान्ड थी की हझरत के स्वानेह हिन्दी में हो। जो इन तमाम लोगों की दुआ व जद्दे आली के बारगाहमें मेरी दुआ व रुहानी इरफानी मदद से कामीयाब हुइ। मेरा लिखना व समझना हझरत ख्वाजा फरीदुद्दीन अत्तार रहेमतुल्लाह तआला अलयह के मुताबीक तो नहीं। मगर इनके ख्यालमें खोकर ये लिख्खा है। आपका ये दिबाचा मेरी ये किताब का पूरा के पूरा यकीन के साथ जामा बनाने मेंने कबुल किया। अल्लाह तआबा पढ़नेवालो को सालिकीन, आरेफीन व सालेहीन के दरजात बनानेमें मेरी ये किताब काम करेगी इन्शाअल्लाह।

मुश्क आनस्त के खुद ब बूयद

नक्रे अत्तार ब गूयद

तर्जुमा : कस्तुरी अपने आप महक महका देती है और व अपनी पहेचान अपने आप करा देती है। कस्तुरी बेचनेवालोको उसकी तारीफ के नग्में तराने बयान करनेकी जरुत रहती नहीं है।

दागे गुलामियत कर्द रुत्बा अे खुसरु बुलंद

मीर विलायत शवद बंदा के सुलतान खरीद

हझरत अमीर खुश्रो ने हझरत ख्वाजा निझामुद्दीन औलीया चिश्ती रहमतुल्लाह अलयहे की गुलामी कबुल की उस लिये उसका दरजा बुलंद हुवा

सुलतान जीसे गुलाम बनाकर खरीद लेता है तो वो कभी हझरत युसुफ अलयहीस्सलाम की तरहा वो सल्तनत का मालीक भी बन शकता है।

हजरत ख्वाजा फरीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाह अलयहे अपनी आलमे दुनियामें की मशहुरो माअरुफ फारसी किताब "तजकिरतुल औलीया" की अपनी तकरीझमें तहेरीर करते है की, औलीयाओके हालात लीखने को में बरकत समजता हुं। और लिखने का मकसद जीस तरह एक छोटा दायरा बडे

दायरेमें समा जाता है उस तरह मेरा ये मकसद और ख्वाहीश है। हजरत ख्वाजा फरीदुद्दीन अत्तार रहमतुल्लाह अलयहे फरमाते है के ''तजकेरतुल औलीया'' किताब लीखनेका मकसद कुछ इस तरहा है। (संपादक भी किताब लिखनेका ये तरीका पसंद करता है)

पेहली वजह (कारण)

A-1 ये किताब मेरी यादगार है।

A-2 इन्सान इस किताब को पढकर फायदा हांसील करे और मुजे दुआओमें शामील रख्खे.

A-3 अल्लाह त्आला के नेक बंदे (वली-अे कामील) लोगों के हालत मेरे हाथो से लिखने से खुश होगे। तो उस खुशी से मुजे आखिरत के वकत मेरी नजात का जरीया बनेगा।

A-4 हजरत इमाम हरवी रहमतुल्लाह अलयहे और हजरत शेख अब्दुल्लाह अन्सारी रहमतुल्लाह अलयहे के उस्ताद हजरत यह्या अम्मार रहमतुल्लाह अलयहे को इनकी वफात के बाद लोगोंने ख्वाबमें इनसे पुछा। आप पर कैसी गुजरी ? आपने फरमाया, अल्लाह त्आला तरफसे इरशाद हुआ है की ओह यह्या में तुम्हें कडे सवाल और सख्त पुछताछ करता मगर तुने एक मजलीस में मेरा जिक्र (मेरी बात) करता था। इन बातो को मेरा एक एक दोस्त सुन रहा था। सुनकर वो बहोत खुश हुआ था ये जिक्र करनेकी बरकतसे मेने तुजे बख्श दिया है।

B-2 लोगोंने हजरत शैख बु अली दककाल रहमतुल्लाह अलयहे से पुछा कोइ शख्स औलीया किराम के हालत सुने और उसपे अमल न कर शके तो इनके हालत व वाकियात सुनानेवाले को फायदा हांसील होगा, या नहीं। आपने जवाब इनायत फरमाया दो फायदे होंगे. (1) वो शख्स तालिब होगा तो उसकी तलब बढ जायेगी इजाफा होगा और हिंमत मजबुत होगी (2) ओर अगर वो शख्स मुतकब्बिर (अभिमानी) होगा तो उसका तकब्बुर (अभिमान) घट (कम) जायेगा।

C-2 लोगोंने हजरत जुनेद बगदादी रहमतुल्लाह अलयहे से पुछा की मुरीदो को पीरो की जिक्रसे (इनकी बातोसे) कया फायदा मीलता है ? आपने फरमाया मरदाने खुदा अल्लाहवालो का जिक्र अल्लाह त्आलाके लश्करोंका एक लश्कर है। मुरीद ये लश्कर से मदद हांसील करता है और मजबुत होता है। और इस कोल के लिये अल्लाह त्आला इर्शाद फरमाता है की, **या मुहम्मद**

सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम हमने अगले पयगम्बरोके किस्से आपसे इस लिये बयान किया है की आपको इत्मीनान सुकुन मीले और आपका दिल मजबुत हो जाये।

D-4 रसुले मकबुल सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इर्शाद फरमाया की **''इन्द जिक्र झझाकेरीन तनझझलुल रहमह''** झाकेरीन का जिक्र करते वकत (अल्लाह वालों की बातो, (बयान) करते वकत) अल्लाह तआला की रेहमत नाजील होती है।

E-5 ओलीया अल्लाह (बुजुर्गो) के हालात लीखने का पांचवा मकसद ये है की बुजुर्गोकी रुहो से परेशान हाल जमानेवालो को फैज मीले और इस फैज की बरकत से लोगोंकी मोत से पहेले सआदत की दौलत नशीब मीले।

F-6 मेंने कुरआने करीम और हदीस के बाद औलीया अल्लाह के कलामको इन तमाम कलामो को बहेतर और कुरआन व हदीस के मुताबिक देखा। इस लिये में (बुजुर्गो के हालत लीखता हुं) और ये काम इसी लिये शुरु किया है की में खुद इन के मरातिब में सामिल न हो शकु तो सीर्फ अल्लाह तआला इनके जिक्र (हालात) की बदोलत मुजे भी इन्ही जैसा मरातीब वाला बना दे। हदीस में आया है की **''मन तशब्बोह बे कवमिन फहोव मिन्हुम''** जो इन्सान कोइ कोम की नकल करता है तो वो इन्सान उसी कोम का ही कहलाता है।

G-7 कुरआन और हदीस समजनेके लिये अरबी जुबान पर महारत, काबेलीयत जरुरी है तो मैनें ओलीया अल्लाह के हालत फारसी जुबानमें लीख्खे. (ओर मैनें हिन्दी में अनुवाद कीया)

H-8 ये एक सिधा (जरा सा) दस्तुर है, के कोइ शख्स के दिलको चोट पहोंचती है तो वो शख्त जल्द गुस्से में आ जाता है। और मारने (कत्ल कर डालने तक) आमदा हो जाता है। और मुखालिफ बात असर करती है तो मुवाफिक (अनुकुल) बात कया असर न करेगी। जरुर असर करेगी। हजरत शेख अब्दुरेहमान अस्काफ रहमतुल्लाह अलयहे से लोगोने पुछा, कुरआन और हदीस को पढनेवालो को इस का मतलब (अर्थ) समज में न आये तो कया कुछ फायदा (मुनाफा) मीलेगा के कयुं ? आपने इर्शाद फरमाया की, उसे जरुर फायदा होगा। दवा पीनेवाला भला दवा की फोरमुला और उस में कोन कोनसी चीझे है इस से कहां वाकीफ होता है ? मगर फीर भी वो दवा इस्तेमाल करता है और इससे फायदा (लाभ) हांसील करता है। इसी तरहा अरबी मतन अर्थ न समजनेवालो को फायदा मीलेगा। इन्शाअल्लाह।

I-9 मैं अैसा चाहता था के जीतना हो शके अपनी महेनत से जयादा से जयादा ओलीयाओ किराम और अल्लाह तआला के नेक बंदा का ही जिक्र करुं इन्ही के ही हालत कहुं न के सुनाउं। इस लीये मेनें ये किताब लीख्खी। (तजकरेतुल औलीया)

J-10 लोगोंने हजरत इमाम युसुफ हम्दानी रहमतुल्लाह अलयहे से पुछा की दुन्यामें औलीया अल्लाह बाकी न रहे तो हम कया करे ? और दुन्यावाले मकरुहात (बुराइयों) से कयसे बचे ? तो आपने फरमाया की उनके हालात (औलीया अल्लाह) वलीयों के कुछ हिस्से (भाग) हर रोज पढते रहो।

K-11 मैनें अपनी हिंमत के मुताबिक औलिया अल्लाहके हालात लीखनेकी वजह मेरी इन से दिली मुहब्बत जताइ है। इस लिये की हर शख्सका हश्र उसी के साथ होगा जो जीसके साथ मोहब्बत रख्खा करता था। इस कोल की तरहा मुझे इसकी बरकते नसीब होगी, और मीलेगी।

L-12 आज के जमानेमें बदकारीयो बेहयाइयो बुराइयां ज्यादातर फेल रही है। नेक काम करने को छोड दिया है। में चाहता हुं के इस किताबसे नेक लोगों की (औलीया) यादे तरोताजा रहे और लोग इस से मुहब्बत पैदा करे। और लोग इन लोगोंकी तलाश करे और इनसे फायदा हांसील करके अपनी सआदते अबदी नसीब करे आमीन...

M-13 कुरआने करीम और हदीसे कुदसी के बाद औलीया अल्लाहके कलाम सबसे जयादा बहेतर है वो इस लीये और इस वजह (कारण) से।

(1) ये कलाम दुन्यवी उल्फत दुर करवाता है।

(2) ये कलाम पढकर आखिरत की याद करते है।

(3) ये कलाम से खुदा की दोस्ती पैदा होती है।

(4) ये कलाम सुन के आखिरत की तैयारी करनेकी समज मिलती है।

(5) बुझुर्गोंके अलफाझ (शब्द) ना मर्द-मर्द को शेर, शेर को फर्द और फर्द को साहेबे दर्द बना देता है।

H-14 ये किताब लीखनेका चौदाह वजह ये है की हो शकता है ये बुजुर्गो औलीया अल्लाह कल कयामतमें मेरी शफाअत करायेंगे। ये इस बातसे सोचकर लीखता हुं की जीस तरहा अस्हा बे कहफ अपने कुत्ते (कत्मीर) से रिआयत की थी उसी तरहा ये बुजुर्ग लोग मेरी रिआयत करेंगे और रुत्बेमें तो में उस कुत्ते से भी कमतर हुं।

सुल्तानुल आरेफीन हजरत ख्वाजा बायझीद बुस्तामी रहमतुल्लाह अलयहे लिखते हैं के मेअराज के हालात पढते पढते मुझे यकीन हुवा के बुझुर्गोके हालात और वाकीयाद फायदा न देनेवाले होते तो हक सुब्हानहु व तआला अंबिया अलैहिमुस्सलाम के किस्से रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम तक हरगिझ न पहोंचते । **कुरआने पाकमें भी हजरत आदम, हजरत मुसा, हजरत इस्माइल, हजरत इब्राहिम, हजरत इसा अलैहिमुस्सलाम वगेरे अंबियाओके तजकरे न आते ।** इस वजहसे बुजुर्गो, औलीया अल्लाह के हालात से, कमाल से, रियाजत से, मुजाहिदातसे, करामातसे और मलफुजातसे सिलसिलो के मुरीदो को जानकारी नशीब होती है । और इनसे बुजुर्गोसे जयादा मोहब्बत, इनके दिलोमें इझाफा करते है । और जब मुहब्बत जयादा इन मुरीदोंको मीलती है तो इन्हे अन्वार से फैजान से बरकते नसीब होती है और फायदा मीलता है । इस वजहसे जदृदे करीमने हजरत पीर सैयद शाह मनसुर बीन ख्वाजा अबु-मोहम्मद रहमतुल्लाह अलयहे से फरमाया था की आसकारा-आसकारा (ये बडे होकर मेरी सवाने उमरीको लीख्खेंगे) जब शाह मनसुर छोटे थे तो आप जमीन पर पांव पछाडते थे । हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइने फरमाया था उपर का जुमला **आपने ख्वाजा दरियाइ के हालात फारसी मे महमूद ख्वानी लीख्खी है । और हजरत बीबी हदीया का कोल है की मेरे दादा ख्वाजा दरियाइ फरमाते है की जीसने मेरे वाकीयात को लिख्खा और आगे बढाया उसे विलायत नसीब होगी ।**

हदीष : जीसने लोगोका शुक्र न किया गोया वो अल्लाह तआला का शुक्रगुजार नहीं हो शकता ।

पेश लफझ लिखने के लिये व इस किताब को नझरेशानी प्रुफ व इल्मी, तारिखी, मझमुन के लिये और सफरे किताब तैयार करनेमें जीनकी बडी आला कद्र दुवा, हिंमत, ताकात, होंसलाअफझाइ रहेनुमाइ, सदारत रही अैसे सुबे गुजरात के मेरे तर्जुबेसे लिख शकता हुं के पावागढ से जुनागढ, दाहोद से द्वारका, शामळाजी से वापी तक, कंडला से कंवाट तक, कहीं भी आप जैसा कोइ पीर नझर नहीं आया।

अैसा कोइ सैयदझादा मख्दुमझादा, पीरझादा, मुफती, शेख्रे तरीकत नझर नहीं आता कयुं के आप में, इल्में अरबी, उर्दु, गुजराती के साथ साथ हर पहेलुं शामील है । आप दारुल उलुममें सरपस्त, जल्सोमें सरपरस्त, लीटरेचर में सरपरस्त, दोरोमें सरपरस्त, कुम्बे में सरपरस्त, औलाद में चोथी पुस्त देखनेमें सरपरस्त, रुहानी दुनियामें सरपरस्त अेक बापके साये के बिना दुआ

का सहारा - दीन का अझीम गाझी , मुझाहीदे दीने इस्लाम, शैखुल कबीर, फाझीले शाही, शहेनशाहे कलम, मुब्ललीगे आलम, वलीअे कामील अस्सय्यिद अल्लामा मुफती अल्हाज हझरत पीर कमालुद्दीन उर्फ कमरुद्दीन बाबा अब्दुलरहमान दरियाइ कुत्बी अशरफी चिश्ती सोहरवर्दी, कादरी अल हाश्मी, दामतहुं आलीय्या का में तहेदिल से शुक्र गुझार हुं के इन्होने मेरी किताब के लिये दो अल्फाझ (शब्द) लीख्खें। उस लिये किसीने ठीक ही कहा है बडो की शोहबत, बडा बडा देती है। सचवालो को साथ रहेते चलते, फीरते खाते-पीनेसे दिल रुहानी बन जाता है। अल्लाह तआला आपकी उम्रमें, इल्ममें, अमलमें, शेहतमें बेहिसाब और जयादा बरकत अता करे. दिन-दुनियाके लोगोको आपसे फैज मीले व हमारे उपर रुहानी फैझे-दरियाइ का खास साया मिलता... मिलता... मिलता रहे।

इस किताबके लिये दिली मदद करनेवालो को मैं कैसे भूल शकता हुं ? उसमें सबसे पहेले (1) मेरे भतीजे जनाब पीरजादा सैयद हाजी हमीदुद्दीन अेम. दरियाइ अशरफी जीन्होने मेरी टुर में हर वकत साथ साथ रहे और दो लब्झ इस किताब के लिये लीख्खे है। (2) जनाब हाजी मुझाहीदे इस्लाम मुबल्लीगे इस्लाम शैख निशार अहमद मास्टर सहाब (चाचा) ट्रस्टी दारुल उलुम मदीनतुल उलम मु.रतनपुर जी.खेडा (दावते इस्लामी सोसायटी ट्रस्ट) रायखड, अहमदआबाद (3) जनाब शेख हाजी गुलाम राझीक सहाब उर्दु स्कुल सलापस रोड, जी.पी.ओ. अहमदआबाद (4) मर्हुम मौलाना मकबुल आलम मिस्बाही सहाब (5) शेख अस्फाकभाइ (6) जनाब सुन्नी मुझाहीद अल्हाज मुनीर कलीमी, कुरेशी सहाब नाझीमे आला व ट्रस्टी दारुल उलुम शाहे आलम (7) जनाब उस्मानगनी शैदा कुरैशी अशरफी खलीफ-अे शैखुल इस्लाम (मीरझापुर) उन्होंने अपने दो अल्फाझ पेश कीये व प्रुफ भी किये है (8) जनाब रफीकभाइ कुरैशी (दोस्त)(हांडी) (9) जनाब पीरझादा सैयद मोहंमद षाकिब बाबा अेम. दरियाइ अशरफी (मेरे फरजंदे अव्वल) (10) जनाब वहोरा अब्दुलकैयुम अब्दुलरहेमान - खलीफ-अे दरियाइ अशरफी (नरसंडा, नडियाद-खेडा) (11) जनाब पीरझादा सैयद रियाझुद्दीन जे. दरियाइ अशरफी (12) पीर सैयद मोहंमद युसुफमीयां अेफ. दरियाइ अशरफी (13) जनाब पीरझादा सैयद मोहंमद शकलैन बाबा अेम. दरियाइ अशरफी (मेरे फरजंदे दोयम)

जीन्होने ये किताब मन्जरे आलम पर लाने के लिये हर वकत दिन-रात मुझे अपना पुरा वकत दिया साथ साथ कदम ब कदम मेरे साथ चले। कयुं के

काम आसान नहीं था और दुन्यवी कामो की भी मुश्कीलों का सामना करके मेरा साथ दीया। इन नेक काम में साथ देनेवाले हझरातों ने सच्चे आशिके सरकार दरियाइ के दिवानो ने पहाड की चट्टानो के सामने अपनी रुहानी दिल और सिना रख दीया था। अल्लाह तआला के **हुझूर हल जझाउल इहसानि इल्लल इहसान** (सूरऐ रहमान आयत नं.६०)

तरजुमा : क्या हया ओहसान का बदला बजुझ ओहसानके. (मआरेफुल कुर्आन) की तरहा अहले बैत के सदके ये हझरातो की मदद करे ये दुआ है।

किताब के लिये मुझे हरदम दामे दिरहमें कदमें सुखने बल्के अपने दिलो को भी मेरे तरफ रखकर मदद करनेवालो के लिये में जीतना लिख्खुं उतना कम है। कयुं के हर काम के मकसद मन्जरे आम पर लाने के लिये ताउन मदद चाहिये जो मुझे गुजरात की मशरुफो मारुफ खिदमते दीने इस्लामकी अझीम तन्झीम सुन्नी मुस्लिम कमिटी जैसी कोइ टीम नझर नहीं आती है। ये कमिटी ने जो काम किया है उसकी कोइ मिशाल नहीं है। की जीनकी जानिब से अबतक कइ इशाअते (लाखों किताबे) साये की तकसीम कर दी है। ये नेक मकसद के लिये सुन्नी मुस्लिम अवाम का भी बडा हिस्सा है वरना कइ कमिटी अे वजुदमें आइ और चली गइ। मेरी २००५ के गोंडल के दौरेमें उन्हे ये मेनें राय पेश की आप हिन्दी में सरकार दरियाइ की शानमें कोइ किताब साये करे। ये बात मेरे मुंहसे निकली थी की जनाब अल्हाज सुफी सुन्नी मुजाहिद इस्लाम के सच्चे मुबल्लीग सुलेमानभाइ जे. इसाणी सहाबने मेरी बातको फौरन कबुल कर लीया। बादमें जनाब पीर सैयद अल्हाज मुझाहीदे अव्वल, शीशादिल, सुन्नीयतके परचम को हंमेशा बुलंद रखने वाले आले-नबी औलादे अली हझरत हाजी मोहंमदमीयां बिन हाजी अबदुल मजीदमीयां नागाणी बरकाती दरियाइ फातेमी व हाश्मी को ये बताया गया। दोनो ने मश्वरा करके मुझे कहा आप अपना काम शुरु कर दे हम आपको ये काममें ख्वाजा दरियाइ मिशनको आगे ले जानेमें हमा वकत साथ है।

ये दोनो हझरातमें से कोइना कोइ अेक लास्ट २० साल से हर साल उर्स ख्वाजा दरियाइ सरकारमें अपनी खिदमत खानकाहे रझझाकीय्याह, दरियाइय्याह अदा करते है। उन्हें यहां के हर अेक पहेलु को देखा व समझा है के यहां कया कया जरुरत है ये दोनो हजरात हमारी फेमीली के बराबर तआल्लुक रखते है।

काम बडा मुश्किल था जगह जगह जाना दोरे करना, किताबोका मुतअल्ला करना, वकत निकालना, मगर जब बंदे गरिब को, वलीअे कामिल

हुझूर दरियाइ सरकार की रुहानी मदद से जो जो लोग सुनते गये मिलते गये तमाम की दीली दुआओ से ये काम अव्वल से आखिर पुरा हुवा । अल्लाह तआला के फझल से अहले बैत आले पाक के सदके जनाब सैयद महंमद बापु नागाणी, जनाब हाजी सुलेमानभाइ इसाणी साहेबान की आल दर आल अब तक जीतनी किताबे साये कि है उसका जझाओ खैर मिलता है । अल्लाह तआला उनकी व उनके रिश्तेदारों की रोझी में, उम्रमें, इल्ममें, सेहतमें बेशुमार बरकतें व झझाओ खैर अता करे आमीन ।

इस किताब के प्रुफ के लिये हझरत शैखे नडीआद पीर सैयद सलाहुद्दीन बाबा, बुखारी अशरफी दरियाइ (खलीफ-ओ अशरफी-दरियाइ) मु. नडीआद का भी में ओहसानमंद हुं के आपने अपना किंमती वकत निकालकर हमें वकफ किया । अल्लाह तआला ख्वाजा दरियाइ शाहे आलम सरकार का फैझ और जयादाह अता करे । आप और जयादाह मकबुलीयत हांसिल करे वैसी ख्वाजा दरियाइमें खास दुआ है ।

साथ में किताबकी टाइपींग, प्रिन्टींग, डीझाइन मे ओक और सुन्नी भाइ का साथ मिला । मनसुरी शकील अब्दुलगनी (मदनी ग्राफीकस) मु.पो. नडीआद का पुरा ताउन मीला उनका भी दिलसे शुक्र अदा करता हुं । अल्लाह तआला उन्हें मेरे बुझुर्गोसे मोहब्बत सुन्नी मशाइखो से बावस्ता रखे और नेक काममें उनके कामयाबी अता हो ऐसी बारगाहे खुदावंदीमें दुआ है ।

इस किताबके अव्वल उर्दु पेज का में आसान हिन्दी न कर शका और बादमें कुछ लोगोका मश्वरा रहा के बोली-चाली रोज मर्राकी जुबान आसान हिन्दीमें लिख्खे । कयुं के ये किताब हिन्दुस्तान के कई गांव और छोटे शहरोमें जायेगी इस लिये आसान जुबान रख्खे । मेरे खानकाह के साथियों का भी यही मश्वरा था की आप आसान हिन्दी जुबान रख्खें । इस लिये पढ़नेमें गलतियां, तरजुमेमें हुइ हो तो बराये करम माफ करे और हमसे इस्लाह के लिये मेरे ओड्रेस पर या इन्टरनेट से लीख भेजे । कोइ वाकियात या मजमुन से कोइ शीकायत हो तो भी मुझे अपने इल्मसे नवाझे और अपने किंमती मश्वरे अच्छे-बुरे मुझे जरुर दे या लीख भेजे तो जयादा अच्छा होगा । मेरी गलतियोंकी इस्लाह होगी और अगले ओडीशन के लिये आसानी होगी ।

में उन तमाम मेरे बुझुर्गो आलीमो मशाइखो दोस्तो ओहबाबों का शुक्रीया अदा करता हुं जीन्होनें मेरी मदद की व साथ में रहेनुमाइ व हीदायत दी व होंसला अफझाइ व करम नवाझीश की ।

सोहबते सालेह तुरा सालेह कूनद

सोहबते तालेह तूरा तालेह कूनद

तर्जुमा : नेक पाकीझा लोगोंकी सोहबत (संग) बेठनेसे नेक बनोगे
बूरे लोगोकी सोहबत (संग) में बेठनेसे बूरे (गुनेहगार) बनोगे

ता.6-5-2014 बरोझ मंगल चांद 6 रजजबुल मुरजजब हिजरी सन-1435
वकत : सुब्ह बाद नमाजे फझर

दुआगो
खाक पा-अे औलीया
(दरे दरियाइ का लाचार गुलाम)
महबूबूल मशाइख, नुरुल औलिया,
गुलाम अब्बास अल मारुफ

(1) **पीर सैयद अल्हाज मोहम्मद मदनीबाबा अेफ. दरियाइ,**
कुत्बी अशरफी चिश्ती सोहरवर्दी कादरी अल हाश्मी
खलीफ-अे शैखुल इस्लाम व खलीफ-अे शैखुल मशाइख
अता-अे शाहजी - 2, अम्मार टेनामेन्ट, संजर पार्क से पहले,
देनाबेंक लाइन, विशाला सर्कल, जुहापुरा सरखेज रोड,
अहमदआबाद-380055 मो.091-9879181156

(2) **पीरझादा सैयद मोहंमद मदनीबाबा अेफ. दरियाई**
खवाजा दरियाइ रीसर्च सेन्टर व कुतुबखाना-अे-रजजाकीया
ठे. आमेना मंझील, जुना सरकारी गेस्ट के पीछे,
मु.पो.ता.बीरपुर शरीफ-388 260, जी.महीसागर, गुजरात
मो.091-9879181156
E-mail : gpeerzada@yahoo.com

ताअरुफे मुसन्निफ (संपादक का परिचय)

नाम : वालीद माजिद की तरफसे गुलाम अब्बास और नानाजान की जानीबसे मोहंमद मदनीमीयां रख्खा गया । आपकी पैदाइश के वकत नानाजान पीर सैयद अल्हाज अब्दुलरझझाक बावा हज के दौरान मदीना शरीफमें मौजुद थे वही पैदाइश की खबर मिलते ही अपने नवासे नाम मोहंमद मदनीमीयां रख्खा । तो वालिद साहब हजरत फतेहमोहंमद ने खत लिखकर बताया की हुजुर आपके रख्खे हुओ नाम से ही आपका नवासा मशहुर होगा और मेरा रख्खा हुवा नाम सीर्फ कागज पर रहेगा । औसा ही हुवा जैसा वालदि साहबने फरमाया था ।

पैदाइश : 8 शाबान हिजरी सन 1386 पीर सुब्ह सादिक इ.स.22 जुलाइ 1965.

वालिद : फतेमोहम्मद इब्ने पीर सैयद मौलाना शहाबुद्दीन दरियाइ कादरी, सुहरवर्दी, जलाली

वालिद : सैयदा आमेना बीबी

वालदि की तरफसे : मोहंमद मदनीमीयां बिन फतेहमोहंमद बिन शहाबुद्दीन बिन जमालुद्दीन बिन कमालुद्दीन बिन अब्दुल जब्बार बिन इल्मुद्दीन उर्फ शाहे आलम बिन मोहंमद शाह मीठा बिन शहाबुद्दीन बिन अलहादीया बीन हजरत शाह सालम साहब बिन प्यारुल्लाह बिन लाड मोहम्मद बिन ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा कुद्देस सिर्रहुल अजीज.

वालेदा की तरफसे : सैयदा आमेना बिबी बिन्ते अब्दुलरझझाक बिन शहाबुद्दीन उर्फ शाहसाहबमीयां बिन कमालुद्दीन बिन अब्दुलजब्बार... बाकी उपर दिये गये नाम मुताबिक ये नसब नामा पुरा के पुरा हाल के जमाने तक का सीवील कोर्टमें रजीस्टर हुवा हे यानी की ये नसब नामा सनदी हैं ।

नसब नामा : आप वालदि और वालेदा दोनो की तरफ से ख्वाजा दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह की नसल से हैं ।

तालीम : दुन्यवी इल्म धो.8 तक और दीनी इल्म दारुल उलुम शाहेआलम अहमदाबाद में इ.स.1978 में ।

व्यापार : आयात निकास, मुंबइ दो साल सुपरवाइजर कंपनी में रहे । उर्स ख्वाजा दरीयाइमें हर साल केसेट, सीडी वगेरा के स्टोल किये, ट्रावेल्स, पासपोर्ट विझा, इस्लामी पोस्टर व बेकरी आइटम वगेरा का भी काम कीया खेती भी की थी ।

खिलाफत 1 : ता.29-6-2009 मु.चांद 14 जमादिउल आखर बरोजे जुम्आ बाद मगरीब मदनी मस्कन मिरजापुर, अहमदाबादमें हजरत शैखुल इस्लाम सैयद मोहम्मद मदनीमीयां बाबा अशरफी, जीलानी, किछौछवी ने सिलसिलअे आलिया, अशरफीया, चिश्तिया, कादरीया की इजाजत और खिलाफतसे नवाजे गये सुब्हानल्लाह !

खिलाफत 2 : ता.3-02-2008 मु.चांद 4 जिल्कद के रोज कारंटा शरीफ गुजरात के मशहुरो मारुफ पीर मुफतीअे गुजरात रइसुल तेहरीर सुल्तानुल मशाइख, शैखुल आलम अल्लामा अल्हाज पीर सैयद कमरुद्दीन बावा अे पीरजादा दरियाइने सिलसिलाअे दरियाइय्याह, रफाकतीय्याह, रजवीयह, बरकातीयाह, अशरफीयह, चिश्तियह, कादरीयह आलीय्याह वगैराह की खिलाफत की सनद और अमामा शरीफ बांधकर दुआओ खैर दी (ये हजरत मेरे सगे चचरे बळे अब्बाजान के सहाबजादा की बिना पर बडे भाइ जान होते हैं)

खिलाफत 3 : हजरत पीर सैयद अब्दुलरझझाक दरियाइ कादरी रहमतुल्लाह अलयहेने अपने वीलनामे वसितिनामे में ता.29-1-1977 हि.स.8 सफर 1387 बरोज जुम्आ के दिन आपने तेहरीर कीया के मेरे बादमें आपको इस्लामी मसाइल के तौर पर हकदार बताता हुं । आप अच्छे अख्लाक इस्लामी परहेजगारी पर रहकर अमली जींदगी गुजारे व आपको ये इजाजत देता हुं जो मेरे पास दीन-दुन्यवी मिल्कत के वारीश बताता हुं ।

शादी : 23-5-1992 शनीचर चांद 20 जील्कद 1412 हि.स. बीरपुर शरीफमें अपने चचाजाद भाइके यहां जोजह सैयदा हजीयाणी जहांआरा बीबी खातुन बिन्ते जमालुद्दीन औलाद : आपकी दो सहाबजादी और दो सहाबजादे हैं ।

(1) सैयदा अक्रमाबीबी - कोम्प्युटर अेन्जीनीयरींग डीग्री व M.A. Part-2

(2) सैयदा अम्मारा बीबी - F.S.L. गुजरात कोलेज अहमदाबाद

(3) सैयद षाकिबमीयां - E.C. Engineer - L.S. कोलेज सरखेज अहमदाबाद

(4) सैयद मोहंमद सकलैनमीयां - धो.9 - F.D. मकतमपुर कोलेज अहमदाबाद

खिदमत : दीनो सुन्नीयत का पैगाम, पैगामे दरियाइ दुल्हा व सवानेह हयात को पहुंचाना और संशोधन करना ।

किताब : आपने यह किताब लिख्खी है (1) हलाल और हराम (2) कफन-दफन (3) सवाने ख्वाजाने दरियाइ दुल्हा (4) विर्द-वजाइफ का तरीका (5) इस्लामी तरीक-अे जीन्दगी । इसके अलावा आप सुन्नी मेगेजीन में आप अपनी कोलममें लिखते रहेते है ।

खास शौख : रुहानी इल्म हांसील करना और तसव्वुफ की किताबे पढना ।

ख्वाहिश : अकाबरीने गुजरात, इस्लामी सरमाया हमारी विरासत और गुजरातके पीछले 200 सालके तमाम पीर बुजुर्गो खानकाहओ आलिमो पर इतिहासिक किताबे लिखना और वीडीयो रेर्कोडींग और सीडी रेर्कोडींग कराना और खिदमत पीरो मुर्शीद हजरत शैखुल इस्लाम की तरफ मन्सुब करना।

सफर : आपने इस्लाम के फैलावे के लीये गुजरात-भारत के अलावा आफ्रीका, केन्या, कोमरुस, सउदी अरब, झांम्बीया वगेरे देशो का सफर किया है।

खानकाह : बिरपुर शरीफमें हवेली जैसी खानकाह है और जुहापुरा-अहमदाबादमें खानकाहे दरियाइ, अता-ओ-शाहजी बंगला हे जहां तीनो भाइ साथ-साथ रहते है।

तमन्ना : हजज जो मेनें अपनी वालेदा माजेदा उम्मुल खैर सैयेदा आमेनाबीबी जोजह पीर फतेहमोहंमद के साथ तमन्ना की थी, लेकीन अपनी कमनसीबी की वजहसे लब्बेक न हो शकी, कयुंकी वालेदा माजेदा का इन्तकाल मु.चांद 11 जमादील आखर बरोज बुधवार ता.26-5-2010 को सुब्हा 6-45 बजे ब.मुकाम अहमदाबादमें इन्तकाल फरमा गये। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजेउन बीरपुर शरीफमें मदफन किये गे। मै मेरी बीबी, बळे बेटी-बेटा के साथ मुंबाइ था वहांसे स्पेशियल व्हीकल लेकर जनाजा में शरीक हुवा था। बंदे को इ.स.2011 में उमराह का सर्फ हांसिल हुआ जो ता.21-3-2011 हि.स.1432 को बम्बइ से मकका शरीफ पहुंचे और 3-4-2011 को मदीना शरीफ से जिद्दाह और जिद्दाह से मुंबइ सुब्ह 4-30 बजे आ गये। उसके बाद ता.18-10-2012 बरोज जुमेरात हि.स.1433 में अहमदाबादसे में और मेरी जौजह सैयदा जहांआरा बीबी के साथ हजजे-बयतुल्लाह के लीये रवाना हुआ यह दौरा बडा रुहानी व इरफानी रहा। हमने 11-11 उमराह व 105-105 तवाफ किये। जिनमें उमरे व तवाफ अल्लाहके रसुल अहले-बैत अत्हार, खुल्फा ओ राशेदीन और आदम अलैहीस्सलाम व बीबी हव्वा के नामसे तवाफ किये दिगर सहाबा-ओ-किराम सिलसिलओ कादरीया, चिश्तिया, सोहरवर्दीया, नकशबंदीया, अशरफीय्यह, कुत्बीया, दरियाइयह व शाहीया के नामो से व हमारे तमाम मर्हुमो हमारे करीबी नाना-नानी, दादा-दादी, मामु-मामी और हमारे घरो के मेरे बच्चे के अलावा तमाम भाइ, बहेनो, बहेनोइ, चाचा-चाचीयों उन्के तमाम बच्चों के नाम से भी तवाफ कीये थे। मुरीदो और खुद्दामो के नामसे भी तवाफ किये अल्लाह तआला अपने खास फज्ल से हमारी इबादतों को कबुल फरमाओ। हम ता.29-11-2012को असर के वकत अहमदाबाद आ गये थे। हमने यहां ओेरपोर्टपे जोहर व असरकी नमाज बा-जमाअत अदा की, अल-हम्दो-लिल्लाह

हमारे घर अहमदाबादमें लौट आओ अल्लाह से दुआ है के सब मुसलमानो को अपने घर काबतुल्लाह की जियारत करनेका शर्फ नसीब करे और बक्षीस का परवाना नबी अे बरहकक की जाते बा-बरकत से नशीब हो आमीन... सुम्मा आमीन।

सियासत : आपको ता.27-2-2013 को राष्ट्रीय सोनीया गांधी ब्रिगेड कोंग्रेस का गुजरात कार्यकारणी में अहमदाबाद जील्ला का अध्यक्ष पद पर नियुकत किया गया है।

गाजी : सन ता.9-4-1987 के कौमी फसादात में सलाखोमें (जेल) बेगुना तकरीबन सवाचार साल तक रहे। इन दौरान सलाखों में नमाज बा जमात अदा करते और करवाते और लोगों (मुसलमान) को इल्मे दीन की बाते बताते थे और शिखाते थे। इसमें हिन्दुस्तानके कोमी फसादात आइपीसी की तमाम कलमे लगाइ गइ थीं। लेकीन अल्लाह तबारक व तआला के अहेसान और जद्दे करीम सरकार ख्वाजा दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे की दुआओसे 102 गवाह की गवाही देनेके बावजुद हम 28 मुसलमान बा-इजजत बरी हो गये। यह ता.26-3-1991 के रोज खास कोर्ट नडीआदने बाइजजत बरी कर दीये थे। बीरपुर, बालासिनोर, आणंद, नडीआद, वडोदरा सेन्ट्रल जेलोमें रख्खा गया था।

खल्के-मखलुक : आपका पैदाइशी माहोल नाना-हुजुर की जानीब से व वालिदे गिरामी के जानीब से खानकाही माहोल नसीब हुवा था। जीनमें दीनकी इशाअत का काम करना, मुरीदीन मोतकीदीन से मिलना जुलना इन्हे जाहेरी व बातेनी मसाइल को हल करना और महेमानो का खाना-पीना उठना-बेठना वगेरेह सामील था जो दिन व रात इस्लामी माहोलमें चला आ रहा है और चलता रहेगा इन्शाअल्लाह।

अल्लाह करे जोरे खिदमत और भी जियादा (आमीन)
येह उन्का करम हे, बात अब तक बनी हुइ हय
अल्लाह तआला करे जोरे खिदमत और भी जियादा

सय्यिद किसे कहते हैं ?

सय्यिद के मा'ना सरदार, शरीफ, बुजुर्ग, पेश्वा, रईसे कौम वगैरह हैं। अवलाद के लिए कुर्आनो हदीस में आल, जुर्रिय्यत और औलाद का लफ्ज इस्ते'माल हुवा है। मगर सरदार के लिए कुर्आनो हदीस में सय्यिद का लफ्ज है। हम सुन्नी तो हर वली को सरदार समझते हैं। तो तमाम वलियों के सरदार हजरत अली को सरदार या'नी सय्यिद क्यों न कहें ? सिर्फ और सिर्फ बीबी फातिमा की अवलाद को ही सय्यिद केहना चाहिए येह कानून बनाना गैर मुनासिब होगा। रसूले पाक सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम भी तो अवलादे फातिमा नहीं हैं तो क्या....? खुद बीबी फातिमा भी आले फातिमा नहीं हैं, तो क्या... ? बीबी फातिमा के अलावा हजरत अली की और भी बीबियां हैं बीबी फातिमा की आल और दीगर बीबियों की अवलाद में इम्तियाझ (फर्क और पहचान) रखने के लिए आले फातिमा को सय्यिद और दीगर बीबियों की औलाद को अलवी कहा जाता है, मगर याद रखिए अलवी को भी सय्यिद ही की तरह फझीलत हासिल है। दोनों वाजिबुल एहतिराम। दोनों पर जकातो सदका हराम, बल्कि बनी हाशिम या'नी हजरते अली, हजरते जा'फर बिन अली तालीब, हजरते अकील, हजरते अब्बास, हजरते हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहु तआला अन्हो सब की अवलाद को जकातो सदका खाना जाइझ नहीं। आले फातिमा न होने के बावजूद सय्यिद की तरह फझीलत का मिलना, उन की सियादत या'नी उनके सय्यिद होनेकी दलील है। इस्लामी तवारीख में बनी हाशिम रदियल्लाहु तआला तआला अन्हो को सय्यिद कहेना जाइजो मुनासिब समझा गया है। अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह तआला अलैह और साहिबे फतावाए हदीसिय्या के नजदीक तमाम अह्ले बैत की गिनती सादाते गिरामी में होती थी। और पहले जमाने में अलवी, जाफरी, अब्बासी पर भी लफ्जे सय्यिद का इस्तेमाल होता था। जैसा कि फतावाए हदीसिय्या में है (तरजुमा : बेशक शरीफ या'नी सय्यिद का इत्लाक तमामी अह्ले बैत पर होगा। अगरचे अब्बासी हो या अकीली हो, या अलवी हो, इमामे हसन और इमामे हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हो की अवलाद के साथ खास होना येह कोई शरई कानून नहीं। बल्कि एक उर्फी इस्तिलाह (लोक बोली) है और उर्फी इस्तिलाह की वजह से अलवी हजरात के सय्यिद होने से इन्कार नहीं किया जा सकता।

मवलाना अख्तर रजा खान अजहरी साहबने अपने एक फत्वे में खुद ही इर्शाद फरमाया है :

''हिन्दुस्तानमें सय्यिद से अवलादे झहरा मुराद लेते हैं मगर येह

तख्सीसे उर्फी (लोक बोली) है जिसके सबब अलवी वगैरह सय्यिद होनेसे न निकलेंगे। (ब हवाला : फतावा फैज़ुर रसूल, जिल्द : 2, सफहा : 584)

या'नी हजरत फातिमा जहरा की अवलाद होना शर्त नहीं, अलवी, अब्बासी, जाफरी, अकीली वगैरह का शुमार भी सय्यिदों में होता है। (नूरानी केलेन्डर अहमदआबाद जनवरी 1997, हिजरी 1417)

कुर्आन की रौशनी में अह्ले बैत की फजीलत

पहली आयत :

कुल ला अस्अलुकुम अलैहि अज्रन इल्लल म-वद्द-त फील-कुर्बा। वमंय यक-तरिफ ह-स-न-तन नज़िदलहू फीहा हुस्ना।

(सूरए शूरा, आयत : 23, पारह :25)

तरजुमा : केह दो मैं नहीं मांगता तुम से इस पर कोई अज्र मगर दोस्ती कराबतदारों की और जो कमा ले खूबी को बढा देंगे हम उसके लिए उस में खूबी को। (मआरिफुल कुर्आन)

दूसरी आयत :

वअ-लमू अन्नमा गनिम्तुम मिन शैइन फ इन्ना लिल्लाहि खुमुसहू वलिर रसूलि वलिज़िल कुर्बा वल यतामा वल मसाकीनि वब्निस सबील।

(पारह : 10, रुकूअ : 1)

तरजुमा : और जानो कि जो कुछ माले गनीमत हासिल किया तुमने अल्लाह का पांचवां हिस्सा है। और रसूल का और उनके कराबतमन्दों का और यतीमों का और मिस्कीनों का और मुसाफिरों का। (मआरिफुल कुर्आन)

तीसरी आयत :

इन्नमा युरीदुल्लाहु लि-युजहि-ब अन्कुमुर रिज-स अह्-लल बैति व युतह्-हि-रकुम तत्हीरा। (पारह : 22, रुकूअ : 1)

तरजुमा : येही चाहता है अल्लाह कि दूर कर दे तुम से हर नापाकी को, अय नबी के घरवालो। और पाक कर दे तुम्हें खूब। (मआरिफुल कुर्आन)

चौथी आयत :

ला उक्सिमु बिहाजल ब-लदि व अन-त हिल्लुम बिहाजल ब-लदि ववालिदिंव वमा व-लदा। (पारह : 30, रुकूअ : 15)

तरजुमा : नहीं, क्या मुझे कसम है इस शहर की कि तुम चलने फिरनेवाले हो इस शहर में और कसम है बाप की और उस की अवलाद की। (मआरिफुल कुर्आन)

पाँचवीं आयत :

फ-मन हाज्ज-क फीहि मिम बअ-दि मा जा-अ-क मि-नल इल्मि फकुल तआलव नदउ अब्नाअना व अब्नाअकुम वनिसा-अना व निसा-अकुम व अन्फु-सना व अन्फु-सकुम सुम-म नब्तहिल फ-नज-अल लअ-न-तल्लाहि अलल काज़िबीन । (पारह : 3, रुकूअ : 14)

तरजुमा : तो जिस ने भी हुज्जत निकाली उनके बारे में बाद इसके कि आ चुका तुम तक इल्म तो केह दो कि लो अब आ जाओ हम बुलाएं अपने बेटे और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें हमारे अपनों और की फिटकार झूटों पर । (मआरिफुल कुर्आन)

हदीस की रौशनी में फजाइले अह्ले बैत

कसम खुदाए पाक की, किसी मर्दे मुसलमान के दिल में ईमान दाखिल न होगा जब तक कि वोह, अय अह्ले बैत ! तुम को अल्लाह के लिए और मेरी रिश्तेदारी के खयाल से दोस्त न रख्खे । (इमाम अहमद/तिरमिजी/निसाई)

हजरते सिद्दीके अकबर रदियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि अय मुसलमानो ! नबिअे करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के एह्तिराम और अदब के हुकूक को, अह्ले बैत की खबरगीरी और महब्बत में अदा करने का खयाल रख्खो । (बुखारी शरीफ)

अय अब्दुल मुत्तलिब की अवलाद ! मैंने तुम्हारे लिए खुदावन्दे करीम से तीन बातों की दुआ की है कि :

1. अल्लाह तुम्हारे दिलों को मुसीबतों और तक्लीफोंमें साबित, मज्बूत और मुस्तकीम रख्खे ।
2 तुम्हारे अनपढों को खुदा इल्म नसीब करे । और तुम में से बेराहों को हिदायत नसीब फरमाए । और
3. तुम को सखी, बहादुर और रहम दिल बनाए । (तिब्रानी और हाकिम)

हर चीज के लिए नींव, पाया, और जड होती है । और इस्लाम की जड, बुनियाद अस्हाबे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लम और अह्ले बैत की मुहब्बत है ।

खुदावन्दे करीम ने मुझ से वा'दा फरमाया है कि मेरे अह्ले बैत में से जो लोग खुदा की तवहीद का और मेरी रिसालतो तब्लीग का इकरार करते होंगे उन्हें खुदा अजाब नहीं देगा । (हाकिम)

मेरी उम्मत में सब से पहले शफाअत, मैं अपने अह्ले बैत के लिए करुंगा। (तिब्रानी)

जो लोग हौजे कौसर पर पहले आएंगे, वोह मेरे अह्ले बैत होंगे। (दैलमी)

लोगों में सबसे अच्छे अरब लोग हैं और अरब में सबसे अच्छा कबीला कुरैश का है। और कुरैश में सबसे उम्दा कुंबा बनी हाशिम का है। (दैलमी)

हर किस्म का रिश्ता और कराबतदारी कियामत के दिन टूट कर मौकूफ हो जाएगा मगर मेरा रिश्ता और कराबतदारी बाकी रहेगी। (तिब्रानी)

हर किस्म का नस्बी और ससुराली रिश्ता कियामत के दिन मुन्कते हो जाएगा (या'नी कट जाएगा) सिवाए मेरी रिश्तेदारी और ससुराली रिश्ते के, येह बाकी रहेंगे।

हजरत अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु का एह्तिराम

हजरत सहाबा रिदवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन की नजरों में

एक बार हजरते अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुने एक मुआमले में हजरते उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु से इसरार किया और कहा,

''या अमीरुल मुअमिनीन। अगर हजरते मूसा अलैहिस्सलाम के चचा (बिल फर्ज) किसी मुआमले में आपके पास आते तो आप क्या करते ?'' कहा, ''मैं उनके साथ अच्छा सुलूक करता।'' हजरते अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुने फरमाया, ''तो फिर मैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लम का चचा हूं।'' कहा, अबुल फजल हैं। क्यों कि मुझे मा'लूम है कि वोह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लम को महबूब थे। और मैं सरदारे दो आलम हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लम की महब्बत को अपनी महब्बत पर तर्जीह (फजीलत) देता हूं। (तब्कात इब्ने सा'द)

हजरते अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लम के चचा) का जब इन्तिकाल हुवा तो बनी हाशिमने अलग और हजरत उस्मान गनी रदियल्लाहु तआला अन्हुने हुकूमत की तरफ से अलग, अन्सार की तमाम आबादियों में एलान कराया, जिस किसीने सुना चल खडा हुवा। क्या मर्द, क्या औरत, इस कसरत से लोग जमा हुए कि जनाजए मुबारक तक कोई शख्स पहुंचना चाहे तो बदिक्कत (मुश्किल से) पहुंच सकता था। खुद बनी हाशिम रदियल्लाहु तआला अन्हु और अवलादे

अब्दुल मुत्तलिबने मुबारक जनाजे को इस तरह घेर लिया था कि आखिर हजरत उस्मान गनी रदियल्लाहु तआला अन्हु को पुलिस के जरीए लोगों को हटाना पडा।

जब कभी अरब में कहत पडता तो हजरत उस्मान गनी रदियल्लाहु तआला अन्हु, हजरत अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु का वास्ता बनाकर बारिश की दुआ करते कि या इलाहल आलमीन। जब हम पर कहत आया करता था तो हम अपने नबिय्ये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लम को तेरी मुकद्दस बारगाह में बसीला लाया करते थे और बारिश बरस जाया करती थी। अब हम अपने नबी के बुजुर्ग चचा को तेरी बारगाहमें वसीला लाते हैं। तू अपना फज्ल कर और बारिश बरसा। चुनान्चे बारिश हो जाती। (बुखारी शरीफ)

हदीस की रौशनी में अह्ले बैत के चाहनेवालों को खुश खबर

(1) आयते करीमा : **''कुल ला अस्अलुकुम अलैहि अज्रन इल्लल म-वद्-त फिल कुर्बा''** की तफ्सीरमें हजरत अल्लामा इमाम राजी रहमतुल्लाह अलैह एक तवील हदीस नक्ल करते हैं कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, **''जो अह्ले बैत की महब्बत पर फौत हो (इन्तिकाल फरमाए) उसने शहादत की मौत पाई।''**

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, **''जो शख्स अह्ले बैत की महब्बत में फौत हो गया वोह मुकम्मल (संपूर्ण) ईमान के साथ फौत हो गया।''**

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, **''जो शख्स अह्ले बैत की महब्बत में फौत हुवा वोह ताइब (तौबा करके) फौत हुवा। उसे हजरत इजराईल अलैहिस्सलाम और मुन्कर नकीर जन्नत की बशारत (खुशखबरी) देते हैं।''**

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, **''आगाह हो जाओ जो शख्स अह्ले बैत की महब्बत में फौत हुवा उसे ऐसी इज्जत के साथ जन्नत की तरफ रवाना किया जाता है जैसे दुल्हन दूल्हे के घर भेजी जाती है।''**

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, **''जो शख्स अह्ले बैत की महब्बत में फौत हुवा उसकी कब्रमें जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाते हैं।''**

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने

फरमाया, "**आगाह हो जाओ, जो शख्स अहलेबैत की मोहब्बत में फौत हुवा, अल्लाह उसकी कब्रको रहमत के फरिश्तों कि जियारतगाह बना देता है।**"

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, "**खबरदार होकर सुन लो जो शख्स अह्ले बैत की महब्बत में फौत हुवा वोह मस्लके अह्ले सुन्नत वल जमाअत पर फौत हुवा।**" (तफ्सीरे कबीर जिल्द : 2, सफ्हा : 39)

(2) हजरते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि, रसूले मक्बूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, "मैदाने हश्रमें किसी बन्दे के कदम (अपनी जगह से) न हटेंगे जब तक कि उससे पूछ न लिया जाए कि उसने अपनी कींमती जिन्दगी किन कामों में गुजारी ? और अपने जिस्म को कैसे कैसे कामों में इस्ते'माल किया ? माल किस किस तरह से कमाया ? और कहां कहां खर्च किया ? और अह्ले बैत से महब्बत रखता था या नहीं ?" (तिब्रानी)

(3) हजरते अली रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि, रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, "तुममें सबसे जियादह साबित कदम रेहनेवाला वोह शख्स होगा जो मेरे अह्ले बैत और मेरे सहाबा की महब्बत में जियादह मजबूत, कवी और सख्त होगा यानी उन्हें बेहद चाहता होगा।" (दैलमी)

(4) हजरते उस्माने गनी रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि, रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, "जिस शख्स ने दुनिया में औलादे अब्दुल मुत्तलिब, बनी हाशिम से या मेरे अह्ले बैतसे कोई नेकी, अच्छा सुलूक या एहसान किया फिर वोह अह्ले बैत उसका बदला न दे सके तो कियामत के दिन उस सय्यिद की तरफ से मैं पूरा बदला अदा करूंगा।" (अबू नईम)

(5) हजरते अबू सईद रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि, रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, तीन चीजें ऐसी हैं जो शख्स उन चीजों की हिफाजत करेगा रब तआला उसकी दुनिया और दीन दोनों की हिफाजत फरमाएगा : (1) इस्लाम की इज्जत (2) मेरी इज्जत और (3) मेरे अह्ले बैत की इज्जत। (हाकिम, दैलमी)

अह्ले बैत के दुश्मनों को चेतावनी

(1) आयते करीमा : **''कुल ला अस्अलुकुम अलैहि अज्रन इल्लल म-वद्द-त फिल कुर्बा''** की तफ्सीरमें हजरत अल्लामा इमाम राजी रहमतुल्लाह तआला अलैहने एक तवील हदीस पेश की है जिसके आखिरमें लिखते हैं कि हजरत हबीबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, खबरदार होकर सुनलो जो शख्स अह्ले बैत के बुग्ज और अदावत पर मरा, वोह कियामत के दिन इस हालत में उठेगा कि उसकी दोनों आंखों के दरमियान लिख्खा होगा, अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद । और आगाह हो जाओ जो शख्स अह्ले बैत के बुग्ज और अदावत पर मरा, वोह जन्नत की खुश्बूसे महरुम कर दिया जाएगा । (तफ्सीरे कबीर जिल्द : 2, सफ्हा : 29)

(2) हजरते इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुसे रिवायत है कि, हजरत शम्सुद्दुहा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, अगर कोइ शख्स बैतुल्लाह शरीफ के एक गोशे और मकामे इब्राहीम के दरमियान चला जाए और नमाज पढे और रोजे रख्खे फिर वोह अह्ले बैत की दुश्मनी पर मर जाए तो वोह जहन्नम में जाएगा ।

(3) हजरते इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुसे रिवायत है कि, हजरत नूरुल हुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लमने फरमाया, बनी हाशिम और अन्सार से बुग्ज रखना कुफ्र है और अरब से कुफ्र रखना निफाक है । (तिब्रानी)

(4) हजरते जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि, हजरत खातिमुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही व-सल्लम ने खुत्बे में फरमाया, अय लोगो ! जो शख्स अहले बैते नुबुव्वत से या'नी सय्यिदों से बुग्जो अदावत रख्खे कियामत के दिन अल्लाह तआला उसे यहूदी बनाकर उठाएगा । (तिब्रानी)

मस्अला : हाशमी (सैयद) गनी (मालदार) और गैर मुस्लिम को जकात देना जाइज नहीं ।

मस्अला : बनी हाशिम को जकात नहीं दे शकते और कोइ दुसरा भी उन्को नहीं दे शकता । एक हाश्मी दुसरे हाश्मी को जकात नहीं दे शकता ।

बनी हाशिम यानी हजरत अली रदीयल्लाहो अन्हो हजरत जाफर रदीयल्लाहो अन्हो हजरत अकील रदीयल्लाहो अन्हो हजरत अब्बास रदीयल्लाहो अन्हो और हजरत हारिस बीन अबदुल मुत्तलिब रदीयल्लाहो अन्हो के औलाद (नसब) में से है।

अबुलहब की औलादे की गीनती बनी हाशिन में नहीं कि जायेगी (आलमगीरी)

मस्अला : कीसी की मा हासमी हो और बाप हासमी ना हुओ तो वो अवलाद हासेमी नहीं कहा जायेगा। क्युं की नसब बाप के खानदान से गीनी जाती है इस लीये यह शख्स को जकात दे शकते है. (तयबाह मासिक, 8 ओगष्ट 2011 रमजान हि.स.1432)

सय्यिदो, हझरते अली रदियल्लाहो तआला अन्हो, हजरत अब्बास रदीयल्लाहो अन्हो हजरत जाफर रदीयल्लाहो अन्हो हजरत अकील रदीयल्लाहो अन्हो हजरत हारिस रदीयल्लाहो अन्हो बीन अब्दुल मुत्तलिब की नसबवाले, खानदानवालो को जकात देना जाइज नहीं। इसके अलावा फीदीयह, कफफारा, फीतरा, सदकह वगेरे इन पाक बुजुर्गो के नसब वालो व मरातीबवालो को देना जाइज नहीं है। दुसरी कोइ और सोगात लिल्लाह, तोहफा, हदीया, सवाब की तौर देना दुरश्त है। (तयबाह मासिक सप्टेम्बर 2009 रमजान, हि.स.1430)

★★★★★

STOP PRESS

इस्लाम हिन्दुस्तान में

मालाबार (केरला) के दरीया के (साहिल) किनारे पर हझरत रसुले करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की हयाते मुबारक (जींदगीमें) ही इस्लाम की इशाअत (तब्लीग) का दौर इ.स. **629** में थ्रीशुर जिला के कोकुगल्लुर, केरला में हिन्दुस्तान की पहली मस्जिद चेरामन मस्जिद की तामीर हुई थी। जब की आप सरकारे मदीना राहते कल्बो शीना सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की वफात इ.स.**632** में हुई थी।

हझरत मालिक बिन दिनार रदियल्लाहो तआला अन्हो (मु.केसर कोड में आपका मझार है, मद्रास-तामिलनाडु) और हझरत हबीब बिन मालिक रहमतुल्लाहे अलयहे (ताबइ) के मझारात है।

तामिलनाडु, केरला, कर्णाटक, कोंकन और गुजरात के दरिया के इलाके में अरब ताजिरोंके झरिये भी इस्लाम की तब्लीग इशाअत हुइ थी।

मस्लके तसव्वुफ कैसे बना ?

सहाबा अे किराम रदीयल्लाहो अन्होने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलयहे व सल्लमकी खिदमत और हम-नशीनी से जो शर्फ हांसिल किया था और जिस कदर शर्फ अन्दाज हुअे थे और तजकियए नफ्सकी जिस मंझिल पर पहुंचे थे उसकी बशारत खुद कुरआने पाक ने दी और हम नशीनी-अे रसूले पाक के फैजान को इस तरह जाहिर फरमाया.

किताब व हिकमत ही की तालीम का यह असर था कि खुल्फाअे राशेदीन और दीगर हजराते सहाबामें से हर मुत्मइन्ने नफ्स और हर हस्ती पाकीजा किरदार और आला अखलाक से मुत्तसिफ थी और उनमें से हर एक कमालाते इनसानी के मुन्तहा को पहुंच गया था । **असहाबे सुफ्फामें से हर एक पाक दीन व पाक बीं तवक्कुल (तवक्कुल) व रजा का पैकर और सिदक व सफा का एक मुरक्कअ था, तारीखे इस्लाममें इन्हीं नफुसे कुदसिया को सुफियाए किराम का पहला गिरोह कहा जाता हैं.** यानी तसव्वुफे इस्लाम का पहला दोर इन्ही हजरात पर मुश्तमिल था. तसव्वुफ के बुनियादी उसूल या अरकाने तसव्वुफ इस्तेगराके इबादत (यादेहक) तौबा, जुहद, वरअफकर, तवफ्फुल और रजा, शरीअत में भी उसी अहमियत के हामिल हैं जिस तरह तरीकत में थे, और तसव्वुफ के इब्तेदाइ दोर में रहे.

सहाबा किराम और असहाबे सुफ्फामें से हर हस्ती इन्हीं औसाफे हमीदा और इजाइल की आइनादार थी हजरत अबुबकर सिद्दीक रदीयल्लाहो अन्होका इसार तारीखे इस्लाम आज भी फख्र से पेश करती है घरमें जिस कदर असासा (सामान) था वह तमाम पयगम्बरे आझम रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की खिदमतमें पेश कर दिया और जब रहमते आलम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम ने फरमाया कि अय सिद्दीक ! अहल व अयाल (घरवालों) के लिया क्या छोडा ? तो जवाब दिया उनके लिये अल्लाह और उसका रसूल सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम काफी हैं. इसी का नाम कमाले इसार और कमाले तवक्कुल हैं. आपके जुहद व तकवा और खोफ व रझा का यह हाल था और आपके फक्र इख्तयारी की सुरत यह थी कि आप हमेशा यह दुआ फरमाते.

(अे अल्लाह दुनिया को मेरे लिये फराख फरमा फिर मुजे उससे बचा) आपने अपनी झीन्दगीमें यह पाकीजा सिफात हुजुर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की हयाते तय्यबा से अखज किये थे. और मअरिफते खुदावंदी के तमाम असरार व रमुज आपहीसे सीखे थे. इसी बिना पर हजरत शेख अली

हिजवरी रहमतुल्लाह अलयहे हजरत अबुबकर सिदीक रदियल्लाहो अन्होको मस्लके तसव्वुफ का इमाम गरदानते हैं. और अक्सर सलासिले तसव्वुफ आप ही पर मुन्तहा होते हैं.

यही हाल हजरत उमर रदीयल्लाहो अन्हो का था. जुहद व फक्र की यह हालत थी कि लोगोंने आपके जिस्मे मुबारक पर कभी कोइ अैसा कपडा नहीं देखा जो पेंबन्द-दार न हो. दुनिया के बारेमें आपका मशहुर मकुला हैं. जिस घर की बुनियाद मुसीबतों पर रख्खी गइ हो उसका बगैर मुसीबतके होना मुहाल हैं.

सब्र व तवक्कुल में हजरत उस्माने गनी रदीयल्लाहो अन्हो आप अपनी मिसाल हैं. अझीम से अझीम पर मुसीबत पर भी आपने सब्र व तवक्कुल का दामन हाथ से नहीं छोडा, हजरत उस्मान रदीयल्लाहो अन्होके इसार व इन्फाक फी-सबीलिल्लाह का भी यही हाल था मदीना मुनव्वरामें बीरे (कुवा) उस्मान रदीयल्लाहो अन्हो आज भी आपके उस फझल की निशानी मौजुद हैं. आप बारह साल खलीफा रहे उस मुद्दत के आठ हजार दिरहम वझीफा-ओ-खिलाफत से आपने एक दिरहम भी लेना कबुल नहीं किया.

हजरत अली इब्ने अबितालिब रदीयल्लाहो अन्हो के इसार का यह आलम था कि शबे हिजरतमें अपनी जान का नजराना पेश करनेके लिये रातभर बिस्तरे रिसालत पर दराज रहे और आप सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की जिंदगी अजीज को अपनी जान पर मुकद्दम समझा. सादगी, फक्र रझा-ओ इलाही और मअरेफते इलाही में भी आप बडे मुमताझ थे. हुजुर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमके इस इरशादे गिरामीकी बुनियाद पर तसव्वुफ के बहुत से सलासिल आप पर मुन्तहा होते हैं. चुनान्चे सरखै अरबाबे तसव्वुफ हजरात जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलयहे फरमाते हैं, यानी उसूले मअरफत और आजमाइशमें हमारे मुर्शिद (शेख) अली मुर्तजा रदीयल्लाहो अन्हो हैं. हजरत अली रदीयल्लाहो अन्हो के इस्तिगफार व इबादतका यह आलम था की जब आप नमाज पढते तो आपको दुनिया की कुछ खबर नहीं रहती थी. हजरत सैयदना शेख अब्दुल कादिर रदियल्लाहो अन्हो गुनीयतुत्तालेबीन में सुरअे अलक की इन आयत की तफसीर इरशाद फरमाते हैं कि यह आयत हजरात आशरा-ओ मुबश्शिरा की शानमें नाजिल हुइ है और उस से मुराद हजरत अली मुर्तुजा रदीयल्लाहो अन्होकी जाते वाला हैं.

खुलफाअे राशेदीन और अशरअे मुबश्शिरा के बाद असहाबे सुफफा उन सिफाते सतुदा का मजहरे कामिल थे यह वह गरीब व नादार हजरात थे जो महज अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बतमें मक्का शरीफ से अपना घरबार छोडकर दयारे रसूलमें आ गये थे. रहनेका कहीं ठीकाना न था, रसूले खुदा

सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने मस्जिदे नबवी के करीब एक चबूतरा (सुफफा) तामीर करवा दिया था. (अल्लाह तआला के ओहसानसे संपादकने यहीं इसी जगह पर इ.स.2011 के उम्रमें व इ.स.2012 के अपनी अजवाजके साथ हजके मौके पर यहां नफल, सुन्नतें, फर्ज नमाजें अदा करनेका और दुरूदो सलाम पढ़नेका सर्फ मिला था.) उस चबुतरे पर इन हजरात के शब व रोज तंगदस्ती और उसरतमें बसर होते थे और यह हजरात इबादते इलाही और मुजाहिदओ नफसमें अपने शब व रोज बसर फरमाते थे. कुरआन-पाक और हदीष शरीफमें इनका जिक्र बडी तफसील से आया हैं. यही हजराते दोरे अव्वल या दोरे रिसालत व खिलाफते राशिदा के अरबाबे तसव्वुफ हैं. खास तोर पर सुफियाना खसाइलकी सही तस्वीर थे. यही सुफीयाना खसाइल व किरदार बादके अरबाबे हाल और असहाबे तसव्वुफ के लिये नमूनओ तकलीद बन गई. रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने इनके हालात का मुशाहिदा फरमानेके बाद इस तरह उनको खुश-खबरी और बशारत दी।

अय असहाबे सुफ्फा ! तुम्हें बशारत हो पस मेरी उम्मतमें से जो लोग इन सिफात से मुत्तसिफ होंगे. जिनसे तुम मुत्तसिफ हो और उन पर रजामन्दीसे काइम रहेंगे तो वह बेशक जन्नतमें मेरे हम नशीन होंगे. सरवरे काइनात सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी यही बशारत और हजरतवाला का यही इरशाद तसव्वुफ की अमली जिन्दगीका बुनियादी नुकता हैं. तसव्वुफ के दोर उरुज तक सुफीयाओ किराम की पाकीजा जिन्दगियां और उनके पाकीजा नुफूस हुजुर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमके इस इरशादे गिरामी को मुन्तहाओ मकसुद बनाओ रहे और यही बेसरो सामानी उनका सरमाय-ओ-जिन्दगानी था. फकर फखरी उनका ताजे शाहाना था.

दौरे ताबइन रदीयल्लाहो अन्हो अलैहिम अजमइन

तसव्वुफ के दौरे अव्वल के सिलसिलेमें मुख्तसरन अर्ज कर चुका. तसव्वुफ का दुसरा दौर ताबेइन का दौर है। यह दौर तकरीबन एकसो सालकी मुदत पर फैला हुआ है यानी 34 हि. से 150 हिजरी तक इस दौरे ताबइनमें असहाबे तसव्वुफमें दो बुझुर्ग हस्तियां बहुत नुमायां है । एक हजरत उवैस करनी रदियल्लाहो अन्हो (जिन्होंने सुलूकमें नजरिय-ओ अवैसी की बुनियाद खडी की) और दुसरी बुजुर्ग हस्ती हजरत हसन बशरी रदीयल्लाहो अन्हो की है। हजरत उवैश करनी रदीयल्लाहो अन्हो करनके रहनेवाले थे और अहदे रिसालत मआब सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम में ब-हयात थे। लेकिन शर्फे दीदार हासिल न कर शके। मुहब्बते रसूल का यह आलम था कि रसूले अकरम

सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम का सलाम पुर अजमत हजरत उमर रदीयल्लाहो अन्हो ने हज के मौके पर आपको पहुंचाया । आपके मुतअल्लिक बहुत से वाकियात तारीखे तसव्वुफ में मौजुद है. मुहब्बते रसूल और यादे-इलाहीमें आपकी वारफतगी का यह आलम था कि आप जंगलों और वीरानोंमें फिरते थे जब लोग रोते थे तब आप हंसते थे और जब यह लोग हंसते थे तो आप रोने लगते थे । आप मुद्दतों तक बादीया गर्दी करनेके बाद कुफा चले गओ और वहां हजरत अली रदीयल्लाहो अन्हो की फोज में शामिल हो गये 37 हिजरी में जंगे सिफफीनमें जामे शहादत नौश किया । (2) दो वे हजरत हसन बशरी रदीयल्लाहो अन्हो का सही साले पैदाईश तो तहकीक नहीं हो सका अलबत्ता आपका साले वफात 110 हिजरी मुताबिक 738 इ.स. है । आप मशहुर ताबइन से हैं । आपको भी बकसरत सहाबाओ किराम रदीयल्लाहो अन्हो अलैहिम अजमइन से फैजे मुहब्बत हांसिल हुआ । जोहद, रअवसब्र और ख्शीयते इलाही आपके खास औसाफ थे । खुजुअ व खुशुअ का यह आलम था कि आप फरमाते थे जिस नमाजमें दिल हाजिर न हो वह नमाज अजाबसे जयादा करीब है । ताबइनमें आपके अलावा औरभी सुफीयाओ किराम मौजुद थे लेकिन तारिखी अेतबारसे मजकुरा हजरात जयादा नुमायां शख्शियत के मालिक हैं. तसव्वुफ के बहुत से सलासिल आपसे शुरु होते हैं ।

दौरे तबअे-ताबेइन

तबअे-ताबेइनमें जो सुफियाओ किराम गुजरे हैं उनका दौर 151 हिजरी सन मुताबीक 768 इ.स. से 350 मुताबिक 961 इ.स. मुतय्यन किया गया है । इस दो सो सदसाला दौर में इस्लामी तसव्वुफ को बहुत फरोग हांसिल हुआ । यहां तफसील की गुंजाइश नहीं मुख्तसरन यह की यह दौरे तसव्वुफ का दौरे जरीं कहलाता है । इस दौर की नुमायां खुसूसियत यह है कि जुहहाद, अब्बाद और नस्साक हजरात को सुफी के लकब से याद किया जाने लगा । **लफ्झ सुफी का सबसे पहले इस्तेमाल (सुफी) अबुल हाशिम रहमतुल्लाह अलयहे (मुतवफ्फा** 151 **हिजरी मुताबीक** 738 **इ.स.) से हुआ । वह दुनिया-अे तसव्वुफमें सबसे पहले सुफी से मुखातब किअे गअे** । हजरत अबुहाशिम रहमतुल्लाह अलयहे कुफा के रहनेवाले थे लेकिन उनका इन्तेकाल शाममें हुआ ।

मस्जीदें उस दोरमें खुनरेजी और सफफाकी की आमाजगाह बन गइ थी । सुकुने कल्ब और खुजुअ व खुशुअ के साथ इन मस्जीदोमें जीक्रे इलाही मुम्कीन न था । इस लिये अबुल हाशिम कुफी ने शाम के मामक रमला में इसाइयों के सौमअ की तरह **रुहानी तरबियत और जीक्रे इलाही के लिये सबसे**

पहेले खानकाह तामीर कराइ । दुनिया-अे तसव्वुफमें यह सबसे पहली खानकाह है । तबअ-ताबेइन के दौर में नजरी और अमली तसव्वुफमें बहुतसी तबदीलियां वजुदमें आइ । तर्के दुनिया का मफहुम अहदे रिसालत मआब सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम में सिर्फ इस कदर था कि इस के साथ यह हुकम भी मौजुद था कि यानी दुनिया आखिरतकी खेती है गोया दस्त बकार दिल-ब-यार लेकिन तबअ-ताबेइन के दोर में तर्के दुनियाका मफहुम यक्सर बदल गया । बादिया पैमाई सहरा नशीनी और तर्के तअल्लुकातका नाम तर्क दुनिया रख्खा गया और इसका सबब वही मुल्की इन्तेशार और सियासी अबतरी था ।

हुब्बे इलाही का नजरिया पहले बला वास्ता था यानी इबेबाअे रसूल सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम को इलाही के हुसूल का जरिया समजा जाता था जैसा की इरशादे रब्बानी है ।

(आप फरमा दीजीये कि अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखना चाहते हो तो तुम मेरी इत्तेबाअ और पैरवी करो अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा) सब पर नजरिया बिला वास्ता हो गया । अब बजरिय-अे-जिक्र व मुराकबा अल्लाह तआलासे मुहब्बत की जाने लगी । हजरत राबेया अदविया (मुतवफ्फा 85 हिजरी मुताबीक 801 इ.स.) से यह नजरिया वजुदमें आया । यह मोहतरमा भी बसरा की रहनेवाली थी । हजरत जुन्नुंन मिसरी रहमतुल्लाह अलयहे (मुतवफ्फा 245 हि.स. मुताबिक 859 इ.स.) ने नजरिया वहदतुल वजुद को पेश किया । हजरत बायजीद बुस्तामी रदियल्लाहो अन्हो ने (मुतवफ्फा 261 हिजरी मुताबीक 875 इ.स.) तबअ-ताबेइन के दोरके मशाइख अेझाम मे शुमार होते हैं । हजरत जुनैद बगदादी रदियल्लाहो तआला अन्हो (मुतवफ्फा 297 हिजरी मुताबीक 910 इ.स.) तबअ-ताबेइनमें बडे पाया के बुजुर्ग थे । हजरत दाता गंज बख्श इनको शैखुल-मशाइख तरीकतमें और इमामुल अइम्मा शरीअतमें तस्लीम करते हैं । आप भी नजरिय-अे-वहदतुल वजुद के जबरदस्त हमनवा थे । हुसैन बिन मनसुर हल्लाज (मुतवफ्फा 309 हिजरी मुताबीक 932 इ.स.) यह फारस के शहर बैजा के रहनेवाले थे । मुद्दतों मुर्शीदकी तलाशमें सर गरदां रहे । आखिरकार फीरते-फीरते बगदाद पहुंचे और हजरत जुनैद बगदादी रदियल्लाहो तआला अन्हो के मुरीद हुअे । नजरिय-अे वहदतुल वजुदमें तवग्गुल और इन्तेहा पसन्दी की बदौलत इनको 936 इ.स.में सुली पर चढा दिया गया । हजरत अबुबक्र शिबली मुतवफ्फा 334 हिजरी मुताबीक 949 इ.स.) तबअ-ताबेइन के दोर के मशहुर सुफी और सरखैले सलासिले तरीकत हैं । आप भी हजरत जुनैद बगदादी रदियल्लाहो

तआला अन्हो के मुरीद थे और नजरिये-ओ-वहदतुल वजुद के जबरदस्त और अजीम दाइ थे। दौरे तबओ-ताबेइन में इन मशाहीर सुफीयाओ किराम के अलावा और दिगर हजरात और इन हजरात के मुरीदेन अतराफ व अकनाफ मुमालिके इस्लामीयां में फैले हुओ तालीमे तरीकत और उसकी इशाअत में मस्रूफ हैं।

अब में हिन्दुस्तानमें इस वकत मौजुद मशाइखे सिलसिला जो इस वकत अपनी रुहानी तरीकेकार खिदमत अंजाम देते हैं इनकी नमाजनी देने की फेहरिस्त लीखता हुं। हालकी दुनियाके हर गोशे गोशेमें तकरीबन 173 सिलसिलोंके नामसे खिदमत इस्लाम की अन्झाम देते हैं। खैर, हम हिन्दके बडे सिलसिलों की फेहरिस्त देखें।

(1) सिल-सिलओ इदरसिया (सिलसिलओ कुब्रविय्याकी यमन शाख)

(2) जलालिया बुखारिया (सिलसिलओ सुहरवर्दिया की शाख उंचमें मख्दुम जहांनीया रहमतुल्लाह अलयहे से)

(3) गोसिया (शत्तारिय्या सिलसिलेकी हिन्दुस्तानकी शाख)

(4) कादिरिय्या (5) मलामतिय्या (6) ख्वाजगान-नकशबन्दिय्या (7) कब्रविय्या (8) मदारिय्या (हिन्दुस्तान) (9) मग्रबिय्या (10) चिश्तिय्या (11) नासिरिय्या (शाझलिय्याकी शाख) (12) रसूलशाहिय्या (गुजरात) (13) शत्तारिय्या (14) सुहरवर्दिय्या (15) तयकूरिय्या.

लेकिन हम इन सिलसिलों का तजकेरा करेंगे। या लीख्खेगें तो किताब मोटी हो जानेका अंदेशा है। इस लिये हम इन्ही सिलसिलों को लिख्खे जो आज मशहुर और मकबुल है। जीनका तजकेरा नीचे लीख रहा हुं।

(1) कादिरिय्या सिलसिलाह :

कादरिय्या सिलसिलेकी तन्जीम हजरत शेख सैयद अब्दुलकादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलयहे की वफातके करीब 50 साल बाद हुइ हिन्दुस्तानमें सिलसिलओ कादरिय्या के सबसे पहले बुजुर्ग हजरत शेख नुरुद्दीन मुबारक गजनवी है। (अख्बारुल अख्यार के मुताबीक आप हजरत शेख शहाबुद्दीन सुहरवर्दी अल मुतवफ की सन 633 हिजरी) के खलीफा थे। सुहरवर्दी सिलसिलओ कादरिय्यामें हुजुर गौसे पाक रदियल्लाहो तआला अन्हो के खलीफा और सोहबत याफता थे। हजरत अब्दुल कादिर जीलानी के खानदान और नसबवाला शान से तअल्लुक रखनेवाले बुजुर्गान बगर्झे इशाअते इस्लामी और तरवीजे रुहानिय्यत हिन्दो-सिंध के इलाके में नववीं सदी हिजरी से आते रहे है। उन्हीं में मश्हूर कादिरी बुजुर्ग हजरत सैयद मुहम्मद गौष कादिरी हल्बी गीलानी सन 887 हिजरीमें हिन्दुस्तान तशरीफ लाओ और उच में

मुकीम हुअे। इसी सिलसिलेमें एक दुसरे बुजुर्ग सय्यिद बहाउद्दीन गीलानी बहावल शेर कलंदर का नाम भी आता है। उन्होने सन 973 हिजरी में वफात पाइ और **इस सिलसिलेके सबसे पहेले गुजरातमें तशरीफ लानेवाले शेख शम्सुद्दीन नागोरी रहमतुल्लाह अलयहे आये।** आप हजरत शेख इस्लाईल बीन इब्राहीम जबरुतीसे फैझ हांसील कीया था और वही फैझो बरकातसे गुजरातकी शरझमी पर कादिरिय्या सिलसिलेसे अवाम को फायदा पहोंचाया था। इनके बाद बहादुरशाह बादशाहने शेख जमाल बीन अलहुसैन बगदादी (रहमतुल्लाह अलयहे) को गुजरात बुलाये। आपकी वफात 971 हि.स. में हुई थी। इनके बाद आपके बेटे शेख यतीमुल्लाह वफात 1009 हिजरी में हुई। वे भी बडे पाअेके मशाइख थे। यही सिलसिले शेख अब्दुलफत्ताह असकरी रहेमतुल्लाह अलयहे जो जय्यद शेखे तरीकत व बाअमल आलीम थे। आप अहमदआबाद में रहते थे और एक अझीम कादरिय्या सिलसिलेके नामवर बुजुर्गबाला हजरत सैयद अब्दुलसमद खुदानुमा भी जलवागर थे। इनका मजार अहमद आबाद के मशहुर तीन दरवाजा के करीब अेडवान्स सिनेमाकी गलीमें है। बंदे संपादकने कइ बार वहां नमाज व फातेहा-ख्वानी की है। और इनके सजजादानशीन जनाब पीरजादा हकीम मोहंमद उस्मानमीयां साहब हैं जो टोपीवाला पोल कालुपुरमें रहते हैं। इनके दोनो बेटे जनाब हाजी इब्राहीम साहब, जनाब हाजी इस्माइलभाई साहब मेरे अजीज दोस्त है। हजरत सैयद अब्दुलस्समद खुदानुमां की वफात ही.स.1109 में हुई और आपका उर्स 5 जमादियुल अव्वलमें आता है।

(2) सिलसिल-ए ख्वाजगान-सिलसिल-ए नकशबंद:

इस सिलसिले का कियाम सबसे पहेले तुर्कस्तान में हुवा। येह अपनी तालीम महब्बतके बाइस उनकी इजतिमाइय्यत का अहम जुझव बन गया. ख्वाजा अहमद लीसवी (अलमुत-वफफा इ.स.1166) इस सिलसिले के सरखील हैं। जिन्हें लोग ख्वाजा अता केहते थे। उनके बाद ख्वाजा अब्दुल खालिक गजदवानी (अलमुतवफफा इ.स.1179) के झरीअे उस सिलसिलेके रुहानी निझाम को इस्तेहकाम मिला। आपकी वफात 12 रबी.अव्वल 575 हि.स. में हुई। मझार मुबारक गजदवान में है। उनके बाद हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नकशबंद रहमतुल्लाह अलयहे (पैदाइश 4 मुहर्रम हि.स.718 में हुइ) आपके सादाते हसनी सैयद हैं। उम्र शरीफ 73 साल पूरे हुवे पीर के रोज 3 रबीउल अव्वलको हिजरी 791/इ.स.1388 वफात हुइ) मजार मुबारक बुखारा

शरीफ (रशिया) में है । आपकी झाते बा-बरकात थी जिसकी वजहसे उस सिलसिलेको कबुलियते आम और शोहरते ताम मिली. उनकी बे पनाह जिद्दोजहद की वजहसेही आपके बाद इस सिलसिलेका नाम सिलसिल-ए नकशबंदीय्या के तौर पर मश्हूर और मकबूल हो गया । अकबर बादशाहके अहदमें हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाहने नकशबन्दी सिलसिलेको हिन्दुस्तानमें इस्तेहकाम बख्शा । उनके हल्क-ओ मुरीदीनमेंसे एक बडी ही नामवर शख्शियत हजरत शेख अहमद सरहिन्दी मुजद्दिदी अल्फेसानी हैं । इस सिलसिलेकी तरवीजो इशाअत में आपने बडा किर्दार अदा किया है । तेहरीके तसव्वुफमें मुजद्दिद साहबकी एक बडी खिदमत येह है के उन्होने शरीअत और सुन्नतकी इत्तेबाअ पर झोर देकर रस्मी तौर पर दाखिल हो जानेवाले गैर-इस्लामी अनासिरको इस्लामी फिक्रसे बिल्कुल अलाहिदा कर दिया । और तेहरीके तसव्वुफमें फिरसे नई जान डाल दी । इस सिलसिलेके मश्हुर बुजुर्गोंमें मसलन ख्वाजा मुहम्मद मा'सुम खवाजा सैफुद्दीन, शनाह वलीयुल्लाह, मिर्झा मझहरे जाने जानां, और शाह गुलाम अलीने सिलसिलेकी तरवीजो इशाअतमें बेहद कामयाब कोशिश की । **ये हुई हिन्दुस्तानकी तारीख गुजरातमें नकशबंदी सिलसिले की बुनियाद सबसे पहले शेख हजरत नुरुद्दीन अबुलफत्ताह शीराजी रहेमतुल्लाह अलयहे के तुफैल हुई** । आप मीर सैयद शरीफ के खलीफा थे । इसके बाद कइ मुददतोंके बाद ख्वाजा जमालुद्दीन ख्वारजमीं आओ । और आप सुरत शहेरमें जल्वागर रहे । आपकी वफात 1066 हिजरीमें सुरतमें हुइ यहीं आपका मजार है । आपके बाद आपकी औलादमें ख्वाजा अबुल हसन, ख्वाजा सैयद महेमूद, ख्वाजा नुरुलहसन ख्वाजा फैजलहसन ख्वाजा नुरुल अअला वगैरा कइ मुद्दतों तक इल्मे-इलाही और इल्मे नबवी के रोशन मीनारे रहे । और हजारों लोगोंने आपके फैझो बरकातसे फायदा हांसील कीया । इनमें ख्वाजा मोहंमद देहदारी रहमतुल्लाह अलयहे ख्वाजा जमालुद्दीन (ख्वाजा दाना) रहमतुल्लाह अलयहे ने हजरत शेख मवलाना अब्दुलरहमान जामीसे फैझ लीया था । आप हमझमाना थे आपके हाथ पर मुंकाम कामरेज जील्ला सुरतका मशहुर राजा तानसेनने इस्लाम कबुल कीया था जो वो कामरेज का आखीर राजा था । इस्लाम लानेके बाद बख्तयार नाम से मशहूर हुवे । इसी राजा तानसेन उर्फ बख्तयार ने ख्वाजा मुहम्मद देहदार का रोजा व गुंबद बनवाया था । हजत ख्वाजा देहदार रहमतुल्लाह अलयहे की वफात 19 मुहर्रम हि.स.1016 इ.स.1607 में हुई । आपका मजार सुरत मु.हरीपुरा इलाकेमें है । (बंदे संपादकको कइ बार इस बारगाहमें जानेका मौका मिला है व रुहानी गिझासे शैराब हुवा)

(3) सिलसिल-ए शाझलिय्या :

ये सिलसिला शेख अबुल हसन अली शाझली बिन अब्दुल्लाह शरीफ हुसैनी से मन्सुब है जो अस्कन्दरियह के रहेनेवाले थे। आपकी विलादत सन हि.५५६ में मराकशमें हुइ थी इसी वजहसे आपको मगरिबी भी लिखते हैं। आप के आबाअ का नशब हजरत इमामे हसन बीन अलीमुर्तझा से जा मिलता है। आप अपने मुरिदोंको किसी भी मीठे चश्मेसे प्यास बुजानेसे मना नहीं फरमाते थे। और उनसे कहते थे के किसी भी वलीउल्लाह की खिदमतमें हाजिर होकर फैझ पानेकी आपको मेरी तरफसे इजाझत है तरीका अलग है में सनदो शजरे का काइल नहीं।

(4) सिलसिल-ए कुब्रविय्या :

इस सिलसिलेके बानी हजरत शेख नजमुद्दीन कुब्रा (अल मुतवफफा इ.स.1221) थे उनका निझामे इस्लाहो तरबियत गैर मामुली तौर पर मुअस्सर था। ये तरीका कुछ अैसा हयात बख्श था के वो जिस पर तवजजोह फरमा देते पथ्थर भी होता आइना बन जाता। इस बिना पर उनको "शेख वली तराश" (यानी वली बनानेवाला बुजुर्ग) कहा जाता था। हिन्दुस्तानमें तरीके सुलूकसे मु-त-अल्लिक दो तसानीफ बहोत मश्हुर है। आपने मंगोलों का (मुगलों) मुकाबला करते हुअे शहादत हांसिल की। लेकीन आपके मुरीदैन ने उन्हीं मंगौलोमें अैसा काम कीया के वौह गिरोह दर गिरोह मुसलमान होते गअे। उनमें शेख मुजदिदुद्दीन बगदादी (अल मुतवफफा इ.स.1219) शेख सइदुद्दीन हमवी (अलमुतवफफा इ.स.1252) शेख रझियुद्दीन अली लाला (अलमुतवफफा इ.स.1244) शेख सैफुद्दीन बाखरझी (अलमुतवफफा इ.स.1260) और शेख बहाउद्दीन वालीदे मौलाना जमालुद्दीन रुमी के नाम खास हैं। ख्वाजा फरीदुद्दीन अत्तार, शैख मुजदिदुद्दीन बगदादी के मुरीद थे। कुब्रविय्या सिलसिले की बादमें बहोतसी शाखें बन गइ। मसलन फिरदोसिया, हम्मादिय्या, अशरफिय्या वगैरह शैख सैफुद्दीन बाखरझी के मुरीद शैख बदरुद्दीन समरकन्दीने फिरदौसी सिलसिलेको हिन्दुस्तानमें रुशनाश कराया। बादमें येही तीनों सिलसिले सय्यदि अली हम्दानी शेख शरफुद्दीन यह्या मुनीरी (अल मुत-वफफा हिजरी 782 इ.स.1380) और सय्यिद मख्दुम अशरफ जहांगीर सिम्नानी (हिजरी 808 इ.स.1380) के नाम से मन्सुब होकर खुब फेले-फुले। सिलसिल-ए फिरदोशीय्या के मुत-अल्लिक अहेले तसव्वुफकी दो राअें मिलती हैं। बाझ उसे शेख नजमुद्दीन कुब्रा से मन्सुब करके कुब्रविय्यामें

दाखिल करते है । तो बाझ सुहरवर्दिय्या बताते हैं । सिलसिल-ए फिरदोसिय्याका आगाझ देहली से हुवा था लेकीन उसकी नश्वो नुमा, शौहरत और वुस्अत बिहारके हिस्सेमें आई । देवरहमें खानदाने सादात अब्बासियानके दरम्यान भी कादरिय्या, चिश्तीय्या, सत्तारिय्या के अलावह खास तौर पर सिलसिल-ए फिरदोसिया भी मर्कझे तवजजोह रहा । और काझी शाह मुहम्मद अब्बास देवरवी के झरीअे उसे बडा फरोग हांसिल हुवा ।

(5) सिलसिल-ए चिश्तिय्या :

हिन्दुस्तान में सुफीया-ए-किराम का आना चोथी सदी के आखिर से शुरु हो चुका था । मुद्दतों तक येह सिलसिला बराबर जारी रहा । हजरत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती हसन संजरी अजमेरी रहमतुल्लाह अलयहे की शख्सिय्यत कामिल और झमाना साझ शख्शियत थी । आपने दावतो तब्लीग और इर्शाद के लिये अजमेर को अपना ठिकाना बनाया । आप सिलसिल-ए-चिश्तिय्या के बानियों में शुमार किया जाता हय । सन 588 हिजरी में अजमेर में राजा पथुरा (पृथ्वीराज चौहान) की हुकुमत थी । ख्वाजा गरीब नवाझ को बडी मुश्कीलोंका सामना करना पडा था । मगर येह मर्दे मुझाहीद कोइ आम आदमी न था ये अल्लाह तआला का मकबुल और अल्लाह तआला के रसूले बरहक का दिलका टुकडा था । जो सन्जर में पैदा हुवा और शैखे बा कमाल हजरत ख्वाजा उस्मान हारुनी की पाक सोहबतका असर रखनेवाले गरीब नवाज के अझमे मुअझझम का कमाल था के आपने उस इलाकेमें नुमायां कामयाबी हांसिल की । हजरत ख्वाजा गरीब नवाज के अलावह और भी चिश्ति बुजुर्ग उस झमानेमें हिन्दुस्तानमें आअे । मसलन तुर्कस्तानसे हजरत मुहम्मद तुर्क नारनोली हिन्दुस्तान आअे । और नारनौलमें सुकुनत पझीर हुअे । वही सन 642 हिजरी में जामे शहादत नौश फरमाया । हजरत ख्वाजा गरीब नवाज ने सामने ही अपने चहीते मुरीद ख्वाजा कुत्बुद्दीन बख्तियार काकी को सिलसिले की नशरो इशाअत के लिये मुकर्रर कर दिया था । उनके झरीअे शुमाली हिन्दुस्तानमें चिश्तिया सिलसिले को जबरदस्त उरुज हांसिल हुआ । सिलसिले की इशाअत के त-अल्लुकसे शेख कुत्बुद्दीन बख्तियार काकी के बाद शैख हमीदुद्दीन सुफी सुवाली नागौरी का नाम काफी मशहुर है । शैख नागोरी साहिबे तस्नीफ बुजुर्ग थे । आपकी किताब "उसूलुत तरीकत" काफी मशहुर हुई । आपने सन 672 हिजरी मुताबीक सन 1273 इ.स. विसाल फरमाया । नागोर राजस्थानमें आपका आस्ताना फैजो बरकतका सेन्टर है । हजरत कुत्बुद्दीन बख्तियार काकी के बहोत सारे खुल्फा हुअे लेकिन हजरत फरीदुद्दीन मसउद गंजशकर

और शैख बदरुद्दीन गझनवी ने सिलसिलेकी तरवीज और इशाअत में काफी शोहरत हांसिल की है। बाबा फरीद गंजशकर ने शुरुआतमें दिल्हीमें काफी जद्दोजहद की, उसके बाद आप हांसी गअे और अजोधनमें मुकीम हो गअे। जिसकी वजहसे चिश्तिया सिलसिलेकी काफी इशाअत हुइ। आपका नाम खास तौर से पुरे हिन्दुस्तानमें और सुमाली हिन्दमें मशहुर हो गया था। लोग दुर दुर से आपसे हिदायत हांसिल करने को हाजिर होते। इन्ही में हजरत ख्वाजा निझामुद्दीन अवलिया रहमतुल्लाह अलयहे भी शामिल थे। बाबा फरीदने मजबूत निझामे इस्लाहो तरबियत के जरीये मुरीदीन का अैसा गिरोह तैयार किया जिसने चिश्तिया सिलसिलेकी खानकाहोंसे मुल्क के गोशे गोशे को आबाद कर दिया। आपके खुल्फामें शैख जमालुद्दीन हांसवी, शैख बदरुद्दीन इस्हाक, शैख निझामुद्दीन अवलिया, शैख अली अहमद साबिर कलयरी और शैख आरिफ जैसी शख्शियतें शामिल हैं। इन सबमें निझामुद्दीन अवलिया इस बातमें सबसे अलग नझर आते हैं के उनके झरीअे ही चिश्तिया सिलसिले को बहोत झियादह फरोग हांसिल हुआ। देहलीमें उनकी खानकाह पर आधी सदीसे झियादह तक लोगों का हुजूम लगा रहेता था। और रुश्दो हिदायतके दरवाजे सब पर खुले रेहते थे। आपने अपने बहोत सारे खुलफा को पुरे हिन्दुस्तानमें दुर दुर तक सिलसिले की इशाअत की गरज से भेजा था। हजरत निझामुद्दीन अवलिया रहमतुल्लाह अलयहे के बाद हजरत शैख नशीरुद्दीन चिराग देहली ने इस सिलसिलेको वुस्अत और इस्तेहकाम बख्शा। आपने देहली के नामुनासिब हालातमें भी सिलसिलेकी खूब खूब इशाअत की। तुराब नामी कलंदरने आप पर छुरे से हमला कर दीया। उस हादसे के तीन साल बाद सन 757 हीजरी मुताबीक सन 1356 इ.स. में आपने विशाल फरमाया।

शैख सिराजुद्दीन अल मारुफ ब अखी सिराजने बंगाल की झमीन पर चिश्तिया सिलसिलेको आगे बढानेमें बडी महेनत की है। आपके सबसे झियादह मशहुर खलीफा शैख अलाउल हकक बिन अस्अद पन्डवी बंगाली थे। उन्होने पंडवा में एक बडी खानकाह काइम की और सिलसिलेकी तालीमात को आम करने लगे। उनके बाद हजरत नुर कुत्बे आलम पन्डवी और मीर सैयद अशरफ जहांगीर सिमनानीने इस सिलसिलेको बहोत फरोग दिया।

हजरत शैख बुर्हानुद्दीन गरीबने सरजमीने दककनमें सिलसिलेकी इशाअत और उसकी तालीम को रिवाज देनेमें बहोत महेनत की है। आप अपने मुरीदोंकी इस्लाह और तरबिय्यत पर बतोरे खास महेनत करते थे। उनके मुरीद शैख जैनुद्दीन ने भी सिलसिलेको फैलाया। उसी झमानेमें इसी सिलसिलेके एक और मश्हुर बुजुर्ग हजरत सैयद मुहम्मद हुसैनी बन्दह नवाझ

गेसूदराज भी दककन पहोंचे । आप की झातसे दककनमें चिश्तिया सिलसिलेको बहोत फरोग हांसिल हुवा है । गुलबर्गा (कर्णाटक) में आपने एक अझीमुश्शान खानकाह काइम की । आपने बहोत सी किताबें लीखीं हैं । आप आला दर्जे के शारेह थे । आपके खुल्फा में शाह यदुल्लाह, शैख अलाउद्दीन ग्वालियरी, शैख मुहम्मद अकबर हुसैनी, सय्यिद युसुफ हुसैनी, शैख अबुल फतह कुरैशी, सय्यिद सदुद्दीन अवधी, शैख फखरुद्दीन बगदादी, शैख झादह शहाबुद्दीन और काझी मुहम्मद सुलेमान खास तौर से मशहुर हुओ । हजरत गेसू दराज के खुल्फाओ मुरीदीन और उनकी तस्नीफो तालीफ दोनोंने जबरदस्त काम किया और तसव्वुफके खयालात को आमो खास सब तक पहोंचाया ।

गुजरातमें चिश्तिया सिलसिलेका काम हजरत कुत्बुद्दीन बख्तियार काकी और निझामुद्दीन अवलीया के अहदसे कुछ न कुछ होता रहा लेकिन बाकायदा तौर पर नशरो इशाअतका मा'रेका अल्लामा कमालुद्दीन, शैख याकुब, शैख कबीरुद्दीन नागोरी, और सय्यिद कमालुद्दीन कझबीनी ने अंजाम दिया । अल्लामा कमालुद्दीन (अल मुतवफफा हिजरी 757) हजरत चिराग देहलवी के खलीफा और भान्जे थे । उनकी अवलादमें बराबर बा-फैज और बा सलाहिय्यत बुजुर्ग पैदा होते रहे । जिनसे चिश्तिया सिलसिला गुजरातमें रु-ब-तरककी रहा । शैख याकुब (अलमुतवफफा हिजरी 757 इ.स.1395) मौलाना ख्वाजगी के फरजंद और शैख जैनुद्दीन दोलाता बादी के खलीफा थे । शैख कबीरुद्दीन नागोरी (अल मुतवफफा हिजरी 858 इ.स.1454) हजरत शैख हमीदुद्दीन सुफी सुवाली नागोरी के पोते थे । हजरत अल्लामा कमालुद्दीन देहलवी की अवलादसे लंबे अरसे तक बुजुर्ग पेदा होते रहे । ये सिलसिला १२मी सदी तक जारी रहा आपसे गुजरातके लोग फैझ व बरकतें पाते रहे, लेकिन कहेना न चाहिये की एक वकत पे सिलसिला खत्म हो गया था । जब एक बुजुर्गे शयख कलीमुल्लाह जहां आबादी रहे थे । सिलसिले और खानदानके बुझुर्ग हजरत शयख यहया बीन महंमद गुजराती से (वफात 1101 हिजरी) रुहानी बरकतें हांसिल करने देहली गये और फीर हिन्दभरमें ये फैझो बरकतोंका सिलसिला जारी हुआ । हजरत मवलाना फखरुद्दीन दहेलवी यही सिलसिले के बुजुर्ग थे । शयख याकुब बीन खाजगी वफात हिजरी 798 फुसुसोल हेकम कीताब पढनेमें खास कमाल रखते थे । आपकी पट्टन में खानकाह थी आपसे हजरत सय्यिद मोहम्मद कुत्बे आलम अब्दुल्लाह बुखारी रहमतुल्लाह अलयहे फैज हांसिल कीया था । शैख रुकनुद्दीन मवदुद (वफात सन हिजरी 842) शैख फरीदुद्दीन मसउद की अवलादथे लेकिन चिश्तिया सिलसिला शैख मुहम्मद बीन अहमद मवदुद से हांसिल कीया था और इन्हें अपने वालिद व दादा से फैज मीला

था। हिन्दुस्तानमें ये चिश्तिया सिलसिला ख्वाजा मोइनुद्दीन अजमेरी के बगैर (वास्ते) उनके पास पहोंचा है।

ये सिलसिलेमें शैख अजीजुल्लाह, शैख रहमतुल्लाह, शैख बहाउद्दीन, शैख मुत्तकी वगैरा बडे दरजे के बुजुर्ग हो गये। इन्ही मशाइख चिश्तीयोंसे दककन और गुजरातके अवाम को बडा फायदा पहोंचा है। शैख कबीरुद्दीन नागोरी रहमतुल्लाह अलयहे (वफात 858) अहमदआबादमें वफात पाई। आपने मीस्बाहुन नहव किताब तफसील से लिख्खी है। चिश्ती सिलसिलेके तकरीबन 30 से जयादह हजरत निझामुद्दीन अवलिया के खलीफा पट्टनमें है। अहमदाबाद में काफी बुझुर्ग आराम फरमा हैं। धोलका में हजरत शाह चिश्ती सरखेज में हजरत शेर अली और दिगर इलाको में भी चिश्तिया सिलसिलेके खुल्फा व मुरीदैन का अना सागर आज भी धुम मचाता हुआ नजर आता है।

सुबओ बिहारमें हजरत आदम सुफी हजरत फरीदुद्दीन तबीला बख्श खलीफा नुर कुत्बे आलम और जमालुल हकक बंदगी के जरीओ चिश्तिया सिलसिले ने वुस्अत पाइ। हजरत मख्दुमूल मुल्क शैख शरफुद्दीन बिहारी के झमानेमें ही बल्के इनसे कब्ल ही सिलसिले चिश्तिया बिहार के मुख्तलिफ हिस्सोमें पहोंच चुका था। हजरत फरीदुद्दीन गंज शकर के मुरीदों खलीफा हजरत खिजर यारह दोस्तने चिश्त जमाअतखाना काइम किया था। जिसकी यादगार के तौर पर बिहार शरीफ का महल्ला-चिश्तिया बा आज भी आबाद है। उसी तरह मीर सय्येिदु-सादात शाह यासीन खलीफा, हजरत मवलाना वजीहुद्दीन इब्ने नशरुल्लाह अल-अलवीने सिलसिले चिश्तिया की भी जबरदस्त इशाअत की और आपके बाद आपके खलीफा हजरत मवलाना शाहबाज भागलपुरी ने भी सिलसिलओ चिश्तिया को मजबूत बनाया। अझीमाबाद और पटना के इलाकोमें मुख्तलिफ खानकाहे दीगर सलासिलके अलावह चिश्तिया सिलसिलेके फैजान से शादो आबाद रही। यहां चिश्तिया सिलसिला, सिलसिल-ए अबुल उलाइय्या की सुरतमें बिहारकी मुख्तलिफ खानकाहों में पहोंचा।

सिलसिले चिश्तिया की दुसरी मजबूत शाख साबिरिय्या कहेलाती है। हजरत मख्दूम अली अहमद साबिर कलियरी के जां-नशीन शैख शम्सुद्दीन तुर्क थे। वोह मुर्शिद के हुकम के मुताबिक पानीपत मैं ही तल्कीनो इर्शाद करते रहे। (अल मुतवफ्फा हिजरी 718, इ.स.1318) उनके बाद शैख जमालुद्दीन पानीपती जानशीन हुओ। जिनके 40 खुल्फा थे। उनकी खानकाह रुदोली शरीफमें है। शैख कलीमुल्लाह देहलवी ने देहली, दककन, पंजाब, मुलतान, तौंसा, चाचडान कोट और मठन वगैरा में चिश्तिया सिलसिलेकी जबरदस्त

इशाअत की आपहीके अझीम मुरीदों खलीफा शाह नुर मुहम्मद महारवीने पंजाबमें चप्पे चप्पे पर चिश्तिया सिलसिलेकी खानकाहे आबाद करवाइ। शाह फखरुद्दीन के एक खलीफा शाह नियाज अहमद बरेल्वी के झरीये भी इस सिलसिलेका बहोत फरोग हुआ। उन्होंने रोहीलखंड में अपनी खानकाह बनवाइ। इसी तरहा हिन्द-पाक-बांग्लादेश अरबो-अजम युरोप व अफ्रिका-अमेरीका-ओस्ट्रेलीया -केनेडा-रशिया और पुरी दुनियामें आज हमारे गरीब नवाझ के दामने रहमतमें आनेवाले सभी मजहब और मिल्लत के लोग फैजयाब है। आपके आस्तान-ओ पाक पर हिन्द और दिगर देश, मुल्कके नामवर हस्तीयां ८०० सालसे अपना खाली दामन लेकर आते है और फियुझो बरकात से मालामाल होकर दीनी-दुन्यवी मशाइल में काम्याबी पाते है। इसी लिये आपकी जाते पाक पर दरुदो सलाम का नजराना पेश करते है।

(6) सिलसिल-ए शत्तारिया :

हजरत शाह अबु अब्दुल्लाह शत्तारी पंदरहवीं सदीमें इरानसे हिन्दुस्तान तशरीफ लाओ। आप शेख शहाबुद्दीन सुहरवर्द रहमतुल्लाह अलयहकी अवलादमें से थे। उलुमे नबवी और फैजाने शत्तारी लेकर हिन्दुस्तान आओ तब आपने फरमाया, है कोई खुदाका चाहनेवाला तो आओ ताके उसे में खुदा तक पहोंचनेकी राह दिखाउं. इस सिलसिलेके बुजुर्गोको हिन्दुस्तानमें हजरत शाह अब्दुल्लाह शत्तारीके अवलाद शैख हाफिज जोनपुरी की खिदमत का भी फैज पहोंचा है। उनके अलावाह जोनपुर के ही शैख बुध्धन और बदोली के शेख वली शत्तारी ने भी सिलसिलेको आगे बढानेमें और लोगों तक इसका फैज आम करनेकी कोशिश की। ख्वाजा गंज शकर की नस्लसे अमीर सय्यिद अली कव्वाल शैख झकरिय्याह के बिरादर झादाह शेख हाजी इब्ने शैख इल्मुद्दीन ने भी शत्तारी सिलसिलेको तरक्की दी।

जब शाह अब्दुल्लाह शत्तारीने सफरे आखेरत इख्तियार फरमाया तब उनका खिर्कओ खिलाफत शैख मुहम्मद अली यानी शैख काझन को मिला और उनके बाद शैख अबुल फतह हिदायतुल्लाह सरमस्त को हांसिल हुवा। और उनके बाद शैख जहुर हाजी हामिद हुजुर की खिदमतमें पहोंचा, उनके बाद मन्सबे हिदायतो इजाझत और मुझदओ कुत्बुल अकताबी हझरत शैख मुहम्मद गौस ग्वालियरी को पहोंचा। जिन्होने अंजुमन को तरह तरह की मारेफतें और हकीकतें बयान करके नइ वजअ का अंजुमन बनाया। शाह मुहम्मद गौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलयहेका (हिजरी 970 इ.स.1562) सिलसिलओ निस्बत ख्वाजा फरीदुद्दीन अत्तार (हिजरी 628 इ.स.1230) से मिलता है।

आपके पर दादा मुइनुद्दीन कताल हिन्दुस्तान तशरीफ लाओ और जौनपुरमें इन्तिकाल फरमाया।

शाह मुहम्मद गोश जामअे उलुमो फुनन थे। और मा कूलो मन्कुल पर मुकम्मल दस्तरस हासिल थी। जवाहरे खम्सा और अवरादे गोसियह और बहलहयात आपकी मश्हुर तसानीफें (किताबे) हैं आपके अख्लाक का येह असर था के कसरतके साथ लोग आपके हाथ पर मुसलमान होते थे। आपकी खानकाह गौस पुरा में मजलिसे सिमाअका इन्एकाद झबरदस्त अंदाज में होता था। मियां तानसेन जो फन्ने मुसीकीके मश्हूरे झमाना उस्ताद थे आपही के मुरीद थे। उनका मजार भी शैख के पांव (कदमोंकी जानिब) में है। आपके बेशुमार खुल्फा थे जिनमें हजरत शाह वजीहुद्दीन अलवी गुजराती रहमतुल्लाह अलयहे (हिजरी सन 997 इ.स.1588) जैसे जलीलुल कद्र आलिम भी शामिल थे। आप सुलतान महमूद बेगडह के झमानेमें पैदा हुओ थे। आपका नाम सय्यिद अहमद और लकब वजीहुद्दीन और आसमानी खिताब अलिय्ये शानी था आप हन्फी मजहब शत्तारिया मश्रब थे। आपका नसब 27 वास्तोसे सय्यिदना अली मुर्तुजा से मिलता है। आपने बचपनही में कुरआन हिफज कर लिया था। आपने काजी शमसुद्दीन से अक्सर अरबी फनुनकी किताबें पढी। अपने मामुं शाह बडा अबुल कासिमसे भी अकसर उलुम का इस्तिफादह किया. आपने हदीसका दौर अबुल बरकात बिन यानी अब्बासी से लिया। और उलुमे अकलिय्या की किताबें अल्लामा इमाद तारमी से पढी। आप मुसल्सल 24 साल तक इल्म हांसिल करते रहे। 25वें साल से आपने अपनें मद्रसेमें तल्बा को तालीम देना शुरु किया। मौलाना गुलामनबी आझाद बिलगिरामीने आपकी तस्नीफ कर्दह किताबोंकी तादाद 197 बताइ है। जबके दुसरोंका मानना है के उनकी तस्नीफ कर्दह किताबों तादाद इससे भी जियादह हो शकती है। आपने अपनी जिन्दगी में दस बारह बादशाहों का जमाना देखा। 29 मुहर्रम हिजरी 998 के रोज 88 सालकी उम्रमें विशाल फरमाया। आपके खुलफा और शागिर्दोमेंसे अकसर हजरात अल्लामा, मुहद्दिस, मुफती, काझी और मुल्ला के इल्काब से नवाझे गओ। शाह वजीहुद्दीन अल्वीने अपने सिलसिले शत्तारीयाको हत्तुल इम्कान आगे बढाया और हस्बे ताकत सारे लौगो तक उस सिलसिलेके फयजो बरकात पहोंचाये। उनके बाद उन मुरीदैन के जरीअे सिलसिला आगे बढा। ये सिलसिलेके बुजुर्गोसे दककन लोगों ने भी फैज उठाया। हजरत शयख सीबगतुल्लाह भरुची रहमतुल्लाह अलयहे यह सिलसिला लेकर मदीना मुनव्वरा गये। वहां के बडे बडे आलीमो मशाइखोने आपसे इस सिलसिलेकी बरकतें हांसिल की। हजरत सैयदना शाह वजीहउद्दीन रहमतुल्ला अलयहे

हजरत ख्वाजा दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के जमाना के है। बल्की आपने अपनी पडपोती हजरत ख्वाजा दरियाइ सरकारके भतीजे हजरत सैयद अब्दुलकवी के साथ निकाह करवाया था। और इस रश्मको आज के जमाने तक यानी संपादक के बडे अब्बाके बेटे यानी चिचेरे भाइ के साथ इन्ही खानदाने वजीहीसे ताल्लुक रखनेवाली बेटी से निकाह किया है जो मेरे सफरके साथी जनाब प्यारे सहाब (हमीदुद्दीन) की वालेदा माजेदा है।

(7) सिलसिल-ए सुहरवर्दिय्या :

चिश्तिया सिलसिले के बाद हिन्दुस्तानमें सुहरवर्दिय्या सिलसिलेकी आमद हुइ। सुहरवर्दिय्या सिलसिला सुफियाओ किराम के उस तरीकेका नाम है जिसकी बुनियाद इरान के मशहुर सुफी जियाउद्दीन अबून नजीब अस सुहरवर्दी (अल मुतवफ्फा 490, पैदाइश 1118 इ.स.) को डाली थी। आप खलीफ-ओ अव्वल हजरत सय्यिदना अबुबक्र सिद्दीक रहतुल्लाह अलयहे की औलादमें से थे। इस्में गिरामी अब्दुलकादिर कुन्नियत अबु नजीब और लकब जयाउद्दीन आप सिलसिले सुहरवर्दीमें अपने चाचा हजरत शेख वजीहुद्दीन अबु हफ्स सुहरवर्दी कद्द सिर्रुह के मुरीद व खलीफा है और सिलसिले कुबरविया में हजरत अबुल फतूह इब्ने इमाम अहमद गिजाली रहमतुल्लाह अलयहे के खलीफा है। आपने हजरत सय्यिद अब्दुलकादीर गौषे आजम जीलानी कद्दसिर्रुह की सुहबत भी पाइ है और खिर्कए खिलाफत भी और बगदाद के कयाम के दौरान सरकार ख्वाजा गरीब नवाज कद्दससिर्रुह की भी आप से मुलाकात हुइ है। आपका विसाल 563 हिजरी में हुआ। मजार मुबारक इराकके बगदादमें दरियाओ दजलाके किनारे वाकेअ है। आप बगदाद की जामिअह निझामियह में शाफेइ फिकह पढाते थे। उनकी बाकिय्यात में सिर्फ एक किताब आदाबुल मुरीदैन पाइ जाती है।

हजरत शैख शहाबुद्दीन उमर सुहरवर्दी कद्दसिर्रुह आपकी विलादत 539 हिजरी सन में जन्जान के एक कस्बे सुहरवर्द में हुई थी। हजरत शेख सय्यिद अब्दुल कादीर जीलानी रहमतुल्लाह अलयहेके विसाल के बाद हजरत शेख अबुन नजीब सुहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे एक साल तक और उनके बाद बरसो तक हजरत शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रहतुल्लाह अलयहे ने बगदादकी रुहानी सियादतका निजाम निहायत खुश अस्लूबी से निभाया। आपकी जाते गिरामी से लाखों बंदगाने खुदा को फैझ पहोंचा। आपका इल्मी लियाकत और रियाझत का शोहराह न सिर्फ इराकमें बल्के मिसर व शाम, इजीप्त, सिरीया और हिजाझ-इरान में दुर दुर तक पहोंच चुका था हिन्दुस्तानमें भी आपकी बुजुर्गी

का गल्गगा बुलंद था। दुनियाभरके मशाइखे इजजाम के लिये आपकी जाते गिरामी मल्जा-व-मावा बनी हुइ थी। आपके खुलफा और मुरीदैन हमा वकत आपकी बारगाहमें हाजिर रहेते थे।

हजरत शैख नजबुद्दीन अली बरगरा के झरीये अजम या'नी इरानमें सुहरवर्दी सिलसिले की बहोत झियादह इशाअत हुइ। हजरत शैख नुरुद्दीन मुबारक गझनवी जिनकी मशाइखे जमीला और काविशोकी वजहसे शुमाली हिन्दुस्तानमें सुहरवर्दीय्या सिलसिले को बहोत फरोग हांसिल हुवा। उस जमानेमें हजरत शैखुल-इस्लाम हजरत बहाउद्दीन झकरिय्या मुल्तानी रहमतुल्लाह अलयहे मुर्शिदे कामील की तलाशमें हिन्दुस्तानसे निकलकर इस्लामी दुन्या के मुल्को-मुल्क फिरते हुओ बगदाद शरीफमें हजरत शैख शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रहतमुल्लाह अलयहे की मजलीसमें जा पहोंचे और अपना गोहरे मुराद पा लीया। मुर्शिदे कामील ने भी कमाल मरहमत फरमातें हुओ सिर्फ तीन हसो की रियाझत के बाद आपको खिलाफत अता फरमा दी। और मुलतान की तरफ मुराजेअत फरमा होने (यानी वापस जाने) का हुकम दिया ताके बर्रे सगिरमें सुहरवर्दीय्या सिलसिले की बुन्यादें मजबूत फरमाओ। लेकीन सहीह मानोमें हिन्दुस्तानमें सुहरवर्दीया सिलसिलेकी तरवीजो इशाअत में शैख बहाउद्दीन झकरीया मुलतानी की जबरदस्त जिद्दो जहद का बडा कामयाब रोल रहा है। आपने मुलतान, उच और दुसरे मुकामत पर सुहरवर्दिया सिलसिलेकी मशहुर खानकाहे काइम की। रात-दिन की सखत महेनत मुस्ककत से हिन्दुस्तानमें सुहरवर्दी सिलसिले की जडें मजबूत की। उनके मशहुर खलीफा में शैख इस्माइल कुरैशी, शैख हुसैन, शैख नथ्थु, शैख सरदुद्दीन आरिफ, फखरुद्दीन इब्राहिमी इराकी, सय्यिद जलालुद्दीन सुर्ख बुखारी, शैख सदरुद्दीन आरिफ के खलीफा शैख रुकनुद्दीन अबुल फतह मुल्तानी है। जिन्होंने सिलसिलेकी तन्झीम के लिये बहोत कोशिशें की है। हजरत सय्यिद जलालुद्दीन सुर्ख बुखारी के खानदानमें पैदा होनेवाली जबरदस्त शख्सियतों में सय्यिद अहमद कबीर और उन दो -दोनों बा-कमाल फरजन्दों सय्यिद सदरुद्दीन राजु कत्ताल और सय्यिद जलालुद्दीन मख्दूम जहांनियां जहां गश्त का शुमार होता है। बंगाल में सुहरवर्दी सिलसिला शैख जलालुद्दीन तब्रेझी के झरीये पहोंचा। आप की और आपके खलीफा हजरत शैख अली बदायूनी की महेनत की वजह से बंगालमें सुहरवर्दी सिलसिले की इशाअत और तरवीज हुइ। गुजरातमें इस सिलसिलेके बुजुर्ग सबे पहेले सय्यिद शरफुद्दीन मश्हदी रहमतुल्लाह अलयहे भरुच में आये। उनका तजकेरा आगे मख्दूम के खिलाफाओ की फेहरिस्तमें जीक्र करेंगे कयुंके इस किताब का अस्ल मकसद अब लीखवा जायेगा।

कयुंके हमारे जद्द-आला हजरत सय्यिदना शाह कुत्बे रब्बानी, शाह सैयद शैख खतीब महबूद महेबूबे खुदा कारंन्टवी के आप यानी हजरत सय्यिद मख्दूम जहांनीया जहां गश्त रहमतुल्लाह अलयहे पीरो मुर्शिद है। आपने अपने जहां-गश्त के दौरो-में रुहानी सफरमें कारन्टा शरीफ तशरीफ ले गये थे जो कुत्बे कारंन्टा के जिक्रमें आयेगा। इस सिलसिलेमें नस्ल-ब नस्ल फैझे शाहीय्याद, फैझे कुत्बीय्याह व फैझे जलालीय्याह आज तक तीन वास्तो से हुझूर मख्दुम जलालुद्दीन जहां गश्त से चला आता है कयुं के मख्दुम कारंन्टा, आपके बेटे सय्यिद शाह काजी मोहम्मद, हजरत कुत्बे आलम अब्दुल्लाह के मुरीद व खलीफा थे। इनके बाद हजरत मोहम्मद सिराजुद्दीन शाहे आलम से हजरत सय्यिद हमीदुद्दीन चाहेलदा आरीफ बिल्लाह (2) हजरत सय्यिद शाह काजी हम्माद व हजरत सैयद शाह हमीद रहमतुल्लाह अलयहे ये तीनो भाइ मुरीद-व खलीफा थे। इनके तजकेरे हम अपने अगले मरहले में बयान करेंगे। **हजरत सय्यिदना मख्दुम जहांनीया जहांगस्त रहमतुल्लाह अलयहे (आप सहीहुल नसब सादाते नकवी हैं) का हम मुख्तसर जायेजा ले** कयुं के हमारे जद्दे-करीमो के वह बडे करम फर्मा है। लिहाजा हम उनका तजकरो जरुर लीख्खे। आप (14 शाबान हिजरी 707, इ.स. 8 फरवरी 1038) को उच में पैदा हुअे। आपके वालिदैन और दिगर बुर्जुर्गोने आपकी तालीमो तरबिय्यत पर बहोत तवजजोह की थी। शुरुआतमें आपने हजरत सय्यिद मुहम्मद बुखारी, हजरत शैख जमालुद्दीन खंन्दारु और काजी बहाउद्दीनसे तालिम हांसिल की। उसके बाद आप मुलतान शरीफ हजरत बहाउद्दीन झकरिय्या के पोते हजरत शैख रुकनुद्दीन के पास पहोंचे। आपने उनके रहेने खाने-पीने और रहेन सहेन का बंदो बस्त फरमाकर हजरत करीम शैख मूसवी और मवलाना मुजदिद्दुद्दीन को आपकी ता'लीमो तरबिय्यत के लिये मुकर्रर फरमा दिया। उस दौरान आपके इल्म और रियाझत की शोहरत दूर दूर तक पहोंच चुकी थी। लिहाजा मुहम्मद तगलक (सन 725 हिजरी से 752 सन 1325 इसवी से 1351 इसवी) ने हजरत मख्दुम को शैखुल इस्लाम मुकर्रर कर दिया। चालीस खानकाहों की निगरानी भी आपके सुपर्द कर दी लेकीन आपने बहोत जल्द इस ओहदे से इस्तिफा दे दीया। सरजमीने हिजाझ की सिम्त रवाना हो गये। मकके मुकर्रमामें हजरत मख्दुमने शैखे मकका हजरत अब्दुल्लाह याफइ सुहरवर्दी और मदीना मुनव्वरा में अब्दुल्लाह मतरी सुहरवर्दी से मुख्तलिफ किताबें पढी, मदीना के शैख आप पर बहोत शफकत फरमाते थे। एक बार आपने मख्दुम से मस्जीदे नबवी में इमामत भी करवाइ। मकक‌अे मुकर्रमा में आपने सात साल गुजारे इस दौरान आप कुर्आने करीम की किताबत करके अपने जरुरियात पुरी

फरमाते थे । मदीनह मुनव्वरहमें आपने दो साल गुजारे । फिर आप यमनो, अदन तशरीफ ले गये । आप दमिश्क और लीब्नान भी गओ मदाइन और सीरिया (शाम) तबरेझ, खुरासान, बल्ख, बीशापुर, समरकन्द गाझरुन, हस्सा (बहेरीन) कतीफ और गझनी भी तशरीफ ले गओ । बरें सगीर में मुलतान, दहेली भककर, अलवर, रोबरी लारह और ठठ के सफर किये । आप अकसर फरमाते थे के रिआया को हुकमरानो का मुख्लिस और खैर ख्वाह रहेना चाहिये बादशाह के लिये बददुआ न करनी चाहिये बल्के उस्की इस्लाहकी दुआ करनी चाहिये । दुसरी जानिब आप हुककाम से कहा करते थे के उन्हे अपने फराइज पूरी दियानतदारी से बजा लाना चाहिये । रिआया के साथ अच्छा सुलुक करना चाहिये, नादारो-मिस्कीनों और मोहताजों की जरुरियात का ख्याल रखना चाहिये । हजरत मख्दुम ने अहम सियासी उमूरमें जो नुमायां किर्दार अदा किया है तारिख की किताबे उसकी शाहिद है ।

हजरत मख्दुम का इल्म एक वसीअ समन्दर की मानिन्द था । जिससे एक दुन्या फैझ हांसिल करती थी । आप कुर्आने करीम का बहोत गहेरा फहम रखते थे । सातों किराअतों के साथ कुरआने करीम की किराअत करते थे । हदीस और फिकह के बहोत बडे आलीम थे । चारों मश्हुर फिकही मस्लकों पर आपको उबूर हांसिल था । आप अरबी और फारसी झबानों में मुककमील महारत रखते थे । इसके अलावा आप हिन्दी, मुल्तानी और सिंधी झुबाने भी बोलते थे और उनमें तब्लीग भी फरमाते थे । आपका कुतुबखाना बहोत उमदा था । आप नादिरो नायाब किताबोंकी तलाशमें रहा करते थे । आप झिन्दगी के हर लम्हे को शरीअत के मुताबिक गुजारना पसंद फरमाते थे और दुसरों को भी इस बात की ताकीद करते थे ।

आपके झरीओ तब्लीगे इस्लाम :

हजरत मख्दूम का इस्लाही तेहरीर के नतीजे में खुसूसन पंजाब, सिंध और गुजरातमें इस्लामकी इशाअत बडे पैमाने पर हुइ । इन इलाकोमें बहोत सारे लोग आपके हाथों या आपके बाद आपके ताबेइन के हाथों मुसलमान हुओ । आपके हाथो मुसलमान होनेवाले लोगोमें खरल राजपूत और कबीले के अफराद भी शामिल है ।

हजरत मख्दूम के मल्फूझात के सात मजमूओ किये गओं है । येह मल्फूझात बहोत मकबुल हुओ । हजरत मख्दूमने बहोतसे तकरीब 36 हज किये । आपने सुल्तान ग्यासुद्दीन तगलक के झमानेमें सन 725 हिजरी सन 1125 इ.स. में अपने मुबारक सफर का आगाज किया था और सन 751 हिजरी सन 1150 इ.स.में मुहम्मद तगलक के ओहदे हुकूमत में खत्म किया । 26 साल बाद वापस लौटे ।

आपकी पैशीनगोइयां :

(1) एक दिन अैसा हुआ के आपकी खानकाहमें लंगर कुछ भी न था। उस दिन दुरवशों के खानेके लिये भी खानकाहमें कोइ इन्तिजाम न था। इस बात की खबर झफरखानको हुइ। उसने लंगर के लिये काफी मिकदारमें गल्ला और मिठाइयां वगैरह भैंजी। झफरखान हजरत मख्दुमका मुरीद था। जब सामान खानकाहमें लाया गया तो हजरत मख्दुम जहांनियां जहां गश्त खुश हुअे और जफरखानको तलब फरमाया और उस से कहा अय झफरखान उस खाने के बदलेमें मुल्के गुजरात की तमाम सल्तनत हमने तुमको अता की। तुमको मुबारक हों। हजरत मख्दूमने झफरखानको दुआके साथ साथ एक चादर भी अता फरमाइ।

(2) एक दिन हस्बे मामुल हजरत नासिरुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे की बीबी साहिबा सय्यिदा हाजराबीबी सुब्ह के वकत हजरत मख्दुम को सलाम करने गरझ से आइ तो हजरत मख्दुम उनकी ता'झीम के गरज से खडे हो गअे। येह बात हजरत नसिरुद्दीन की दीगर बीवियों को नागवार मालुम हुई। जब आपसे वजह पुछी गइ तो हजरत मख्दुमने फरमाया हाजराबीबी के पेट से एक कुतुबे वकत पैदा होनेवाला है इस लिये मैंने खडे होकर उनकी ता'झीम की।

(3) एक दफा हजरत मख्दूम गुजरात तश्रीफ ले गअे। उस वकत अहमदाबाद वजुद में नहीं आया था। वो बटवह (वटवा) भी तशरीफ ले गअे। मिट्टी सुंघकर फरमाया इस पाक जमीन सें तो हमारी हड्डियों की खुश्बु आ रही है। हाजेरीन से उन्होने इस मिट्टी की जियारत करनेको कहा और येह पेशीनगोइ फरमाई यह मुकाम कुतुबिय्यत का खझाना होगा और रुहानिय्यत का सर चश्मा होगा।

(4) एक दिन हजरत मख्दूम जहांनिया जहांगस्तने सआदत खातुन को वो चादर जिसको वो खुद इबादत करते, कुछ वकत ओढा करते थे। अता की, फिर अपने साहिबझादे हजरत सय्यिद नासिरुद्दीन को हुकम दीया के मेरी वफात के बाद सआदत खातून के बतन से लळका पैदा होगा येह मेरी अमानत इस बच्चें को देना। जब बच्चा पैदा हो तो उसके लिये कपडे इसी चादर से बनाअे जाअे और चादर के बचे हुअे टुकडे भी निहायत अेहतियात से रखे जाअें जो बच्चा पैदा होगा वोह कुत्बुल अकताब होगा। उसको मुकामे अब्दिय्यत हांसिल होगा मुकामे अब्दिय्यत पर फाइझ होनेवाले को अब्दुल्लाह केहते है और सुलूक में येह सब से बडा दर्जा शुमार किया जाता है।

आपकी अझवाज और अवलाद :

हजरत मख्दुमने दरेजझेल घरानोमें चार निकाह फरमाओ थे जिनमें साहबजादे सात थे उसके अलावा तीन साहिबजादियां थी।

हजरत मख्दुम जहांनीया जहांगस्त रहमतुल्लाह अलयहे का विशाल :

आपका विशाल फीरोजशाह तघलक के दौरे हुकूमतमें 10 जिल्हजज सन 758 हिजरी मुताबिक 3 फरवरी सन 1384 इसवीमें खास (इदुल-अजहा) के दिन हुवा। गुरुबे आफताब के वकत इल्मो फझलका येह आफताब भी हंमेशा के लिये अेहले दुनियासे रुपोंश हो गया। उस वकत आपकी उम्र 78 सालकी थी आपका मजार मुबारक मुकाम उचशरीफ रियासते बहावलपुर पाकीस्तानमें है। आपने सात सुल्तानोंका दौरे हुकुमत पाया है।

बताया जाता है की हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के हकीकी भाइ हजरत सय्यिदना शाह मारुफ का भी यहीं उच शरीफमें मजार है (अल्लाह तआला बेहतर जाननेवाला और इल्म रखनेवाला है)

बैयत व ईरादत

हजरत मख्दुम जहांनीया जहांगस्त रहमतुल्लाह अलयहे को सुहरवर्दी सिलसिलेमें अपने वालीदे माजीद हजरत सुल्तानुल औलीया सैयद अेहमद कबीर बुखारी और अपने चचा हजरत सदरुद्दीन मोहम्मद गौश बुखारी, हजरत शैखुल ईस्लाम रुकनुद्दीन अबुलफतह कुरैशी सुहरवर्दी रहतुल्लाह तआला अलयहीम अजमइन से सोहरवर्दी सिलसिलेमें बैयत व इरादत नेज इजाजत व खिलाफत का सर्फ हांसिल है। इसके अलावा और भी चंद तरीकत से सोहरवर्दीया सिलसिलाकी इजाजत हांसिल थी। आपको अपने वालीदे गिरामी हजरत अेहमद कबीर रहमतुल्लाह अलयहे से सहरवर्दीया सिलसिलेके अलावा खानदानी खिलाफते आइमा ताहेरीन व रिदवानुल्लाहे तआला अलयहीम अजमइन से भी हांसिल थी। सिलसिलाओ आलीया कादरीया आप को हजरत इमाम अफीफुद्दीन अब्दुल्लाह बाफी और सिलसिलाओ आलीया चिश्तीया हजरत नसीरुद्दीन रोशन चिराग देहलवी रहमतुल्लाह अलयहे से मीला।

300 मसाईख से खिरके व खिलाफत

आपके बिरादरे खुर्द व खलीफा हजरत ख्वाजा अबुल फजल सदरुद्दीन राजु कत्ताल रहमतुल्लाह अलयहे फरमाते है के हजरत ख्वाजा अल मआरुफ जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहेने 300 साहबे इरशाद मशाईख से नेअमते बातनी और इनके मुबारक हाथोंसे खिरके जैबतन फरमाये। (मिरातुल असरार कलमी) हजरत मख्दुम जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह

अलयहे ने खलीफा अजल हजरत मख्दुम मीर अशरफ जहांगीर सिमनानी मुतव्वफी सद (मदफने किछौछा मुकद्दसाओ जिल्ला फैजाबाद, यु.पी.) ने अपने मल्फुजात लताईफे अशरफी में हजरत मख्दुम जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे के पीराने तरीकत रिदवानुल्लाहे तआला अन्हुम के हस्बेजैल असमा (नाम) दरज फरमाओ है ।

(1) हजरत सैयद अहमद कबीर औंची बुखारी रहमतुल्लाह अलयहे
(2) हजरत सैयद वाहदुद्दीन करमानी रहमतुल्लाह अलयहे
(3) हजरत सैयद सदरुद्दीन मोहम्मद गौश उमबुजुर्गवार रहमतुल्लाह अलयहे
(4) हजरत शेख रुकनुद्दीन रुकनेआलम अबुल फतह रहमतुल्लाह अलयहे
(5) हजरत शेख कवामुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे
(6) हजरत शेख नसीरुद्दीन रोशनचिराग दहेली रहमतुल्लाह अलयहे
(7) हजरत शेख इमाम अब्दुल्लाह याफी रहमतुल्लाह अलयहे
(8) हजरत अब्दुल्लाह मतरी रहमतुल्लाह अलयहे
(9) हजरत शेख अबु ईसहाक गाजरुनी रहमतुल्लाह अलयहे
(10) हजरत शेख नजमुद्दीन अशफहानी रहमतुल्लाह अलयहे
(11) हजरत शेख नजमुद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलयहे
(12) हजरत सुल्तान ईसा रहमतुल्लाह अलयहे
(13) हजरत फकी दुस्साल कुत्बेअदन रहमतुल्लाह अलयहे
(14) हजरत शेख नुरुद्दीन अली अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलयहे
(15) हजरत शेख अेहमद कबीर रिफाई रहमतुल्लाह अलयहे
(16) हजरत ख्वाजा सैयद निजामुद्दीन औलीया महेबुबे ईलाही रहमतुल्लाह अलयहे
(17) हजरत सैयद खिदर अलयहिस्सलाम
(18) हजरत शेख हमीदुद्दीन मोहम्मद हुसैन समरकंदी रहमतुल्लाह अलयहे
(19) हजरत शेख रुकनुद्दीन अली से उवैशीयाह तरीका
(20) हजरत मौलाना शमसुद्दीन याह्या उदी रहमतुल्लाह अलयहे
(21) हजरत ख्वाजा कुत्बुद्दीन मुनव्वर रहमतुल्लाह अलयहे
(22) हजरत शेख मोहम्मद आबीद गौशी (कादरीया)
(23) हजरत शेख सहाबुलहक वालीद बीन अबीसईइ बीन मेहमुद बीन मोहम्मद किरमानी शाफी रहमतुल्लाह अलयहे
(24) हजरत शेख रब्बानी रहमतुल्लाह अलयहे
(25) हजरत वहाउद्दीन हलीम ईब्ने सैयद अली बिरादरे उम्म

हजरत ख्वाजा सैयद बुरहानुद्दीन अब्दुल्लाह कुत्बे आलम सहरवर्दी अहमदआबादी गुजराती रहमतुल्लाह अलयहे अपनी मशहुर तसनीफ जाम्ओ

उलफ तर्क में तेहरीर फरमाते है के हजरत ईमामुल मशारीक वल मगारीब हजरत सैयदना अली ईब्ने अबी तालीब करमल्लाह तआला वजहुल करीम की जाते गिरामी से जारी सुदा सलासील के अलावा भी हुजुरे अकरम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम से जलीलुल कद्र सहाबा से जारी सुदा सलासील के खिरके हजरत मख्दुम सैयद जलालुद्दीन हुसेन बुखारी रहमतुल्लाह अलयहे को पहुंचे है वो हस्बेजैल तेहरीर कीये जाते हैं। (1) खीरकाअे सरैयाह (2) 4 खीरके ब वास्ता हजरत सैयदना अबुबक्र सिद्दीक रदीयल्लाहो अन्हो (3) 3 खीरके ब वास्ता हजरत सैयदना अमीरुल मुअमीनीन उमर अल फारुक रदीयल्लाहो अन्हो से (4) 2 खीरके ब वास्ता हजरत सैयदना अब्बास बीन अब्दुल मुत्तलीब उम्म औरानी सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम से (5) 2 खीरके ब वास्ता हजरत अबुल अल अरब सहाबी सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम से (6) दरादाईया हजरत मख्दुम रहमतुल्लाह अलयहे को हजरत शेख अल अमर हबीब अल ढोलवी रहमतुल्लाह अलयहे से और ईनको हजरत सैयद शेख अब्दुल्लाह मिसरी रहमतुल्लाह अलयहे से सिलसिला ब सिलसिला हजरत फुजैल बीन अयाझ से और ईनके सैयद अेहले सफफाह हजरत सैयदना अबील दरदा अस्हाबी रसूल से और इनको हजरत नबीअे करीम नुरे मुजस्सम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम से पहुंचा। इस तरह अव्वल जिक्र खीरकाअे सेरययाह आपको हजरत शेख बहाउद्दीन अबी बक्र बीन अल हिसाम अल मारुनीसे और इनको ब वास्ताअे शेख अब्दुल रहेमान अल तसफुनजी से पहुंचा.

(अजजाम्अे अलतर अरबो कलमो मुसन्नीफ हजरत कुत्बे आलम बुखारी अहमदआबादी रहमतुल्लाह अलयहे कुतुबखाना आसफीया हैदराबाद दक्कन)

गौशे आजम से अकीदत

हजरत मख्दुम जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे फरमाते है हुजूरे गौसेआजम का कौल है के खुशखबरी हो इन्हें जिन्होने मुजको देखा या मेरे देखनेवाले को देखा या मेरे देखनेवाले के देखनेवाले को देखा या मेरे देखनेवाले के देखनेवाले के देखनेवाले को देखा फिर इर्शाद फरमाया के अल्हम्दोलिल्लाह मेंने शेख शरफुद्दीन मेहमुद तसतरी रहमतुल्लाह अलयहे को देखा इन्होने शैखुल शुअेख सैयदना शाहबुद्दीन मोहम्मद सहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे को देखा और शेखुल शुअेखने हजरत गौसेआजम रहमतुल्लाह अलयहे की जियारत की।

ईमदादे गौशीयत

एक रोज हजरत मख्दुम जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे अपनी खानकाह शरीफमें रोनके अफरोज थे। यकायक घांस की कोटडी में

आग लग गइ और इसमें शोला उठा। हजरत मख्दुम रहमतुल्लाह अलयहे ने एक चुटकी खाक लेकर या शेख अब्दुल कादर जिलानी शैयअन लिल्लाह बुलंद आवाजसे फरमाया और खाक आग की तरफ फेंक दी और आग फौरन बुज गई। (अनवारुल काजमीया सफा-16)

अनौखी ईदी

एक मरतबा हजरत मख्दुम रहमतुल्लाह अलयहे ईद के दिन अपने जद्द तरीकत हजरत ख्वाजा शेख बहाउद्दीन जकरीया मुल्तानी रहमतुल्लाह अलयहे के मजार मुबारक पर हाजीर हुअे। सलाम व कदमबोशी फातेहाख्वानी के बाद मजार शरीफ की मुतव्वजह होकर अर्ज कीया आज ईद का दिन हैं बुजुर्गो की बारगाह से छोटों को ईदी अता होती हैं लिहाजा नाचीज को भी ईदी अता की जाअे। मजार शरीफसे आवाज आई के आपकी ईदी यही हैं के आपको मख्दुम जहांनीया कीया गया। ईसके बाद हजरत सदरुद्दीन आरीफ रहमतुल्लाह अलयहे के मजार मुबारक पर हाजीर हुए और ईदी तलब की। वहां से भी उसी बशारत से सरफराज हुअे। (अखबारुल अख्तीयार)

पीरे तरीकत से अेतेकाद का आलम

आपको अपने पीरे तरीकत हजरत शेख रुकनुद्दीन रुकनेआलम अबुलफतह रहमतुल्लाह अलयहे से बडी अकीदत थी। एक मरतबा हजरत रुकनुद्दीन सहरवर्दी मुल्तानी रहमतुल्लाह अलयहे सीडीयों से नीचे तशरीफ ला रहे थे। हजरत मख्दुम जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे दोडकर लेट गअे ईसलिये के पीरो मुर्शीद का कदम आपके सीने मुबारक पर पडे और आप बरकत हांसिल करें। ये देखकर हजरत रुकनेआलम रहमतुल्लाह अलयहे ने फरमाया ''अेय सैयद ! मरतबाअे विलायत तुम्हारे अपने कमाल को पहुंचा। तुम मख्दुम जहांन्या हो गअे'' (खजीनाअे जलाली सफा-112)

अमामा और पापोश का आपस में तबादला

एक मरतबा हजरत ख्वाजा शरफुद्दीन याह्या मुनेरी बिहारी रहमतुल्लाह अलयहे ने हजरत मख्दुम जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे के पास अपनी पापोश भेजी। ईसका मतलब ये था के में आपका कफशफा हुं। आपने ईसके जवाब में अपनी दस्तार शरीफ आपकी खिदमते अकदसमें रवाना की जिससे मुराद ये थी के आप मेरे सरताज है। (अनवारुल अशरफीया सफा-1412)

कुत्बेबंगाल का जनाजा और मख्दुम

कुत्बेबंगाल हजरत ख्वाजा अलाउलहक चिश्ती पंडवी रहमतुल्लाह अलयहे के विसाल का वकत जब करीब आया तो आपने वसीयत फरमाई के

खबरदार मेरी जनाजे की नमाज मख्दुम जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे के अलावा कोई दुसरा न पढाये। ये सुनकर तमाम मुरीदीन को बडी हैरत हुई। मख्दुम जहांन्या जहांगश्त तो औंच शरीफ में हैं। पंडवा शरीफसे हजारो मील फासले पर है। वो हजरत कुत्बेबंगाल के जनाजे की नमाज कैसे पढायेंगे। अलमुख्तसर जब कुत्बेबंगाल का विसाल हो गया गुस्ल वगैरह से फारीग होकर जनाजा तैयार हुआ ही था के लोगों ने देखा के मख्दुम जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे सामने से तशरीफ ला रहे हैं। लोग सरापा हैरत बने हुओ थे। आपने तशरीफ फरमां होकर ईशाद फरमाया के में फकत ईस काम के लिये भेजा गया हुं के कुत्बेबंगाल हजरत अलाउलहक चिश्ती पंडवी रहमतुल्लाह अलयहे के जनाजे की नमाज पढाउं। बाद आपने नमाजे जनाजा पढाकर कुत्बेबंगाल की वसीयत पूरी की। (अनवारुल अशरफीया सफा-1412)

हजरत मख्दुम की चंद करामत

एक मरतबा बयतुल्लाह शरीफ के मौके पर आप जहाज में सफर फरमा रहे थे। रास्तेमें एक गुलामने मछली खानेकी ख्वाहीश का ईजहार कीया। आपने फरमाया अल्लाह तआला अपने बंदो की ख्वाहीश पूरी करने पर कादीर है। ईतने में समंदर से एक मछली उछलकर जहाज में आ गई। आपके हमराह ये देखकर बेहद खुश हुओ और ईस मछली को पकाकर तमाम हाजीयों में तकसीम कीया. (औलीयाओ औचशरीफ सफा-31)

बदरुद्दीन यमनी का जनाजा

एक मरतबा हजरत मख्दुम जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे जिद्दाह में एक मस्जीद में रोनक अफरोज थे मस्जीद में एक जनाजा लाया गया। आपके कल्ब मुबारक पर मुनकशफ हुआ के ये जनाजा हजरत बदरुद्दीन यमनी रहमतुल्लाह अलयहे का है। जो के जलीलुलकद्र औलीया में से हैं। हजारो फरागत फरमाकर आप ईन्तेकाल फरमा गये हैं। आपने मजमा को मुखातीब होकर फरमाया लोगो दफनमें जल्दी न करना मुमकीन है की ईनको गसी व सिकता वगैरह की शिकायत हो। आपके हुकम के मुताबीक जनाजा रख दीया गया। आप नमाजे नफल अदा करनेके बाद तिलावते कुरआने करीममें मशरुफ हो गओ और आयाते करीमा ''यखरुजुल हैय्ये मीन्नल मैय्यते व यखरजुल मैय्यते मीनल हैय्ये'' का विर्द करना शुरु कीया। लोग ये देखकर बेहद मुत्हय्यर हुओ के हजरत बदरुद्दीन यमनी रहमतुल्लाह अलयहे ''अश्शहदुअल्लाहीलाहा ईल्लल्लाहो वअशहदोअन्ना मोहम्मदुर रसूलुल्लाह'' पढते हुओ उठ बेठे। (औलीयाओ औचशरीफ सफा-30)

जलीलुल कद्र खुलफा

हजरत मख्दुम रहमतुल्लाह अलयहे के जलीलुलकद्र खुलफा के नाम हस्बेजैल है।

(1) हजरत अबुलफजल सैयद सदरुद्दीन राजु कत्ताल रहमतुल्लाह अलयहे
(2) हजरत मख्दुम मीर अशरफ जहांगीर शमनानी रहमतुल्लाह अलयहे
(3) हजरत नासीरुद्दीन महमुद नौशा वालीदे हजरत कुत्बेआलम रहमतुल्लाह अलयहे
(4) हजरत फखरुद्दीन तिरमीजी रहमतुल्लाह अलयहे
(5) हजरत मौलाना शम्सुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे
(6) हजरत शेख मोहम्मद तकी गाजरुनी रहमतुल्लाह अलयहे
(7) हजरत सदरुद्दीन महमुद रहमतुल्लाह अलयहे
(8) हजरत रास्तीन रहमतुल्लाह अलयहे
(9) हजरत रफीउद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे
(10) हजरत फरीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे
(11) हजरत अलाउद्दीन अली अबु अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलयहे
(12) हजरत मौलाना कबीरुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे
(13) हजरत ईस्माईल रहमतुल्लाह अलयहे
(14) हजरत बशीर रहमतुल्लाह अलयहे
(15) हजरत शम्सुद्दीन मसउद ईराकी रहमतुल्लाह अलयहे
(16) हजरत सरफुद्दीन मशहदी रहमतुल्लाह अलयहे भरुच, गुजरात.
(17) हजरत सैयद रुकनुद्दीन राजा रहमतुल्लाह अलयहे
(18) हजरत मोईनुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे
(19) हजरत मौलाना मुख्तार रहमतुल्लाह अलयहे
(20) हजरत मौलाना ताजुद्दीन मोहम्मद रहमतुल्लाह अलयहे
(21) हजरत मौलाना हिशामुद्दीन भीखरी रहमतुल्लाह अलयहे
(22) हजरत मौलाना मसउद मसउनी रहमतुल्लाह अलयहे
(23) हजरत मौलाना निजामुद्दीन ईब्राहीम रहमतुल्लाह अलयहे
(24) हजरत मसउद दुरवेश रहमतुल्लाह अलयहे
(25) हजरत ख्वाजा मुजफर सामानी रहमतुल्लाह अलयहे
(26) हजरत मलिजादा नसीरुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे
(27) हजरत मौलाना अलाउद्दीन मानकपुरी रहमतुल्लाह अलयहे
(28) हजरत ख्वाजा मसउद बाखरजी रहमतुल्लाह अलयहे
(29) हजरत मौलाना सालार सरसी रहमतुल्लाह अलयहे
(30) हजरत जमशेद रहमतुल्लाह अलयहे

(31) हजरत मोहम्मद खलफारी रहमतुल्लाह अलयहे
(32) हजरत मौलाना नजमुद्दीन शेखजादा रहमतुल्लाह अलयहे
(33) हजरत मौलाना ताजुद्दीन मानकपुरी रहमतुल्लाह अलयहे
(34) हजरत मौलाना मोहम्मद महुफी रहमतुल्लाह अलयहे
(35) हजरत ख्वाजा बदरुद्दीन बेहजाद रहमतुल्लाह अलयहे
(36) हजरत ख्वाजा अमीर खुसरु दहेलवी रहमतुल्लाह अलयहे (तालीब)
(37) हजरत ख्वाजा नुसर्रत रहमतुल्लाह अलयहे
(38) हजरत मौलाना रुकनुद्दीन दयालपुरी रहमतुल्लाह अलयहे
(39) हजरत मलिजादा साहबुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे
(40) हजरत मौलाना ख्वाजगी रहमतुल्लाह अलयहे
(41) हजरत शेखजादा मोअज्जम रहमतुल्लाह अलयहे
(42) शेख सरफुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे
(43) हजरत मौलाना दाउद जहांन्या रहमतुल्लाह अलयहे
(44) हजरत सैयद सिकन्दर मसउद तिरमीजी रहमतुल्लाह अलयहे मंगरोल, काठीयावाड
(45) हजरत कुतुब महमूद दादा हाश्मी कारंटवी रहमतुल्लाह अलयहे

मसकुराअेबाला खुलफाअे किराम के नाम साहेबे समरातुल कुद्दुस से मनकुल हैं। कहा जाता है के 80 मख्दुमों के पीर थे और मख्दुमाने मख्दुम लकब था। हजरत मख्दुम जहांन्या जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे के ईसके अलावा उस जमानेमें 2 लाख से ज्यादा मुरीद थे जो के हनफी मजहब में थे बल्के आपके तमाम मुरीद और मुरीदों के मुरीद ईसी मजहब पर पैरो थे हंमेशा हनफी ईमाम अबु हनीफा के सिलसिले के बैयत लेते थे। (समराते अकदस कलमी सफा-128)

हजरत ख्वाजा सैयद नासीरुद्दीन मोहम्मद नोशा बुखारी सुहरवर्दी आप हजरत सैयदना अब्दुल्लाह बुरहानुद्दीन कुत्बे आलम के वालीदे माजीद है। और शाहे आलम रहमतुल्लाह अलयहे के सगे दादा है। आपकी पैदाइश 2 जिल्हज 740 मुताबीक सन हि.1341 में हुई। उस वकत दहेलीमें सुलतान मोहम्मद शाह तुघलक हुकमरान था। आपने अपने वालीद मख्दुम जहांनीया जहांगस्त के जेरे साये और उस जमाने के जलीलकद्र और माहेरीने उलुम व फूनून अे जमीअे उलुम व फूनून की तकमील फरमाइ। आपकी कसीर तादादमें ओलाद थी शजराओ कलमीमें 25 सहाबजादे - 2 साहेबजादीया के नाम है। आपका विशाल हजरत सैयद नासीरुद्दीन मोहम्मद नौशा बुखारी 2 रमजान मुबारक हि.800 ब मुताबीक सन 1398 को 59 साल और चंद माहकी उम्रमें विशाल फरमाया।

(2) गुजरातमें सिलसिले के सबसे पहले हजरत सय्यिद शरफुद्दीन मश्हदी रहमतुल्लाह अलयहे मुकाम भरुच में आओ और वहां आकर रहे। हजरत शरफुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे के वालिदका नाम हजरत मोहतरम रुकनोद्दीन था। आप हजरत सय्यिद मख्दुम जहांनीया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे के खलीफा व मुरीद और आप हझरतके दामाद पर भी फाइझ थे। आपकी सहाबझादी सैयदा मलिकजहां बेगमको आपके निकाहमें दिया था। मश्हद (इरान) से इल्म हांसिल करने के बाद मुर्शिदे कामील की तलाशमें हिन्दुस्तान आओ। उच (पाकिस्तान-बहावलपुर) में पीरो मुर्शिद हजरत मख्दुम की खिदमत में रेहकर जाहिरी व बातिनी इरफानी कमालात हांसिल किये। हजरत मख्दुम ने आपके मु-त-अल्लिफ फरमाया था के शरफुद्दीन तो हमारे दीन की आबरु है। हजरत शरफुद्दीन ने अपने पीरो मुर्शीद हजरत मख्दुमसे सेरो सफरके लिये इजाजत तलब की तो हजरत मख्दुमने उन्हे एक मिस्वाक और खिरनी (रायन) का बीज देकर फरमाया आप जहां कहीं रात गुजारने के लिये कियाम करें वहां येह मिस्वाक और खिरनी का बीज जमीनमें गाड दे और वोह दरख्त या पौदें की शकलमें उग निकले तो उसी जगह पर कियाम करना। लिहाजा हजरत शरफुद्दीन चलते चलते गुजरात पर कियाम फरमाया और अपने तालिबे इल्मों का दर्स देना शुरुअ किया।

जिस वकत हजरत कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे गुजरात तशरीफ लाओ तो आपकी ताझीम के लिये जानेका हुकम हुवा। लिहाजा आप भरुच से पट्टन जाने के लिये रवाना हुओ रास्तेमें अहमदआबाद सरखेज में रुके और हजरत शैख अहमदगंज बख्श खट्टु रहमतुल्लाह अलयहे से मिलने सरखेज पहोंचे। तमाम रात दोनों हजरातोने एक दुसरे को अपनी तजल्लियातो अनवारका दिदार कराया। सुब्हकी नमाज के बाद दोनों पट्टन जानेके लिये रवाना हुओ। हजरत मख्दुम मश्हदी रहमतुल्लाह अलयहे सिमाअ का बहोत शोक रखते थे. आपकी वफात ब मुकाम खंभात (जी.खेडा गुजरात एक जमानेका मश्हुर बंदर) में महेफिले सिमाअ ही में जोहर और असर की नमाज के दरम्यान 18 रजजब मु रजजब 808 में हुइ। वहां से बजरीओ जहाज आपके जस्दे मुबारक को भरुच लाकर आपकी खानकाह के करीब दफन किया गया। बन्दे हकीर को (संपादक) यहां भी एक-दो बार जानेका मौका नसीब हुआ बडा शानदार आस्ताना मुबारक है। मकतमपूर इलाकेमें नर्मदा नदीके किनारे।

(3) सय्यद इल्मुद्दीन शातबी रहमतुल्लाह अलयहे (पटनी) इल्म किरअतके इमाम थे आपकी वफात 860 हि.सन. में हुइ।

(4) सय्यद यह्या बीन तिरमीझी बरोदवी सन ही.850 में वफात पाइ ।

नोट : बाबा अर्जुन शाह सुहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे (मु.पेटलाद) - आपका असल नाम उर्जुन शाह था । अरबी जुबान (भाषा) में उसके माने (अर्थ) खजुर के पेड की सुंका के वांकी वली हुइ डाल होता है । आप हजरत शेख शहाबुद्दीन उमर सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे के खलीफा थे । इस्लाम की तब्लीग की इशाअत के लीये हिन्दुस्तान आये थे । वो (सेन्ट्रल अेशिया) के मुकाम फरमान से आये । आपका मजार मुबारक मु.पेटलाद, जी.आणंद गुजरातमें है ।

(5) **हजरत सैयदना शाह कुत्बे रब्बानी मख्दुमे जमानी, उवैशे जमानी शिब्लीओ दौरां ख्वाजा खतीब महमूद कादरी सुहरवर्रिदी जुनैदी कारन्टवी रहमतुल्लाह अलयहे आप हि.स.**647 **इ.स.**1226 **पेदा हुअे और वफात** 5 **रमजान शरीफ हि.स.**758 **इ.स.**1337 **हुई** 111 **सालकी उम्र पाइ । आपका आस्ताना मु.कारंटा तेहसील खानपुर जीला महीसागर में है ।** (ये जीला आज ता.14-08-2013 में गुजरात हुकुमतने अपने फरमानसे जाहीर किया इसमें अब बीरपुर शरीफ भी सामिल हो गया. यानी वीरपुर, बालासिनोर, खानपुर, लुणावाडा, संतरामपुर, कडाणा वगेरे तहेसीलो से महीसागर जीला वजुद में आया) इस जीले के पहेले कलेकटर प्रफुल हर्ष, डी.अेस.पी. इन्चार्ज अेस.के.गढवी है । जील्ला का सदर शहेर लुणावाडा रहेगा जो वीरपुरसे करीब २२ किलोमीटर के फासले पर है पहेले हमे खेडा जील्लेकी नडीआद जो 120 किलोमीटर दुर जाना पडता था । खैर एक वकत यानी 1225 हिजरीमें कारंटाशरीफ बीरपुर की हद में था । हजरत सैयदना शाह अली रजा रहमतुल्लाह अलयहे को दिल्ही के बादशाह शाह अलाम शानीने 1000 विघा जमीनकी सदन दैकर आपको कारन्टा आस्तानाके शजजादानशीन बनाये थे । हजरत सय्यिद शाह अली रजा रहमतुल्लाह अलयहे दरियाइ सरकारकी पांचवी पुश्त से है ।

खैर हम तो लीख रहे थे हजरत मख्दुमे कारन्टा के बारे में हजरत का पेदाइशी वतन पट्टन था । आप अपने दादाशाह सय्यिदना अली सरमस्त रहमतुल्लाह अलयहेके सिलसिले से फैजीयाब थे । वालीद हजरत सय्यिदना शाह आरिफबिल्लाह फरीदुल असर, जुनैदुदुहर वली बा कमाल तकवाशेआर कुतूबुल अकताब सुलेमान जुनैदी रहे थें । आप भी बले पाये के बुजुर्ग और वलीअे कामील थे ।

हजरत सय्यिदना शाह महमूद कारन्टा तशरीफ एक हिन्दु ब्राह्मनकी बेटी पर सिन्धुजी की नापाक हरकत और गेर शरीअत के मुताबिक हरकत के लिये आपको नहरवाला पट्टन से सुलतान वकत अहमदआबादकी अदालतमें

अपनी इमदाद के लिये मोरलीकशन आया था । मगर वो सुलतान के वजीरो के मस्वरेमें मदद न मिलने पर गस्त खार गीर पडा । उस वकत उसे गेबी आवाजने हजरत शाह महमूद दादा कारन्टवीसे मदद की उसके कानमें सदा आई वो नहरवाला पट्टन गया । आपने सारा माजरा सुना लिया फीर हजरतने सुलतानको एक खत लिख्खा । मुजे कुछ लश्कर मेरे हमराह देना इन्शाअल्लाह में वहां परचमे इस्लाम बुलंद कर दुंगा । बादशाहने खत मिलने आपको 900 सवार जहार पोश तैयार करके भेजा । सामने उस राजाके पास 700 (सातसो) हथयारबंध झारपोश सवार थे और दो हजार प्यादा लश्कर था ये राजा सिध्धुजी वागड से जयादातर से लुंटमार करके अपना और अपने ताबेअे के लोगो का गुजारा करता था । आप अपनी और ब्रह्मनकी तदबीर पर कारंन्टा में दाखील हो गये और आगे आप सारे वाकयात तफसील से पढते जाओगे । यहां आपने सुकुन अख्तयार कीया मस्जीद तामीर कराई । सुलतान महेमूदखानके हुकमके मुताबिक अमीर थाना वगेरा के लीये मही नदी और भादर नदी के किनारे रहनेके लिये किल्ला भी तामिर करवाया । ये भी बडा अजीब वाकिया है ये किल्ला एक देव करवट लेता था तब किला ढेर हो जाता था । आपने इस्मे आझम पढकर शैतान जानवर की सुरत बनकर हाजीर हुआ आखिर वो जलाये गअे । ये वाकीआ ही ही.स.699 का हय और ये किला ही.स.761 में खलाइक के लिये आबाद हुआ । मिरांते सिकंदरीमें लिख्खा है की सुलतान अलाउद्दीनके जमानेमें अलग खान संजरने सन हि.704 में कस्बा कारन्टा आबाद किया था । सुलतान अहेमद बादशाहने अहमदाबादकी बुनियाद डाली थी । सन हि.823में कारन्टा गये थे उन्होने कस्बा कारन्टा किल्लेकी मरम्मत की और बुरी हालतमें दुरस्त किया और उसका नाम सुलतान आबाद रख्खा था ।

(6) **खलीफ-ए मख्दुम जहांनीया जहांगश्त हझरत सैयद मख्दुम जहांगीर अशरफ सिमनानी रहमतुल्लाह अलयहे** आज आपका अशरफी सिलसिला और जयादा दुन्यामें मश्हुर है । आपकी पैदाइश मुल्के इरान के तारीखी शहर सिम्नानमें हुइ । सन हिजरी 707 में पेदा हुअे वालिदका नाम सुलतान सैयद इब्राहिम था सिम्नान के हुकमरां थे । शहेर सिम्नान आज भी आबाद है । इस निस्बत से आप सिम्नानी कहेलाते है । आपकी वालेदा का नाम सैयददाह खदीजा बेगम था व हंमेशा इबादते इलाहीमें मसरूफ रेहती थी आप बहोत परहेझगार थी । मख्दुम अशरफ सात साल में कुर्आन करीम के हाफीझ के अलावा सातों किरअत के साथ हिफझ (याद) कर लिया था । आपके बेशुमार वाकियात-इल्म, तसव्वुफ आपकी तस्नीफातकी कंइ किताब है ।

आपने हजरत मख्दुम जहांगश्तसे खिलाफत हांसील की। आप बडे कद्रके गौषुल आलमीन है। आपका मजार मु.किछौछा शरीफ है आपका फैझ आज पूरी दुनियामें छाया हुआ है। (बंदे संपादकको तीन वास्तोसे उनका दामन मिला हुवा है। पहले मुरीदमें हझरत अमीने शरीअत शाह रिफाकत हुसैन महबूबे खूदा रहमतुल्लाह अलयहे का हुआ शाह अबू अहमद अली हुसैन साहब अशरफी के खलीफा है। दुसरा मुझे हजरत सैयद शैखुल इस्लाम मोहम्मद मदनीमीयां अशरफी जिलानी से खिलाफत मीली। उसके बाद हजरत मूफती सैयद अल्हाज कमरुद्दीन बावा दरियाइ अशरफीसे भी खिलाफत मीली। ये दोनों हजरात हजरत सैयद सरकारे कलां मख्दूम शाह मुख्तार अशरफ रहमतुल्लाह अलयहे के खलिफा है। ये उन मशाइखों की दुआ का नतीजा है, की इस हकीर फकीर की कलम को हाथ चलानेकी ताकत, कुव्वत नसीब हुई। रब्बे करीम इन हजरातका साया कायमो दायम रख्खें आमीन) आप मख्दूम अशरफने 100 सालकी उम्र पाई। 28 मोहर्रम को दुनियासे कुच करके वासिले हक हुओ। आपके गुजरातके आलीम शैख मुबारक भी खलीफा थे। एक खलीफा शैख राजा तो शरियत के औसे जबरदस्त पाबंद थे के नमाज न पढनेवालेसे मिलना, झुलना, बोलना, चालना, और उसके साथ खाना-पिना किसी हालमें भी पसंद न फरमाते थे। आज पूरी दुनियामें हमारे पीरो मुर्शीद सरकार सैय्यिद शैखुल इस्लाम मोहम्मद मदनीबावा दामतो बरकातहु आलीया और तमाम अशरफी खुल्फा दीन का डंका बजा रहे है। बातिल फीरकों के लिये तलवार बनकर मुकाबला करता हुआ नजर आते है। अशरफी फैझान जिन्दाबाद।

अब यहां से कुत्बे आलम कारंन्टा के वालिद और दादा हजरत सय्यिदना शाह अली सरमस्त कलंदर रहमतुल्लाह अलयहे के हालात व वाकीयात पर नजरे डाले फीर हम कुत्बे आलम बुखारी रहमतुल्लाह अलयहे व हजरत शाहे आलम बुखारी रहमतुल्लाह अलयहे से हमारे जद्द आलाके मुत्तालीक के बारेमें मालुमात करेंगे इन्शाअल्लाह.

ख्वाजा महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे पांचवी पुश्तके जद्द आला यानी सैयद शाह अली सरमस्त कलंदर रहमतुल्लाह अलयहे (पैदाईश हि.स.186 इ.स.765 वफात 15 रजजबुल मु.रजजब सन हि.536 इ.स.929 उम्र 350 साल पाई) मजार मुबारक पट्टन नहेरवाला गुजरात मोतीशाह दरवाजे के बहार हारिज रोड पे नया बनाया गया है। **आप हजरत शाह अली सरमस्त कलंदर रहमतुल्लाह अलयहे मदीना शरीफ से सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के हुकम से हिन्दुस्तान तशरीफ लाये आप शेर पर सवार होकर मदीना शरीफसे शीराज और वहांसे मुख्तलीफ मुमालिक से होते हुओ**

सरजमीने गुजरात के खंभात, डभोई वगैरह होते हुवे नहेरवाला पट्टन जो मुल्के गुजरात के राजाकरण का पायओ तख्त था तशरीफ लाओ और आपकी दुआसे राजाको औलाद नशीब हुई। राजाने आपको इन्आम देना चाहा लेकिन आपने सिर्फ वहां एक मस्जीद तामीर करने की अपनी ख्वाहिश जाहिर की जिसको राजा करण सोलंकीने बखुशी मन्झुर किया और आपने मस्जीद तामीर की और उसका नाम मस्जिदे कात (विजय) (फतेह) रख्खा. आपकी दुआसे राजा करणकी रानी मीनलदेवी जो बेटा (कुंवर) हुआ था उसका नाम सिध्धराज रख्खा था। राजा किरण हि.स.465 से 487 हिजरी तक और इ.स.1072 से इ.स.1094 तक हुकुमत की थी। उसके बाद राजा सिध्धराज बिन राजा किरणने हि.स.487 से हिजरी 538 हिजरी तक इ.स.1094 से 1143 तक हुकुमत की थी। पट्टन का मश्हुर तालब सहस्त्रलिंग तैयार कराया था। हजरत सैयदना शाह अली सरमस्त रहमतुल्लाह अलयहे राजा कुमारपाल बिन तिरभोन की हुकुमतमें वफात हुओ। उसने राजा कुमारपाल ने हि.स.538 से हि.570 और इ.स.1143 से इ.स.1174 तक हुकुमत की थी। आपके बेशुमार बयानात आगे सफो पर हम तहेरीरी करेंगे। आप सिलसिले जुनैदियां में मुरीद व खलीफा थे। आपको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम और आपके वालिदे गिरामी और मशाइखे तरीकत से भी इल्मो फजल हांसील था।

अब में आपके साहबजादे सय्यिदना शाह फरीदुल असर, जुनैदुर्दुहर वली ओ कामील, तकवा शेआर, कुतुल अकताब हजरत सैयदना शाह सुलेमान रहमतुल्लाह अलयहे आपके पेदाइश की तारिख न मिल शकी। (वफात हि.750, 1329 इ.स.) आपने मुकाम पालनपुर गुजरातमें सबसे पहले मस्जीद तामीर करवाइ थी। इस मस्जीदका नाम मस्जीदे अव्रास रख्खा था और आपने दुसरी मस्जीद नागोर राजस्थानमें बनवाइ थी। उसका नाम मस्जिदे कुव्वते इस्लाम रख्खा था। आपके बेशुमार वाकियात है। जो हम अगले सफहात पर दर्ज्र करेंगे। आप ही के बाद कुत्बे कारन्टा आपके जानशींन मुरीद व खलीफा है। उनका तझकेरा हम सिलसिले सोहरवर्दिया के बुजुर्गोमें कर चुके है। अब हम सैयदना कुत्बे रब्बानी, महेबुबे यजदानी गोषे जमानी सय्यिदना शाह खतीब कुतुब महमूद कादरी, सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे के शहाबजादो का तजकेरा लीखेंगे। आपने हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के हुकम के मुताबीक और खुल्फाओ राशेदीन की रुहे। ने रमजान शरीफमें एक सबको (रातको) कुत्बे रब्बानी से फरमाया की आपको अल्लाह तआला का हुकम है की आप सैयद शाह जैनुल आबेदीन रहमतुल्लाह अलयहे जो जैनाबाद उर्फे अमथनी ता.खानपुर जी.पंचमहाल से (हटकर अब महीसागर जीला बन गया

है) के मुकीम व जागीरदार की साहेबजादी सैयदा बीबी अमतुतर्रउफ से निकाह करे। जिससे आपकी नस्ले पाकसे बेशुमार अवलीया, कुतुब, गौष मुहककीक, मुहद्दीस, मुफक्कीर आलीम हाफेझ मुफती व-मशाइखे उजजाम पेंदा होगे। दुसरी जानीब हजरत सय्यिद शाह जैनुल आबेदीन को भी वैसी ही बशारत हुइ। बील आखिर आपसे तीन सहाबजादे पेदा हुअे (1) सैयदना शाह इब्राहिम रहमतुल्लाह अलयहे आपका विशाल 9 शव्वाल को हुआ। उस वकत हजरत सय्यिदशाह हुसेन कुतुब सिकमें मादरमें जल्वागर थे। दोनोकी कब्रे अनवर हजरत शाह सय्यिदी कुत्बे कारन्टा की अगल-बगल में फैजे-खलाइकके लीये रोशन है। (3) **तीसरे सहाबजादे सय्यिदनाशाह मुझतहेदुझ झर्मा, शैखुश, फरीदुल अस्र, गौषुषझर्मा, महबुबे रहमान, अलवासेलो बेवासे लिल्लाहिस्समद, तकवा शिआर सय्यिदना शाह काजी मोहंमद रहमतुल्लाह अलयहे** आप हजरत बचपने से आपकी कुछ अैसी हालत थी के आप कीसी के भी पास बेठते नहीं। आप हंमेशा अकेले रहेना, उठना था। आप लाडले होने की वजहसे आपको कोइ नसीहत नही करते थे। आपके दिलो दिमाग का कीसीको पता नहीं चलता था की आप कया करना चाहते है। मगर आप का सिर्फ चाकर, खिदमत गुजार कालु सिंधी था। उसीके साथ आप जयादा वकत गुजारते खैर ये बयान आपको आपके वाकीयात में पढने को मील जायेगा। आप अहमदआबाद इल्मे उलुम बातीन तरीकेसे हांसिल करके तशरीफ ले आये। यहां सारंगपुरमें आपने खानकाह तामीर करवाइ थी। सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की बशारत पर बादशाह आपको मीलने आये। मगर आप न मील शके मगर वकत और जरुरत की वजहसे आप हजरत सुलतान की मुलाकात को खुद तशरीफ ले गअे। सुलतान आपको मिलने आये तो आपने फरमाया तेरा और मेरा मिलनेका ये वसिला था वर्ना आप कहां सुलतान (बादशाह) में कहां दुरवेश। उसी वकत सुलतान आप से बगलगीर हुवा और अर्ज की आप मेरे यहां रहो मकान और वजारत कबुल फरमाओ। आपने काजी-ए दिन-इस्लाम का ओहदा मसनदनसी कबुल फरमा ली। आप हंमेशा रोजा रखते। हिजरी 814 इ.स.1411 में अहमदआबाद शहेर की बुनियाद रख्खी गइ जो हजरत मख्दुम शेख अहमद सरखेजी खट्टु मगरेबी रहमतुल्लाह अलयहे इजाजत और दिगर तीन अहमद नामी बुजुर्गो के हाथो से जैसे (1) शेख कुत्बुल मशाइख शेख अहमद खट्टु रहमतुल्लाह अलयहे (2) बादशाह सुलतान अहमद शाह (3) शेख अहमद (4) मुल्ला अहमद रहमतुल्लाह अलयहे के हाथो साबर नदी के किनारे रख्खी गई। हिजरी 816 इ.स.1413 में किल्ले का काम खत्म हुआ था। उस वकत मुकाम पट्टन में हजरत सय्यिदी सरकार कुत्बे

आलम बुखारी सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे कियाम पजीर थे। सुलतान अहमदशाहने बुनियाद रखनेके लिये आप हजरत को दावत पेश की थी। बहरहाल आप यानी हजरत सय्यिदना शाह मोहंमद 15 सालकी उम्रमें सज्जादानशीनी इख्तियार की थी। आप हजरत सय्यिद बुरहानुद्दीन अबुमोहंमद अब्दुल्लाह कुत्बे आलम बुखारी सुहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे (पैदाइश १४ रजजब हि.स.790 इ.स.1388 और वफात 7 जिल्हज हि.स.857, 10 दिसम्बर 1453 इ.स.) से बैत और उनके खलीफा थे। अब यहां कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे का मुख्तसर बयान करेंगे।

हजरत कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे की गुजरात में आमद

अपने वालीदे गिरामी के वफात के बाद आप उच शरीफ (मुलतान) से सन हिजरी 802 इ.स.1390 में गुजरात पहोंचे थे। उस वकत गुजरात की राजधानी पट्टन थी। यहां आप शेख रुकनुद्दीन के महेमान हुओ। जो हजरत बाबा फरीदुद्दीन गंज शकर के नवासे थे। हजरत शैख रुकनुद्दीन ने आपकी बहोत खातिर मदारात की थी। सुलतान मुजफ्फरशाह जो हजरत मख्दुम जहांनीया जहांगस्त का मोतकिद और मुरीद था वो आपको मिलने पट्टन आओ। आपकी खिदमतमें हाझिरी दी और नजरान-ए अकीदत पेश कीया। आप जब गुजरातमें बस गये तब आपको दुन्यवी इल्म हांसिल करनेका शौक हुआ। आप मद्रसें दाखिल हो गये उस मद्रसेमें हजरत मौलाना अली शेख दर्स दिया करते थे। आपने उनकी खास तवजजोह से दुन्यवी इल्म हांसिल किया और उलुमे जाहिरी और बातिनीमें दर्ज ओ कमाल को पहोंचे उस वकत आपकी उम्र ग्यारह सालसे कुछ उपर थी।

आपकी उम्र जब 14 सालकी थी उस जमानेमें हजरत सय्यिद मुहम्मद गैसु दराज रहमतुल्लाह अलयहे दककन से गुजरात तशरीफ ले आओ। पट्टन पहोंचकर उन्होंने हजरत शेख रुकनोद्दीन से मुलाकात की। हजरत सय्यिद गेसू दराज बंदहनवाझ ने जब हजरत कुत्बे-आलम को देखा तो कुत्बियत के आसर आपमें देखकर खुश हुओ और आप से कहा के,

मेरे बुजुर्गो से जो फैज मुजे मिला है वोह में आपको बतोरे तोहफा देना चाहता हूं।

हजरत कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे कसीरुल अवलाद थे। आपके 12 सहाबजादे थे और 17 साहेबजादीयां थी। हजरत कुत्बेआलम रहमतुल्लाह अलयहे एक के बाद दुसरा इस तरहा चार निकाह फरमाओ। इसके अलावा दोलतखानमें चंद लोंडियां भी थी। इन्हीमें हजरत सरकार सय्यिदना मोहंमद सिराजुद्दीन शाहे आलम रहमतुल्लाह अलयहे है। मजीद मालुमात के लिये किताब - हयाते कुत्बे आलम का मुत्आला करे।

हजरत कुत्बे आलमने शेख अहमद खट्टु रहमतुल्लाह अलयहेसे रुहानी फैज, खिलाफत और मगरीबी सिलसिलेमें बयअत करनेकी इजाजत भी ली थी । हजरत कुत्बे आलमके खुलफा-ए स्वालेहीन की बडी तादाद थी । गुजरातमें सुहरवर्दिय्या सिलसिले को फरोग दिया था । जिसमें आपके खानवादा व खुल्फाका बडा कारनामा है और इन्ही खुल्फा-ए स्वालेहीनने गुजरातको अपने मसाइये जमीला के जरीअे सिलसिले तसव्वुफ का एक अजीमुश्शान मर्कज बना दिया था । **गुजरातमें चिश्तीया सिलसिलेसे जयादा सिलसिले सुहरवर्दिय्या को जियादा फरोग हांसिल हुआ** । इस सिलसिले सुहरवर्दिय्याहके मशाइखीन से खासो आमकी वाबस्तगी थी । शाहाने गुजरात, वुझराअ, उमराअ और अवाम को इस सिलसिले के बुजुर्गोसे बहोत महोब्बत थी । गुजरात उनके अनवार से दमक ने लगा खुसूसन अहमदआबाद में कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे और आपके जां-नशीन हजरत शाहे आलम की खानकाह मर्ज-ए खलाइक थी । अब हम कुत्बे आलम के खुल्फा के नाम दर्ज करेंगे जीनके नाम जो खास खुल्फाने नाम हस्बेजैल है ।

(1) हजरत मख्दुम शैख महमूद दरिया नौश रहमतुल्लाह अलयहे (2) हजरत सिराजुद्दीन शाहे आलम रहमतुल्लाह अलयहे (3) हजरत शाह राजु रहमतुल्लाह अलयहे (4) हजरत शाह जाहिद रहमतुल्लाह अलयहे (5) हजरत शैख अब्दुल लतीफ रहमतुल्लाह अलयहे (6) हजरत सय्यिद उस्मान (शम्अे बुरहानी) रहमतुल्लाह अलयहे (7) हजरत अली खतीब अहमदाबादी (8) हजरत शैख नजमुद्दीन (9) हजरत शैख कुत्बुद्दीन (10) हजरत शैख फजलुल्लाह काशानी रहमतुल्लाह अलयहे (11) हजरत सय्यिदशाह काजी मोहम्मद बीन कुत्बे रब्बानी शाह सय्यिद महमूद कारंन्टवी कादरी सोहरवर्दी हिजरी 875 इ.स.1425 में मुरीद व खलीफा बने (12) हजरत शैख कमालुद्दीन किरमानी रहमतुल्लाह अलयहे । इनके अलावा और भी खुल्फाओके नाम दर्ज है । और कहीके नाम नहीं मिल शके । मजकूरह बाला कुत्बिय्या हजरत सय्यिद जलालुद्दीन सुर्ख जहानियां जहांगस्त की तालीमात पर अमल पैरा था । आप हजरतका मकसदे हयात इबादते इलाही तब्लीगे इस्लाम अवामुन्नास (लोगों) की खिदमत गरीबों, मिस्कीनों और मजलुमों की मदद करना था । यहीं तालीम आपके खुल्फा मुरीदैंन ने नस्ल ब नस्ल बरकरार करके रख्खी है ।

अब हम हजरत सय्यिदना शाह मुहम्मद बीन सय्यिदना शाह खतीब महमूद कारन्टवी के तीन बेटो का जिक्र करेंगे । हजरत मुहम्मद को काफी लम्बे वकतसे कोइ औलाद न हुइ तो आप कुत्बे आलमकी बारगाहमें रुजुअ हुअे आपने यहां हुजुर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की पेशनगोइ की ताबीर

बताइ तब आप हकीकत से आगाह हुऔ और आपने फरमाया आपके यहां तीन फरजंद होंगे। इन्के नाम के ह अल्फाजसे और सहाबजादी एक होगी जीनका नाम अलेफ से होगा (बीबी मलकअफीफा था) और वो इस तरहा है।

(1) हजरत सय्यिदना शाह हमीदुद्दीन चाहेलदाह (पेदाइश सन हिजरी 813 इ.स.1392 वफात 5 सफर हिजरी सन 911 इ.स.1490 8 जुलाइको 98 सालकी उम्र पाई) (2) हजरत सय्यिदना शाह काजी हम्माद कादरी, सोहरवर्दी पेदाइश 852 इ.स. 1455 वफात हिजरी 916 इ.स.1496 चांद 20 शव्वाल के दिन वफात पाई। 863 हिजरीमें हजरत सरकार शाहे आलमसे बैयत हुऔ बैयतसे पहेले ताजदारे मदिना हुजूर अहेमद मुजतबा मोहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहे को ताकीद फरमाइ थी के काजीउल आलम को सिलसिलेमें दाखिल करके फैजाने इलाही से मुशर्रफ फरमाऔ। बैयतसे मुशर्रफ होनेके बाद हजरत सय्यिदना शाह हम्माद 12 साल तक अल्लाह तआलाके रास्तेमें जिहाद कीया। 12 साल तक खिलवतगनी होकर यादे इलाहीमें मशगुल रहे और 12 साल जझब मस्तीमें गुजर गये हम आगे इनका तजकेरा तफशील से करेंगे। आपके तीसरे भाइ याने हजरत सय्यिदना शाह काजी हमीद शहीद रहमतुल्लाह अलयहे हजरत शाहे आलमसे बैयत थे। आपने हस्बे पेशीनगोइ शाहे आलमके तमाम जीन्दगी सिपाहीयानी गुजारी। न कभी खिलवत की तरफ मिलना हुआ न कभी जीन्दगीने इतनी फुरसदी के आप खानकाह मे बेठकर मनाजीले सुलुक तय करे मगर शहादत पाकर आपने भाइओसे मरतबाऔ उझमा पर मुलहक होना था। इसकी सुरत इस तरह पैदा हुइ के सुलतान महमूद बेगडेने चांपानेर के रावल जयसिंग की सरकशीको कूचलनेके लिये पावागढ के किल्ले पर हमला किया और इसका महाशरा देढ साल तक रहा इस महारकाऔ अजीममें मुशरीक से जंग करते हुऔ हि.स.889 में मुताबिल इ.स.1484 में मरतबाऔ शहादत से हमकीनार होकर फाइझुल मराम हुऔ। आपका मजार पावागढ पहाड पर था मगर 2002 की सालमें गुजरातके गमनाक दर्दमन्दाना हैरतनाक कुर्फ के फंदेमें शहीद कर दीया है। हम पूराने मजार मुबारककी फोटा अगले सफो पर बतायेंगे बंदे संपादकने आप की बारगाहमें दो बार सलामीका कब्र अनवरसे फैज लीया है। आपकी शहादतके वकत आपके भतीजा ख्वाजा महमूद दरियाइ की उम्र 16 सालकी थी। आप ख्वाजा दरियाइ भी इसी चांपानेर पावागढमें वफात पाई थी। शाह हामीदशहीद कादरी सोहरवर्दीका मजार एक गुलर के पेडके नीचे था यहां से बे औलाद को औलाद नसीब होती है।

अब यहां हम **हजरत सय्यिदशाह काजी हमीदुद्दीन बीन सय्यिदना**

शाह मुहम्मद कादरी सोहरवर्दीका तजकेरा आगे लीखेंगे । हजरत सय्यिद शाहेआलम महबूबे बारी रहमतुल्लाह अलयहे की बारगाहमें अपने वालीदे माजीद शाह सय्यिद मोहम्मद कादरी सोहरवर्दी के साथ और अपने दोनों भाइओंको भी साथ लेकर १२ सालकी उम्रमें बैयत व इरादत का शर्फ हांसिल किया था । बावजुद इसके के आप वलीओ मादर जात थे । उस वकत भी आपके वालीद शाह मोहम्मद की भी सरपरस्ती मौजुद हजरत दरबारे शाहे आलमें थी । आप शाह सय्यिद हमीदुद्दीनको ''चाहेलन्दा या चाहेलदा'' खिताब सरकारे महेबुबे बारी ने दीया था उसके मानी ये होते है की रुहानी पाणी का भरा हुवा कुवा या इल्म से भरा हुवा कीये जाते है उसके बाद आपको सनदे खिलाफते भी नवाजा गया था ।

हम **हजरत सरकारे शाहे आलम मुहम्मद सिराजुद्दीन महबूबे बारी कादरी सोहरवर्दी, बुखारी रहमतुल्लाह अलयहे** की जाते बा-बरकतके हालत वाकीयात, इल्म अमल मुरीद व खिलाफत फरमान जाओ पेदाइश वफात का जाइझा ले । आपकी विलादते बा-सआदत १७ जिलकादह सन ८१७ हि.स., इ.स.१४१४ बरोज पीर शब (रात) में पट्टन में हुइ तारिखे विलादत ''वारिसअली'' से निकलती है । नबीओ करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के बशारत के मुताबिक आपका नाम मुहम्मद रख्खा गया । आप मादरजात वली थे आपकी वालेदाहका नाम बीबी आमेना खातुन रहमतुल्लाह अलयहा था । शिकमें मादर मुबारकसे तिलावते कुरआन करते हुओ पैदा हुओ । आपके वालीदका नाम अब्दुल्लाह कुत्बे आलम था । आप चार साल चार माह चार दिनके हुओ तो आपकी बिस्मिल्लाह ख्वानी की महेफील मुन्अकिद फरमाइ थी और कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे खुरमे (छुहारे) पर अपना लुआबे दहन लगाकर हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहे को अता फरमाया । आपने उसे तनावुल फरमाया यानी खा लीया । यही से आपकी तालीमो तरबिय्यत की शरुआत हुई । उलुमे जाहिरी, व बातिनी की तकमील अपने वालीदे मोहतरम नीज पीरो मुर्शिद हजरत कुत्बे आलम सय्यिद बुर्हानुद्दीन कुत्बे आलम बुखारी सोहरवर्दी से की नीज खिलाफते उजमा हांसिल की अरबी, फारसी, जबानमें आपने दरजओ कमाल हांसिल किया । तफसीर, हदीस, मन्तिक और फिकह वगैराह उलुम भी हांसिल किया । इसके अलावा वालिदे गिरामी हजरत कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे के हुकम से उस जमाने के मश्हुरो मारुफ उलमाओ किराम और मशाइखे इजामसे शर्फ तलम्मुज हांसिल कीया । उनके अस्माओ गिरामी हस्बेजैल है । शैखुल अकताब हजरत ख्वाजा शैख रुकनुद्दीन कानेशकर, ताजुल अवलीआ हजरत शैख अहमद गंज बख्श खट्टू मगरबी रहमतुल्लाह

अलयहे हजरत ख्वाजा शाह बारफुल्लाह चिश्ती रहमतुल्लाह अलयहे हजरत ख्वाजा मौलाना सय्यिद कमालुद्दीन हनफी चिश्ती रहमतुल्लाह अलयहे इन तमाम के पास आपने किराअते और सर्फ वन्हव (व्याकरण) की तालीम हांसिल की है और भी सिर्फ १८ सालकी उम्रमें आपने जुम्ला उलुम हांसिल कर लिये थे। लेकिन अन्वारे रुहानिय्यत के अंबार तो अपने वालिदे माजिद और मुर्शिदे कामिल हजरत कुत्बे आलम बुखारी रहमतुल्लाह अलयहे अपने हुजर-ए मुबारकमें गिर्या-व-जारीमें मश्गूल थे। यहां तकके आपकी रीश (दाढी) मुबारकसे आंसु टपकने लगे। इसी दौरान हजरत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलयहे तशरीफ लाओ हजरत कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे ने बडी शफकतो महोब्बतो मर्हमतसे फरमाया बाबामियां मंझले जो मांगना हो मांगलो आपने अर्ज किया इश्के रब्बानी के समंदर से जो आपको अता हुवा है उसमें से एक बुंद इनायत फरमाइये। हजरत कुत्बेआलम रहमतुल्लाह अलयहे अपने दस्ते मुबारकसे हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहे को थामा और अपनी रीश (दाढी) मुबारक से चंद आंसु हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहे के दहनमुबारक (मुंह मुबारक) में निचोड दीये। हजरत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलयहे फरमाते है के वालिदे मोहतरम के उन आंसुओंकी चंद बुंदे मेरे दिलमें रोशन सितारो की तरह चमकने लगी दिल रोशन हो गया और हंमेशा नुरो सुरुर महेसुस करता हुं।

हजरत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलयहे खुद इर्शाद फरमाते है के **मेरे वालिद हजरत कुत्बे आलम मेरे बचपनमें मुजसे फरमाया करते थे के तस्बीह हाथमें लेकर या मुस्तफा, या मुस्तफा ब-कसरत पढा करो इस लिये के जो शख्स कसरतसे या मस्तफा, या मस्तफा पढता है उसके कल्ब दिलमें अल्लाहकी महब्बत पुख्ता हो जाती है और वोह जब मरता है बा जौक मरता है।** (माखूज अज सद हिकायते फारसी)

इन्ही पाक दामन परवरीश इल्मो फजल, अपने जद्द अलाओंकी तालीमो तरबीयतकी वजहसे आप बचपनसे ही अल्लाह तआलाकी मुहब्बत कामिला जागुझी हो गइ थी। आप शरीअत पर अमल पैरा रहे आपके मुरीद हजरत मियां मख्दुम फरमाते है की में बारह साल हजरत शाहे आलमकी खिदमतमें रहा मेंने कभी आपको बे वुझु नहीं देखा (हयाते शाहे आलम) में लिख्खा है की आप फराइज (फर्ज) नमाज हंमेशा बा-जमाअत अदा फरमाते थे। इमामत करनेसे गुरेज करते। रात-दिनमें 1000 एक हजार नवाफिल अदा फरमाते थे आपके तकवा और अकवाल करामतोंको किताबे भरी हुई हैं मगर किताब बडी हो जानेका अन्देशा है मगर कुछ नजर करुं। कोढी का अच्छा हो

जाना, ग्यारह ओरतो को ग्यारह बेटे, जहाजको डूबनेसे बचा लेना, धोबनका बच्चा कभी लडका कभी लडकी कभी लडका, आपके खंजरशरीफ की करामत मरनेके बाद गुलाम बच्चेको जिन्दह हो जाना अंधे को आंखे मिल जाना गैबी संदुककी तलवार, वजीरकी बे-अदबी का अंजाम, पोशीदह होजका जाहिर हो जाना अैसी सदहा करामात है आपकी हयाते मुबारकमें और वफातके बाद जहुरमें आइ और कयामत तक जाहेर होती रहेगी इन्शाअल्लाह।

आप शाहे आलमकी तीन अजवाज (बीबीयां) थी और एक लोंडी थी। आपके पांच फरजंद और चार लडकियां भी थी। आपके सहाबजादे सहाबजादियां सभी अहेलुल्लाह में से है। आपकी अवलाद जुनुबी हिन्दमें खुब फैली है और उनमें बडे बडे अजीमुल मर्तबत अवलियाअे किराम गुजरे है।

हजरत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलयहे के दोरमें गुजरातके चार सलातीन (बादशाह) गुजरे है जीनमें (1) सुल्तान अहमदशाह (2) सुलतान मुहम्मदशाह (3) सुलतान कुत्बुद्दीन अहमदशाह (4) सुलतान महमूद बेगडा। आप रहमतुल्लाह अलयहेने सुलतान महमूद बेगडाकी परवरीश फरमाइ तालीमा तरबिय्यतसे आराश्ता किया। सुल्तान महमूद बेगडा आपकी वफातके बाद 37 साल तक गुजरातका सुलतान रहा और निहायत शानसे हुकुमत की सुलतान महमूद बेगडे के आप सोतेले (रबीब) वालिदे गीरामी थे।

विशाल : वफात हजरत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलयहे को जेहर खुरानी (जहेर खाने) की वजहसे हुआ। हाजी इब्ने कल्लु आप सरकारसे बहोत हसद रखता था एक दावतमें हाजी कल्लु इब्ने कल्लूने चोलाइ के साग (सालन) में जहेर शामिल कर दिया आप मुस्कुराअे और दुआअे शिफा पढकर वोह साग खा लिया। जिसमें हरारत बढ गइ दिन गुजरा और रात आइ आपने तहजजुद की नमाज अदा की सुब्हे सादिकसे पहेले कलिमअे तय्यिबा बुलंद आवाजसे पढते हुअे 63 सालकी उम्र शरीफमें शंबा (शनिचर) की रात 20 जमादियुल आखिर सन हि.880 इ.स.1475 में इस फानी दुन्याको अलविदा केहकर वासिले हकक हुअे। आपका माद्दाअे तारिखे विशाल आखिरुल अवलिया से निकलता है। आपके साहेबजादे सय्यिद नासिरुद्दीन मुहम्मद राजु सत्तारे आलम रहमतुल्लाह अलयहे वगेराने गुस्ल दिया और नमाजे जनाजह खलीफा हजरत काजी सय्यिद इस्माइल इब्ने बुरहानुद्दीन इस्फहानी रहमतुल्लाह अलयहे ने पढाइ और आपकी खानकाहमें सुपुर्दे खाक किया गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजेउन।

खुल्फाओ हझरत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलयहे

(1) हजरत सुलतान शाह गजनी रहमतुल्लाह अलयहे (2) हजरत कुत्बुद्दीन शाही रहमतुल्लाह अलयहे (3) हजरत सय्यिद शाह हमीदुद्दीन कादरी सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे (4) हजरत सय्यिद शाह हम्माद कादरी सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे (5) शाह अब्दुल लतीफ दावरुल मुल्क रहमतुल्लाह अलयहे (6) ख्वाजा अहेमदबीन दोसन रहमतुल्लाह अलयहे (7) काजी सैयद इस्माइल असफहानी रहमतुल्लाह अलयहे (8) मौलाना महमूद मुल्तानी अल शाही रहमतुल्लाह अलयहे (9) हजरत सैयदना नासीरुद्दीन मोहम्मद राजु कत्ताल सत्तार आलम । ये शाहे आलमके जानशीन और खानकाहे शाहे आलमके पहेले सज्जादानशीन है । आपकी पेदाइश 15 र.अव्वल हि.स.835 है । आप 45 सालकी उम्रमें सजादानशीन हुओ । 26 साल तक सजजादानशीन हजरत शाहीया को जिनते बख्शते रहे और 72 सालकी उम्र मुबारकमें यकुम मुहर्रमुल हराम जुम्आ के दिन वासिले हक हुओ । इस तरहा हजरत मख्दुम जहांनीया जहांगश्तका सिलसिला दुनियाको आज भी अलग, अलग शाखोसे दुन्या व दीन की खिदमत करता हुआ नजर आता है । जिसमें एक मख्दुम अशरफ जहांगीर सिमनानी का अशरफी सिलसिला और हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइका दरियाइ सिलसिला आज पूरी दुन्यामें इन मुर्शीदो कामिला की बरकतसे खिदमत अंजाम देता नजर आता है । (सुब्हानल्लाह)

अब यहां हजरत सुलतानुं आरेफीन बुरहानुंल आरेफेन अलगोसुंफी बहरिल्लाहे कुत्बे झमां ख्वाजा सय्यिदना शाह हमीदुद्दीन चाहेलदा सोहरवर्दी कादरी रहमतुल्लाह अलयहे का मुख्तसर आपकी जीन्दगीका जायेजा लेकर हय । आगे लीख्खेंगे अगले सफों पर हम आपको पेदाइश वफात की तारिखे लीखकर बता चुके है । हजरत शाह जद्देआला हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे आप **ऐसे पीरो शाह थे के कभी आपने अपनी उम्रमें सुन्नत और मुस्तहब को तर्क नहीं किया** और आप चलते वकत आगे पीछे नजर न उठाते थे बल्के आप अपने मुंह मुबारक पर नकाब डाले रखते और आप ना महेरम की तरफ कभी भी नजर नहीं करते थे और **आप मस्जीदमें ही नमाज बाजमाअत अदा करते थे** और इबादतोमें जो कुछ नेअमते आपको हांसील होती वो यारोंको अता कर देते थे । आपने अहेमदआबाद में बारह साल तक इल्म हांसिल किया है आपने कभी लजीजखाना तनावुल नहीं फरमाया है । आप हकिकत और मारफतसे आगाह थे और अपना भेद किसीको न बतलाते और आप कभी चारपाइ पर नहीं सोते थे और आपकी गिजा नाने जवथी आप कभी कीसीके वहां जियाफतमें जाते तो

एक दो लुकमा खाकर वापस घरको चले आते।

हजरत शाह आलम महेबुबे बारीने फरमाया था की हमने शाह हमीदुद्दीन के उपर जो बोज रख्खा है वो अगर पहाड पर रखते तो मुस्स्मार (जर्रा जर्रा) होकर जमीन में नाबुद हो जाता मगर ये तो अल्लाह के मकबुल बंदे है। फिर फरमाया आपने इनकी पूश्त से एक अैसा महेबुब पैदा होगा की वो अपने वकत का कुतुबुल अकताब होगा और उन सबसे सब फैजियाब होंगे। इसी तहरीरसे पता चलता है की आपकी जाते गीरमी इल्म फजल, तकवा, व दीयानतदारी की बडी मीसाल है।

अब हम आपके साहबजादो और उनकी चंद आलो-औलाद के झीर्क लीखेंगे। आपने हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के हुकमकी मुताबिक आपका निकाह जैनाबाद उर्फे अमथनी के हाकीम हुकमरा सैयद समीउद्दीन उर्फे काजी साधन की दुख्तर बीबी फतह मलक से हुवा था। जीनकी बतन से उनको सहाबजादे शाह मारुफ और दोयम हजरत शाह महमूद उर्फे महबूबुल्लाह तझकरीयह हाजा और शाह अहमद हुअे। बीबी फतह मलके इन्तेकालके बाद शाह हमीदुद्दीन साहेबने काजी साधन साहबकी दुसरी साहबजादी बीबी माह मलकसे शादी की उनके बतनसे दो लडके शाह चांद मोहंमद और शाह मोहंमद और एक लडकी उअमतुर्रउफ पैदा हुइ। बीबी माहमलक की वफात पर उन्होने उन्हीकी बहन बीबी राजिसे अकद किया जिनके बतन से जो औलाद हुइ उनमेसे शीर्फ एक लडके शाह गौहर जिन्दा रहे।

इस तरहा हजरत शाह हमीदुद्दीन चाहेलदा अपनी पुरी उम्र बीरपुर शरीफमें बसर की आपके वाकीयात बय्यानात आगे दर्ज किये जायेंगे। आपने अपने विशालके दो रोज किब्ल बिस्तरे मर्ग पर अपने पोते हजरत सैयदना शाह प्यारुल्लाह नुरुल्लाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाह अलयहे पहेला हाथ पकडा और उनको करामत अता कीये। फीर आपने अपने मुर्शिद हजरत शाहिया (शाहेआलम) रहमतुल्लाह अलयहे के इरशादे आलीकी तामीलमें वकत आने पर (7 सफर 911 हि.स., 10 जुलाई 1505 इ.स.) को **हजरत सैयदना शाह महमूद महबूबुल्लाह दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहेको शर्फे, बैत से नवाजा कर खिलाफतसे सरफराज कीया और सज्जादानशीनी अता की। उस वकत आपकी उम्र** 38 **सालकी थी। ख्वाजा दरियाई सिलसिले कादरीय्याहमें बयत हुवे थे।** हजरत शाह हमीदुद्दीन आरिफबील्लाह रहमतुल्लाह अलयहे का मजार कब्र अनवर बीरपुर शरीफ दरगाह शरीफ अंदर दोयम की है। अब हम यहां हजरत ख्वाजा महमूद दरियाई का जिक्र लीखेंगे जो इस किताबका सबसे बडा उन्वान है।

हजरत ख्वाजा महमूद दरियाई की विलादत 873 **हि.स./**1468 **इ.स. में हुई** "आकेबत महमूद रब" तारिखे तवल्लुद है आपकी जाओ पैदाइश के बारेमें "तोहफुतुल कारी" में कोइ सराहत नहीं है। खातिमओ मिराते अहमदी (सफा 121) में बीरपुर को उनका वतने असली बताया है। डॉकटर गडहीरुद्दीन मदनी मर्हुमने अपनी किताब सुखनवराने गुजरात (नइ दिल्ही 1981 इ.स. सफा पर) में उनकी जाओ पैदाइश बीरपुर को ही करार दीया है। हाफीज महमूदखान शीरानीने भी (मकामाते शीरानी जिल्द अव्वल लाहौर इ.स.1966 इ.स. सफा-141) आपका वतन बीरपुर ही लिखा है। यह कतइ सहीह नहीं है इस लीये के तोहफतूल कारी के मुताबिक ख्वाजा हमीदुद्दीन ने रिसालत मआब हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलयहे व सल्लमके इरशादकी तामील मे 45 सालकी उम्र (तकरीबन हि.स.895/1490 इ.स.) है। जाहीर है की बीरपुर आबाद हुवा उसके तकरीबन 22 साल किब्ले आलमे वजूदमें कदम रखनेवाले ख्वाजा महमूद की विलादत वहाँ होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। **तोहफतुल कारी के बाजदीगर बयानात से भी मुतरशह होता है की उनकी विलादत ख्वाजा हमीदुद्दीन की जाओ सुकूनत मोहल्लओ सारंगपुर अहमदआबाद (मौजुदा सारंगपुर दरवाजे के बाहर सिम्ते मशरिक वाके कालुपुर रेल्वे स्टेशन के करीब में चार तोडा कब्रस्तान है उसके करीब) में हुई।**

तोहफतुल कारी में मफातीहुल कुलूब लइ जालतिल कुरुब के हवाले से मरकूम है की सारंगपुर में सुकूनत पजीर शाह हमीदुद्दीन अपने शीरख्वार फरजन्द हजरत ख्वाजा महमूद) को अपने पीरो मुर्शिद हजरत शाहेआलम कि दिखमतमें बाबरकात में दुआओ खैर के लिये ले गये और **हजरत शाहियाने उस नन्हे बच्चे को अपने दोनो हाथोसे कन्धोपे बाला उठाकर बजूबानी गुजरी कहाकी काझीका शिम्ला भारी है एक और जगह मुसन्निफ तोहफतुल कारी में लीखते है की जाओ पैदाईश खासा केदर सारंगपुर बुवद (वर्क** 190 **ले) इन बयानात से ये बात पाय ओ सबुत को पहोंचती है की हजरत ख्वाजा महमूद अहमदाबाद में ही पैदा हुओ न की बीरपुर में।** उनके बीरपुर मुन्तकिल होने और वहां मुस्तकिल सुकूनत इखत्यार करनेकी वजहसे वो अन्दरुन व बैरुन गुजरात बीरपुरीकी निस्बतसे मशहूर हुओ और यही निस्बत उनकी जाओ पैदाइश के बारेमें गलत फहमी की बाइस हुई। पता नहीं तोहफतुल कारी के ये बयानात डॉक्टर सैयद जहीरुद्दीन मदनी मर्हुम से कयुं नजर अंदाज हुओ ?

आपका नाम : महमूद महबुबुल्लाह आप इस उपनाम से भी अपने आपको लीखते थे। (1) गरीब महमूद (2) सेवक महमूद (3) दरियाइ दुल्हा

(4) काजी महमूद (5) दास महमूद (6) मिस्कीन महमूद

आपका इल्म : आपने पांच सालकी उम्रमें कुरआन मजीद और बाद में अहादीसे कसीरहको हिफज किया । इब्तेदाई तालीम मुल्ला हुसैन खतीब मुअल्लिम मकतबसे हांसिल की । फिर अपने वालीद ख्वाजा हमीदुद्दीन और अम्मे बुर्जुगवार शाह हम्माद रहमतुल्लाह अलयहे से उलूमे जाहिरी और बातीनी की तकमील की । अलावा काजी सैयद शाह हम्माद रहमतुल्लाह अलयहे की खानकाह सारंगपुर, सरसपुर अहमदाबाद पे मुनअकिद होनेवाली मजालिस समाअ बा मजामीरसे सुरुद बरता गुजरी कलाम सनफे जिरी का जौक पैदा हुवा और उसमें मश्के सुखन करनेका मौका मयस्सर हुआ । उसके अलावा बचपनमें मुसलसल चार साल तक अपनी ननीखाला मख्दूमा बीबी और खालु शेख फरीदहुसैन कुरैशी उर्फे जैनुल आबेदीन जो हजरत बहाउद्दीन जकरीया सोहरवर्दी मुल्तानी रहमतुल्लाह अलयहे की औलाद में से थे उनके मकान वाकें मौजा औड (जिला खेडा) ये भी कलाम गुजरी के माहौलसे मुस्तफीद और मुस्तफीज होते रहे । बीरपुर मुन्तकिल होने के बाद कोहे अलत की और अपने वालीद की खानकाह बीरपुरमें यादे इलाही और जिकरी गोइमें अक्सर मसरूर रहे ।

जब वो चौदा सालके हुओ तो हिजरी 887/1483 इ.स. में उनके उस्ताद और रुहानी पेश्वा हजरत सैयद शाह हम्माद रहमतुल्लाह अलयहे बउम्र 36 साल कजाओ नागहानीसे अल्लाहको प्यारे हुओ । उस सालसे जानकाह और दिल गुदाजने आतिशे रन्जोगम को हवा देकर उन्के खातीर परेशान दिल बेकरार और दिल माउफ को इतना मुतस्सिर किया के एक साल तक तहेखानओ खानकाओ हम्माद में इश्के हकीकी और यादे इलाही की सरशारीमें मुस्तगरक रहे जब गम अन्दोहकी शिद्दत रफता-रफता कम होती गइ तो एक दो जिकरीपोकी शाने नूजूल का मौका मयस्सर हुवा ।

मुरीद व खलीफा आप अपने वालीद के ही थे जो हम पीछे सफा लीख चुके है । आपको सिलसिलओ शाहिया (हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहे) के सिलसिलओ सोहरवर्दीया के अलावा शेख मुहिय्युद्दीन अब्दुल कादीर जीलानी रहमतुल्लाह अलयहे और हजरत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाह अलयहे के रुहानी फैजकी बदौलत कादरीया और चिश्तिया सिलसिलो से भी वाबस्ता थे और नबीओ करीम सल्लल्लाहु अलैयही व सल्लम के फैजे मुहम्मदीसे भी आप सरफराज हुओ अलावा अझी आपको चौदह सिलसिलो से भी इजाजत हांसिल थी ।

आपकी शादी : हजरत ख्वाजा महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयहे का मजकूरओ मौजा औड के उनकी हकीकी खाला मख्दूमा बीबी की बेटी

फतहमलक बिन्ते शैख फरीद कुरैशी से हुवा था। अपने वालीदैन की तरह बीबी फतह मलक खूद भी मोजूतबा थी और गुजरी में शैर कहती थी। शादी की रात अपने शौहर की जिकरी सुनकर उन्होंने भी अपनी जो जिकरी सुनाइ थी वो और दिगर अवकात पर हुई जिकरीया तोहफतुल कारी में दर्ज है।

उस नेक खातुनसे आपकी आठ औलाद, तीन बेटे (1) शाह लाल मुहम्मद (2) शाह अबू मुहम्मद अशरफखान और (3) जमाल मुहम्मद और पांच दुख्तर (1) बीवी साहब (2) बीबी साहब जमाल (3) बीबी सहाब दौलत (4) बीबी सहाब चांद और (5) अमतुल अजीज-अल्लाहकी बांदी-बंदी पैदा हुई।

मुरीदो की तादाद : हजरत शाह ख्वाजा महमूद महबुबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयहे के मुरीदोके तादाद तीस लाख है। आपकी इन्सान दोस्त तबियत का तकाजा था वो बिला जिजक गुन्हगारो को मुरिद बनाते थे और उन्की नजर किमीया असर और तवजजोह है बातिनी से बहुत से आसियो का तौबा की तौफिक हांसिल होती थी। इस सिलसिले में खुद आपका एक जबानी मकौला तोहफतुल कारी कलमी किताबसे नकल है के **पीर सुना बायद के मुस्तहिक जा बरा मरतुजब रहमत गरंदानद (यानी पीर उस शख्स को कहते हैं जो दोजखी को बहश्ती बना दे)**

दुआ का असर : आप वाकइ महबुबुल्लाह थे आपकी जबानसे जो दुआ निकलती थी वो बारगाहे इलाहीमें मुस्तजाब होती थी। उन पर हर वकत यादे इलाही में आलमे इस्तिगराक तारी रहेता था। इस हालातमें बार बार फरमाते थे। **हर रोज लोग आते हैं कोइ कहेता है गरीब हुं दुआ कीजिये के तवंगर बन जाउ कोइ कहेता है के औलाद नहीं है। लिहाजा औलाद के लीये दुआ किजीये, कोइ कुछ मांगता है लेकीन कोइ युं नहि कहेता के तालिबे खुदा आमदा अम मारा ब खुदा रसानीद (यानी खुदा का तालिब होकर आया हुं मुझे खुदा तक पहोंचा दीजीये) अगर कोइ ये (यानी खुदा से मुलाकात) मांगे तो गरीब महमूद को अैसा कुर्बे खुदावन्दी हांसिल है की दोस्तके हाथमें उस्का हाथ मिला दुं। (सुब्हानल्लाह)**

आपके खलीफाओकी तादाद काफी थी जीनमें चंद खुल्फाके नाम दर्जे झैल है आपने अपने तीनो बेटोको खिलाफत से नवाजा था। जीनके नाम मुबारक उपर दर्ज है उस्के बाद

(1) सैयद शाह अहमद (बिरादरभाइ) (2) पोता-सैयद शाह प्यारुल्लाह (3) शाह चांद मुहम्मद (बिरादरभाइ) (4) शाह सैयद शर्फुद्दीन (बिरादरभाइ) (5) सैयद मुहम्मद मुस्तफा (6) शैख मुसा (7) शाह ताजन (8) शेख सैयद

अब्दुरज्जाक जाफरी जैनबी (दामाद ख्वाजा दरियाइ दुल्हा) साहिबे मफातीहुल कूलूब ला-झा-लतिल करुब उर्फे किताबे मल्फूज और फवाइदे महमूदिया (9) सैयद शाह उमर मुहम्मद (साहिबे कन्झूल करामात और गफातीहुल कुलूब मन्जूमदर सनफे मुखम्मस) हजरत शाह मन्सुर बिन शाह ख्वाजा सैयद अबू मुहम्मद अशरफखान (साहिबे किताब महमूद ख्वानी) (10) मलिक इमादुल मुल्क (11) सैयद डोसनमीयां पटनी बिन सैयद इल्मुद्दीन वालीद सैयद अली मीरां दातार शहिद (मीरा दातार, मु.उनावा) शाह सैयद अब्दुल कवी बिन शाह चान्द मुहम्मद बिन शाह हमीदुद्दीन आरीफ बिल्लाह और हजरत सैयद मुहम्मद हुसैनी गेसुदराज (उम्र-225) के हाफिद शेख फदलुल्लाह वगैरा हजरात खिरकओ खिलाफतसे नवाजे गओ।

आपकी तबीयतमें इन्केसारी और नमी फूटकर भरी थी। इसी वजहसे वो अपने मुरीदों और दूसरो से भी तवाजो मुन्कसिरुल मिझाजी की तल्कीन फरमाते थे। आप तमाम कौमो मजहबो मिल्लत जात-पात-उंच-नीच अमीर-गरीब खुर्दा कलां (छोटे-बडे) की तफरीको रिआयत नहीं बरतते थे आप अपने आपको गरीब महमूद सेवक महमूद कहेलवाते थे।

तरीक-ओ तालीमात : आपने तरीकओ तालीमात मन्जनशाहीको इख्तियार किया था कयुंके शाहेआलम से आपका खानदान पुश्त दर-पुश्त बैअत था इस लीये आप पाबंदी से शरीअत की तल्कीन कुरआनो हदीस, विर्दो-वजाइफ, रोजा-नमाझ की परहेझगारी व पाकि हर पहलुमें इस्तमाल लाते और अमल करवाते।

रियाजत : आपको रियाजत का अजहद शौक था छ-छह माहके रोजे रखते। महज रजाओ इलाही के लीये भूका-प्यासा रहेना आपको बहुत पसंद था। आपकोहे अलत-प्रेमगली (पहाड) (कूओ इश्क) में गुफा (गार) में चिल्लाकशी किया करते। इश्के इलाहीकी गर्मी से आपके दहन से आगके शोले निकलते और खूनके आंसू जारी होते आप हस्बे हाल ये शेर पढ़ा करते।

तू कया जाने प्रेमकहानी - तुज बिन लोहू हूवा न पानी

शेरो शायरी (कलाम) : आप अरबी-फारसी-गुजरी के नामवर (प्रख्यात) अजीम (महान) शाइर थे। आपने कुरआने पाक, हदीस वगैरह को गुजरी जबानमें ढाला था। आप "महमूद" तखल्लुस से हम्द, नात, मन्कबत, जिकरी वगैरा लिखते थे।

करामाते : काजी के खिताबमें मुश्किल मसला हल करवाना और वालिद, दादा, चाचा, अहमदाबाद के शहर काजी (न्यायाधिश) रहे इन निस्बतो से आपको लोग काजी कहते है। और हजरत शाह आलम रहमतुल्लाह अलयहेने आपके वालिद बचपनमें दुआ के लीये ले गये थे तब ये कहा था की काजीजादा

मरातिबे बुलन्द हांसिल करेगा और इसी तरह गरदाबे दरियामें फसी हुइ कश्तिओ और डूबते हुअे मुसाफिरो को ब वकत आपको याद करने पर आप नजात दिलाकर साहिले नजात तक पहुंचा देते इसी वजहसे आपको दरियाई कहा जाने लगा। इन दोनो बडी करामतो और लकब गैबी की वजहसे आपका काजी व दरियाई आम लोगोमे मश्हूर होनेका बाइशन बने नीज, तोहफतुल कारी, बकौल-बारी तआलाने महमूद महबूबुल्लाह से नवाजा था। इसके इलावा आपकी बेशुमार करामते आपकी मल्फूजात में महफूज है।

शौक : आपको शिकार, निशाने बाजी, तलवार बाजी, सफर करना, फलोमें नीलोफर, सुपारी खाना और भूको,प्यासो, मजलूमो, जरुरत मंदो, आसेबजदो, गमजदो, दुरवैशो को कपडा देना अनाज रोटी बांटना और खल्के मख्लूक करना आपके प्यारे शौक थे। मस्जिद, मद्रसे तामीर करना, करवाना, आबादी कवी करना, अवामको नात जातके बजाअे इन्सानियत के नाते इन्साफ करना, करवाना, आपका अजीम शौक था। आपने गुजरात, राजस्थान, अेम.पी., महाराष्ट्र, दककन गांव शहरोके इलाके के भी दौरे कीये। हजरत ख्वाजा दरियाई रहमतुल्लाह अलयहे के खास दोस्तोमें हजरत शाह शेख जीवा रहमतुल्लाह अलयहे सैयद महमूद बीन कुत्बे आमल थे।

हज : हिजरी सन 940 या 941 के दरम्यान आप बैतुल्लाह शरीफ, मदीना शरीफ हजके लीये रवाना हुअे। इसी साल आपकी निगाहे करम और मौजुदगीमें चितौड का किल्ला फतह हुवा था।

विसाल : हजरत सैयद शाह महमूद महबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा कदसिर्रहूल अजीज आपने खास मुरीदो खलीफा बा इख्लास मलिकुश्शर्क इमामुद्दीन उर्फे इमादुल मुल्क की जान लेवा बिमारी और उस्की पीरो मुर्शिद की लगातार इल्तजा के पैगामात आने पर आप चांपानेर (मुहम्मदाबाद) हाल (पावागढ ता.हालोल) जी.गोधरा (पंचमहाल) अपने सारे रिश्तेदारो को तमाम दीनी दुन्यवी हिस्से देकर और आखरी सलाम दुआ के बाद गअे और आप अपनी जींदगीके बकिया-बारह साल उसे अता करके उस्की जान बचाइ जिसके नतीजेसे आप बिमार हुवे और **कव्वालोसे अपने इश्के हकीकीसे सरशार जिकरीया सुनते हुवे बहालते वजदो हाल ब उम्र अडसठ** (68) **साल बारह रबीउल आखिर ९४१ हिजरी मुताबीक २१ अकतुबर १५३४ इ.स. को आखरी दावी अश्आर सुन रहे थे की जमीन पर सर रख दिया और सजदा ही में जां-बहक हो गये। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैही राजेउन**। आपकी लाशको आपके फरजन्दे और जानशीन हजरत सैयद शाह ख्वाजा अबु मुहम्मद

अशरफखान और खलीफा व दामाद शेख पीर सैयद शाह ख्वाजा अब्दुलरज्जाक जाफरी जैनबी दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे चांपानेर से मुकाम बीरपुर शरीफ ले आओ। जहां आपको आपके वालिद पीर शाह सैयद हमीदुद्दीन चाहेलदाह आरीफ बिल्लाह रहमतुल्लाह अलयहे की कब्र के पास जामे मस्जिदके सामने सुपुर्दे खाक किया गया।

दरगाह शरीफ की ताअमीर : हिजरी सन 941 से हि.स.953 इ.स.1534 से 1545 तक आपका ये शानदार रौजा आस्ताना 12 लाख वकते महमूदी रुपिये से वजीरे खजाना सुल्तान मलिक इमादुल मुल्क मलिकुश्शर्कने तामीर करवाया।

गुजरातमें मुसलमानों की आमदो रफत

हिजरी सन 15 में याने की हुजुरे अकरम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के वफात के पांच साल बाद फारुके आजम रदियल्लाहो अन्होके दोरमें बहरैन और अम्मान हुकुमत पर उस्मान बीन अबिलआस-सकफी रदियल्लाहो तआला अन्होने सत्ता पर काबिज किया ये बडे सहाबा में गीने जाते थे। येह हुकुमत उनके हाथोमें आनेके बाद अपने भाइ हकम बीन आस रदियल्लाहो अन्होने बहेरीन की हुकुमत सौंप कर हिन्दुस्तान पर हुमला करनेकी सत्ता दी। इन लोगोने दरियाइ सफर की बडी मंजीले कठीन परिस्थितिओमें पार करनेके बाद अपनी फौझ के साथ गुजरातके किनारे दाखील हुओ। यह लोग थाना में मुकीम हुओ। जो बम्बइ की करीब है। फिर दुसरा हमला हकम-बीन-आस रदियल्लाहो अन्होने भरुच जीसे अरबीमें बरुष लीखा जाता है। यह भरुच हिन्दुस्तानका आबाद और रोनकदार बंदर था। लेकीन यह हुमलाकी बडी काम्याबी के बाद यह दस्ता हजरत फारुके आजम रदियल्लाहो अन्होके नजदीक दरियाइ सफर मुसलमानोके लीये करना ठीक नहीं था, इसी लीये उस पर आपने तवजजोह नहीं दी।

तीसरा हुमला : हिजरी सन 93 में सींध इलाका मुसलमानोके कब्जेमें आ गया था। दमिश्क का खलीफा हिस्साम बीन अब्दुल मलीक हिजरी सन 107 में सिंधकी हुकुमत जैनद-बीन अब्दुलरहेमान मर्री को सौंपी। जुनैद बडे बहादुर और बडी ख्वाइश मंद इन्सान थे। कुछ ही दिनोमें इनके ताबो के तमाम इलाके बहेतर बंदोबस्त में कर दीये। उसके बाद गुजरातकी तरफ अपनी सौच लगा दी अरब फौजो के साथ कच्छ की तरफ रवाना कीओ। कच्छ को अरबी किताबोमें कस्सह लीखनेमें आता है। यह फौजे भरुच को पार करती हुइ मलवामें

दाखिल हुइ । चारो और फतेह हांसील की तमाम जानीब के दुश्मनाने इस्लामको झैर कीया माले गनीमत हांसील कीया ।

चोथा हुमला : बगदाद के खलीफा अल-महेंदी बिल्लाह-अल-अब्बासीने हिजरी सन 159 में अब्दुल-मलीक-इब्नुहिशाम को पुरी तरहा जंग करनेकी सारे अस्लाह दे दीये और जेहाद के लीये रवाना कीया । उन्के साथ में बहोत बडा फौजी लश्कर का दस्ता साथ था । **इनके साथमें ताबेइन होने का सर्फ हांसील करनेवाले अबुबकरह-रबि-बिन-सबिह-अल सादी-अल बसरी रहतुल्लाह अलयहे भी साथ में थे । जीन्हें हदीस शरीफ की पहेली मरतबा किताब लीखनेका सर्फ हांसिल है ।** यह फौज हिजरी 160 में भाडभुत में पहोंची यहां इन्होने फतेह हांसील की । फतेह हांसील होनेके बाद दरिया का मौसम बदलाया । अब्दुल-मलीक ने कहा मौसम अच्छा है थोडे दिन यहां ठेहर जाओ उस वकत यकायक मौसम ने करवट बदली और उस माहोलमें एक हजार इन्सान मुजाहिद्दीन वफात हुओ । इसी मे **रबिय-बिन-साहेबयह भी बिमार हुओ । वही भाडभुतमें इन्तकाल फरमा गये इन्हे मु.भाडभुत ता.जी.भरुच में ही दफन कीया गया ।**

गुजरात पर महमुद गजनवी का हमला

हिजरी सन 416 में महमुद गजनवी को गुजरात पे हमला करनेका ख्याल आया । वह 30 हजार का लश्कर लेकर मुल्तान आये । वहां से गुजरातकी तरफ आनेका इरादा बना लीया । रास्ते बहुत मुश्किल थे और पानीकी बहुत किल्लत थी, लेकीन साही और मजबुत इरादोने इन मुश्कीलोको डगा ना सकी रणो को चीरते हुओ अहिल्यावाड पहोंचे । जो राजा भीम की राजधानी थी । अरबी तारीखदानो में उसे नहरवाला लीखा है । लेकीन बादमें पट्टण (पाटण) और अरबीमें फटटन कहा जाता है । सुलतान महमुद गजनवी का काफला देलावाडा सोमनाथ वगेरह फतेह करनेके बाद माले-गनीमत हांसील करनेके बाद सही-सलामत गजनवी वापस पहुंच गये ।

शाहबुद्दीन घौरी के बेशुमार हुमले

हिजरी सन 574 में सुलतान शहाबुद्दीन घोरीने मुल्तानके रास्ते फिर गुजरात पर हमला किया उस वकत गुजरात पर राजा भीम की हुकुमत थी ।

इनके साथ में बडे पयमाने पर जंग हुइ जीसमें शहाबुद्दीन घौरी की शिकश्त हुइ । और मुसलमानोकी हिम्मत टुट गइ । लेकीन कुछ दिनों के बाद लाहोर और देहली की बडी फतह मीली यह अल्लाह तआलाकी जानीब से बडा बदला था ।

हिजरी सन 591 में अजमेर की फतह के बाद कुत्बुद्दीन ऐबक ने अपने मालीक शहाबुद्दीन घौरी की इजाजत लेने के बाद गुजरात पर दुसरा हमला कीया । नहरवाला (अहिल्यावाडा पाटन) पहुंचकर रण मेदानमें राजा भीमदेव को बडी शिकस्त दी और इस लडाइ का बडा खर्च वसुल कीया और सही सलामत दिल्ही वापस गये । येह बडी नुशरत के फतह के बाद शहाबुद्दीन घौरी कि बडी तमन्नायें पुरी होना बाकि थी । जो अपनी जींदगी कि बडी ख्वाहीश थी ।

हिजरी सन 597 में कुत्बुद्दीन ऐबक ने फीर गुजरात पर मोरचे रवाना किऐ । इस बाद कुत्बुद्दीन ऐबक ने भीमदेवको शिकस्त दी और नहरवाला (पाटन) पर काबीज हो गये ।

अलाउद्दीन खीलजी का हुमला और गुजरात पर मुसलमानो कब्जा

उसके बाद हिजरी सन 696 में हिन्दुस्तानके अझीम गाझी कायदे आझम सुलतान अलाउद्दीन खीलजीने उलुगखान को लश्करकी तमाम अस्लाहा देने के बाद गुजरातकी तरफ हमले के लीये रवाना कीया । यह वकत गुजरात पर राजा कर्ण घेला के हाथ में हुकुमत की आखरी लगाम थी । उसने अपनी जान पर खेल कर अपनी तमाम ताकत लगा दी । फिर उसने देवगढ चांदा ने आपने आशरा (पनाह) ली । उसके हाथी और घोडे खजाने और ऐशो इशरत के तमाम साधन उलुगखान के हाथमें आ गये । राजा की राजकुंवरी देव और देवी रानी थी केद कर ली गइ । यह सब उलुगखानने दिल्ही की और रवाना कर दिया । नहरवाला पट्टनने अपनी राजधानी बनाइ और एक जामअ-मस्जीद तामीर करवाइ जो यह (मस्जीद) शायद यहां की पहली मस्जीद थी (तारीखे फरिश्ता गुलजारे इब्राहीमी) गुजरात के लोग उलुग खानको अफखान या अलीफखान के नामसे जानते हैं ।

नोंट : राजा किरण (अव्वल) बिन भीम देव (हि.स.465 से हि.स.487 इ.स.1072 से 1094) के दौर में हजरत शाहअली सरमस्त कलंदर ने आपकी दुआसे मिनल देवी को औलाद हुई (राजा सिध्धराज) । इसकी बिना पर आपको इनाम देना चाहा मगर आपने वहां उसके दौरमें मस्जीद तामीर की थी और ये मस्जीद पटन की (नहरवाला) की सबसे पहेली मस्जीद है और ये

मस्जीद तोहफतुल कारी की तालीफ 1119 हि.स.1707 इ.स. तक मौजुद और मस्जीदे-कात-के नामसे मशहुर थी । शाह अली सरमस्त कलंदर रहमतुल्लाह अलयहे का मझार वही है । (हवाला : तोहफतुल कारी)

गुजरातमें मुसलमानो की आजाद हुकुमत

फिरोजशाह तगलख के जमाने में ब्रह्माणी खानदान आजाद सल्तनत जुनुबी हिन्दुस्तानमें आझाद हुकुमते बन चुकी थी । बंगाल और कश्मीर पहेले से ही आप खुद सुबाओकी हुकुमत में था । उसके इन्तकाल के बाद उस्की अवलाद ना काबीलीयत की और घरेलु मशाइलमें एक-दुसरे की अंदरुनी फीत्नो-फसाद पैदा हुओ थे । गुजरातके सुबे-गर्वनरो भी बगावत की थी । उस वकत फिरोजशाहने अपने बेटे मोहंमद शाहके कमजोर हाथोमें लगाम दी । फिर उस्ने हिजरी 793 में अपनी अमीर जफरखां को गुजरात की हुकुमत सोंप कर रवाना किया ।

जफरखान को गुजरात भेजना

जफ्रखान गुजरातमें आने के बाद सबसे पहले तमाम बगावत करनेवालोका कब्जे कर लीया । उस सुबे का बहेतरीन इन्तझाम कीया और चंद दिनोमें यहां के लोग आराम और इत्मनानसे रहेने लगे । आफीयत छा गइ और आपने बडी महेनत मुश्कत करके इस हुकुमत की हदे बडी वसी कर दी । जफरखानने खुद हुकुमत कर ली । गुजरातमें अपनी आजादना हुकुमत जारी थी और दिल्ही की सल्तनत दिन ब दिन तबाह हो रही थी । दिल्ही के बादशाह सिर्फ नाम के रह गये थे असलमें दबदबा उनके वजीर इकबालखान का था । तमाम बागदौर उनके हाथमें थी । तैमुर गौरखान (लंग) की लालच हिन्दुस्तान पर लंबे अरसे थी उसके लिये मैदान खुला था । हिजरी सन 801 में दिल्ही पहोंचने के बाद दिल्ही की बची हुइ इजजत और सल्तनत को मीट्टी में मीला दी और इसके बाद फिरोजशाह का खानदान तबाह और बरबाद हो गया । जोनपुर और माल्वा के सुबे आजाद हो गये जफरखान को भी अपनी आजादना हुकुमत करनेका मौका मीला था मगर उनकी हिम्मत नहीं चली । आखीर हिजरी 810में आलीमो, मशाइखो की गुजारीशो से और अपने बडे बेटे तातार खान के दबाव से मुजजफरशाह का लकब लगाकर गुजरात की आजादाना हुकुमत पर अपना अैलान कर दीया ।

अहमदशाह पहेला

मुझफफरशाह के बाद उनका पर पोता अहमदशाह गुजरात की गादी पर बेठे। वह तातार खान के बेटे थे। तातार खानकी मौत अपने वालीद की हयाती में हुइ थी। अहमदशाह बहुत हिंमतवान और बडा ख्वाइश मंद थे सबसे पहेले उन्होने अपने नाम पर अहमदआबाद शहर को बसाने का काम शरु किया। उस वकत अहमदआबाद शहरकी तामीर इस तरह की के उसका नाम बडे अरसे तक हिन्दुस्तान के नायाब और बे जोड शहरोमें गीना जाता था। हिन्दु राजाओ और उनके हमलो से बचने और अपनी सरहदे मजबुत करनेकी तरफ आपने जयादा तवजजोह दी। इस लीये उन्हे कइ बार युध्ध करना पडा और फतेह हांसील की। इस फतेह के बाद आस-पास के राजाओकी और से नजराना देने पर कायर (मजबुर) हो गये। इस हुकुमत की सबसे बडी कामयाबी निजामत बहेतर थी यह निजामत अपनेवजीर की नीगरानी मे थी। यह निजाम व इन्तजाम मुजफफर शाह हलीम के जमाने तक कायम रहे औ अनुमन 30 साल हुकुमत करने के बाद हिजरी सन 843 में उनका इन्तकाल हुआ। महेमुदशाह ने नौ साल से कम बादशाहत की हिजरी सन 855 में इन्तेकाल हुआ। उनके बाद कुत्बुद्दीन अहमदशाह ने ८ साल से जयादा बादशाहत की हिजरी सन 863 में उनका इन्तकाल हुआ। उनके बाद महेमुदशाह पहेला आप जीन्होने गुजरातके बहोत मशहुर और मारुफ किले जुनागढ और चांपानेर के किले अपनी रियासतमें शामील कर लीये और गुजरातके नहरवाला (पाटण), बडौदा, सुल्तानपुर, अहमदनगर वगेरेह शहरो को आबाद किया। और आपने जुनागढ के करीब मुस्तुफाबाद, अहेमदाबाद के करीब (तकरीबन 30 कि.मी.) दुर महेमुदाबाद (महेमदाबाद) शहेर बसाये। और तमाम तरह गुजरातके अलग-अलग जगहो पर मद्रसे और खानकाहे बनवाई। आपने 54 साल तक गुजरात पर हुकुमत की हिजरी सन 917 में आपका इन्तेकाल हुआ। आपका मजार अहमदाबाद में सरखेज इलाकेमें हजरत शेख अहमद गंज खट्टु रहमतुल्लाह के आस्तान के सामने मजार है।

मुजफफरशाह हलीम

वालिद महमुद बेगडा थे। वालीदाह का नाम राणी हीराबाइ था। ये राजपुत जमीनदार की बेटी थी। आपका नाम खलीलखान उर्फ सुलतान मुजफफरशाह हलीम था। पैदाइश 6 शाबान बुध हि.स.880 इ.स.1475 के रोज

सुब्ह सादिक वकत हुओ ये तारीख फर्रुख सुख्ती से निकलती है। वालिदाह का विशाल आपके पेदा होनेके पांचवे दिन बाद हो गया। सुलतान महमुद बेगडा वालिद सहाबने परवरीश के लिये, अपनी सोतेली वालेदाह हंसाबाइ के हवाले किये। इन्होने मुजफ्फरशाह हलीम की अपने सगे बेटेसे जयादा ख्याल रखकर परवरीश की थी। जनाब सुलतान महमुद बेगडा अपने ये शहजादे को देखकर फरमाया था के मेरे बाप दादा के बादशाही काबिलियत को इनसे जयादा फरोकत मीलेगा व औलाद वशी होगी। वालीद सुलतान महमूद बेगडे की वफात पीर के रोज जोहर की नमाझ के वकत 3 रमजान शरीफ हि.स.917 इ.स.1511 में हुई। 54 साल गुजरात के बादशाह रहे और 67 साल 3 माह की उम्र पाई। वालिदे गिरामी सुलतान महमूद बेगडा की वफात के बाद अमीर उमराह वगेरा सुलतान मुजफ्फरशाह को तख्त पर बिढानेके लिये बडोदा (खलील आबाद) लेने गये। **सुलतान मुजफ्फरशाह ने फरमाया मेरे पीरो मुर्शीद हजरत शाह सैयद महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे मेरी ताज पोशी और मेरे लिये दुआ करे के मुगल हुकुमत हमला न करे और कहत न पडे। हजरत से मुलाकात करने के बाद आपने जुम्आ के दिन हि.स.917 इ.स.1511 ताज पोशी की और दुआ फरमाइ थी। सुलतान मुजफ्फर हलीम आप से बैत-मुरीद थे** आपके वाकीयात आगे लीख्खे जायेंगे। आपने इल्मे दीन अल्लामा मुहम्मद बिन मुहम्मद दुलऔजी से पाया था। इल्मे हदीस अल्लामा जमालुद्दीन मुहम्मद बिन उमर बहरुक से सिखा। कुरआने करीम हिफ्ज करने के बारेमें हजरत शेख सादी रहमतुल्लाह अलयहे इर्शाद फरमाते है की दर अैयामे जवानी चुना उफतह-दानी (जवानी में कुरआने पाक हिफ्ज किया था)

ये फजल व कमालत के साथ साथ तकवा अझमत से खुद दाद दौलत नसीब हुइ थी। जींदगीभर कुरआन और हदीस पर अमल पैरा रहे हंमेशा बावुजु रहेते थे। नमाज जमाअत के साथ अदा करते अपनी जींदगी में कभी रोजा तर्क नहीं किया। शराब व पान वगेरा कभी इस्तेमाल नहीं किया था। कभी किसी पर सख्ताइ नहीं बरती और नाहक जुल्म सितम नहीं किया। कभी बद कलाम-व गंदे अलफाज इस्तेमाल नहीं किये। अपना मुंह इन बातो दुर रख्खा मुस्कुराकर और परहेजगार वली सिफत सीपेह सालार, गाजी और बादशाह के तमाम ओसाफ इनमें शामिल थे। अरबी जुबान के बडे आलीम व कातिब थे। कुरआन पाक लीखकर मककाशरीफ कुरआने पाककी नकल रवाना करते। आपने ये इल्म उस वकत के मशहुर खुशनवीस (लहीया) मुल्ला महमूद शियावश शीराझी को मुकर्रर किया था और इन्हीसे सिखा था। आप खत्ते

नस्ख खत्ते सुल्स और खत्तेरुका (तीन किस्म की फारशी-अरबी) जुंबान लीखनेकी किस्मे जानते थे। **आप मुजफफरशाह हलीम रहमतुल्लाह अलयहे इर्शाद फरमाते है की हदीसो की कोइ हदीस अैसी नहीं जो मुजे सही रिवायतो के साथ ब जुबान याद न हो। इसी तरहा कोइ रावी अैसा नहीं जो मोतबर और गैर मोअतेबर दरजावाले मे इसकी पेदाइश से लेकर वफात तक की मुजे मालुमात नहीं। सुब्हानल्लाह!**

सुलतान मुजफफरशाह हलीम से हमे सबसे बडा फख्र इस बातका है की फतहुल बारी शर्हे बुखारी शरीफ की सबसे पहेल कलमी नुस्खा हिन्दुस्तान आया था। ये मुजफफरशाह हलीम को ब तोहफा दिया गया। ये तोहफा लानेवालो को आपने भरुच का गर्वनर का होद्दा देकर सरफराज किया। (जफरुलवालह सफा 118 से 127 व तारीखे मुजफफरशाही सफा -18)

आप हदीस, अस्माअेरिजाल, मन्तिक, फिल्सुफी कलाम वगेरे में भी महारत हांसील थी। आप मजामीर (संगीत कला) शेरे शायरी, कुश्ती, तलवार बाजी, भाला में भी काबेलीयत रखते थे। **आप ख्वाजा महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे की जिकरिंयो को दरबारे शाही में निहायत झोको शोकसे सुनकर मेहझुज हुवा करते थे। बल्के आप इर्शाद फरमाते ये के मेरे पीर का कलाम अगर अरबी में होता तो में आलिमो से कहेता के वो खुत्बे में इन कलामो को पढे। आप और आपके वालिद सुलतान शाह महमूद बेगडा बडी अकीदत रखते थे।** वकत फवकतन आपसे मिलने बीरपुर शरीफ आते आपसे इतनी मोहब्बत हुइ के एक दिन सुलतान मुजफफर हलीमने इर्शाद फरमाया की (हजरत पीरो मुर्शीद शाह महमूद रहमतुल्लाह अलयहे) मुजे सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी जियारत करनी है। आपने फरमाया के गुजरातकी हुकुमतकी खिदमत में ही सरकारकी जियारत है। मगर आशिक जब इश्के खुदावाले से निस्बत करता है तो तन-बदन में अजीब तडप वाली आतीशे नमुंदार होती है शाहने फरमाया आप मेरे लिये दुआ व विर्द-वजाइफ अता कर दे, मुजे जियारत जरुर नसीब होगी। बिल आखिर ख्वाजा दरियाइने आपको बीरपुर शरीफ की ख्वाजा दरियाइ की अपनी प्यारी इबादतगाह प्रम-गली (कोहे अलत) के पास मुजफफरखान फौजदारकी मस्जीदमें चिल्ले के लिये बिठा दीये और आपने इर्शाद फरमाया, के आपको चालीस दिन अकेले रहेना है और मेनें दिये विर्द-वजाइफका जिक्र करते रहेना। आपको निंद न आ जाये उस लिये आप नमकका पानी आंखो में छळकते रहेते

और रेशम के दोरो से आंखोकी पांपळ को लकडी के साथ सिकर बांध दिया करते थे । बिल आखिर एक दिन सरकार की आमद के मौके पर ख्वाजा दरियाइ आपके पास तशरीफ लाये और इर्शाद के तौर पर ये कलाम के अश्शआर फरमाऐ । **जाग निंदा-लुं जाग सवेरा सोवन की तेरी कोन है वेला** ये कलाम के 13 अशआर है हम आपको पुरा वाकिआ आगे पढायेंगे (ये मस्जीद शहीद हो चुकी थी करीब 550 साल बाद दुबारा इसे आबाद किया है । यानी 2012 में काम चालु कीया, 2013 के र. या. 3-माह में पुरा हुवा । इस मुबारक काममें हिस्सा लेनेवाले जनाब सैयद अेम.अे.बुखारी, जनाब युसुफखान, जनाब अब्बुल रहीम अेन. वहोरा, जनाब इमदाद अली सैयद, जनाब नबीजी शेख और दिगर इस्लामी भाइओकी अजीम महेनतसे इबादत के काबिल मस्जीद आबाद कर दी । बंदे संपादक को यहां की तारिख का संगे काबित पथ्थर पे लिखने का इन्ही लोगो ने कहा और ताखिर संगे ग्रेनाइट पर शानदार तहेरीर करे वहां लगा दिया गया है) उस तरहा हमारे आबा जो अजदाद से बडे-बडे बादशाहो ने फैज पाया है । **मुजफ्फरशाह हलीम की वफात 22 जमादिल आखर हि.स.**932 **इ.स.**1525**में हुई । आपको सरखेज रोझ-अे हजरत शेख अहमद मगरबी खट्टु रहमतुल्लाह अलयहे के सामने अपने वालिद सुलतान महमूद बेगडा के बाजु दफन किये है ।** इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजेउन आपने 14 साल नव माह तक गुजरात के बादशाह रहे । तारिख के लीखनेवाले तहेरीर करते है की आप जैसा कोइ अमलपैरा, अकलमंद, इल्मी सलाहियत करनेवाला गुजरातका बादशाह हुआ नहीं । इन्हीके दोरे हुकुमत मे माल्वा के गासिब हिन्दु वजीर मेदनीराय अे की सरकोबी के लिये उसके माल्वा पर लश्कर कशी की महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे भी शरीक थे और उनकी दुआसे होनेवाली फतह मांडुगढ की तफसीलात तोहफतुलकारी में दर्ज है । मुहिम मांडु के दौरान जंगमें शुमाली गुजरातमें वाके मोझअ उनावा के मश्हुरो मारुफ बुजुर्ग हजरत सैयद अली जो मीरां दातार के उर्फ से जयादा पहेचाने जाते है शहीद हुअें । उनके वालिद सैयद दोसनमीयां रहमतुल्लाह अलयहे (ख्वाजा दरियाइ) के मुरीद-व खलीफा थे ।

सुलतान मुजफ्फरशाह हलीम के बाद सुलतान सिकंदर शाह हि.स.932 इ.स.1525 आये । 2 माह 16 दिन गादी पर रहे थे उनके बाद नसीरखान उर्फ सुलतान महमूदशाह दुसरा आये हि.स. 932,1525 में पांच या छह सालकी उम्रमें सियासतके उतार चढावमें सुलतान बनाये गये थे ।

उनके बाद सुलतान बहादुर-बहादुरखान तारीख 26 रमजान हि.स.932 में अहमदआबाद आकर भद्र के किल्लेमें इदकी नमाज बादशाही रिवाज मुताबिक अदा की और खुत्बेमें अपना नाम पढवाया। जील्कद 14 चांदकी रातको हि.स.932 में तख्त पर बेठे। आपके वाकीयात बहोत है मगर हम यहां जरूरी बाते लीखकर आगे चलेंगे। बहादुरशाह 943 हि.स.1537 इ.स. को भी अपनी फातेहाना सवारी दक्कन में हजरत ख्वाजा काजी सैयदना शाह महमूद महेबुबुल्लाह दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहेकी मौजुदगीके सबब कामयाबी हांसिल हुइ थी। उस जमानेमें आप कइ बार मुस्तिकिल पाये तख्त अहमदआबाद और नये दारुल हुकुमत मुहम्मद आबाद उर्फ चांपानेर (पावागढ) और गुजरात के मुख्तलिफ मकामातका सफर करते रहे। रुश्दो हिदायत के मरकज का शर्फ बजाहिर खानकाह - कोहे-अलत उर्फ प्रेमगली (पहाड) और बीरपुर को ही हांसिल रहा।

अपनी चित्तोळ की मुहिम की कामियाबी और फतह वजफरकी दुआके लिये बहादुरशाह बादशाह बीरपुर हाजिर हुआ था और आपके फरजंद शाह सैयद जमालुल्लाह (जमालु) को अपने हमराह चित्तोळ ले गया था। जश्ने फतह चित्तोळ किलेमें हजरत शाह सैयद काजी महमूद महेबुबुल्लाह दरियाइ दुल्हा भी बनफ्से नफीस तशरीफ फरमा थे। फतह के नशेमें चूर सुलतान बहादुरशाह के मुतकब्बिराना बळे बोल और दावो पर आपके उसको तम्बीह करनेसे सुलतान बहादुर आग बबुला हो गया उस पर आपने सुलतानसे मुंह कया फेरा के पलक जपकते ही उसकी माया अे इफतेखार फूतुहात की बिसात ही उलट गइ और उसके तमाम अजीम कारनामों पर अचानक पानी फिर गया और आनन-फानन हो नेकी सबब बनी उसके तख्तो ताज पाये तख्त चांपानेर पर मुगल बादशाह हुमायु का कब्जा हो गया और आखिरुल अम्र खुद पुरतगीजों के हाथो बन्दर दीवमें गर्क हो गया। आप सुलतान बहादुरशाहसे नाराज होकर बीरपुर आ गये थे। (मगर सुलतानके वजीर और आपके मुरीद व खलीफा बा इख्लास मलिकुशरक इमामुद्दीन के बुलावेने पीरो मुर्शीद हुजूर महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे इल्तेजा पर आप चांपानेर तशरीफ ले गये आपके ये रुहानी और आपकी अजीम करामते आगे पढने मीलेंगी इन्शाअल्लाह.

गुजरात के सलातीन सुलतान बहादुरशाहके हजरत ख्वाजा काजी सैयद शाह महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे से गलतफेहमी पर नाराज होकर उनको अपने मुल्कसे इखराज (निकाल देनेका हुकम) और आपकी सुलतान के बारेमें पेशनगोइ की के **नाठा आवे भागा जावे फौत मांडे गौता खावे**

(यानी मुगल बादशाह हुमायुं के हम्लओ गुजरातके वकत सुलतान का चांपानेर से खम्बायत (खंभात) की तरफ कूच कर जाने और वहां से बन्दर दीवमें पुरतगीजोंकी पनाहमें जाकर उनके मकरओ समन्दरमें उसकी दस्तारगिरने और उनके हाथो गर्क हो जानेकी तरफ इशारा है) वगैराह....

(सुलतान का नाजाइज हरकत करना और आपका शाह महमूद दरियाइ दुल्हा एक मकाला कहेना की **जब गुफामें शेर नहीं होता तब लुली लोमडी वहां शिकार करने निकल जाती है। सुलतान ये वाकया सुनकर आपसे कहेने लगा गुस्सेकी हालतमें की आपको मेरी सल्तनतमें (राजय) में रहेना नहीं चाहिये आप सरकार ख्वाजा महमूद दरियाइने जवाब फरमाया की ये जमीन परवरदिगार की है में भी नहीं रहुंगा तु भी रहेनेवाल नहीं) (हवाला : मिरांते सिकंदरी)**

सुलतान बहादुरशाहको एक फीरंगीने तलवारके हमलेमें काट डाला और दरियामें फैंक दिया और सुलतानके साथी भी मारे गये। हि.स.943 इ.स.1537 रमजान मुबारकके चांद 3 को ये वाकयात की हकीकत बनी थी। (हवाला : मिरांते सिकंदरी) 11 साल हुकुमतकी थी 20 सालकी उम्रमें सुलतान तख्तनशीन हुवा था 31 सालकी उम्र पाइ। इसी साल ख्वाजा दरियाइ सरकारकी रहेलत फरमा गये थे।

सुलतान बहादुरशाहके बाद सुलतान महेमूदशाह तीसरा हि.स.943-961 इ.स.1536 से 1553 इसके बाद सुलतान अहमदशाह दुसरा हि.स.961 से 968 इ.स.1553 से 1560 इनके बाद सुलतान मुजफ्फरशाह तीसरा हि.स.968-980 इ.स.1560-1573, उसके बाद सुलतान अकबर बादशाह गुजरात पे कबजा करके गुजरातको अपननी (वसी) बडी सल्तनत में शामील कर लिया था हि.स.991-992 इ.स.1583-1584 तक रहा था।

उसके बाद गुजरातमें मुगलोका आना और गुजरातकी सलत्नत को अपने ताबे करना वगेरहा की तफसीलात है मगर हम अपने मौजुको ध्यानमें रखकर आगे चले। हिन्दमें हि.स.932से जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर उमर शयख मिर्जा-से शुरु हुइ और नसीरुद्दीन मोहम्मुद हुमायु बिन बाबर मिर्जा को गेबी इशारे गुजरातकी हुकुमत के लीये सरकारे खवाजा दरियाइ का इशारा मिला था। हुमायुने हि.स.937 से हि.963 साल दिल्हीके बादशाह रहे। इस बीच (शेरशाह 1 साल दिल्ही के हुकुमतमें आया था) इनके बाद हि.स.963से जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बिन हुमायु आये। इन्होने (52) बावन साल दिल्ही के बादशाह रहेकर राज कीया था। **सुलतान अकबर बादशाहने गुजरात आकर ख्वाजा**

दरियाइ सरकारके सोयम शहबजादे (तीसरे नंबर के बेटे) हजरत सैयद शाह जमालुदीन से दो बार मुलाकात करनेका शर्फ लीया है। गुजरातकी हुकुमत अकबर बादशाहके नाम आपने दे दी है ये जानकर जझालुदीन अकबर अहमदाबाद आये, यहां हजरत ख्वाजा शाह जमालुल्लाह के तीन महेल थे। शीश महल, आयेना महेल, लाखा महेल, ये अलगरज सुलतान आपकी तकवा, परहेजगारी, इल्म, अमल, दौलत, शोहरत वगेरा तमाम तरीकोसे वाकीफ होकर सुलतान अकबर बादशाह दीदारका तलबगार हुआ। हजरतने फरमाया सुलतानको मीलना हो तो जोहर के वकत बहार आयेंगे मीलना हो तो बैठे वरना उनको अख्तियार है इस तरहा बडे वाकियात आप इस किताबमें आगे पढेंगे।

अलगरज आपको सुलतान अकबरने 120 गांवका इनामी जागीर अता की थी। आपके बाद ये जागीरे नस्ल-ब-नस्ल हुकुमतोके तरफसे ख्वाजा दरियाद शाह महमूद रहमतुल्लाह अलयहे के खानदानवालोको इस्लाम की अमल पैरा जिंदगी पर काबीज रहे वहां तक जागीर मीलती रही है। सुलताने मुगलोकी जानिबसे जैसे ही.स.1014 में नुरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर इनके बाद 1067 दाराश्किोह इनके बाद ही.स.1067 मुहीयुद्दीन औरंगझैब आलमगीर बादशाह जो बडे दिनदार, इबादत गुजार थे। (फतावाओ आलमगीर) ने बीरपुर और कारंटा शरीफके सजजादानशीनके उपर काबीज करके आपको सनद अता की थी। जो अलहम्दो लिल्लाह हमारे रेर्कड कुतुबखाने रजजाकीयाह पुरनुर बीरपुर शरीफमें मौजुद है। इनके बाद जागीरें बीरपुर कारंटा शरीफके सजजादानशीन हजरत मनसुर बीन चांद मुहम्मद बीन शैख सैयद मुहम्मद मीर बिन शाह हामीद बिन शाह अब्दुल कवी बिन शाह चांद मुहम्मद बिन शाह सैयद हमीदुद्दीन अल मारुफ शाह चाहेलदा थे। सैयद मुहम्मद महबूबे आलम से बैत थे। और इनके वालिद जो एक खुदा तरस और नेक आदमी थे यानी शाह चांद मुहम्मद बिन मुहम्मद मीर वोह शाहिया के साहबे सजजादा सैयद जाफर बद्रे आलम मुतखल्लिस ब जलालीसे बैत थे। शाह मन्सुरने अपनी दादी बीबी हदिया, अपने वालिद और साहेब सजजादाओ खानकाह बीरपुर व कारंटा से उलुमे दीनी की तकमील की नीज अपने पीरो मुर्शिद सैयद महबूबे आलमसे भी उनकी मजालिस रुश्दो हिदायतमें हाजरी देकर कुरबे फैज बातिनी किया और सुलूकसे माहितगार किये। उसके बाद वो मस्जिदे जामें बीरपुरमें इमामत और खिताबतके फराइज अंजाम देते रहें प्रोफेसर महेमुद हुसैन अब्बासी - पीर मोहंमदशाह लायब्रेरी से 1996-97 में शाये हुई तोहफतुल कारीके उर्दु दिबाचेमें

उन्होने ये लिख्खा है । और आपके बाद शाहअली रजा कारंटा व बीरपुर के सजजादानशीन हुऐ थे । जीन्हें 1125 हि.स. में भी बादशाह दिल्ही की जानिबसे सनदे जागीर और सजजादानशीनी मीली थी । उनके बाद जमाने, हुकुमते बदलनेसे और निजामते, जागीरी, अमल और दयानतदारी, वफादारी, इस्लामी खिदमतोको देखकर दि गइ थी बादमें अंग्रेजी हुकुमत और फीर हिन्दुस्तान आजाद हुआ वहां तक जागीर कम जयादा मीलती रही है । जो आज तक हम देख रहे है । सनदी-गर्वमेन्ट अेवीडन्स ओफ रेकोर्ड की अेवजमें अलहम्दोलील्लाह ।

सन हिजरी 1128 में पांचसो खुदमुखत्यारी मनसब और 250 घोडेस्वार देकर बालासिनोर के फोजदारी के होद्दे पर सलाबतखान मोहंमदखान बाबी को भेजा गया था । ये हजरत औरंगझेब आलमगीर बादशाह के वकत में बालासिनोर के सुबेदार सलाबतखान मोहंमदखान बाबी को वतनको तौर पर दिया गया था और तन्खाके तौर पर बीरपूर परगनाकी फोजदारी पर काबीज थे । बालासिनोरमें सलाबतखानने इंट और चुने का कोट बनाया था और फोजदारको रहनेके लिये छोटा मजबुत किला बनाया था और एक छोटा किल्ला लुटेरोकी जगह पर बनाया गया । यह अब सलाबतनगर से जाना जाता है । यहां 49 गांव कस्बा सहित 33,78,659 दामोकी जमाबंधी थी और वहां की फोजदारी शरतवाले 100 सवारो की थी ।

ये बीरपुर शरीफ अहमदाबादसे पूरब की जानीब चालीस कोस था उसमें एक महल था । बावली (बालम) नदीके उपर यह गांव है पुराने जमानेमें वीरा नामका एक कोली के नामसे वीरपुर बसाया गया था । इसमें तकरीबन 145 गांव और 3,06,869 दामोकी जमाबंदी थी । यहां पर एक फोजदार थे जो सलाबतखान थे । यहां के फोजदारके ताबे (1) कारंटा शरीफका किल्ला (2) धामोध का किल्ला (3) पुनादरा का किल्ला के थाने थे और यहां शरती 100 सवार थे । यहां के सात गांव गैर अमली है और वह जमीनदारो के ताबे में है बाकी के 178 गांव की लीखी हुइ जमाबंधी है । (मीरांते अहमदी)

बालासिनोर स्टेट जानिब (तरफ) से खुद (जात) इमानी सनद नं.83 ठराव नं.1067 बा.हा.नं.1211 की सनद ब्रिटीश सरकार मुंबाइ इलाका के पोलीटीकल खाताके ठराव नं.5043 ता.2-सप्टेम्बर 1910 में बालासिनोर स्टेट के बहार खाली जमीनके संबंधमें जो कानुन का ठराव था वो मुजब तपास (तेहकीक) करनेके बाद (बालासिनोर-वाडासिनोर) स्टेटमें बीरपुर (हवेली) महाल मु.बीरपुर (वीरपुर) (महमूदपूरा) की जमीन नीचे लीखे हिसाब कानुन मुताबिक स्टेट के चलते रिवाज मुताबिक खुद मुखत्यार बीरपुर हजरत महमूद

दरियाइ साहब दरगाह की तरफसे पीरजाद गान समूह कुटुंबकी जानिबसे अब औलाद ब औलाद कायम के वहीवट (ट्रस्टी) (1) पीरजादा दलुमीयां पीरुमीयां (2) यासीनमीयां रसुलमीयां (3) करमीमीयां फतामीयां रे.बीरपुर जात इनाम तरीके से दि जाती है अैसा तपास (जांच) करके बाद दी जाती है। जो जमीन टोटल 880-14 विघा है ये जमीन ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे दरगाह शरीफ के निभाव (मेन्टेनन्स) के लिये और (तमाम पिरजादा याने दरियाइ सहाबके वंश औलादके रोज मर्राहके अपने अखराजात पुरा करने के लिये जो कदिम जमानेकी रिवाज मुताबीक वकतन फ वकतन हुकुमते बदलनेके बावजुद दी जाती थी। हर दोरमें मुतव्वली-सजजादानशीन-दरगाह बीरपुर शरीफका वहीवट करते आते थे) ये सनद जात इनाम मिल्कतके तोर पर तरीके और सरतो मुताबीके जैसे सरकारके वफादार, इनामदार रैयत रहेना सरकारके ठराव मुताबीक हर साल 105-7-3 की रकम देना और इस सनद के मुताबीक जमीन हजरत ख्वाजा काजी महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के नाम की ही रहेगी कीसी भी तरहका फेरबदल या उसका मक्सद बदलनेका मालुम होगा तो सरकार उसमें दाखल हो जायेगी। और इस तरहाका ठराव किया जाता है की ये (संस्था) वकफ में फेरबदल जमीनमें नही किया जायेगा। कोइ भी सबब या कारण (वजह) एक या दुसरे के नाम कर नहीं कर शकते याने ये जमीन हंमेशा उपर के क्रम, बोकस १ के नाम यानी (ख्वाजा काजी महमूद दरियाइ) के नाम ही चलाइ जायेगी और ट्रस्ट साहेबान मुतवल्ली दरियाइ सरकार के वारसदार सही वहीवट देखरेख रखेंगे। वहां तक कोइ भी शरतो को छोडकर काम न करेंगे वहां तक चालु रहेंगे और जब तक ये (दरगाह शरीफ) संस्था का वहीवट बराबर चालु रहेगा इसमें कोइ फेरबदल करनेकी हरकत नहीं होगी। ये सनद बालासिनोर स्टेट जानिबसे नामदार ब्रिटीश सरकारके मंजुर की गइ कानुन की अवेजमें बालासिनोर स्टेट के मे.अेडमीनीस्ट्रेटर सहाबकी दस्तखत (सही-सिकका) महोर से ता.19-माह मे -इ.स.1923 के रोज करके आपको देनेमें आती है। ये सनद पढकर बोलकर और शरतो की गइ मुताबिक कबुल करके और सही पुरावा के साथ ये सनद के नीचे अपनी सही (दस्तखत) की है।

अेली अेनेसन इनकवायरी ओफीस
रेवाकांठा, अेजन्सी का सीकका
अे. सही.

पीरजादा दलुमीयां पेरुमीयां
सही अंग्रेजीमें नवाब सहाब
बालासिनोर स्टेट और सिकका
अेडमीन्सट्रेशन सहाबकी सही

ये जमीन के कबजेदार पीरजादाओको कासागारी करने कुछ हिस्सा

(खेडने) बिनखेती खराबे की जमीन की उपज सेटलमेन्ट की तरहा और नवाब सरकारके ठराव नं.1835 ता.2-5-1914 में लीख्खी शरतोके मुताबीक रहकर जो आमदानी खेती (गल्ला) आओ वो तमाम दरगाह शरीफ के निभाव मेन्टेनन्स के लीये खर्च करना है और उसके बाद जो (उपज) आमदानी आओ वोही दस्तुर मुताबिक आपको हक है। लेकीन कोइ भी पुरेका पीरजादा ये जमीन उपर बोजा (लोन) करनेका हक नहीं। ये तमाम पुरे की जमीन जीसके कबजेमें वो वहीवट में लिख्खी हुइ है और उनके कबजेमें रेहगी।

बीरपुर स.नं.167 वाली जमीन आइ हुइ है वो और मुजावर नाथा मुरादको पुरेमेसे 15-0 जमीन दी गइ है। वो ये जबतक (सेवा) खिदमत करेंगे वहां तक उनको दि जायेगी और वो उसपे 02-0 आना मुताबिक सेटलमन्ेट उनको आकर देना पडेगा।

दरियाइ सहाब की दरगाहके उपयोग के लिये फुल वगैरा के लिये जो खेत नीम कीये है वो उस पर वो वही काम के लिये उपयोग करे और ये (सर्वे नं.16) नगारची, मुजावर और फुलवाडी के खेत और कोइ काममें उनको लेनेका हक नहीं। जहां तक पीरजाद गान अपने ठराव के मुताबिक काम न बनाये और जब तक जमीन कबजेमें हो वहां तक कोइ दुसरा हक नहीं और कोइ पीरजादा भी उनके तरफसे वैसा काम न करे जो शरतो के खिलाफ होगा या नगारची या मुजावर भी अपने अेग्रीमेन्टसे अलग करता दीखाइ देगा तो सरकार इन बीचमें दरम्यानगीरी करके बंदोबस्त और लीगल काम करनेमें हक रख्खेगी और अैसी बिना पर नियुकत जमीन पर सरकार फेरफार अदल बदल कर शकती है। ये सनद पीरजादगान के वहीवटीदारोको (ट्रस्ट) सेटलमेन्ट कायमी (वार्षिक) दर साल के नककी की गइ रकम रु.105-7-3 के मुताबिक है।

ता.19-05-1923 सही-अेली.अेने.इ.ओ.रेवाकांठा.

उससे पहले नवाब बालासिनोर साहबके सेटलमेन्ट की तहत ठराव नं.1835, ता.02-05-1894में दरगाह शरीफकी जमा रकम और उसके बाद उर्सकी दुकानो की आमदानी स्टेट ट्रेजरीमें 1921-22 सालसे रु.11,752-12-3 तिजोरी हिसाबमें थे जो मगर हुकुम बदलकर आजादी 1947 के बाद कुछ पिरजादागान की जानिबसे बालासिनोर नवाब सहाबके जमानाके एक स्टेम्प पेपर सनद नं.83 दावा नं.17 से बालासिनोर मामलतदार को अरजी करके ता.12-5-48 को कहा गया। बडी जद्दोजहदके वो रकम मील गइ लेकिन ये रकम वादोके मुताबिक काम न करते हुअे गेर-इस्लामी तरीकोसे येह रुपिये रफेदफे कर दीये गये। आपको बता दुं के सरकारी रेकर्डके मुताबिक कइ

सालो तक ये दरगाह शरीफका मेनेजमेन्ट मीस मेनेजमेन्ट था उस लिये कइ सालो तक सरकारके हाथो रहा उस वजहसे उपर लीख्खी हुइ रकम इतने सालोके बाद मीली थी मगर सद अफसोस आज भी वैसा ही चल रहा है। उसके बाद कइ दिनोके पेपर वर्क सरकारमें अलग अलग पेमानेमें अर्ज करनेकी वजहसे हिन्दु-मुस्लिम हत्ता के उस जमानेके एक न्युजपेपर की मुहीमके बाद गुजरात राजय सार्वजनिक ट्रस्ट विभाग वडोदरा खेडा 387/बी के तहत रजीस्टर्ड किया गया था। ता.24-3-1955 दीन जुमेरात उसी रजी. कीया था। अरजी मेरे नाना (ट्रस्ट) हुजुर पीर सैयद अल्हाज अब्दुलरज्जाक इब्ने शाह शहाबमीयां इब्ने कमालुद्दीन इब्ने अबुल झब्बार के हाथो की कइ और दिगर हजरात भी जो आगे सनदमें लिख्खे गये इन्के भी नाम दर्ज है। वकतन फ वकतन नाम तबदील होते रहे। इस ट्रस्टमें भी 888 (विगा) जमीन बताइ गइ हैं बाजारमें काफी तादादमें मकाने, दुकाने रजी. पी.टी.आर. में दर्ज है। 1995 में गुजरात राजय वकफ बोर्ड वजुदमें आनेसे (वडोदरा बादमें नडीयाद) अब पाये तख्त गांधीनगर जुना सचिवालय जीवराज महेता भवन सेकटर 29 ग्राउन्ड फलोर की ओफिससे चल रहा है। 1987 से इस ट्रस्टकी कोइ (नये ट्रस्ट) मेम्बरान बनाये नहीं गये थे एक लंबी जद्दोजहद के बाद हमारे भतीजा जनाब पीरजादा हमीदुद्दीन महंमदमीयां बिन अहमदमीयां का नाम दर्ज ट्रस्टमें दाखल कराया और दरगाह शरीफ के गेर वहीवट से पीछले 4 सालसे ट्रस्ट के सामनेवाले ट्रस्टीओके खिलाफ लंबी मोहीम चलाकर गुजरात वकफ बोर्ड नं.ता.16-05-2013 के हुकमके अपने 4 सफा (पेज) के जजमेन्ट ओपन कोर्टमें सुनाया और दरगाह शरीफ ख्वाजा महमूद दरियाइ ट्रस्ट 387/बी खेडा को वकफ कानुनके अधिनियम 1995 की कलम 38 की तहत खेडा को गुजरात राजय वकफ बोर्ड, गांधीनगर अपने पावर कायदे के तहत जनाब मुनीर वोरा सहाब प्रांत अधिकारी व नायब कलेकटर खेडा कारोबारी अधिकारी को मुन्तखीब कीया है। इन्होने ता.23-05-2013 जुमेरात चांद 12 रजजब 1434 हि.स. को आप सहाबने चार्ज लिया (अपने होदे) पर आकर खिदमत अंजाम दी। मगर गुजरात हाइकोर्टमें केवीयेट अपिल के सामने स्टे ओर्डर ता.24-05-2013 का लाया गया और ये खास दिवानी अरजी स्पेशीयल सीवील ओप्लिकेशन नं.9005/2013 से हाइकोर्टमें चल रही है।

ता.27 नबेम्बर 2013 को गुजरात हाइकोर्टने यह अपील को नीचे यानेके वकफ ट्रीब्युनल मकाम नडियादमें जानेको कहा, यहां ता.19 ऐप्रिल 2014 को कोर्टने तीन माह करीब के बाद गुजरात वकफ बोर्ड का फेंसला बकरार रखते हुअे वकफ कलम 38 का चुकादा बरकरार रखा है।

ये केस के लिये 2009 से जनाब वकील हाजी पठाण समीउल्लाखान अब्दुलरहीमखान धोलकावालोने गुजरात वकफ बोर्ड गांधीनगर व नडीआद अपना किंमती वकत हमें दिया । उनके बाद जनाब सैयद शौकतअली जे. (धोलका) ने गुजरात वकफ बोर्ड की जानिब से मु.नडीआद कोर्ट में अपना किंमती वकत दिया । करीब 20-25 मरतबा मुद्दतोमें अपने खर्चसे आये और गये । फी सबीलिल्लाह ख्वाजा दरियाइ के नाम व बका के खातिर आये और अपने इल्मसे हमें कामीयाबी दीलवाइ । इस बीच मु.नडीआद के जनाब सैयद गुलरेज साहेब अेडवोकेट उंढेलावाला और जनाब मलेक जावेदवाद अेस. मलेक (नरसंडा) और दिगर हझरात का भरपुर साथ दिया अलहम्दोलिल्लाह ।

मुंह से कह दीया गर ला इलाह तो कया हांसिल
निगाहो-कल्ब मुसलमां नहि तो कुछ नहि

सुबे गुजरात में कुतुबखाने

गुजरात के इलाके सुबेमें अदब पर बजा तौर पर फख्र रहेगा कयुं के यहां अहमदआबाद, पट्टन, भरुच, सुरत, जुनागढ और दिगर छोट बडे शहेर गाँव व सजजादानशीन व खानकाहोवालोके कुतुब खानामें मल्फूजोके जखीरे पडे हुअे लेकीन कुछ गलत और नाइल्मी की बिना पर ये अदबका बडा सरमाया मशाइख घरानोमें अपनी अलमारीओ, कबाटो, ताकोमें परदेमें छुपा पळा हुआ है । ये सजजादानशीन अपने बुजुर्गोको तस्नीफात में दीने मतीन की अपने अजकारो इफकार और फैजे बातिनी से दीनी-दुन्यवी रवादरी की फिजा (बुलंद) साजगारकी अपनी बेलौस खिदमते खल्क और इन्सान दोस्ती के जरीअे इश्के इलाहीके दर्स दिये, तारीख गवाह है के मुतजलजल समाजकी बुनियादों को मुरतहकम करनेमें और शिकस्ता दिल इन्सानको होस्लअे जिन्दगी अता करनेमें इन मगरिबिया, सोहरवर्दिया, कादरिया, चिश्तिया और शत्तारिया, दरियाइया सिलसिलोंके कइ नामवर सुफियाअे किरामने यहां सुकुंनत इख्तियार करके अपना वतन बनाने का शर्फ बख्शा । यहां चप्पे चप्पेमें आज भी इन बडे सुफीयाका पीराने तरीकत का दबदबा नजर आता है । 600-700 सालके कदीम जमाना गुजर जानेके बाद भी वही याद, फिक्र दीलाता है । आजभी इन आस्तानो से दुनियाभर के लोग अपनी रुहानी व जीस्मानी जींदगीके मशाइल इनके पाक दामनका वसीला बनाकर रब्बे करीम की बारगाहमें इल्तेजा करते नजर आते है और अपनी परेशान हालतो को हल हमारे इस फानी जीस्मके साथ अपने दुन्यवी आंखोके सामने पाते नजर आते है । खैर

आज कहीं भी आस्तानो पर वो बात नजर नहीं आती जहां दीन-कुरआने पाक हदीसे कुदशी तफसीर इल्मो फजलका हम पूराना किरदार था वो पा शके कयुंके खानकाहोसे अपने बुजुर्गोके अकवाल, इल्म, अमल, तकवा, नमाज, कुरआने पाक की तालीम, हदीस वगेराका इल्म, हराम व हलाल की तमीज खत्म नजर आती है।

इस बीना पर जगह जगह पेटी-गल्ले चिरागदानी दिवे-तिजोरीयां, डोनेशन बोकस, हिन्दु रस्मके मुताबिक नाम ढामके चोपडे और न जाने कया कया हमे नजर आता है। हमने बेशुमार ओलीया, सहाबा, अहले-बैत-अतहार सुहफा वली-अे कामिल लोगोके हालात पळहे है। और कामिल बुजुर्गोकी बन्देने सोहबते भी पाइ मगर आज के हालातसे ये लोग कौसों दुर थे। आज खानकाहोमें इल्मी अदब दुर हो जानेसे नफसा-नफसी हसद, बुग्ज, कीना, कपट छोटे बळेका लिहाज खत्म हो चुका है। हम इस किताबमें हमारे अकाबेरीन के वाकीयात पळहेंगे तो पता चलेगा की बळी से बळी मुश्किलमें भी ये अल्लाह तआला के मकबुल बंदे दुनियादारी से कोसों दुर थे। बेहिसाब दौलत, जमीन, जायदाद होनेके बावजुद अपनी इस्लामी जींदगीसे दुर नहीं हुवे और अमली जीन्दगी पर सारी उम्र दीने मतीनकी बकाके खातीर वकफ कर दी थी। इस जीन्दगीकी रोज मरराहके दिनो-रात इन्ही लोगोने इस दुन्यामें गुजारे वोही इन्की मल्फूजात बनी ये किंमती सरमाया जहां वहांके खानकाहोकी अलमारीयो, कबाटोमें केदमें पडा है। अफसोस सद अफसोस आपको कया हो गया है आप जरा सोचो अपने दिल पर हाथ रखके अगर अल्लाह तआला जल्ले सुब्हानहु का पाक कलाम अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर नाजिल किया। कुरआने पाक वही पाक सुफफान ने सहाबाने कातीबोने अहेले बैते अत्हारने ताबेइनने तबे ताबेइनने चमडे कपडे हड्डो पर और दिलमें हिफज न किया होता तो ये कुरआने पाक हदीसे कुदशी हम तक कीस तरहा मीलता और इसके बाद भी बडे इमामो ने हदीस को जमा करनेमें जो काम कीया है उसका हम अंदाजा भी नहीं लगा शकते। खैर मेरा तो सिर्फ एकही मकसद है की ये किंमती मल्फुजातका सरमाया घरमें दिमककी गिजा बने उससे पहेले आप अपने नजदीक के कीसीभी कुतुबखानमें दारुल उलुममें लायब्रेरीमें कीसी पीर सहाब दीनदार को आलिम, हाफिज, मुफती साहेबान को दे दे आपके लीये हमारे कोमे मिल्लते इस्लामके लिये बाइस बरकत होगी। दोस्तो मेंने कइ मेरे खुदके करीबी रिश्तेदारो से इन किंमती सरमाया मलफुजात व दिगर हदीसे पाक, कुरआने पाक के कलमी नुख्से (दिमक) उधइ खाती मेरी चश्मदीदसे देखा है दिल जल रहा। खैर हमारे अहमदआबादमें आज भी बडा किंमती ये

जखीरा मौजुद है जीसमें ख्वाजा दरियाइ सरकारकी मल्फूजात (1) तोहफतुल कारी (2) मफातीहुल कुलूब दरगाह शरीफ पीर मोहम्मद शाह लायब्रेरीमें मौजुद है वो इसकी बडी जीनत है दोनो नुश्खे मेने मेरी आंखो से कइ बार देखे हैं अलहम्दोलिल्लाह।

दुसरा आप (दरियाइ सरकार) का (दिवान कलमी) फारसी जुबानमें शम्मे बुरहान के सजजादे हजरत पीर सय्यिद तमीजुद्दीन बाबाके कुतुबखाने मे ये रिसाल जखीरेमें मत्खूतातमें महफुज है। (इन हजरत की हयातमें कइ बार गया मगर देखने तक न मीला) इसके अलावा दिल्ही के मशहुर आलीमेदीन व मोहद्दीस हजरत शैख अब्दुल हक मोहद्दिस दहेल्वी रहमतुल्लाह अलयहे ने अपनी किताब (तस्नीफ) उर्दुकी इब्तिदाइ नशोनुंमामें सुफिया-अे किराम का हिस्सा में लिख्खा है के हजरत ख्वाजा काजी महमूद दरियाइ की शाइरीका एक कलमी नुस्खा मेरे पास मौजुद है। इसी तरहा आपके मल्फुजात के कइ मजमूअे दस्तियाब है जो ब जुबाने फारसी झाब्ताअे तेहरीरमें लाअे गअे है (लिख्खें) उनमें (1) मफातीहुल कुलब (2) फवाइदे महमूदी (3) कन्जुल करामात (4) महमूद ख्वानी (5) तोहफतुल कारी काबील जिक्र है। आपके ये मल्फूजात एक कींमती दस्तावेज है जिसमें एक तरफ तो आपकी हयाते मुबारका पर रोशनी पळती है तो बजानिब दीगर ये अपने दौरे की तेहजीबी, मुआशती और रुहानी जिन्दगी की अककासी करते है इनकी मददसे रोजमर्रा की जिन्दगीके इन्सानी मालुमात फराहम की जा शकती है।

आपके ये मलफुजात 100 कोपी हजरत सय्यिद शाह गुलाबुद्दीन उर्फ अब्दुलगनी बिन शाह अब्दुर्रसूल बिन शाह अली अल दरियाइ अल चिश्ती अल सोहरवर्दी अल बीरपुरी कद्दसिर्रुहुं कुद्दसीया ने की थी। आप आस्ताना ख्वाजा दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के अंदर छ माह चिल्ला कसीमें रहे। रोजे अतहर पाकमें दिनो रातमे नुस्खे तैयार करके बीरपुर शरीफके उन जमानेके कलमी मलफूजातके पळहनेवाले उस वकत जयादा थे और नुस्खे कम इस बीना पर आपको ये शौक हुआ और ख्वाजा दरियाइसे रुहानी इजाजत लेकर ये काम आपने लीखनेका शुरु कर दिया था। अैसा मेरे पास एक खत जो मेरी वालेदा-माजेदा के सगे मामुजान जनाब हजरत पीर अल्हाज सैयद शाह कमालुद्दीन जैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे (मुंबइ) के पास नुस्खे मल्फूजात मौजुद है। ये हजरत किब्लाने हमें 1982 से तकरीबन 1993 तक मुस्लसल अपने हाथसे 700 से 1000 खतो किताब करके हजरत ख्वाजा दरियाइ के हालात, वाकीयात तेहरीर करके हमें इस कद्र तैयार कर दिया था हमें हमारी कम उम्रमें आपने ख्वाजा दरियाइकी तालीमाते, दर्स देकर हमारी होशला अफजाइ

फरमाइ थी। इन्हें एक खतमें हजरत सय्यिदशाह गुलाबुद्दीन उर्फ अबुल लतीफ के हालात व वाकीयात लीखकर बताये थे। दरियाइ सहाबके मलफूजात नजम बंध किया है वो भी लिख्खी हुइ कलमी नुख्से मेरे पास मौजुद है। आपका एक नुस्खा रोयल ऐशियेटीक सोसायटी शाखा बम्बइमें मौजुद है। (जनरल सोसायटी मजकुर नइ सीरीज जील्द-3, 1928 इ.स.मुख्तूता ने 16) 216 औराक साइज 28-15 सेन्टीमीटर और 15 सत्तर की सफहे पर मुश्तमिल है। ये नुस्खा भी गुलाबुद्दीन बिन अबुर्लरसूल बिन शाह अली बिन गुलाबुद्दीन ने 19 जमादिउल अव्वल 1261 हि.स.में मुताबिक 27 मे 1875 इ.स. के दिन इसकी किताबत की है ये फारसी इबारतमें नकल की है। में ये नुकते के लिये ता.27-2-2014 को रुबरु बम्बई अेसीयाटीक लायब्रेरी गया देखने मगर कोइ भी वहां फारसी नुख्सा व किताबें फारसी मौजुद नहीं अैसा वहां की दो दिन ही पहले आई हुइ मुस्लिम लेडीने बताया था।

कारंटावाला तोहफतुल कारी का नुस्खा हजरत पीर अल्हाज सैयद कमालुद्दीन बिन जैनुद्दीन (नानाजान सहाब) ने हमारे खानदान के रिश्तेदार के एक मकान की वारसाइ हकमें कारंटा के हजरातने बडा रोल नीभाया था कयुं के उस मकानकी एक हिस्सेवाली खातून जनाब सय्यिदा आयेशाबीबी थी। ये मकान जनाब हजरत पीर सय्यिद सुफी मौलाना नजमुद्दीन (नजुमीया) बिन उस्मानमीयां बिन कमालुद्दीन का था जो आज भी मेरे मकान बीरपुर शरीफके करीबमें है। उन्हे यानी आयेशाबीबी को रु.5000/- हजार दीये गये थे। जो मीडीयेटर थे उन्हें तोहफतूल कारी के नुस्खे से फोटो कोपी (जेरोक्ष) दी गइ थी यही फोटा कोपी पीर मोहंमदशाह दरगाह शरीफमें पहोंची उसकी भी फोटो कोपी मेरे पास (फोटो-से-फोटो) है। ये खातुन जनाब नजुमीयां की भतीजी होती थी। मकान आपने हमारे फुफेरे भाइ अहमदमीयां नबीमीयां को अपना वारसदार (विल) कर दीया था। ये मकानकी वजहसे कारंटा शरीफ हजरत गुलाबुद्दीन सहाब वाला नुख्सा इस तरहा पोंहचा था। ये लिखना मेंने जरुरी समजा की आगे आनेवाले तारीख के हालातो हाजरावालोको समजनेमें आसानी रहे और कोइ नइ बात पेश न आये।

खैर, ख्वाजा दरियाइ हजरत शाह महमूद रहमतुल्लाह अलयहे साहिबे दीवान शाइर थे दस्वीं सदी हि.स.में जो साहिबे दीवान शोअरा गुजरातमें गुजरे है उनका कलाम फारसीमें पाया जाता है जब के इस रिवायतके बर अकस आपने इश्के इलाहीसे लबरेज अपने अहेसासात व जजबात के इजहार के लिये गुजरी जबानको अपनाया। आप गुजरातकी अैसी ही बरगुजीदा हस्तियोंमें से है। आप एक अैसे दीनदार घरानेके चश्मो चिराग थे जहां दिनरात दीनो शरीअत और

औरादो वजाइफ के चर्चे रहा करते थे । हजरत शाह ख्वाजा महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे ने अपनी जिन्दगीमें मुजाहिदे और मुजादले भी किये है । आपके मल्फूजात में कुरबे इलाही के हुसूल के लिये अपनी जात पर सख्तीयों जेलनेका जिक्र मिलता है । प्रेम गली पहाडमें तंग दर्रेमें आप रोजाना चिल्ला कशी करते । दर्रे का दहाना अन्दर जाकर इतना तंग हो जाता है के वहां किसी शख्स का सांस लेना भी मुहाल है । (जीसे लोग सात दीवे कहेते है) हजरत शाह महमूद न सिर्फ यहां इबादत और जिक्रे इलाहीमें मसरुफ रहते थे, बल्के उनके इस्तिगफार का ये आलम था के आपकी जिन्दगी के बारेमें भी तश्वीशनाक सूरते हाल पैदा हो जाती थी । ये असर आपकी पुस्त दर पुस्त चला आता था । आपके खानदानमें सैफी शरीफके विर्द और उसकी तल्कीनका ओहतेमाम था इस विर्द के इजल व इजाजत हांसिल करनेवालोके नाम भी तोहफतुल कारीमें दर्ज है । हजरत शाह काजी सय्यिद महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे को सरुदसे बेहद शुगफ था उमूमन दो चार कव्वालों का गिरोह आपके हमराह होता था जो आपकी जिकरीयों को खुश अल्हानी से गाते थे । उन कव्वालोमें शहाबुद्दीन और उनके भाइ दाउद और हसनके नाम तोहफतुल कारीमें मिलते है एक हिन्दु गानेवाला भी आप की खिदमतमें होता था । **बाद अज नमाजे इशा अकसर मजलिसे समाअ मुन्अकिद होती जीसमें वजदो हाल के गल्बे में आप इतनी गिरीया व जारी करते थे के आंखो से खून टपकना शुरुअ हो जाता था और जब वो आह भरते तो मुंह से शोले निकलने लगते । उनके दामाद और खलीफा व मुरीद व मफातीहुल कुलुब का ये तोहफतुल कारीमें नकल किया गया है के ये उनके अपने चश्मदीद वाकियात है । बाज औकात वजद की हालतमें खळे हो जाते और रकस करने लग जाते और जुबान पर उस वकत ये जारी होता के हु (यानी में) ढुंढुं मेरे अल्लाह कू उनके विसाल के बाद उनके कव्वाल दख्न गओ और वहांके हल्कोमें उनकी जिकरीयां गाकर सुनाते जिससे मुतासिर होकर अकसर लोग आपकी दरगाहकी जियारतके मुस्ताक होकर बीरपुर का सफर करते ।**

तोहफतुल कारीमें हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ और उनके खानदानके जो तफसीली हालात दर्ज है वो किसी और जगह नहीं मिलतें इस लिये वो दौर जदीदके मोअर्रिखों और मुसन्निफोके लिये निहायत मुफीद वकार आमद साबित होंगे । तोहफतूल कारी ब यक वकत मलफूजात की किताब भी है मजमूअओ गुजरी कलाम भी और आइनओ तालीमाते सुलुक तरीकत भी येही एक औसी किताब है जिससे हजरत ख्वाजा महमूद के हालात के इलावा उनके

गुफतारो किरदार पर अच्छी खासी रोशनी पळती है। बल्के ये कहेना गलत न होगा के मोसूफ के हालात व तालीमात तोहफतुल कारी के बगैर परदओ खेफामें पोशीदा रेहते। अपनी गोबागुं खूबियां के बाइस ये फिलवाके अवामुन्नास से लेकर सालिक राहे तरीकत के लिये एक बेश बहा इल्मी तोहफा है। उसकी सबसे बडी खुसुसियत ये है की उसमें **हजरत शाहे आलम जिनके खानदानसे हजरत शाह महमूद महेबुबुल्लाह दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे बीरपुरी का खानदान पुश्त ब पुश्त बैत था उनके बताये हुओ मस्लक जिसे तरीकओ मन्जनशाही कहें तो बेजा न होगा। अकाइद, तरीकओ आमाल व अश्गाल, पाबन्दीओ शरीअत की तल्कीन, रुहानी अजमत और इन्सान दोस्ती की हामिल तालीमात फराहम की गइ है।** इनसे वाजेह होता है के इस मस्लकके पैरु-ओंकी सफाओ तीनत, परहेजगारी, पाकी और गुरबा दोस्तीकी वजह से अवाम उन्की खानकाहोसे रूजुअ करते और वहां अपने जाहिरी और बातिनी मसाइलो आझाम और अपनी इन्सानी कमजोरीयों का खातिर ख्वाह इलाज पाते और सियाकारी और इरतिकाबे गुनाहसे कौसों दुर रहेते। मन्जनशाही बुजुर्गोंकी खानकाहोंमें मजहबो-मिल्लत जात-पात उंच-निच, अमीर गरीब, खुर्दा कलांकी कोइ तफरीको रिआयत नहीं बरती जाती थी। इसी मन्जनशाही मशरबके ये नामी गिरामी सालिके कामील हजरत सैयद महमूद महेबुबुल्लाह दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे की हमा जिहत और हमागीर शख्सियतका तोहफतुल कारी के जरीओ जो खाका उभरता है और गुर्जरी के इस अजीम शाइर और गुजरातके रुहानी पेश्वा की जो दिलकश व दिल आवेज तस्वीर हमारे सामने आती है उसके चंद पहेलुओ का मुन्दरजा जील मुख्तसर बयान कारिइन (जाओरीन) की दिलचश्पी के अलावा रुश्दो हिदायतका भी बाइस होगा।

आपकी तबीयतमें इन्केसारी और नर्मी कुट कुट कर भरी थी। इसी वजहसे वो अपने मुरीदों और दुसरोंसे भी तवाजों व मुन्कसिरुल मिजाजी की तल्कीन फरमाते थे, चुंनाचे एक जगह फरमातें है,

मन में गरब (फख्र) तुं मत करीं तुजसे है कंइ लाख

तेरा कहिया को न सुने महमूद कोन ! सो माख (मख्खी)

लोगोंकी दिदारी करना, उनके दुःख दर्द मिटानेकी कोशिश करना हर किसी खुशनुदी और दिल्लगी करके उनके कुलुब को तरो ताजा रखना उनको बहुत पसंद था एक और मकाम पर फरमाते है,

महमूद भूकां भोजन दीजिओ तरसां दीजिओं पानी

उंचा सी नम-नम चलिये मोटम न मन मेंह आनी

इस दोहे का मिसरह दोम खास तौर पर काबिले गौर है फरमाते है के जो अपने आपको उंचा और बळा समजते है उनसे भी अपने मनमें मोटम यानी बळापन लाऐ बगैर जुककर तवाजोसे पेश आना चाहिये इन्सानियत दोस्तीकी इससे जयादा उमदा मिसाल और तल्कीन और कया हो सकती है । **आपको रियाजत का अजहद शौक था छह-छह माहके रोजे रखते महज रजाऐ इलाहीके लिये भूका प्यासा रहेना आपको बहुत पसंद था। आपका इरशाद है,**

बिकर भोजन किया नितरा खाऐ शहबाज

भूका भोजन मीत लग ऐही पूरा राज

यानी शाह दोस्त के बगैर जो खाना खाया वो गोया जीतेजी झहर खाना, मीत (दोस्त) के हुजुर में भुका रहेना येही हकीकी बादशाहत है)

अल्लाह तआलासे आपको ऐसी लो लगी थी के दुनिया व माफीहा का ख्याल और मासिवा की सुध बुध आपको न रहेती एक मरतबा आपने अपने एक मुरीद मलिक दोलत जो उम्रभर आपकी दिखमतमें हाजिर रहा दो तीन बार पुछा के तुम्हारा नाम कया है । मलिक दोलत को ये बात नागवार गुजरी के हजरतने उसको पहेचाना नहीं उसकी नाराजगी को महसूस करके आपने फरमाया के हक सुब्हानहू तआला के नामने मेरे दिल में ऐसी जगह लेली है के उसमें गैर के लिये कोइ गुन्जाइश नहीं है । इस लिये गैर का नाम मेरे दिलमें नहीं आता न वो मुजे याद रहेता है ।

इश्के इलाही की गर्मी से आपके दहन से आगके शोले निकलते और आंखोसे खुनके आंसु जारी होते । तोहफतुल कारीमें ऐसे ही एक मौके बयानमें आपही के हस्बे हाल आपका ये शेर नकल किया है,

तूं कया जाने प्रेम कहानी, तुंझ बिन लोहू हुवा ना पानी

हजरत ख्वाजा सय्यिद शाह काजी महमूद रहमतुल्लाह अलयहे को फनाफिल्लाह का ये मरतबा रियाजत और पाबन्दीऐ शरीअतसे जो तरीका मन्जनशाहीका माबेहिल इम्तिया है हांसिल हुवा था । पेश नजर किताबमें आपकी रियाजत के बेशुमार वाकियात और मुहय्यरुल उकूल किस्से दर्ज है । शरीअत के पहले बुनियादी अरकाने कल्में और नमाज की ऐहमियत उनके नजदीक बहुत जयादा थी । नीज ऐहकामें कुरआनी और इरशादाते नबवी के भी पाबन्द थे । उन्होने कइ जिकरीयों में आयाते कुरआनी के मझामीन व मतालिब मोजुं किये है जिनको तोहफतूल कारी में नकल किया है, मिसाल के तौर पर एक जिकरी ये लीख रहा हुं,

सबाउढ बीजैं अपनीं इलाह का नाउं
पांच वकत नमाज गुजारों दाइम पळहो कुरआन
खाओ हलाल बोलो मुज सांचा राखो दुरस्त इमान
छोडो जंजल, जूटी सब माया, राखो जो मन हुवे ग्यान
कल्में शहालत तिल-न-बिसारो जिससे छोटा निदान
दीन दुनीं नेमत पाओ जन्नत होवे ढाव
महमूद मूख सीस तिल न बिरासे अपने अल्लाह का नांव

इसी तरहा ख्वाजा दरियाइ हालत, खुद उनकी शख्शियत, उनके आदात व अतवार उनके आला अख्लाक और आला मरातिब के बारेमें वो मालूमात मिलती है । जो कही नही होती बिलखुसूस ये मुहय्युरुल उकुल वाकिआत जिनके दोरानथा जिनके नतीजे में हजरत सय्यिद काजी महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के कलाम और जिकरीयां मन्जूम करनेका जिक्र आता है वो गोया उनके कलाम के शाने नुजुल पेश करते है और बिला खौफ तरदीद ये कहा जा शकता है के उनको सामने रखै बगैर उस कलामको समजकर उससे लुत्फ अन्दाज होना और रुहानी फैज हांसिल करना आसान न होता और तोहफतुल कारी की ये एक खुसिसियत ही उसको उर्दु जबान और अदबकी तारिखमें आला मकाम दिलवानेके लिये काफी है । केहना भी सरासर ना इन्साफी होगी के तोहतफुल कारी सिर्फ मुहय्यिरुल वाकिआत की खतौनी के सिवा कुछ नहीं । उसमें अैसी भी बातोंका भी जिक्र है जो कुतुबे तवारिखमें नहीं मिलतीं । उनके करमो करामतके किस्सोमें भी अैसी बाते मिलती है जिनसे उन अहद की तारिख और मुआशरे पर काफी रोशनी पळती है और उनके बारेमें हमारी मालूमात में इजाफा करती है । मस्लन हजरत सैयद मुहम्मद हुसैनी गेसूदराज (हि.स.825) के हाफिद पौते शैख फदलुल्लाह का सुलतान बहादुरशाह के लश्कर के साथ दककन से गुजरात आना और हजरत शाह सय्यिद महमूद दरियाइ सरकारसे खरखअे खिलाफत हांसिल करना और उनके भाइ सैयद अब्दुल जब्बार का भी हजरत शाह महमूद महेबुल्लाह की खिदमतमें हाजिर होना और उनका महेमान बनना । इस तरहा हजरतकी सारे के सारे वाकिआत एक सलातीन वकतका कोहीनुर हीरेकी तरहा कींमती दस्तावेज कहा जा सकता है । इस तोहफतूल कारी से हम हर मोड पर पूराने कदीम गुजरे जमाने के हालात, से मालामाल हो शकते है ।

प्रोफेसर इब्राहिमडार ने अपने एक मझमून ब उन्वान गुजरातका एक कदीम शाइर में लिख्खा है की शाह काजी महमूद दरियाइ का एक हिन्दी

दीवान है जिसका एक नुस्खा अहमद आबाद एक कूतूबखानेमें महफूझ है । दीवान सारा का सारा हिंदी जुबान और सुफीया रंगमें है । जकरीयों (जिक्री) तर्ज की तर्झ अश्आर नफसे मजमून के अलावा अपनी राग-रागनियोंकी तासीरकी वजहसे बडी अेहमियत रखते है । हजरत शाह महमूद दरियाइने तो अपनी नजमों के शुरुमें राग-रागतियोंके नाम भी लिख देते है । इस सिनफे सूखन में जो असर अंगेजी होती है उसका हाल शैख अब्दुलहक मोहद्दीस दहेल्वी रहमतुल्लाह अलयहे के इस बयानसे मू-त-रश्शेह है जिसमें उनके लोगोमें मकबुल होने और कव्वालों के गानेकी तरफ इशारा है । कहते है के एक दफा हजरत निजामुद्दीन औलीया को मौलाना वजीहुद्दीनसे एक जिकरी सुनकर वजद आ गया था । सिमाअकी इस तासीर व कैफियत की बिना पर सुफियाके यहां इसे बळी अेहमियत हांसिल है । (तारिखे अबबियात सफा 217 जील्द 6)

शैरानी सहाबने अपने एक दुसरे मकालामें लिख्खा है के शाह काजी महमूद दरियाइ गुजरातके मशाहीर सुफियासे है । हिंदी शेअरगोइमें उनकी शोहरत हिन्दुस्तानमें फैल चुकी थी । एक खास तर्झेके नजम के सिलसिलेमें जिसको जिकरी कहा जाता था उनका नाम जुबाने जदे आम है । एक जमाने ये जिकरियां गुजरातमें मकबुल थी । अख्बारुल अख्यार में मन्कूल है जिकरीहा ओ वय के ब जबाने हिंदी दारद दस्तुर कव्वालान आन दयार अस्त बगायत मत्बूअ व मुअस्सर व बेतकल्लुफ व आसारे व वज्रद अझ सुखनान वय लाओह अस्त (अख्बारुल अख्यार - सफा 187)

अलाउद्दीन सानी बरनानी अपनी तस्नीफ (किताबे चिश्तीया) में शैख अलाउद्दीन की उलाइयोंके जिक्रमें (जो एक खास किस्मकी मत सूफीयाना व आशिकाना नजम होती थी) मिसालन ख्वाजा महमूद सहाब की जिकरी का भी जिक्र करते है और खिलते है की,

अज गल्बाते इश्क पैवर-ता व हस्बेहाल आशिकाना ब हिनदी ब तर्जे दिल बन्दी भी मस्त

साहबे खजीनतुल अस्फिया लिखते है

अश्आरे आशिकाना ब जुबाने हिनदी फरमूद के कव्वालाने आंन दयार ब वकते सिमआ अश्आरे आं जनाब ब मजलिसे सुफिया मी ख्वानन्द व बगायत मुवस्सिर बाशन्द

जिकरी दर अस्ल झिक्रकी एक शकल है इसका इतलाक अैसी नजमों पर होता है जिनमें और मजामीनके अलावा सिलसिलेका शजरा और मशाइखकी मदह होती थी ।

निजामुद्दीन औलीया (मुतवफ्फी स.हि.724) के अहदमें भी जिकरीका रिवाज था और उनको मौलाना वजीहुद्दीन की जिकरी पर हाल आया था जो हस्बे जैल है।

बैनाबन बहाजी अैसा सुखसे बासूं

मीर अली शैख कानेअने लिखा है के, हंगामे जवानी अज मकामे गौसियत दर गुजश्त ब मकामे महबूबियत दर रसीदन्द

मिजाज की इश्की कैफियत और इश्ककी इस गरमीका असर उनकी शाइरी पर गेहरा है येही रंग उनकी शाइरी व शख्शीयतका नुंमायां रंग है। सब तजकेरानवेसोंने इस खुसूसियत का जिक्र लिखा है। मिराते अहमदी मे ये अल्फाज मिलते है काजी महमूद अज गल्बाते इश्क पैवस्ता बर हस्बेहाल नकशे आशिकाना ब इबारते हिंदी दर मकामाते हिंदीया ब तहे दिल पसंद भी अस्त

खझीनतुल अस्फिया से भी इसकी तस्दीक होती है साहेबे जौक व मोहब्बत व इश्क अज अझ-मते खुल्फाअे शाहेआलम गुजराती अस्त अश्आरे आशिकाना ब जुबाने हिन्दी फर्मूदे के कव्वालोने आं दयार ब वकते सिमाअ अश्आरे-आं जनाब-व मजलिसे अस्फिया भी ख्वानन्द व बगायत मुवस्सिर मीं बाशन्द

इश्ककी इस शिद्दतका हजरत शाह महमूद दरियाइ पर ये असर था के उनके सारे कलाम से उस जझबे की गरमीका अहेसास होता है उस इश्कका इजहार अल्लाह उसके रसूल सल्लल्लाहो तआला अलयहे व सल्लम और मुर्शिद के साथ भी है। कलाममें अपने वालिद और मुर्शिद का जिक्र बारबार करते हैं,

काजी मोहम्मद तने शाह जायलन्दा मेरा सब दुःख के वोही औलावे
मोहम्मद सनुरी सायबां मुज इस बिन और न भावे
सांइ कुन एक बार इखार हु देखा करुं जोहार, तेरे मुखळे के बलिहार
महमूद सांइ सेवक तेरा - तुं तो समरत साइ मेरा, करे हम्मारी सार
अस्त नबी मोहम्मदकी ये महमूद तेरा दास,
बरकत पीर चाअेलन्धा - सांइ खूबीं मनकी आस

(तारीखे अदबें उर्दु सफा नं.110)

चांउ चालन्धा पीर में पाया, उन महमूद कू मित मिलाया
काजी महमूद तन शाह चीलन्धा, महमूद केरा पीर
काजी मोहंमद तन पीर हमारा चाहलधा भागों-लह बारे
काजी मोहंमद तन पीर हमारा चाहलधा मूजह प्यारा
पीर हमारा चालन्धा हो हूं उस बल जाउं,
काजी मोहंमद तन शाह चालन्धा पीर लागूं पाये,

महमूद केरी बीनती साहेब इतनी मानें

नबी मोहंमद की दोस्ती राखे मुख का पाने

नैनों काजल मुख तंबोला नाक मोती गलहार,

सीस नंवाउं, नेंह अपाउं अपने पीर करु जुहार

कोइ मायला मरमन बूजहे रे

बात मनकी कीस न सुजहे रे

दुःख जीवका किसे कहूं अल्लाह दुःख भरिया सब कोइ रे,

निर दुःखी जगमें कोइ नहीं में परथा फिर फिर जोइ रे

जारी कूवड सैंवरी नी कैसी इक तल आंख न लाइ

आज सरीजन घर आया क्यों न करुं महेमानी

- उर्दु भाषाकी प्राथमिक उत्पत्तिमां सुफी संतोनुं प्रदान

मुसन्निफ : डॉ.अब्दुलहकक सहाब

जमियत पंडया जिगर (गुजराती अनुवाद 90 से 105 सफा)

इस तरहा कइ और किताबोमें हजरत शाह महमूद महबुबुल्लाह दरियाइ के कलाम गुजरी, फारसी, अरबीमें लीख्खे गये है। आपका तजकेरा बेशुमार उर्दु-हिन्दी फारसी, के जानेमाने तसनीफात लोगोने किया है। अभी कुछ ही दीन पहले पीर मोहंमदशाह लायब्रेरी मेरा जाना हुआ था मेरे साथ जनाब पीर सैयद अल्हाज अेम.अे.सैयद (डे.कलेकटर) (जुनागढ) सहाब थे। जनाब प्रो.महीयुदीन बोम्बेवालाने हमें निहायत अदबके साथ हमसे मुलाकात की और बताया की हजरत शाह महमूद दरियाइ का जीगरी कलाम का पूरा के पूरा हिस्सा तरजुमा के साथ साये होनेवाला है और बहोत जल्द आपसे मुलाकात करके हम इसकी इफतेताह बीरपुर दरगाह शरीफ पर रख्खेंगे हमने कहा हम हर वकत तैयार है। अल्लाह तआला अपने बंदोके नेक कामोको कभी भूला नहीं देता वो जीससे चाहे जब चाहे जहां चाहे जैसे चाहे वैसे जीससे चाहे उनसे इन्के तजकेरे करा लेता है। शाह महमूद अपनी इस खिदमतको मेरे जीम्मे रहे अैसी उम्मीद के साथ अपनीये कलम को यहां बंद करता हुं। अल्लाह तअला चांद मोहंमद बीन मन्सुर रहमतुल्लाह अलयहे की किताब तोहफतूल कारी के जरीये मेरे दीनी-दुन्यवी, काममें आसानी हो नेक बुजुर्गोके सदके ये किताब मेरे लीये बाइसे बरकत बने और दोनों जहां में हमें कामीयाबी अता करे आमीन।

कोण कहेता है महमूद मर गये

इस घर से निकले दुसरे घर गये

हजरत काजी सय्यिद महमूद रहमतुल्लाह अलयहे दरियाई बीरपूरी का गूजरी - उर्दू कलाम

(1)

(1) मुस्तफा सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम लागुं तुम्हारे पाउं
जिस दिन सांइ लेखा मांगे, सो दिन लेने छुळाउ ।
(या मुस्तुफा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम । में आपके पाउं पडता हुं और बिन्ती करता हुं के जीस दिन (कयामतमें) अल्लाह तआला मेरा हिसाब ले, उस दिन मुझे हिसाब से बचाना)

(2) जी में अवगुण अनकेनी रे, तो भी तेरा दास ।
(या अल्लाह । मेरे अंदर अवगुण तो अगणित है । फिर भी में (आखिर) तेरा दास (बंदा) हुं)

(3) आपीं आप मया कर, सांइ पुरी मनकी आस ।
(अय मालिक । मेरे मनकी सब तमन्नाऐं आपही पूरी करनेवाले हैं)

(4) निस दिन सेवा हुं करुं रे, उभरे सांइ क द्वार ।
(में तो सारा दिन सेवा करनेको तैयार हुं ओर वो भी मालिक के दरवाजे पर खडे खडे)

(5) तल तल संवरुं नाहूं तेरा, हम पार उतार ।
(में तो हर घडी अपने आप शृंगार करुं, नाम फकत तेरा लुं, अय मालिक, मुझे पार उतारो)

(6) नबी मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम रे, सारव पुरा रसूल ।
(नबी मुहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम तो पूरे और सच्चे रसूल हैं)

(7) महमूद बंदा बीनवे, मेरी हाजत करके कुबूल ।
(तेरा बंदा महमूद बिनती करता है के आप मेरी हाजत कुबूल करें)

(2)

(1) मेरा मनहर मंदिर ओवरे, मुझे तब थें रैन भावे रे ।
(मेरा दिलरुबा (मन) मंदिर में आया है, तबसे मुजे रात बहोत भाती है)

(2) मुजे तुज बिन ओर न भावे रे, तुं घर आव, सलोने मीता रे ।
(तुज बिन मुजे कुछ भाता नहिं है, (इस लिये) ओ पियारे तू घर आजा)

(3) तुज सरखा कोइ न दीठा रे, सारो कुं तुंही मीठा रे ।
(तुज जैसा कोइ नहिं देखा, सबको तूही मीठा लगे)

(4) पियू तेरी नेह बंधाणी रे, जियुं मछली तडफी बिन पानी रे।
(पियारे तेरी मुहब्बत बंधी है, इस लिये मछली की जैसी बिन पानी तडपती हुं)

(5) नेह छाना, प्रगट हो तां, सुखरा नहिं रे, बेठन, सोतां।
(मुहब्बते कभी छुपती, कभी झाहिर होती है, (इस लिये) न तो बेठे, न सोते कोइ चेन है)

(6) काजी महमूद दास तुम्हारा रे,
नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम) मीत हमारे रे।
(काजी महमूद तो तुम्हारा दास है, और नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम) हमारा मीत (पिथारा) है)

(3)

(1) कोइ मायला मरम न बूजे रे, बात मन की किसे न सूजे रे।
(कोइ (मेरे) अंदर का भेद नहिं जानता, और मन की बात किसी को नहिं सूजती)

(2) दुख जीवका मेरे, किसे कहुं अल्लाह, दुख भर्या सब कोई रे।
(अय अल्लाह ! मेरे दिलका दुख किसे कहूं, यहां तो सब लोग दुखी है)

(3) निर्दुखी जगमें को नहिं, में पृथ्वी फिर फिर जोइ रे।
(जगमें कोई दुःख बगैर का नहिं, मैंने सारी धरती फिर कर देख ली है)

(4) युं मुजे पूछें सहेलियां, तुज तन लोहू न मास,
छाने लाघण में किये, मेरे सांइ कारन उपवास।
(मुजे सहेलियां पूछती हैं के तेरे बदनमें न लोही हे न गोश (में तो) छुपकर भूखी रही और मेरे पिया की खातिर रोजे (अपवास) रखे)

(5) हीरे भीतर दूना जले, मेरे सांइ बिन कोन बुजाओे।
(दिल के अंदर तो आग लगी हुइ है, मेरे पिया के सिवा कोन बुजाओे)

(6) काजी मुहम्मद तन शाह चायलंघा, मेरा सब दुख वुही उलावे।
(काजी मुहम्मद शाह चायलंघा (जो मेरे पीर हे) मेरे सब दुख वही दूर करें)

(7) महमूद संवरे सांइयां, मुजे उस बिन न भावे।
(महमूद (मेरे तो) पियारे सांवरीयां हैं, उनके सिवा मुजे कोइ ना भावे)

(4)

(1) आज का ल्हावा लीजे, काल किने दीठी,
एक तिल रहेने न पाओे, जब आवे चिट्ठी।

(आज ल्हावा लेलो, कल किसने देखी है जब (मोत) का बुलावा आ जाओ तो एक पल भी कोइ रह न शके)

(2) जो रे सब कोइ आइया इस नगर मंजारे,
किन्हीं मोल गंवाया, किने पूंजी वधारी।
(इस दुन्या में जो कोइ आया (उन सबने) किसीने रुपिया गंवाया तो किसीने पूंजी बढाइ)

(3) सोंघे पैसा लुटाल के बाजार सब कोइ पावे,
गुणभर पूंठे, लीजे जिसे, खोट न आवे।
(सस्ते दामों पैसा लुटाकर बजार तो सब हांसिल करते है, खूबीयोंको पीठ पर लाद लो, इसमें कभी घाटा नहिं)

(5)

(1) चंदन के छिळके मारे रे, तेरे हाथों की बल्हारी रे।
((अय पिया) तूने चंदन के छींटे मारे, ये तेरे हाथों की महेरबानी है)

(2) शाह, हुं तमूं पर वारी रे, तें सार कीती हमारी रे।
(अय शाह ! में तुम पर वारी जाउं, तुमने हमारी (अच्छी) सरभरा की है)

(3) शाह, बाचा हमकुं दीती रे, सहियां मां सुहागन कीती रे।
(अय शाह, तुमने हमको वाचा (जुबान) दी हैं, सहियरोमें से (मुजे) सुहागन बनाइ है)

(4) सुन नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम) मीता रे,
मेरा जीवरा तुजे बल दीता रे।
(सुन लो, नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम) ही मेरे पिया हैं, अय मेरे दिल, तुजे तो वोही ताकात देते हैं)

(6)

(1) कुछ कहुं, माइ हुं मेरे जिया की, हुं मिस्वास अपने पत्या की।
(कुछ कहुं ? अपने जी में समाइ हुं, अपने मालिक की मिस्वाद (?) हुं)

(2) पिया कारन तिन करुं उपवास, में तें काढया मदिरा, मास।
(में पिया के लिये उपवास करती हुं, मेंने तो दारु और मासको निकाल दिया है)

(3) दो चक अपनी सींच बहाउं, जी चाहुं तो, पिया मुख चाहुं।
(दोनों आंखोसे आंसु बहाती हुं, जो चाहना ही है तो पिया के मुख को चाहुं)

(4) महमूद पूछे पंडित जोसी, कब मिलावा मेरे पिया सुं होसी।
(महमूद तो पंडित और जयोतिषीसे पूछता रहता है के मेरे पिया का मिलन कब होगा)

मुनाजात फारसी

ख्वाहम् खुदारा रोजो शब, गर बख्ते मन् यारी देहद,
या मी रसम मकसूद या दर तालेबा नामम् शवद.

तरजुमा : मैं रात-दिन खुदाको चाहुंगा, अगर मेरे नसीबने मेरी मदद की। या तो मैं अपने मकसूदको पहोंचुंगा, या मेरा नाम तलबगारोमें होगा।

मन् नफी करदम् अज् दिलम् चीजे के बाशद जुझ खुदा,
दिल बस्तम् इल्लल्लाह रा, वस्वासे दीगर बरकुनद।

तरजुमा : मैंने दूर कर दी अपने दिलसे हर चीजको सिवा खुदाके। मैंने अपना दिल इल्लल्लाह करनेमें लगा दिया और वसवसोंको निकाल दिया।

हर कस के दर राहे खुदा साबित ब मानद् बे निफाक,
तहकीक आयद आं कसे गोय अज मैदाने उ बुरद।

तरजुमा : हर वो शख्स जो के खुदाकी राहमें बगैर निफाक साबित रहा, तहकीकसे कहना चाहिये के (काम्याबी) की गेंद मैदानसे ले गया।

शुक्रराना हर दम मी कुनम् जुझ खालिकम् परवायम् न,
तालिब शुदम् साबित कदम मत्लूब हम ख्वाहम् रसद।

तरजुमा : हर दम मैं शुक्रिया करता हुं, खुदाके सिवा किसीकी परवा नहीं करता। मजबूत कदमके साथ तालिब हुं, मेरे मत्लबको मैं पालूंगा।

''महमूद'' अज बेहरे खुदा बाज आम्दह अज फित्नगी,
मी-वरगलानंद मरदूमां नामर्द मानेअ मी शवद।

तरजुमा : ''महमूद'' खुदाकी मददसे फित्नोंसे लौट आया। लोग बहकाते थे, और नामरद रुकावट बनते थे।

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम
अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ-लमीन

जियारत टुर (टुर-1)

लाखो दरुदो सलाम उस नबीअे बरहक सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम पर के जीस के सदकेमें मुजे मेरे जददे आला की शान में आपकी सवाने उमरी लीखनेका एक रुहानी गैबी इशारे पर मेने शुरु किया । मनाकिबे ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा कुद्दुस सिरहील अजीज व आपके आबा अजदाद व आपके खुल्फा व आपके मुरीदेन मोतकीदैन के हालात कलम बंध करु । इसी इशारेसे में अपनी इस किताब के लीये पहेला प्रोग्राम अंग्रेजी ता.10-01-2008 को बनाके चला जीसमें हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे के इन तमाम बुजुर्गो के हालात व मकामात और मस्जीदे, मद्रसे व आस्ताने (दरगाह) खानकाहे, चिल्ले वगैराह के गांव व शहरो के फोटो व आजके हालात कैसे हे, इसका तफसीली हालात लीखनेका इरादा करके चले । ताके अपनी इस हिन्दी किताब में सामील करलुं और आनेवाले जमाना के लीये एक बेहतर दस्तावेजी मुकम्मील किताब तैयार हो जाये । और आनेवाली नस्ले हमारे खासकर खानकाहे दरियाइया, सोहरवर्दीया, चिश्तिया व कादरीयाह के बुजुर्गो की सवाने हयात से जुडे रहे ।

इस इरादे से में और जनाब पीरजादा हमीदुद्दीन उर्फ प्यारे साहब (अेडवोकेट) जो मेरे चाचा जात भाइ के बेटे है हम दोनों पकका इरादा करके अपनी कींमती वकत राहे-खैर में वकफ करते हुवे चल पडे । और इस नाचीज के काम को अपनी मंजील तक ले जाने के लीये वादा किया । हर वकत हर जगह आने जानेका पकका वादा किया अलहम्दुलिल्लाह ।

हम इस इरादे से आज पहेल हमारे जददे अमजद हुजूर सैयदना शाह हमीदुद्दीन चाहेलदा आरीफबिल्लाह रहेमतो रिदवान के पीरो मुर्शीद हुजुर सैयद शाह सरकार मोहंमद सीराजुदीन शाहे आलम महेबुबे बारी रहेमतो रिदवान की बारगाह में हम हाजीर हुवे व आपकी दुआके तलबगार बने फातेहाख्वानी के बाद हुजुर की बारगाहमें गदाअे दरियाइ दुआ का तालीब बना व आपकी बातीनी दुआका साया हंमेशा साथ रहे अेसी उम्मीदे खास इजहार की । मेरी तमन्ना और आरजु हुजुर के वास्ते से पुरी करना या करवाना मेरा हंमेशा मामुल रहा हे, कयुं के अपने बुजुर्गो ने भी और हिन्दुस्तान के सिलसिल-अे जलालीयाह, सोहरवर्दीया के बेशुमार बुजुर्गोने भी हजरत शाहजी के आबाऔ अजददा से फैज बख्शी पाइ है और हुजुर की बारगाहमें हमा वकत फैजे खाश अे बातीनी मीलाहे व मीलता रहेगा इन्शाअल्लाह ।

आस्तान-ओ शाहेआलम व मस्जीद खानकाह के फोटो निकाले यहां हमने जोहर की नमाज अदा की बादमें हम हमारे ख्वाजा दरियाइ के सगे दादा हुजुर सैयदना शाह मोहंमद महेबुबे खुदा के पीरो मुर्शीद हुजुर सैयदना सरकार शाह मुहम्मद बुरहानुद्दीन कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे मु. वटवा शरीफ बारगाहमें पहोंचे। हुजुर पुरनुर के आस्तानओ पाक ब फैज बकश कब्रे अनवर के पास हम दोनों हाजीर हुओ फातेहाख्वानी की। उसके बाद हमने यहां के मकामात की तस्वीरे नीकालना भाइ प्यारे साहब ने शुरु कर दीया। इससे पहेले भतीजे जनाब प्यारे साहब के वालीद जनाब मर्हुम मोहम्मदमीयां इब्ने पीर अहमदमीयां के दोस्त के दामाद अपने घर हमे चा-नास्ता के लीये ले गये। यहां हमारे अजीज दोस्त व मुरीद सुन्नी मुजाहीद जनाब हाजी मलीक रसुलमीयां ननादरावाले दरियाइ कादरी हमारी मुलाकात को आये। हम यहांसे सरकार मख्दुम जहांनीया जहांगश्त जलालुद्दीन बुखारी रहमतुल्लाह अलयह (मजारे मुबारक पाकिस्तान उच्च शरीफ) की प्यारी चिल्ला मुबारक हुसैन टेकरी वटवा शरीफ में हैं। यहां हम पहेली बार गये कुछ वकत दरुदो सलाम पळहा और यहां की तस्वीरे ली। यहां से हम शहेर अहमदाबाद के बीच हमारे जद्दे करीम हुजुर सैयदना शाह ख्वाजा शाह मोहंमद महेबुबे खुदा के आस्ताने पर हाजीर हुवे ब मुकाम सारंगपुर हंजर सिनेमा के सामने हैं जो कालुपुर रेल्वे स्टेशन के उत्तर की जानीब है। यहां हमने मस्जीद व आस्ताने की तस्वीरे निकाली। मस्जीद शाह हम्माद में दो रकात नमाज निफल अदा की। इसी मस्जीद की जगह पर हुजुर सैयदना शाह महमूद महबुबूल्लाह दरियाइ दुल्हा कद्दसींहुल अजीज की खाश पैदाइश की जगह है हमें फख्र है की इस मकान पे आज मस्जीद बनी हुइ है।

यहां हमने असर की नमाज पळही, बादमें हुजुर के आस्ताने में इन गुलामो ने हाजरी दी कुछ देर तक यहां जीक्र कीया। इसी आस्तानेमें तीन मजार हैं।

(1) बडी उंची कब्र हुजुर सैयदना शाह मुहंमद बिन कुत्बे कारन्टा महेबुबे खुदा खलीफा व मुरीद हुजुर कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे।

(2) बीच में हुजुर सैयदना शाह हम्माद मुफती अे जमाना वलीओ कामील की कब्र मुबारक है।

(3) शाह हम्माद के उस्ताद की है।

इस तरहा हमारा पहेला प्रोग्राम खत्म हुवा।

(टुर-1)

ता.21-02-2008 बरोज जुमेरात को बिरपुर शरीफ से सुब्ह 9-30 बजे बिरपुर जुनागढ बससे अहमदआबाद आये। यहां मेरे साथमें मेरे हकीकी भाइ जनाब पीर मोहंमद युसुफमीयां भी साथमें थे। इस दिन रातमें बाद नमाजे इशां सरखेज नहेरु नगर, नुरे मोहंमदी मस्जीद के करीब जश्ने शहीदे आजम में शीरकत की जो मेरी सदारतमें हुवा। सुब्ह फीर हम ख्वाजा दरियाइ के नाम चले. इसी हिन्दी किताब को हिन्दी में कम्पोजींग व हिन्दीभाषा अनुवाद के लीये जनाब मास्टर शेख गुलाम राजीक साहब को फाइल दी और फीर हमारे सफर २ की तरफ रवाना हो गये। जनाब प्यारे साहब जो मेरे प्रोग्राम के फोटोग्राफर है इन्हें अपने मोबाइल से आगाह कर दीया के आप धोलका से नडीआद आ जायें। नडीआद से जनाब प्यारे साहब के बहेनोइ जनाब सैयद रीयाजुद्दीन की मोटर बाइकसे रुहानी सफर कीया। हम पहेले फोटोग्राफी के लीये मु.भालेज, जी.आणंद का रास्ता मालुम करके नीकले मगर शैतानने अपनी ताकत लगा दी। मोटरबाइक में पंचर हो गया दो किलोमीटर दुर पंचर वाला मीला फीर हम वहांसे मुकाम भालेज गये। यहां हमने सैयदना ख्वाजा अब्दुल कवी उर्फ कुल्दरशाह पीर के आस्ताने का पता हमे मालुम नहीं था मगर प्यारे सहाब की अम्मी के जानीब के रीश्तेदार सैयदअली सैयद जो वहां मुस्लिम स्कुलमें टीचर है। उनके घर पे पहोंचे वो घर पे ही मील गये। फीर हम तीनो भालेज के पुराने मोहल्ले के बीचमें हजरत सैयदना अब्दुल कवी दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के आस्ताना-ए पाक पर पहुंचे। ये हजरत हुजुर सैयदना ख्वाजा दरियाइ के सगे भतीजा हैं और गुजरात के मश्हुर और मारुफ बुजुर्ग हजरत सैयदना शाह वजीउद्दीन गुजराती हुसैनी के दामाद हैं यहां अन करीब असर का वकत था। आस्ताना के खादीम जनाब ठाकोर फरीदमीयां हासममीयां वहां बेठे मीले। मास्टर सैयद साहबने हमारा तआरुफ करवाया। इन्होने हमारी पहेचान समजते ही अदब के साथ खडे हो गये और बहोत खुश हुवे फीर तो लोगो का एक हुजुम हो गया के हम खानदाने दरियाइ के चश्मो चिराग है। में लोगोके बीच हजरत की तवारीख बतानेमें मश्गुल हो गया भाइ प्यारे साहबने अपने अंदाज से फोटोग्राफी का प्रोग्राम पुरा कर लीया। मुजे कहा हमारा काम बन गया करीब शाम के पांच बजने पर थे हमने यहां असरकी नमाज अदा की। जनाब ठाकोर साहबने कहा खाना वगेरह हमारे यहां तआम फरमाये मगर हमे भालेज से पांच मील दुर मु.ओड, जी.आणंद की तस्वीरे लेनेकी जयादा फीक्र थी।

मगर यहां के लोगोने कहा हजरत लोबान का वकत हो चुका हे आप सलाम व दुआ करे। मगर मेरा दील मुतमइन न था मुजे ओड जाने की फीक्र जयादा थी मगर कया मालुम बंदओ हकीर को हजरत सैयदना ख्वाजा अब्दुलकवी दरियाइ की नजरे बातीन ने यकायक मेरे तसव्वुर को बदल डाला। हमने यहां सलामके बाद खुब दुआओ खैर की, ये नेक बंदे की मरजी थी। यहां से हम ओडकी जानीब रवाना हुवे मगर मेरे तसव्वुर मे आया के यहां के आस्ताना ए पाकके नये तामीरी काम के बारेमें मालुमात करलुं। जनाब ठाकोर फरीदमीयां साहेबने कहा नया काम का इशारा मुजे मिला था। अपने पीरो मुर्शीद हजरत सैयद मुफतीओ गुजरात शैखुल-मशाइख पीर कमरुद्दीन बावा दरियाइ, अशरफी मद जिल्लहुलआली की सरपरस्ती में और आपके खास ताउन से ये काम आसान हो गया है। हजरत पीरो मुर्शीद ने इस नये मकबरे की संगे बुनियाद ता.10-02-2007 को आपके हाथो मुबारक से की गइ थीं।

ये जानकर हमे बहोत खुशी हुइ कयुं के हजरतेवाला मेरे पीरो मुर्शीद के साथ-साथ बडे चाचा जात भाइ व रुहानी रेहबर और पीरभाइ भी है (अलहम्दु लिल्लाह) हजरते शाह अब्दुल कवी का उर्स मुबारक व संदल 9-10 जमादीउल अव्वल के दिनोमें मनाया जाता है। दरगाह शरीफ और मंदीर एक ही दिवारसे हैं मगर यहां के लोग हुजूर के आस्ताने का बहोत ही ओहतेराम करते है। खादीम जनाब ठाकोर फरीदमीयां हजरत कमरुद्दीन बावा के मुरीद व खलीफा है।

हम वहां से अंधेरा हो उसके पहेले भालेज से ओड गांव हम तीनो रवाना हुवे। करीब ६ बजेसे पहेले ओड गांव पहोंच गये। यहां हजरत सैयद शेख फरीद रहमतुल्लाह अलयहे का मजार है जो बहोत ही उंचा (बुलंद) व शानदार इमारत है। ये हजरत सैयदना ख्वाजा महमूद दरियाइ के सगे खालुं व ससुर है। हम यहां खादीमां दीवान आयेशाबीबी इस्माइलशा से मीले व जनाब खादीम यासीनशा इब्राहीमशा मीले। इन दोनोंने बताया की इस दरगाह शरीफ की हीफाजत के लीये हजरत ख्वाजा दरियाइ सरकार की जानीब से भालेज गांवमें सात बिघा (7) जमीन मीली थी जो अबतक मौजुद है। इसी दरगाह के सहेनमें इदगाह मस्जीद व कब्रस्तान वगेराह है। यहां दरगाह शरीफ के आगे के हिस्सेमें 2002 साल में हुवे कोमी दंगोमें मुसलमान शहीदो की कब्रे है इसी दरगाह को नेस्ता-नाबुद करने के लीये कुफफारोने काफी कोशीश की दरगाह शरीफ में घरेलु गेस के सिलिन्डर रख्खे थे। मगर अल हमदु लिल्लाह ये अल्लाह तआला के प्यारे सैयद शेख फरीद रहमतुल्लाह अलयहे का हे आप

बडे इबादत गुजार वकत के बडे कामील बुजुर्ग थे मगर अल हमदु लिल्लाह कोइ जगह दुश्मनाने इस्लाम नुकशान न पहोंचा शके।

यहां के मुतवल्ली जनाब पठाण मातबरखान भीकनखान व जनाब सैयद अबरारमीयां ननामीयां वगेरह करते है ये आस्ताना पीर भागोळ दुध की डेरी के सामने हे। मु.पो.ओड जी.आणंद में हे यहां की सारी तस्वीरे निकाल ली हम मजार शरीफ के पास बेठकर फातेहाख्वानी व दुआओ खैर करके जल्दी से भालेज की तरफ आ गये।

हमने यहां भालेजमें मगरीब की नमाज अदा की यहां पहेले ख्वाजा दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे की खानकाह थी और ये शानदार मस्जीद उस पे बनाइ गइ है। ये अल्लाह वालोकी इससे बडी कया करामात हो सकती है के अपने नेक बंदो की बेठने की जगह को पसंद फरमा कर अपना घर बनवाया है। (अलहम्दुलिल्लाह)

बाद नमाजे मगरीब कुछ लोग व इमाम साहब मुजसे मिले वो लोग मेरी दुआके तलबगार बने और लोगोने कहा हजरत पहेले मालुम होता तो हम आपको इमाम बनाकर नमाजे मगरीब अदा करते। हमने कहा के हम सफर में है अपना काम छुपकर करता हुं। फीर यहां के लोग मस्जीद से बहार ले गये बहार एक सैयद सहाब जनाब सैयद सीकंदरअली अहमदमीयां मेरे पास अदब से आये मेनें उनसे इस हुजरे व तामीर मस्जीद के बारेमें कुछ गुफतगु की उन्होने कहा 1957 में ये चिल्लाह व हुजरा शहीद करके मस्जीद बनाने का फेंसला लीया था। इस मस्जीद बनाने के फेसले में हमने बिरपुर के उस जमाने के पीरजादो से भी मस्वरा कीया था उन्होने कहा मुजे अब भी उन पीरो के नाम याद हे जीनमें पीर महेमुद बावा जो उमरेठमें रहेते थे और पीर अब्दुलरज्जाक बावा लीला अमामा बांधते थे और कही पीरोने भी बननेवाली मस्जीद के लीये अपनी-अपनी दुआओ से नवाजे हमने यहां मस्जीद के अंदर ख्वाजा दरियाइ नाम की लगी हुइ आरस की तकती और मस्जीद के बहार की तस्वीरे ली तमाम लोगो से इजाजत व सलाम दुआ बाद ब मुकाम नडीआद आ गये। यहां हम जनाब प्यारे साहब के बहेनोइ के मकान पे रात ठहेरे आराम कीया।

सुब्ह फीर ता.24-02-2008 बरोज मंगलवार को नडीआद से मुलेज गांव पहुंचे यहां ख्वाजा दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे का चिल्लह शरीफ हे येह चिल्लह मुबारक की हिफाजत मलेक गुलामरसुल अहेमदमीयां करते है। ये चिल्लेह की जमीन मीरजा बशीरभाइ की है। उस खेतमें जानेके लिये दो नौजवानो ने मदद की (1) मलेक साजीद महमूदमीयां (2) मलेक मोहसीन सादीकहुसैन जगाह बताने के लीये मेरे हमराह आये। ये चिल्लेह की जगाह एक

सीमडी के पेड के नीचे है यहां मुलेज में इस्लामीक नुर अेजयुकेशन केम्पस है। जिसमें दुन्या और इस्लामी इल्म सीखाया जाता है फीर हमारा सफर मुलेज से महुधा की जानीब हुवा। हम महुधा गांव में पहोंचे डाकोर रोड पर एक कब्रस्तानमें गये। हमें उम्मीद थी कोइ मुसलमान भाइ मील जाये मगर काफी देर तक कोइ न मीला फीर एक बुजुर्ग के आस्ताने के पास गये हमने यहां अहेलल कबुर के लीये फातेहा और इसाले सवाब कीया। फीर थोडी देर कब्रस्तानमें बेठे मगर कोइ न मीला। मुजे यहां महुधा में हजरत पीर सैयद शाह मारुफ बीन प्यारुल्लाह बीन शैखुल-इस्लाम ख्वाजा लाड मुहंमद बीन ख्वाजा दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे का मजार का पता लगाना था। हम गांव में गये यहां मेरे अजीज दोस्त पकके-सच्चे सुन्नी मुजाहीद जनाब अब्दुल कादीर गुलाम हुसैन मलीक की तलास करते-करते हम इनके घर पहोंच गये। इन्होने हमारी बहोत अच्छी तरह खीदमत की ये जनाब मेरे 1987 की मुजाहीदाना दोरे जेल के साथी है। उस वकत पुरे खेडा जीलेमें कोमी दंगे होते थे हम नडीआद जेलमें साथ साथ रहेते थे। मेनें उनसे कहा की जनाब में यहां हमारे खानदाने दरियाइ के बुजुर्गवार के मजारे पाक का पता लगाने आया हुं जो मुजे तोहफतुल कारी के हवाले से मीला है। उन्होने कहा की इनका नाम कया है मेनें उपर, लीखे हुअे नामसे बताया उन्होने जवाब दीया मुजे पता नहीं। फीर हम बाजारमें आये यहां भी बहोत से हजरातसे हजरत मारुफ के मजारात के बारेमें कीसीको भी मालुम नहीं के वो कहां आरामा फरमा है, हमने जुना बजार महुधा में ख्वाजा दरियाइ सरकार का चिल्लाह एक पुरानी हवेली की तरह है उपर के हिस्से में मस्जीदे दरियाइ है। नीचे चिल्लाह शरीफ हे व दुकाने हे। इस इमारत का सभी वहीवट जनाब मकसुदमीयां मुस्तुफामीयां करते हे। यहां से हम कस्बा मस्जीद महुधा में पहोंचे। इस मस्जीद को शहीद करके आलीशान मस्जीदकी संगे बुनियाद हजरत पीर सैयद मुफती अल्हाज कमरुद्दीन बावा दरियाइ, कुतबी, अशरफीने की थी। इसी मस्जीद में संगे मरमर की इन्हीके नाम की तकती लगी हुइ हे दरवाजे के करीब दिवाल से लगी हुइ है। अलहम्दुलिल्लाह आज भी खानवादाहे दरियाइया के बुजुर्ग दिने इस्लामकी खिदमत अंजाम दे रहे है।

यहांसे हम फीर ब मुकाम अलीना की जानीब रुख्सत हुवे। इसी गांवमें बिरपुर के बासिन्दे जनाब उस्मानगनी मुहंमदभाइ कारीगर के मकान पर गये वो आराम कर रहे थे हमे देखते ही बहोत ही खुश हो गये और तमाम रिश्तेदारो को जमा कर दीये। फीर उन्होने सबसे कहा के ये हमारे पीर और भान्जे भी है कयुंकी उनकी वालेदाकी मेरी माने पुरी जींदगीभर खीदमत की थी। और ये पीर साब हजरत मदनी बावा की नानी अम्मा सैयदा हजीयाणी अम्मा

जैनबबीबी की भी मेरी माने जींदगीभर खीदमत की थी । उन्होने कहा के मेने सच कहा हे ना ? हमने कहा ये बिल्कुल सच हे । गुफतगु चाहे पानी होने के बाद हम इनके घरसे निकलकर आस्ताना ऐ पाक हजरत सैयद शाह तैफुर बिन प्यारुल्लाह बिन शैखुल इस्लाम लाड महंमद बिन ख्वाजा दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे के मजारे मुकद्दस पर गये । हमने यहां फातेहा ख्वानी की इस मकबरे में आपका और आपकी जौजा सैयदा मखदुमा चांद बीबी का मजार है औसा मुकामी लोग कहेते है । मगर (सही में वो तोहफतुल कारी दास्ताना ए दरियाइ के हवाले से पता चलता है की येह मजार सैयदा बीबी हदीया ख्वाजा प्यारुल्लाह अलयहर्रहमा का मजार है । खैर अल्लाह बहेतर जाननेवाला है)

बाजु के रुम से एक चचा आये जीनका नाम खादीम रहीमभाइ कासमभाइ शेख है इनको गनीभाइ बिरपुरवाले हाथ पकडकर बुला के लाये वो बहुत जइफ उम्र थे । आंखो की बिनाइ भी कम हो गइ थी । उनकी उम्र तकरीबन ९६ साल की थी उनको पता चला की बिरपुरके सैयदजादे आये हे तो बहुत खुश हुवे हमे पाकर हम भी बहुत खुश हुवे उनसे मिलकर कयुंके उम्र रसीदा आदमी हमे मिलने आये ये हमारी खीदमत करनेका सोक और जौक करनेका इनमे जजबा था । इन्होने कहा हम आपके तो गुलाम हे हम लोग आपकी दुआओसे फले-फुले है कयुं ये सारा अलीना गांव हुजुर दरियाइ सरकार का ही है । ये आस्ताना के करीब 125 बीगा जमीन में तालाब है यहां पर अबतक ख्वाजा दरियाइ सरकारकी नाम नामे जमीन मौजुद है । मगर वकत की रफतार ने मोड बदल लीया है । अल्लाह रब्बुल आलमीन ही जमीन व आसमान का मालीक है वो जीसे चाहे इसे दे । हमने यहांकी सारी तस्वीरे खींच ली सबसे सलाम दुआ करके इसी गांवमें ख्वाजा दरियाइ सरकारके चिल्लेह की जानीब रवाना हुवे । येह जगह मलेकवाड अलीना में है । हमें देखकर कुछ लोग हमारे इर्द-गीर्द जमा हो गये बहोत सारे बच्चे भी जमा हो गये । जनाब प्यारे साहब वकील ने अपना फोटोग्राफी करनेका काम पुरा कीया इस तरफ औरते थी बहोत जमा हो गइ कयुंकी हम खानवादा ऐ दरीयाइया के जानशीन हे वो सब ये चाहते थे की हम लोग हर लोगो के घर जाजा के दुआओ खैर करे और कुछ खाना खाओ । चिल्लेह के करीब एक मलकानी बीबी ने कहा आप हजरत मेरे घर चले मगर हमे अपने मिशन की फिक्र थी । चिल्लाह शरीफ से नीचे उतरे तो एक चौराहा (चार रस्ते) के करीब पहोंचे एक बाजु एक कोनेमें एक ओटा था यहां के लोग कहेते थे की ख्वाजा दरियाइ दुल्हाने दरियामें डुबे हुवे जहाज को तिराया था यहां पर पहेले बहोत बडा एक चोरस पथ्थर था । उस ही पर बेठकर सरकारने नमाज और विर्द वजाहीद पढते थे इस वजहसे इस जगाह को चोरसा कहते है । दो नौजवान

आदमी एक चचा को हमारे पास लाये सलाम व दुआ बाद मेनें उनका नाम पुछ इन्होने अपना नाम मलीक शेरुमीयां अकबरमीयां बताया जो करीब 85 या 87 साल के थे वेसा उन्होने ही कहा की मेरी उम्र इतनी होगी और येही गवाही सब लोगोने दी। उन सब लोगोने कहा के सरकारने यहा बेठे ही जहाज तीराया था। यहां पर सरकार ख्वाजा दरियाइ दुल्हा अपनी हयाती जींदगी 12 सालका एक लम्बा वकफा गुजारा था। खल्के मख्लुक व इस्लाम की तब्लीग की थी। फीर वो मलीक सहाब शेरुचाचाने कहा आप मेरे मकान पर चले में ही इन मकामात की खीदमत अंजाम देता हुं और आप मेरे ही महेमान है क्युंके हम सरकार दरियाइ दुल्हा की जमीनो में रहेत है और ये आपका ही इलाका है। उनको इस इसरार मोहब्बत और दर्दमंदाना अपील में ना ठुकरा शका हम दोनो ओर कुछ लोग उनके मकान पर तशरीफ ले गये। ये मकान बहोत पुराना था मेनें मलीक साहबसे कहा ये मकान कितना पुराना है उन्होने कहा मेरे दादाने बनवाया था वाकई बहुत सुकुन व अमन वाला मकान था। उन्होने कहा की बिरपुर के सारे पीरजादे मेरे घर पर ही तशरीफ लाते थे और लाते है जीनमें आप भी सामील है। फीर मेनें कहा अपने दुआओ कलेमात के अंदाज में के रब तआला इस मकान में रहेनेवालो को आदाबो-सादाब रख्खे। कुछ देरमें च्हा वगेरेह हमने पीया फीर हमने इरादा कीया के अब निकल चले लेकिन मेरे इरादे को मलीक चाचा समज गये। उन्होने कहा के मुजे कुछ याद आया हे वो में आपको बता दुं मेनें कहा ठीक हे तो उन्होने बताया की जो पथ्थर पर बेठकर दरियाइ सरकारने जहाज तीराया था उस पथ्थर पर सरकारके हाथ मुबारक का नकश मौजुद था व पुरे हाथ का नकश थावो मेने और काफी लोगोने देखा था। ये करीब 50 साल पहेले की बात है (अलहम्दुलिल्लाही रब्बिल आलमीन) और ये पथ्थर मुबारक को हमने हमारे मोहल्लेवालोने मीलकर बिरपुर के पीर सहाब जनाब पीर मुहंमदमीयां को दीया था। फीर वो याद करके बोले करीब 70 साल पहेले की बात कहेता हुं ये पथ्थर पीर सैयद बाबा बिरपुर शरीफ ले गये थे। हाय अफसोस सद अफसोस... अफसोस मगर यहां बिरपुर में अैसी कोइ चीज मौजुद नहीं है, बल्की नकीसे इस बसत का चर्चा मेनें सुना नही है वल्लाहु तआला आलमो बिस्सवाब।

हम अपनी दुआओ करके जनाब मलीक सहाब के यहां से जुदा होकर के अपने सफर को खत्म कर दीया जनाब प्यारे साहब धोलका की जानीब हो गये और में डाकोर होते हुवे बिरपुर शरीफ तरफ आ गया। (अलहम्दुलिल्लाह)

(दुर-3)

ता.10-04-2008 बरोज जुमेरात के दिन में अकेला बिरपुर शरीफ पहोंचा। आनेवाले दिनोमें उर्स ख्वाजा दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे शुरु हो चुका था। हमे पहेले इस बा बरकत रश्मे सुफीया अे किराम व तरीकते औलीयाअे किराम व खीदमते सरकार ख्वाजा दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे भी अदा करनी थी। कयुं के आनेवाली जुम्आ ता.18-04-2008 को मस्जीदे जामे दरियाइ की नये बनाअे गये मस्जीद के जमाअतखाना की इफतेदाह होनेवाली थी। उसका अेरिया (क्षेत्रफल) 70-65 है। ये इस्लामी तारीख से 10 रबीउस्सानी 1429 जुम्आ के रोज था।

इस इफतेदाह में खानकाह के मश्हुर व मारुफ बुजुर्ग हजरत अल्लामा मौलाना अल्हाज मुफती-अे गुजरात शैखुल मशाइख पीर सैयद कमरुद्दीन अे. दरियाइ कारंटवी अशरफी, कादरी, दामत बरकातुल आलीया के दस्ते मुबारकसे हुवा और अपनी नुरानी व इरफानी अन्दाजमें मस्जीद के आदाब तामीर करने के अल्लाह और उसके रसुल के फरमान व हदीसे कुदसी खिताब फरमाया। और कुछ रोशनी अपने जद्दे करीम ख्वाजा दरियाइ सरकार अपने रबसे नमाज व सलात जींदगी हमा वकत रबकी बारगाहमें सजदा व सुजुद कीया करते थे। आपकी इबादत का तरीका लोगो को अपनानें की हिदायत व त्लकीन की। आपके बाद हाजरीने जुम्आ के सामने आखकाह के आलीमे दीन सुफीअे बा सफा हजरत अल्लामा मौलाना अल्हाज अमीनुद्दीन अे दरियाइ रजवी साहब ने भी सामइन से खिताब फरमाया जो बहोत जोशीले व तारीफे कामील बा कमाल था फीर आप हीने खुद्बअे जुम्आ अदा फरमाया।

नमाजे जुम्आ इस जमाअत खानेकी पहेली जमाआत अे जुम्आ हजरत कीब्ला कमरुद्दीन बावा साहबने अदा फरमाइ। नमाजे जुम्आ के बाद हजरतने दर्द मंदाना व आजीजाना अपने रबके हुजुर तमाम आलमे इस्लाम की फला व आफीयत के लिये दुआ अे खैर की। सलातो सलाम जनाब हजरत हाफेज पीर सैयद अब्दुलकादीर जी. दरियाइ अशरफी ने पढ्हा। इस मौके पर तकरीब पांच से सात हजार लोगोने नमाजे जुम्आ अदा करनेमें शीरकत की। उस वकत खानकाह के मशहुर व मारुफ पीराने उजजाम सादाते किराम उलमाअे दीन वगेराह शामील थे। जीनमें कुछ सहेफेहरिस्त है।

(1) हजरत पीर सैयद जीयाउद्दीन दरियाइ साहब

(2) हजरत पीर सैयद नइमुद्दीन अेफ. दरियाइ (सरपंच साहब)

(3) हजरत पीर सैयद हाजी मजहरअली दरियाइ साहब

(4) हजरत पीर सैयद रसुलमीयां अेच. दरियाइ साहब

(5) हजरत पीर सैयद मोहंमद मदनी अेफ. दरियाइ अशरफी, कादरी, खलीफ-अे हुजूर शैखुल इस्लाम व खलीफ-अे शैखुल मशाइख साहब

(6) जनाब पीरजादा हमीदुद्दीन (उर्फे प्यारेसाहब) दरियाइ (धोळका)

(7) जनाब पीरजादा रियाजुद्दीन जे. दरियाइ, अशरफी, खलीफ-अे शैखुल मशाइख

(8) जनाब पीर पीरजादा मोहंमद युसुफमीयां अेफ. दरियाइ अशरफी खलीफ-अे शैखुल मशाइख

(9) जनाब पीरजादा जमालुद्दीन वाय. दरियाइ

(10) जनाब पीरजादा अेझाजुद्दीन जे. दरियाइ अशरफी (टीचर)

और कइ नामी हस्तीयां मौजुद थी।

ता.21-04-2008 को सुब्ह अपने खास मकसद हांसील करने के लीये मे और जनाब प्यारे सहाब अपनी किताब मनाकिबे ख्वाजा दरियाइ दुल्हा की कळी मीलाने मोटर बाइकसे मु.पांडरवाडा जी.पंचमहाल की जानीब रवाना हुवे। यहां खलीफ-अे हुजुर ख्वाजा दरियाइ सैयदअली मोहंमद रहमतुल्लाह अलयहे दरियाइ साहबने आपको शहादत अता फरमाइ। आस्तान-अे मुबारक के पास पहोंचे दरगाह शरीफ में फातेहा ख्वानी करके हमने यहां जायजा लीया यहां के हालात मालुम कीये। यहां पर एक सहाब गोस्त की दुकान चला रहे है। उन्होने कहा की 2002 के कोमी दंगोमें आस्तानाअे मुबारक को ढांह देनेकी भरपुर कोशीश की थी जो हमने हमारी आंखोसे इस आस्ताने के अंदर गेस के बोतल जलाये थे वो तकरीबन 6 या 7 थे अैसा मुकामी शख्सने बताया था। हमने देखा गुस्ताखे इस्लाम ने दो खंभे तोडे थे कुछ दिवालोमें जलानेकी सियाइ मौजुद थी। अलहम्दुलिल्लाह इन वलीअे कामील की उस दिनो की रातमें बा कमाल गैबी अवाज आपकी कब्रे अनवर के पाससे आती थी इस वजहसे दुश्मनाने इस्लाम अपनी कोशीसो में नाकामीयाब रहे। हमने यहां की सारी तस्वीरे निकाल ली। यहां के खादीम दिवान याकुबशा व रफीकशा इस आस्ताने की और करीब 10 बिगा जमीन की खिदमत के तौर पर आमदानी हांसील करते है। हमने कहा अब यहां का माहोल कैसा है इनकी दुआ है अब यहां कीसी किस्म का खौफ व डर नहीं। यहां एक मस्जीद को भी शहीद कीया था, करीबन 40 से 50 मर्द, औरते और बच्चे भी उस वकत शहीद हुअे थे लेकीन यहां अब सारे मकान, दुकान व मस्जीद नये तरीकेसे बन चुकी है। मगर अफसोस है की 60 या 70 घरो के अंदर से मस्जीद में मुजे चार नमाजी भी ना मील शके। तौबा-तौबा-तौबा अल्लाह हमे अपने गजब व जलाल से बचाये आमीन।

अब हम यहांसे मु.लंभो, तेहसील लुणावाडा, जी.पंचमहाल जो बिरपुर शरीफ से करीब 40 की.मी. के फासले पर है यहां पर बिरपुर शरीफके मश्हुर व मारुफ खानदाने मलीक के फरजंदागान रहेते थे। ये लोगो के आबा व अजदाद को हुजुर सैयदना ख्वाजा दरियाइ सरकार की जानीब से पुरा लंभो गांव तबलीगे इस्लाम के लीये दीया गया था। जीसमें आज इनके पास करीब 300 बीगा जमीन है।

ये लोग मेरे करीबी रिश्तेदार है ये अेरिया राजस्थान की बोर्डर से लगा हुवा है जो जंगलका इलाका है। यहां पर हुजुर सैयदना ख्वाजा दरियाइ दुल्हा रहेमतो रिदवान के खलीफा अे खास हजरत सैयदना पीर शाह जहांगीर रहमतुल्लाह अलयहे की इबादत करने की जगह चिल्लाह मुबारक है येह जगह बहुत दुर चल कर तालाब व पहाडीयो से होते हुवे पैरमें सख्त कांटे खानेके बा वजुद हम वहां पहोंच गये। कुछ देर यहां बेठकर जीक्रो अजकार किया तस्वीरे खींच कर हम वहांसे हमारे रिशतेदारो के घर पर यानीकी,
(1) जनाब मलीक रसुलमीयां (2) जनाब मलीक कालुमीयां (3) जनाब मलीक फतेहमुहंमद ये तीनो सगे भाइ है। इन्होने हमारे लीये च्हा-नास्तेका इन्तेजाम किया के आप लोग आज ठहेर जाये। मेनें यहांसे मु.मेघरेज जी.साबरकांठा गुजरात जानेका पकका इरादा बना लीया था। जो लंभोसे 20 कीमी. दुरी पर था मेनें प्यारेसहाब को कहा हम यहां से मेघरेज जायेगें। उन्होने कहाकी बहोत जंगल हे मेनें कहा कोइ फीक्र की बात नहीं हम जहां जा रहे है वो जगाह सरकारे वाला ख्वाजा दरियाइ सरकारके बडे चहिते खलीफा है वे बा कलाम वलीअे कामील बुजुर्ग है। फीर उन्में हिंमत आगइ हम घनघोर जंगलोमें होते हुवे मेघरेज पहोंच ही गयें। वहां में एक -दो बार पहेले जा चुका था मगर अब हजरत के मजार व कब्रस्तान तक बस्ती आ गइ है। मालुमात करते-करते हम उनके रोजाअे मुबारक पर पहुंच गये ये आस्ताना हजरत पीर सैयद शाह जहांगीर रहमतुल्लाह अलयहे का है। हमने यहां कुछ देर बेठकर फातेहाख्वानी व दरुदो सलाम पढ़ा जो हमारा दस्तुर है। फोटोग्राफी होनेके बाद हम मेघरेज गांव में गये यहां पर करीब 4 से 5 मस्जीदे है। अैसा एक मुसलमान भाइने बताया। अब हम यहांसे सफर की दुसरी तरफ रुख कर लीया हमें कारंटा मुकद्दसा जाना था। हम तहेकीकात करते व रास्ते की जानकारी हांसील करके घनघोर जंगलोसे गुजरते हुवे कारंटा शरीफ पहोंच गये। यहां हम सबसे पहेले खानवादाअे दरियाइया के वली अहद व हमारे पीरो मुर्शीद और मेरे बडे अब्बाके बडे बेटे हजरत पीर सैयद कमरुद्दीन बावा दरियाइ अशरफी की खानकाहे दरियाइ, कुत्बीया अशरफीया पे पहोंचे। हमने यहां दोपहर का खाना खाया

फीर हम यहांसे आस्तानाओ आलीया कुत्बे रब्बानी की जामा मस्जीदमें नमाजे जोहर अदा की। उसके बाद सरकार हुजुर सैयदना शाह कुत्बे रब्बानी महेबुबे यजदानी अमीर मस्उद शिब्ली ओ जमानी गौषे झमां कुत्बुल हिन्द शाह महमूद महेबुबे रब शोहरवर्दी कादरी जुनैदी की बारगाहमें निहायत ही अदबो ओहतेराम के साथ आजीजाना अपने आपको हकीर मिस्कीन व गदा का सबुत देते हुवे बंदा हाजीर हुआ। फातेहा ख्वानी शजरा शरीफ पढनेके बाद हुजुर की बातीनी दुआका बंदा तलबगार बना। में औसा महेसुस कर रहा था की मेरी आवाज को कोइ सुन रहा है, औसा महेसुस कयुं ना हो ये बारगाहे फैज बख्श है।

अब हम यहां से दोपहर की गरम तपीश में जनाब प्यारे साहब और एक शेरखान नामी शख्स को साथमें लीया हुजुरे मख्दुमे कारंटाकी निराली जलालत से लबरेज रुहानी इल्म हांसील करनेकी प्यारी चिल्लाह गाह की और चल पडे। ये जगाह कारंटा शरीफ की मगरीब की जानीब भादर नदीके बीचो बीच है यहां दोनो और पहाडीया है और घनघोर जंगल है। इस नदीका पुरा पानी धोध में बनकर बहेता है और गीरता है। **इसी पानी की गहेराइमें जाकर कुत्बे जमाना अपने रबकी इबादात करते थे। यहां पर ही हुजुर पीरे लासानी सैयदना शाह मख्दुम जलालुदीन जहांनीया जहांगश्त सोहरवर्दी बुखारी रहमतुल्लाह अलयहे से मुलाकात हुइ थी और इन दोनो बुजुर्गो की अपने-अपने जलाल व विलायत की निशानी आजभी मौजुद है। इन दोनो बुजुर्गो के बगलगीर होनेकी वजह से अपने-अपने पैरो के निशान पथ्थरो पे आज भी महेफुज है अलहम्दुलिल्लाह।**

हम यहां कुछ देर खुब नहाये (गुस्ल) और फोटोग्राफी करके रास्तेमें कारंटा मुकद्दसा की पुरानी इदगाह मस्जीद की तस्वीरे ली हमें और गर्मी मेहसुस हो रही थी कयुंके रास्ता बडा कठीन और उतार-चढाव वाला था और गर्मी भी सख्त हो रही थी।

हम यहां से कारंटा शरीफ बहार कुत्बे जमाना ओ ससूर हुजुर सैयदना शाह जैनुल आबेदीन फरीदी रहमतुल्लाह अलयहे की दरगाह शरीफमें पहुंचे। रश्म के मुताबीक फातेहा शरीफ पढ़ा। इसी जगाहमे यहांके लोग मदफन होते है। हमने दुआ ओ मगफीरत के बाद फोटोग्राफी कर ली। अब यहां से करीब शाम के 5-00 बजे बिरपुर शरीफ असर की जानीब निकले। बिरपुर शरीफ असर की नमाज मस्जीदे दरियाइ में अदा की यहां हमारा सफर खत्म हुवा।

ता.2-5-2008 के दिन में और पीर प्यारेसाहब बिरपुर शरीफ जानेके लिये सुबह 4-30 वकत अहमदाबादसे रवाना हुवे। मुजे मुंबइ से पुरे बदनमें

सख्त अेलर्जी होनेके बावजुद में रुहानी और जद्दआला के मिशनको आगे बढाने की कोशीश में हर तकलीफ को सहन करके तैयार था बडी मुश्किल पेश आ रही थी। हमें इन दौरान चार-चार बसे बदलते हुओ बालासिनोर पहोंचे। हम यहां पहोंचे तो जनाब वकील साहेबने कहा चाचा बिरपुर शरीफ जानेके बाद यहां आना मुजे ठीक नहीं लगता कयुंकी बिरपुर शरीफ हम अगर जाअेंगे तो हमारा प्रोग्राम बदल शकता है लिहाजा हम यहां बालासिनोर के आस्ताना अे ख्वाजा सैयदना शाह हुजुर अब्दुलरजजाक जाफरी जैनबी के आस्तानेके फोटोग्राफी कर ले हम यहां से अेस.टी. स्टेशन के बहार आये। हमने एक रिक्षावाले से कहा हमें तलाव दरवाजा जाना है। रिक्षावाला इस्लामी भाइ था हमने रिक्षामें बेठने के बाद उनसे कहा हम ये मजार के फोटोग्राफी करनेके लिये अहमदआबाद से आये है और हमें जल्द ही वापस वीरपुर शरीफ जाना है लिहाजा थोडी देर आप रुके तो बेहतर है उन्होने कहा ठीक हे हजरत में जरुर रुकुंगा। हम ये जगा पर जो तालाब के किनारे ये हुजुर सैयदना शाह अब्दुलरझझाक जाफरी जैनबी फाजीले मदीना रहमतुल्लाह अलयहे (दामाद) व शहेजादीअे ख्वाजा दरियाइ दुल्हा हजरत सैयदा तैयबाह ताहेरा बीबी साहेबे जमाल अलयहीर्रहमा का मजार है। जनाब प्यारेसाहब ने अच्छे अंदाज में सारी तस्वीरे निकाल ली इसी तालाब के बडे किनारे पर खजुरी मस्जीद हे इसी मस्जीदमें मेरे सगे दादा हजरत पीर सैयद मौलाना शहाबुद्दीन दरियाइ सोहरवर्दी रहमतो रिदवान ने 35 साल बगेर हदिये के इमामत का फरिजा अन्जाम दिया था और बडे दिलसे दीने इस्लाम की खिदमत की थी सुब्हानल्लाह। आप काश्तकार (खेडुत) व आप बिरपुर बालासिनोर की नवाबीयत जो खत लाने ले जानेका फरीजा अन्जाम देते थे। हम यहां से जनाब आदमभाइ जनोडीया की दुकान पर आये उन्होने च्हा-पानी पीलाया था। कयुंकी हमे बिरपुर शरीफ जल्दी पहोंचना था। इसी मस्जीदमें हमारे बडे भाइ हजरत पीर सैयद कमरुद्दीन बावा साहेबने भी कुछ साल इमामतका फेरीजा अंजाम दिया था।

ता.22-11-2008 जिल्कद चांद 23 के दिन सुब्ह 6-00 बजे अहमदआबाद से में और जनाब प्यारेसाहब मु.मोडासा के लिये रवाना हुअे। सुब्हामें ठंडी बहुत जयादा थी मगर हजरत जद्दे आला मेरे पीदरी ख्वाजा महमूद दरियाइ की इबादतगाहे (चिल्ले) की जियारत और फोटोग्राफी हमारे लीये बडा काम है। हम मोडासा सुब्ह 6-00 बजे पहोंच गये हमारे पास ट्राावेल्स का सामान के बेग जयादा थे और हमें फ्रेश भी होना था (गुस्ल) मेरे अजीज दोस्त जनाब अब्दुल रहीम अब्दुल कादर घांची के मकान पर पहोंच गये। उन्होने हमारी बहोत इजजत की और हमने हमारा आनेका जो प्रोग्राम था वो बताया तो बहुत

खुश हो गये । फ्रेश होनेके बाद च्हा-नास्ता कीया फिर हम फोटोग्राफी विडीयो के लीये मोडासा, जी.साबरकांठा के सरकार ख्वाजा दरियाइ दुल्हा के चिल्ले मुबारक के पास पहोंच गये जो महोल्ले कस्बा में कुरेशवाड में है ये चिल्ला शरीफ काफी पुराना है । जगा बहुत अच्छी है मगर यहां हलाल जानवरो की मार्केट होने की वजह बडी गंदकी थी यहां से हम बजार कस्बेमें आये जनाब प्यारे साहबने फोटोग्राफी कर ली थी । कस्बा बाजार में बडी शानदार मस्जीद है जो करीब 60-70 लाख खर्च करके बनाइ गइ है । इसी मस्जीदमें इमामत का फरीजा हमारे मामु जनाब पीर सैयद फजलीमीयां पीरुमीयां दरियाइ कादरी तकरीबन 40 सालसे इस मस्जीदमें बडे इमाम की हेशीयत से हैं खिदमते इस्लाम अदा करते है । हम यहां से इनके घर गये यहां हमने उनके बहोत इसरार पर च्हा-नास्ता किया बादमें हम दरियाइ फार्म गये । इनके नामसे आज भी खेत है यहां पर मकान बन गये है । जीसे दरियाइ सोसायटी के नामसे आबाद कीया है इसमें तमाम मुस्लीम लोग के मकान है यहां पर वाव, कुआ के किनारे पर दरियाइ साहब का चिल्ला हे हमें यहां एक मलीक साब मीले जो इस चिल्ले की देखभाल रखते है । यहां की सारी फोटोग्राफी कर ली फिर हम यहां से जनाब प्यारे साहब के दोस्त के वहां इनके घर गये उन्होने हमारा खाना पीना तैयार करवा दिया था । मगर हमें खान से जयादा अगले पडाव की तरफ यानी मुकाम बायड जी.साबरकांठा की जानीब जाना था हमारे पुरे प्रोग्राम में जनाब अब्दुल करीम खालकने साथ दिया । हम मोडासा से बायड बस स्टेशन से गांव बायड में आये यहां हुजुर सैयदना ख्वाजा दरियाइ के मुरीद व खलीफा हजरत महमूद व हजरत सीदी रहमतो रीदवान के मजारात हे आस्ताने की जामा मस्जीद हे यहां पहोंचे तो मस्जीद व दरगाह के दरवाजे को ताला लगा हुआ था । मस्जीदके खादीम साहेब को बुलाया जो खलिफा थे (हजाम) कच्छ के रहनेवाले थे वो आये इन्होने हमारा नाम ढाम का पता चला तो वो भागकर आये मस्जीद और दरगाह के ताले खोल दिये । हमने यहां के दोनो मजारात की जियारत की और फातीहा शरीफ पळहा इसाले दुआ के बाद मस्जीद दरगाह शरीफ और मद्रसे की तस्वीरे निकाली यहां जनाबभाइ वकील साहेबने कहा हमारा काम खत्म हो गया । हम बायड से बिरपुर शरीफ से शाम 5-30 बजे आ गये हमने यहा हमारे मकान पर आराम किया । फीर हम हमारे फोटोग्राफर जनाब प्यारेसाहेबने कहा चलो आस्ताना ए दरियाइ की जानीब की तरफ चले इन्होने कहा तुम बहोत धुन लेकर निकलते हो । हमने कहा आज का काम आज ही हो जाओ वो बेहतर है कयुंकी हमारी ये महेनत सो-दोसो साल बाद रंग लायेगी और इसका फल मिलेगा । हम जब दरगाह शरीफ पहोंचे फोटोग्राफी

कर रहे थे कुछ लोगोने ताना सुनाया के ये फोटोग्राफी करके कीतने पैसे इकठठा करोगे। हमने कहा आपकी नजर हमारे काममें और जयादा मुफीद हे कयुं की मेरा जहेन इन की दुनिया तलब करने की सोच से दुर हे और ये इन की छोटी सोच है। आंख व जहेन की पैदाइश नजर बोल रही थी मगर मेरा दिल, मेरी आंख, मेरा जहेन मेरे हाथ और पेर और मेरे सब रोज हुजुर जददे आला की खिदमते खल्क को नये अंदाज नये हुलिये में पकके इरादे के साथ रुहानी तौर पर ले जानेका मन्सुबा बना चुका हुं जल्द ही पुरा करुंगा इन्शाअल्लाह।

ता.11-11-2009 बरोज बुध जिल्कद चांद 23 हि.स.1430 सुब्ह नमाज बाद मेरे दोस्त जनाब सैयद इमदाद हुसैन ठासरावाले हाल मख्दुम नगर वटवा शरीफ के बेटे जनाब राजु सैयद सहाब इनके चचा जनाब सैयद नजीरअली ठासरावाले (अेस.अे.आइ) की मारुती कार बडी दीली मोहब्बत के साथ मेरे गरीबखाना अताअे शाहजी 2-अम्मार टेनामेन्ट विशाल सर्कल जुहापुरा, अहमदाबाद आ गये।

हम बहोत खुश थे कयुंके तकरीबन 1 साल बाद फीर ये प्रोग्राम आगे बळहा। जनाब पीर सैयद हमीदुद्दीन उर्फे प्यारे सहाब इनका डीजीटल केमेरा और दो दिनके सफर का सामान पुरी तरहा तैयार होकर आ गये। हम रवाना हुअे शहेर नडीआद के करीब मु.पलाना गांव में मालुमात करते हुअे गांव के अंदर ठीक वहीं पहुंचे जहां हजरत ख्वाजा दरियाइ सरकार के चिल्ले मुबारक के करीब ही पहुंच गये थे। हमे यहां रशीद भाइ नामके शख्स मीले इन्होने चिल्ले मुबारककी जगाह बता दी। लोगो को मालुम हुवा के बीरपुर शरीफ से ये लोग आये हुवे हे यहां के कुछ लोग मीलने आ गये। जनाब वकील सहाबने सारी तस्वीरे ले ली और कुछ लोग आये जनाब अहेमदखान, नासीरखान, रहीमखान वगेरह नामी लोग थे इन्होने चा-नास्ते के लीये बहोत इशरार कीया मगर हमारी मरजी न थी कयुं के हमे आगे जाना था। लेकीन यहां की मस्जीद के इमाम साहब आ गये जो खंभात के रहेनेवाले थे बात चलती रही उन्होने कहा चिल्ले मुबारक की जगह के लीये कोर्ट से केस लडकर जमीन वापस ली है और नये सीरेसे चिल्ले को बना रहे है। यहां से हम रोड को चीरते हुअे बडी रफतार से बडोदा शहेर की तरफ मुकाम छाणी वांव में पहुंचे यहां का इलाका पीर फळीया (पीर का मोहल्ला) में आगये मेरी यहां 15 साल पहेले की मुलाकात ताजी हो गइ कयुंकी चिल्ला मुबारक में की तामीर के लीये 15 साल पहेले संगे बुनीयाद के लीये गया था तब में बडौदा तांदलजा तालवळी में ही रहेता था। यहां मेने दरियाइ ट्रावेल्स के नामसे 3-मेरीलेन्ड कोम्पलेक्ष जुना पादरा रोड पर ओफीस थी तब यहां आया था। यहां लोगो ने चिल्ला मुबारक में कब्र बनाइ थी मेने कहा

ये शरीयतन गलत है उसे तोड डालो मगर कुछ लोग तैयार न हुवे मेनें बहुत दीनी इस्लामी मसाइल से इन्हे समजायां कुछ लोगोने गोर कीया के हुजुर आपकी बात पर गौर करेंगे । अलहम्दुलिल्लाह 15 साल बाद वापस यहां आया कब्र वगेरह कुछ नहीं बल्के नमाज पढने के लीये जानमाज-मुसल्लाह वगेरह बीछाया हुवा था मेरी बात समजमें आ गइ कब्र तोड डाली है । में बहोत खुश हुवा के दीने-इस्लाम की सच्ची-पककी बात माननेवालो को मेरा सलाम । यहां चिल्ले के सामने जनाब घांची आबेदाबेन जमालभाइ खडी हुइ थी जो हमें देख रही थी उन्हे कीसीने कहा हम सरकार दरियाइ दुल्हा की औलाद से है हमारी निस्बतकी वजहसे चा-पानी ले के आ गइ हमने कुबुल कीया यहां के कुछ लोग मीलने आ गये । हमने इस चिल्ले मुबारकमें बेठकर दरुदो फातेहा पढ़ा खुब दुआ की बस्तीके लीये लोगोने हमे कहा की खाना खाके जाओ मगर हमें आगे जना था इस सर्दीके मोसममें तकरीबन आधे इन्डीयामें हवा बारीश थी अंधेरा हो जानेकी फीक्र थी । वापस वोही आबेदाबेन पानी लेके आइ हमने पानी पीआ यहां बीस-बाइस मुसलमानो के मकान हैं इस चिल्ले मुबारक पर यहां हिन्दु-मुसलमान मन्नते करते है । यहां से हम सावली (शाहवली) मकाम आसोज गांव में दाखील हुवे यहां हमारे पीर और भाइ जनाब मुफती कमरुद्दीन बावा साहबने मस्जीद तामीर करवाइ है मस्जीद की तस्वीरे ली । आज सुब्हसे ही हम हजरत कमरुद्दीनबावा से एक -दुसरे के मोबाइलसे बात करते हुवे यहां के पुरे मकामो की चर्चा करते और मालुमात करते आगे बढते थे । यहां से हम मंजुसर गांव में गये यहां भी हजरत कमरुदीनबावा ने मस्जीद बनवाने में काफी मदद करी है । यहां के फोटो लीये हम बहार आये हमने जनाब सैयद शब्बीरअली पालेजवाले बापुको मालुमात के लीये बुलवाया और वो फौरन आ गये । हम मस्जीद के बहार खडे थे सामने दुकान के.जी.अेन. वालोने हमे बुलाये उन्होने चा-नास्ता अपनी महोब्बतसे कराया । सलाम-दुआ करके यहां से आगे टुंडाव गांव में जानेके लीये रवाना हुअे । टुंडाव गांव चिल्ला मुबारक की जगह पुछते पुछते यहां आ गये जनाब वकील साहबने अपना फोटो लेनेका काम पुरा कर लीया । यहां गांव में दगराह शरीफ और टावर हमे बहोत पसंद आया कयुंके एक छोटेसे कस्बेमें दरगाह शरीफ और टावर अपनी इस्लामी छाप को बुलंद करता है । जीन लोगोने ये काम कीया हे वो बहोत काबीले तारीफ है चिल्ला मुबारक की जगह खुल्ली हे वो बजारमें है यहां टुंडाव में हमारे सगे खाला ससुर जनाब हाजी सैयद सैयदअली साहबके घर का पता पुछ रहे थे के एक हिन्दु नोजवान ने कहा मेरे साथ चलो में आपको घर का पता बताता हुं । हम इनके पीछे अपनी गाडी लेकर उन्के घर पहुंच गये । काफी बारीस होनेसे हम भीग गये

थे यहां हमने चा-नास्ता कीया फीर दिन के 12-00 बजे मु.लसुन्द्रा ता.सावली, जी.बडोदा गांवमें आ गये। ये मुख्य सडक से 2 कीमी अंदर है यहां भी हजरत पीर कमरुद्दीनबावाने मस्जीदे दरियाइ तामीर करवाइ है। हजरत के मुरीद अब्दुलभाइ वहोरा को हमने बुलवाये मगर वो घर पे नहीं थे अपने खेतमें थे यहां की हमने तस्वीरे ले ली यहां से हम मु.सावली के लीये हम रवाना हुओ तालाब के किनारे हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ साहब का चिल्ला मुबारक है। यहां की हमने तस्वीरे ली हमें एक साइकल लेके जानेवाले भाइ मीले जीनका नाम खलीफा अब्दुलरझझाकभाइ था वो हमे बीरपुर शरीफ के जानकर बहोत अेहतराम से मीले बाअदब उन्होने हमसे कहा हर साल उर्स दरियाइ यहां चिल्ले मुबारक पर मनाते है और 11 देग दुध की नियाज बनवाते है। अब हम यहांसे मु.करचीया ता.सावली जी.बडोदा में आये यहां मस्जीदे करचीया में ही ख्वाजा दरियाइ साहब का चिल्ला मुबाक वुजु खाने के करीब में ही है।

ये मस्जीद के इफतेदाह हजरत शैखुल इस्लाम सैयद मोहंमद मदनीबावा अशरफी, चिश्ती, कादरी मद्दजील्लहु आलीके हाथो से हुइ है। मुजे इन्ही से ही अशरफी, चिश्ती, कादरी सिलसिलोसे खिलाफत हांसील है जो आप हजरतने अपने अहमदआबाद मदनी मस्कन मदनी चोक मीरजापुर में अपने दस्ते मुबारकसे खुद ही खिलाफतनामा तेहरीर कर दीया था। अलहम्दुलिल्लाह यहां की हमने तस्वीरे ली। अब हमारा अगला सफर मु.हालोल, जी.पंचमहाल के पास मधवास गांव में मेइन हाइवे रोड पे आदीत्य बिरला कंपनी तलाश करते यहां वाया जरोद रोड से आ गये ये रोड अब ४ लेन का हो गया हे जो बरोडा गोल्डन चार रास्ते से उदयपुर, राजस्थान वाया हालोल, गोधरा, लुणावाडा, लीमडीया (चार रस्ता) मोडासा शामळाजी जाता है। हम कंपनी के गेट के पास गये अंदर जानेके लीये दरवाजा के पास गये और सीकयुरीटी से कहा हम अंदर जा सकते है। मगर तस्वीरे नहीं ले सकते है, मेने कहा भाइ देखो हमारा ओर कोइ बुरा इरादा नहीं। हम हजरत दरीयाइ सरकारके चिल्ला मुबारक पे हमे जाना है जो कंपनी के अंदर ही है। हम दरियाइ सरकार की एक हिन्दी किताब छाप रहे हे इसी लीये तस्वीर लेने आये है। उसने कहा ठीक हे आप हमारी ओफीसमें बेठे सहाब से अंदर कंपनीमें फोन कीया फीर उसने हमसे मुखातीब हो के कहा हमारे साहब १० मीनीट में आ जायेंगे। वे कहेंगे तो हम आपको तस्वीरे लेने देंगे कुछ वकत में वो शख्स आये उन्होने हमे सलाम कीया हमने जवाब दीया इनका नाम हाजी शब्बीरभाइ था हमारी सारी बाते जान ली और उन्होने कहा ठीक हे आप चलीये हमारा मकसद जाननेके बाद वो बहुत खुश हुवे।

हमे दरियाइ साहब की औलाद जानकर बहोत रीसपेकट कीया उन्होने कहा जीस तरह करना हो इस तरह करे वो बडे खुश हो गे मुजे काम है में फेकटरी में जरा हुं । बडा आलीशान बाग बनाया गया है बाग के बीचमें ही हजरत दरियाइ साहब का चिल्ला मुबारक है जो बडा खुबसुरत बनाया गया है ।

नमाज पढ़नेका दील हो गया मगर साथमेंआये हुवे सीकयोरीटी वालने कहा आप जल्दी करना जनाब वकील साहबने सारी तस्वीरे खींच ली यहां हुजुर का नाम भी लीख्खा हुवा है की हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ का चिल्ला इस चिल्लें एक बुजुर्ग की मजार है । मगर कीसीने उसका नाम ना बताया खैर अल्लाह बहेतर जानता है हमारा काम पुरा हो गया दुर फेकटरी पास दो साहब लोग हमारी मुवमेन्ट को देख रहे थे वो कुछ बोले नहीं हाथसे इशारा कीया हम चचा-भतीजा इनके पास गये । मेने पुछा आप कोन है । उन्होने कहा में फेकटरी का मेनेजर हुं मेने गुजराती में बात की मगर वो गुजराती जानते नहीं थे फीर हमने हीन्दी में बात करना शुरु कीया । उसने कहा में साउथ इन्डीयन हुं उसने कहा आप किस लीये आये थे । हमने उपरकी सारी बात बतादी उसने कहा वेरी गुड-वेरी गुड हंस कर चला गया । लेकीन यहांकी एक बडी करामत लीखुं तो बहेतर है । ये फेकटरी ने जमीन ली तब इस चिल्ला मुबारक को तोडकर रास्ता बना दीया था कंपनी शुरु होने के वकत पुरी मशीनरी बीगड गइ वापस दोबारा सारी मरंमत की फीर भी सारी मशीनरी बिगड गइ मेनेजर ने कहा ये कया मंजर है समज में नहीं आता । उसे पता चला यहांकीसी बुजुर्ग की जगाह हे फीर इन्होने वो जगाह को अेहतेराम के साथ तामीर करवा दीया और गेट व रास्ता चेन्ज करवा दीया था । फीर इसके बाद फेकटरी सही तरह से चालु हो गइ जो अब तक चल रही है । ये चिल्ले मुबारक पर फेकटरी के जानीब से रोज सुब्ह-शाम चिराग दान हो रहा है । कंपनी में मुसलमान सभी कारीगर यहां जोहर-असरकी नमाज यहां अदा कर रहे है ।

ये एक अल्लाह के नेक बंदे हजरत ख्वाजा दरियाइ साहब की जीन्दा करामत है अलहम्दुलिल्लाह ।

हम बहार आये तमाम लोगोने हमारा रीस्पेकट कीया और हमने सबको थेंन्कयु कहा हमने मुन्नाभाइ सैयद को कहा चलो करीब 3 बज गये है बहोत भुख लगी है । इसी रास्तेमें हाइवे इस्लामी होटेल में खाया जाओ भाग्योदय होटल नामकी थी खाना बडा लजीज था और भुख भी बडी जोरोसे लगी थी ।

हम वहां से मु.डेरोल, पान्डुमेवास होकर अगर चिल्ले मुबारक डेसर गांव पहुंच रास्ते इतने सकडे और खट्टे-कट्टे वाले थे और घना जंगल भी था । गाडी रोड को लग जाती थी ड्रायवर सैयद साहबने कहा कुछ हो गया तो गाडी

यहीं रुक जायेगी। मेने कहा हम रुहानी ताकात से मजबुत हे इसी लीये हमारा दिल और दिमाग सुकुन इख्तेयार करे हुवे था। अल्लाह हमारी जरुर मदद करेगा हम आगे बढेंगे करीब 4-15 के आस-पास मु.डेसर, ता.सावली, जी.बडोदा में पहुंच गये।

एक दुकानवाले साहबसे कहा दरियाइ साहब का चिल्ला मुबारक कहां है उन्होने कहा आगे पोलीस स्टेशन हैं उसी के सामने है उन्के जवाब देते ही मेरी नजर उस दुकान के बोर्ड पे पडी दुकान का नाम दरियाइ स्टोर लीखा हुवा था जो डेसर के मेइन बजारमें है। छोटे-छोटे रास्ते पार करके चिल्ला मुबारक और मंदीर की दिवारे पास-पास ही है। अलहम्दुलिल्लाह चिल्ले की जगह पर ही मद्रस-अे गुलशने दरियाइ व मस्जीद भी बनी हुइ है। मेरा दील तो बागबां हो गया मेने आगे लिख्खा हे तकरीबन तीन चार चिल्ला की जगाहो पर आज मस्जीदे बनी हुइ है। ये अल्लाह रब्बुल आलमीन के नेक बंदे ख्वाजा महमूद महेबुबुल्लाह दरियाइ, सरकारका कित्ना बडी फैजान है। इसका आप अंदाजा लगाअे क्युं मद्रसा और मस्जीद एक साथ होना ये दिने इस्लाम की एक मजबुत अमल करनेकी दावत पेश करता है। यहां बडा शानदार मद्रसा बना हुवा हे जनाब वकील साहबने सारी तस्वीरे लेली दुसरी जानीब घर घोर बादल छाअे हुवे थे और तेज बारीस शुरु हो चुकी थी। हम पुरी तरह भीग चुके थे ये मंजर यानी बारीश होना बगेर सीजन की बारीश थी। कोइ साहब पानी लेके आ गये। हमें जरुरत न थी मगर फीर भी हमने पानी पी लीया क्युंके उसका दिल रखना था और नेकीओसे उसकी रुह को ताजगी बक्षनी थी। अब हम यहांसे टींबा होते हुवे सेवालीया आ गये खेडा जील्ले के इन जगह जाना था जहां ख्वाजा सरकारने अपनी हयाती जींदगी के कइ-कइ सालो और दिन गुजारे हे इनमे से मशहुर गांव मु.जरगाल, ता.ठासरा है।

रास्तेमें पहेले मु.मेनपुरा पहुंचे यहां आपका चिल्ला मुबारक बालासिनोर सेवालीया मेइन हाइवे रोड से दाहे हाथ पे खेत में है। बारीश होनेकी वजहसे दीन छोटा और शर्दी की मोसम होने की वजहसे कोइ भी शख्स दिखाइ नहीं दे रहा था मगर दुर कुछ लोग स्टेशन के अंदर खडे हुवे थे में उनके पास पहुंचा उन्होने यहां आइये हजरत फीर दुआ सलाम की। मेनें चिल्ला मुबारक का पुछा उन्होने यहां सामने खेतो में है मगर रास्ता अलग से हे हमने काटो को हटाकर रास्ता बना लीया। खेतो के साइमें कांटोके बहोत से दरख्त थे मगर हम वो जगह पर पहोंच गये। खेतो की जमीन काली होने की वजहसे बारीश की वजह से चप्पलो में माटी काफी चीपक गइ थी और हाथोमें कांटे भी चुबे हुवे थे। संभल-संभल कर खेतोकी पालो पर होकर चिल्ले वाली जगह पर पहुंच

गये यहां की तस्वीरे ले ली। बारीस तेज चालु हो चुकी थी हमे फीक्र लग गइ के बारीश केमेरो को ना लग जाये। हम यहां से जल्द ही हमारा काम खतम करके गाडी पे आ गये। यहां से हम मु.जरगाल पहुंच गये। बारीश होनेकी वजहसे हम ठंडी की वजह से हम कांप रहे थे। मगर हमारा इरादा तो हमारी प्रोग्राम की मंजीलोकी और ही था। हम यहां से मु.हडमतीया वाया बांगरोली होते हुवे गांव जरगाल आ गये यहां हुजुर सरकार दरियाइ साहब के हयाती जींदगी के 5 (साल)-5 दिन गुजरे है। यहां हमने मगरीब की नमाज पढही चिल्ला मुबारक काफी पुराना है। यहां हजरत की कुछ जमीन भी है। जो यहां के दिवान लोग खीदमत की अवेज में उस पर फसल बोते है और चिल्ला मुबारक की खिदमत करते है। दिवान चचाने हाथ उंचा करके हमे बुलाया हम तीनो उनके पास गये एक दुसरे से गुफतगु हुइ सारी बाते सुनकर और इस किताब की सारी तवारीख बतानेके बाद जानकर दिवान साहब बहुत खुश हो गये उन्होने हमे कहा हजरत ये सारा आपके खानदानवालो का ही फैजान हम तक पहोंचता है। और कयामत के दिन भी हम आपके करीब ही होंगे और हम आप ही के खादीम है। अब हम यहां से लास्टो दो मकाम इस रुट के चिल्ले मुबारकके गांव मु.अनारा, ता.कठलाल, जी.खेडा और मु.खोखरवाडा जाना है मगर अंधेरा काफी हो चुका था हमारे गाडी के ड्रायवर सैयद साहेबने कहा बाबा फीक्र न करे हम कुछ दिमाग लगा के काम करेंगे चलो चले जाओ एक तो अपना काम होइ जायेगा। रास्ता काटते हुओ हम मु.अनारागांव आ पहुंचे अंधेरा ओर गलतफेमी काफी इम्तेहान लीया एक हिन्दुभाइ हमे रास्ता तो बता दीया जो काफी दुस्वार रास्ता था। हम चिल्ला मुबारक पर आ गये यहां कब्रस्तानमें चिल्ला मुबारक है अंधेरा होनेकी वजहसे में सोचमें पडा तस्वीरे कैसे लेंगे मगर राजु सैयदने अपनी गाडी की लाइटे चालु करके रोशनी करके तस्वीरे ले ली। अब हमे यहांसे खोखरवाडा जाना था मगर रात के अंधेरे ने हमे मजबुर कर दीया हम यहांसे कठलाल शहेर में आ गये यहां हमने होटल पे चा-नास्ता कीया इसी होटेलमें बालासिनोर के जनाब पीरजादा मनसुरमीयां ओम. सहाब (नायब मामलतदार) मील गये उन्होने कहा हजरत कहा गये थे मेने कहा हजरत के चिल्लेके फोटो बाकी रहे है। जो खोखरवाडा और कठलाल की नदी किनारे चिल्ला मुबारक हे उनकी तस्वीरे रेह गइ है। उन्होने कहा हजरत ये खीदमत आप मेरे को सोप दे उन्होने एक हफतेमें चिल्ला मुबारक की तस्वीरे पहुंचा दी। हम कठलाल शहेर से अहमदाबाद बडी रफतारसे रोड सुने होनेकी वजहसे सीर्फ 45 मिनिटमें राजु सैयद साहबने अपने घर अहमदाबाद अताओ शाहजी, २ अम्मार टेनामेन्ट, शाहवडी, जुहापुरा, विशाला सर्कल पहुंचा दीया। अलहम्दो लिल्लाह इस तरह हमारा सफर पुरा हुवा।

ता.12-4-2008 को में गोंडल गया यहांसे हम 13-4-2008 को जामनगर के लिये रवाना हुओ। यहां नवानगर बेडी दरवाजा, रामवाडीके पास मुसाफीर बावा उर्फे शाह मनसुर बीन प्यारुल्लाह सहाब का मजार है। उसके वकत यहां अेम.अे.सैयद डे.कलेकटर थे। हमारी दुपहर की खानेकी दावत जनाब सैयद इकबालबापु के यहां थी, मेरे साथ में जनाब हाजी सुलेमानभाइ इसाणी सहाब व जनाब सैयद हाजी मोहंमदमीयां बापु नागाणी थे। खाने के बाद दरगाह शाह मनसुर रहमतुल्लाह अलयहेकी जियारत को गये। दरगाह के फोटो जनाब इकबाल बापु व आरीफबापुने मुजे पोस्टसे भीजवा दीये थे। रात मु.सिकका दरगाह नागाणी बापु पर रफीक बापु नागाणी की दावत पर आराम करने के लीये गये थे। दुसरे दीन गोंडल वापस गये।

ता.30-7-2010 को जनाब प्यारे सहाबने मु.पट्टन के हजरत शाह अली सरमस्त कलंदर रहमतुल्लाह अलयहे के फोटो अपने दोस्तो के साथ के प्रोग्राम में जाकर नीकाल लाये थे जो मुजे रवाना कीये।

ता.8-10-2010 मु.सेगवा ता.भरुच जो खुद (संपादक) गये फोटो वगेरे जनाब पीर सैयद मो.युसुफमीयां सहाबने अपने कीसी मुरीदके जरीये रवाना कराये थे। मु.शेरपुरा, जी.भरुच के चिल्लाके फोटो ना मील शके कयुंके, वहां कोइ निशान बाकी रहा नहीं यहां पुरा माहोल देवबंदीयत का है। एक जमाना था पुरा गांव सुन्नी था।

ता.11-12-2012 मु.प्रांतिज जी.साबरकांठा हजरत सैयद शाह सादुल्लाह बीन प्यारुल्लाह (दरियाइ साहबके पडपोते) के दरगाह शरीफके फोटो जनाब अर्शदभाइ ने हमे पहोंचा दीये थे। ये मजार प्रांतिज मेइन हाइवे के पास तालाब के किनारे हैं। येह बडे कामील वलीअे मादरजात थे यहां का भी लोग जीयारत को जाते है।

ता.7-11-2013 को मु.लाल का मांडवा, ता.कपडवंज अहमदाबादसे गये वापसी में मु.बहीयल, ता.दहेगाम गये। ख्वाजा दरियाइ सरकारका गांव के बीच में ही चिल्ला है यहा काफी पुराना था। यहां दरियाइ साहबने बडी करामते दिखाइ थी पुराने चिल्ले उपर नइ गुंबद वाली इमारत व बुलंद गेट का काम चल रहा था। यहां की मेरे बेटे जनाब मोहंमद षाकीब बाबा ने अपने केमेरे से तस्वीरे निकाल ली। चिल्ला की देखभाल करनेवाले जनाब कालुभाइ कुरैशी है हमने मीलना चाहा मगर वो कहीं बाहरगाम गये हुवे थे।

इन जगाहो पर भी चिल्ले आये हुवे है।

(1) मु.रामोल, जनता नगर अहमदआबाद (2) कुजाड, ता.दसक्रोइ (3) कनीपुर, ता.दहेगाम, जी.गांधीनगर (4) जींजर - छपूर ता.महेमदाबाद

(5) कडी (6) विरमगाम (7) कलोल (8) खेडा (9) अकलाचा (10) देवका दमण (11) चित्तोड, डुंगरपुर, मान्डु, राजस्थान (12) शाह हम्माद की मस्जीद दाणीपीठ कालुपुर अहमदाबाद (13) रायपुर दरवाजा के सामने, भोला शहीद मस्जीदके पास शाह अब्दुल रहीम रफाइ रहमतुल्लाह अलयहे के दरगाह के सामने, अहमदआबाद.

मु.मोरभगवा, ता.ओलपाड, जी.सुरत दरियाइ साहबका चिल्ला मु.भालोद, ता.झगडीया,जी.वडोदरा में दरियाइ साहबका चिल्ला है। मु.वेरावल (सौराष्ट्र) दरिया किनारे पर दरियाइ साहबका चिल्ला है।

ता.5-2-2014 को अहमदआबादमें मेरी अझवाझ (पत्नि) व भाइ पीर युसुफमीयां रातकी ट्रेनसे नबीपुर जी.भरुण गये सुब्ह हम तीनों और जनाब हझरत मौलाना काझी महंमदमीयां (लंडन) इंग्लेन्डवाले इनकी फेमीली के साथ मकतमपुर हझरत पीर सैयद शरीफुद्दीन मश्हदी सोहरवर्दी के आस्ताने पर गये । फातेहा उन्होने पढ़ा और दुआ की । भाइ युसुफबाबाने सारे मकामात की तस्वीरे लीं । यहां हमे अेक सैयद सहाब मीले उन्होनें हमारी इन्क्वायरी कर ली थी फौरन चाय वगेरह मंगा ली । फीर बोले की मेरी बेटी की शादी बिरपुरवालों के यहां बडौदा की है । जो मेरे खानदान के भाइ है । अैसा मैंने (संपादक) ने कहा । वो ये किताब के बारेमें जानकर बहोत खुश हुवे दरगाह मकतमपुरमें उन्होने अपने खुदकी रकम देकर डेवलपमेन्ट किया है अैसा वो खुद बताते थे । यहांसे हम अेक नबीपुरवाले काझी मामुं के रिश्तेदार अहमदभाइ गोहील सहाब हमे अपने घर ले गये वो टी.डी.ओ. ओफिसर रिटायर्ड थे।

यहां से हम भरुच शहेर बीच होकर मु.भाडभूत, जी.भरुच दहेज रोड गये मालुम करते करते दरियाके शाहिल पर पहोंच गये मगर जैसा तस्व्वुर था वैसा ना पाकर दिल बडा रंजीदा हुआ कयुं के यहां अव्वल मुसलमान हझरत रबीयह बिन शबीयह और दिगर अेक हजार मुसलमान शहीदोके मझार है । तलाश करते करते अेक माछी महेश कानजी मील गया । बडा अकीदतमंद था हमसे बोला की, बाबा की दरगाह बीच नदी-दरियामें 20 फूट नीचे है । देखो दूर जहां सफेद काला पानीका पट्टा दिखता है में तो अश्कबार-बार हो गया । अल्लाह ये तेरे निजाम की बात है वरना और कया बात है फातेहा ख्वानी के बाद तश्वीरे निकाल ली फीर वापस नबीपुर से भाई पीरजादा अेझाजुद्दीन के घर पर मु.कहान, जी.भरुच रहकर रातको वापस अहमदआबाद आ गये ।

ता.17-3-2014 को कपासण वहां से चित्तोड गये यहां किले वगेरे की तस्वीरे लेकर अजमेर शरीफ झियारत व जुम्आ नमाझ अदा करके में अहमदाबाद आया और भाइ पीर युसुफमीयां व हाजी अहमदशेख बीरपुर तशरीफ ले गये।

सुल्तानुल आशेकीन, ताजुल मोहककेकीन, खतमुल मुताख्खेरीन, ताजुल औलिया, सिराजुल अस्फिया, हझरत सैयद शाह अली सरमस्त रहमतुल्लाह अलयहे की करामतों का बयान

पैदाइश : सन हिजरी 186, इ.स.765, वफात : 15 रजजब हि.536, इ.स.929 उम्र शरीफ : 350 साल,
मझार शरीफ : मु.हारीज रोड, पाटण (उत्तर गुजरात)

हझरत शाह अली सरमस्त (रहमतुल्लह अलयह) आप जवान होकर उम्रे शबाब पर पहुंचे उस वक्त आपने आपके वालिद बुझुर्गवार हझरत शाह हसन झाकिर (रहमतुल्लह अलयह)की खिदमतमें हाझिर होकर अर्ज की के मुझे सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम के हुक्म से मुल्के हिन्दुस्तान जाना है तो आप भी मुजे इजाझत दें तब आपने उनको बडी खुशी के साथ इजाझत दी और आपको शीराझ की तरफ रवाना करनेके लिये कुछ मंझिल तक गये और आपको रुख्सत दी.

उस वक्त हझरत शाह अली सरमस्त के हमराह आपके दो दोस्त और दो मुलाझीम और पांच दुरवेश मिलाकर नव (9) आदमी आपके साथमें रवाना हुअे .उस वक्त आपके वालीद बुझुर्गवारने हझरत शाहअली सरमस्त के सर पर दस्ते मुबारक फेर कर कामयाबी के लिअे दुआअें देकर आप मदीना मुनव्वरा वापस तशरीफ ले गये.

मदीना शरीफ से शेर पर सवार होकर शिराज की जानिब जाना

हझरत शाह अली सरमस्त (रहमतुल्लह अलयह) शीराझ के करीब पहोंचे उस वक्त रास्ते में शेर का काफला आपकी खिदमतमें हाझिर हुआ, उसमेंसे अेक शेरने अर्झ की, हझरत, हमारेमें से अेक शेर को आपकी सवारी के लिअे पसंद कर लो और सवार हो जाअें. तो अपने उन शेरमें से अेक शेरको पसंद कर के उसपे सवार हो गये. ईतने में अेक सांपोंका काफला सामने आकर अर्झ करने लगा के, हझरत

हमारेमें से अेक सांप को पसंद करके अपने हाथमें कोळेकी जगह ले लीजीअे ताके हमारा मरतबा भी बुलंद हो जाअे. आपने उन सांपों में से अेक सांपको अपने हाथमें कोळे की जगह पसंद कर के ले लिया. आप वहांसे रवाना हुअे उस वक्त आपके साथमें शेर और सांपों का लश्कर आपके साथमें चलने लगा और जब शिराझ के करीब पहोंचे उस वक्त वहां के बादशाह अबूबकर बिन सअद जंगी के मुखबीरोंने सुल्तान को खबर दी के कोई गनीम आ रहा है जीसके लश्करमें शेर और सांप भी है और रास्ते में गीर्दोगुबार उड रही है. तब सुल्तानने अपने पीर हझरत शाह रुकनुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) को बुलवाकर अर्झ की के कोई गमीन हमारे शहर पर चढाई के लिअे आ रहा है, उसके लश्करमें शेर और सांप होनेकी वजह से बस्तीयां उजळी जा रही हैं तब हझरत रुकनुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) औलियाने फरमाया के येह कोई गनीम नहीं बल्के खुदाके बरगुझिदा बुझुर्ग है और उनके साथ गुफतगु करने के लिये हझरत शेख सादी (रहमतुल्लाह अलयह) (मुस्लेहुद्दीन) को बुलाकर आने वाले बुझुर्ग की हुझूर में भेजा जावे ता के वोह फारसी झबान में उनसे गुफतगु करके आपके साथ में जो शेर और सांप हैं, उन्हे वापस लोटा दें अेसी गुझारीश करेंगें.

शेख सादी रहमतुल्लाहे अलयहे हजरत रुकनोद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे के इशारे पर हजरत अली सरमस्त से मुलाकात के लीये भेजना

जब शेख सादी (रहमतुल्लाह अलयह)ने शेरसे कहा अैसे रहेनुमा के उनके ईस्तीकबालके लिये जाना भला है तब हझरत रुकनोद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)ने फरमाया के आप उनसे गुफतगु करीयो और में वहां खामोश बेठा रहुंगा और कुछ दखल न करुंगा. अलगरझ मखदुम रुकनुद्दीन और सुल्तान आपके साथमें चले. उस वक्त हझरत शाह अली सर मस्त रहमतुल्लाह अलयहने शेख सादी (रहमतुल्लाह अलयह)ने गझल फरमाई उसमें बयान किया के आपने क्या किया के तमाम शेर और सांप आपके फरमा बरदार बन गये. तब हझरतने तबस्सुम करके फरमाया के शेर और सांप क्या बल्के तमाम हाथीसे लेकर चूंटी तक खालिक का हुकम हो तो फर्मा बरदार हो जाएं फिर शेख शअदी (रहमतुल्लाह अलयह)ने अर्झ की के आपका

नामो निशान बताओ उस वक्त आपने फरमाया मेरा नाम अली सरमस्त है और मैं नस्ले अहले बैतसे हुं. उस वक्त सुल्तान अबु अब्बासने अर्झ की के हझरत सवारी के लिये शेर और कोळे की लिये अेक सांप आपके साथ रख कर बाकी सबको रझा दो तो खल्के खुदा चेनसे हो जावे. तब आपने अेक शेर सवारी के लिअे रख्खा और उसके कान में कहा के ईन तमाम शेर से कह दे के वोह वापस अपने अपने मुकाम पर लोट जायें और आपके हाथ में जो सांप था उसके कानमें कहा के तु ईन तमाम सांपोंसे केह दे के वो सांप अपने अपने मुकाम पर वापस हो जाएं तब शेर और सांप वापस हो गये और आप शिराझ शहेरमें तशरीफ ले गये.

नोट : हजरत शेख सादी शिराजी रहमतुल्लाह अलयहे - आप सिराज में अता बुक जंगी के अहदे हुकुमतमें हि.स.571 इ.स.1175 या 1176 में पैदा हुअे बादमें अबु बक्र इब्ने साद जंगीकी हुकुमतमें जिल्हज चांद 17 इ.स. 11 डीसेम्बर 1291 में 120 या 125 सालकी उम्र पाकर विशाल सिराज में फरमा गये। हिन्दुस्तान की सियासतमें भी हिस्सा लीया। दुनियाके बहुत से ममालीक दौरे भी कीये दिल्ही में ख्वाजा गरीब नवाज से भी मिले थे। हजरत शेख शहाबुद्दीन उमर सोहरवर्दी के साथ एक कश्ती में दरियाइ का सफर भी कीया है। 14 हज पैदल कीये थे बगदादमें तालिम पाइ शेख अबुल फरह इब्ने जांजी आप के मख्सुस उस्ताद थे। तीस साल मुसलसल दुन्या का दौरा करने के बाद सिराज में आकर रहें। आखरी जमानेमें गोसा नशीं होकर यादे इलाहीमें मशगुल हो गये आप फारसी के मश्हुर साइर व अदीब है। बोस्ता 655 हि.स. में और गुलिस्ता 656 हि.स. में तस्तीफ की थी। (आपकी ये दोनो किताबे अंग्रेजी, फ्रेन्च, डच, अरबी, उर्दु, गुजराती जुबानोमें कइ बार शायेअ हो चुकी है)

शीराज में जादुगर का मुकाबला

शीराज शहेरमें अेक जादुगर रहेता था वो अपने जादु के जोर से शहेर के बडे बडे वेपारीओं को अपने दाबमें रखता था मगर जब हझरत का कयाम शिराझ में हुआ तो उसको हसद पैदा हुआ और सोचने लगा के जब आपके पास सवारी में शेर और सांपका कोळा है तो यहां के बडे बडे वेपारी उमराओं को आप अपने कबजे में ले लेंगे. ये सोचकर ईस की बुराई की वजह से हझरत पर जादु करना शुरु किया. जिस से आपकी नाक और कानसे लहु बेहता देखा वहां की मजलिसमें बैठे हुअे ईन्सान

गभरा गये तो आपने ईस्मे आझम पढना शुरु किया तो नाक और कानसे लहु बेहना बंधहो गया तब लोगोंने अर्झ की हझरत येह क्यां वाकेआ है और येह बुराई करनेवाले के लिअे आप ईजाझत देते हो तो हम उसको नसीहत करें तब आपने फरमाया नसीहत का करनेवाला खुदाअे पाक है. ईतना कहने के साथ जादुगर दिवाना हो गया और गाय और गधे की माफिक अवाझ करने लगा. गलीझ गीझा-एं खाने लगा.

बेवा सादात की मदद करना और मर्हुम सादात को कब्र से जीन्दा करना

शिराझ शहेरमें अेक बेवा सादात रहेते थे, और उनके खाविन्दने अपनी मौजुदगी में अेक वेपारी के यहां अेक हजार रुपिया अमानत रखखी थी और आप दुनियासे परदा करते वक्त अपनी बीबी से कहा था के फलां वेपारी के वहां मैंने अेक हजार नकद रुपिये रखखे हैं और आपको खास जरुरत पडे तब उन्से ये रुपिये लेना तो उसकी बीबी को अपनी लडकीयों की शादी के खर्च के लिअे रुपियों की जरुरत पडी तो उस वेपारी के पास जा कर अमानत की मांग की तो वोह बदखयानत बोला के तुम्हारे पास कोई सुबूत या गवाह हो तो लेके आना तब बीबीने कहा मेरे पास कोई गवाह नहीं तो वेपारीने रुपिये देने के लिअे साफ ईन्कार कर दिया. तो वोह बीबी शहरके काझी के पास अपनी अर्झ की. तब काझी साहबने गवाही तलब की तो बीबीने कहा मेरे पास कोई गवाह नहीं, तो काझीने जवाब दिया के बगेर गवाह के कोई काम चल सकता नहीं येह कह कर उस बेवाको वापस लौटादी. उस अरसे में हझरत शाह अली सरमस्त (रहमतुल्लाह अलयह) शिराझमें तशरीफ ले गये तो बीबीने उस वक्त अमानतकी हकीकत बयान की आपने बेवाकी हकीकत सुन के उस खयानतदार वेपारीको बुलाकर फरमाया के ईस बेवाका खाविंद कबरसे उठ कर जवाब दे तब तो तू रुपिये देगा ? तो वोह बोला ईस से झियादा और क्या चाहिअे तब आप और उस वक्त मजलिस में जो कोई शरीक थे वो और खयानतदार और वो बेवा सबके सब कब्रस्तान में मर्हुम सादात की कब्र पर गये और आप हझरतने फरमाया के खुदा के हुकमसे उठ और तुने ईस वेपारीको रुपिये दिये हों तो उससे मांग येह कहेते ही कबर फटी और बेवाका खाविंद कबरसे बाहर निकला और उस

वेपारी से अेक हजार रुपिये वापस देने पर आमादा हुआ और कबर से उठे हुअे मुर्दे से कहा के तुम ईस दुनिया में झिंदा रहेना है तो मुर्दे ने जवाब दिया के आज भी मुझे मौत की सख्ती याद आती है और दोबारा येह सख्ती बरदास्त करने की मुझमें ताब नहीं. तो मुझे कब्रमें ही रेहने दिजीये येह कह कर मुर्दा कब्रमें समा गया और उसकी कब्र मिल गई पहेले थी वैसी हो गई.

सिराज शहरसे हिन्दुस्तान की तरफ होना रास्तेमें राहीब (पादरी) कि दावत देना और खानेमें जहर देना

फिर आप शिराझ से हिन्दुस्तान आनेको तैयार हुअे और चले. रास्ते में अेक राहीब के मुकाम पर तशरीफ ले गये तो राहीब झाहेर मे बळी मुहब्बतसे पेश आया मगर आपकी दावत करके खानेमें झहर दिया येह झहरवाला खाना आपने मोहब्बतसे नौश किया मगर येह झहरकी असर उसी राहीब को होने लगी तो उसने आपसे गुनाहका ईकरार करके मुआफी तलब की तो आपने उसे माफ फरमाया उसी वक्त राहीबने कल्मा पढकर मुसलमान होकर बकीया झिंदगी अल्लाह के झिक्र में गुझारकर अच्छे दरज्जे हांसिल किये.

पट्टन शहर उत्तर गुजरातमें तशरीफ लाना

हझरत शाह अली सरमस्त (रहमतुल्लाह अलयह)ने आगे चलके शेहरे पट्टन में दरवाझे के करीब आ कर मुकाम किया उस वक्त पट्टन की गादी पे राजा करन राज करता था. शेहरमें आपकी तशरीफ आवरी की लोगों को खबर हुई के शेहर के दरवाजे अेक खुदापरस्त बुझुर्ग तशरीफ लाये हैं और आपकी सवारीमें शेर हैं और हाथमें कोळे की जगह सांप रखते हैं येह खबर पाकर लोग दंग होकर आपके दिदारसे मुशर्रफ होने के लिअे आरझुमंद हुअे के अैसा बुझुर्ग न कभी सुना न देखा मगर हमारी खुशनसीबी के हमारे शेहर के दरवाझे अयसा वलीये-कामील जलवा अफरोझ है तो हम उनकी दस्त बोसी-के लिअे जाकर हमारी मुश्किलें पेश करें फयझ उठाने का वक्त आ गया हय सोचकर पट्टन शेहरके लोग हुजुम दर हुजुम

आपके दिदार से सरफराझ होनेके लिअे हाझीर होते और अपने मनकी मुरादें पाने लगे. येह खबर मीनल देवीको मीली के पट्टन शहेरके दरवाझे अेक वलीअे कामिल जलवा अफरोझ हैं और उन्से कंई खल्के खुदा अपनी मुंहमांगी मुरादें पाते हैं तब मीनल देवीने उसके खावीन्द राजा करन को कहा के मेरे पेटमें हमल हय उसकी तकलीफ से लाचार हो गई हुं तो आप आने वाले बुझुर्ग के पास जाकर मेरी रुदाद सुनाओ ताके मुझे औलाद होवे और मुसीबत मेरी टल जाअे.

राजा कर्ण की बीबी मिनळदेवी को औलाद अता करवाना जो सिध्धराज के नामसे मशहूर हुवा

राजा करन के सात रानीयां थी उसमें मीनल लाडली रानी थी. बाकी और छे रानीयां नाराझ होनेकी वजह से उनके जादुगर के पास जादु करा के हमल बंद कर रखाया था तो राजा करन आपकी खिदमत में हाझिर होकर अपनी रानीकी दुःखी कहानी सुनाअे ताके मुझे औलाद होवे और मुसीबत मेरी टल जाये.

आपकी खिदमतमें हाजीर होकर अपनी रानी की दुःखी कहानी सुनाकर उसकी सीफारीश के लिअे आजीझी की और हझरत को राजाने कहा के अगर मेरी रानी से कोई औलाद होकर उस की तकलीफ दुर हो जाअे तो मैं आपकी नझरमें आप जो चाहेंगे वो नझराना अगर आधा राजपाट मांगो वो भी देने को तैयार हुं. तब हझरतने कहा के राजा बचन दें राजा बोला हुझूर मेरा बचन हय और आपने फरमाया राजा अपने शहर में जा कर मुनादि करा दे के रानी के पेट से लडका पैदा हुआ हय. उसी वक्त राजाने शहेरमें मुनादि करा दी और महेलात में खुशी के तराने होने लगे येह खबर जब जादुगर को हुई के हमने अेक पूतला बनाकर जादु करके जमीन में दफन किया हय और जब तक वो पूतला झमीन से बाहर न निकले तब तक रानी को बच्चा पैदा हो सकता नहीं. शायद हमारेमें से ये राझ को और कोई न जानता था मगर कीसीने ईस पूतले को हमसे खुफया होकर निकाला तो नहीं ईस बातकी तेहकीक के लिअे जादुगर जहां पूतला जमीन मे गाळा था वहां गये और उस जमीनको खोदना शुरु किया तो अंदर से पूतला नमुदार हुआ और उस पूतले को हवा लगते ही रानी को लडका पैदा हो गया. फिर तो जादुगरने बेहद कोशिशें की मगर नाकाम रहा.

पट्टन शहर में सबसे पहेले मस्जीद तामीर करवाना

राजा हझरत की खिदमतमें हाझिर होकर आजीझी करने लगा के आप मेरा आधा मुल्क और दौलत लेकर आप हमारे उपर महेरबान रहो. तब आपने फरमाया के हमको फक्त अेक झोपडें की झमीन चाहिये और आपने अेक घोडे की दोरी निकलवाकर कहा के ईस दोरी में जो जमीन समाअे ईतनी झमीन हमारी पसंद हमको दो. तब राजा बोला आप बतावो वहां से में देनेको तैयार हुं. तो आपने उन जादुगर के मोहल्लेकी तरफसे रस्सी लंबीकी उसमें जादुगरका मोहल्ला बीचमें समा गया तो आपने कहा हमको ईतनी ही जगह मंझुर हय तब राजाने जादुगरको हुकम दे दिया वोह जगह खाली करा के आपको दी तो आपने वहां अेक मस्जिद तैयार कराई उस मस्जिद का नाम "कात" रख्खा. क्युं के आपके साथमें आपके अेक साथी तुर्की थे और उन्होने तुर्की झबान में मस्जिद का नाम "कात" रखने की आरझु की क्युं के तुर्की में "कात" के माअने फतेह होते हैं.

राजा करन के वहां रानी के जो कुंवर पैदा हुवा उसका नाम सिद्धराज रख्खा याने सिद्ध के मायने गुजरात में कामका पुरा होना काम मैं फतेह पाना ईस गरझसे कुंवर का नाम सिद्धराज रख्खा और आप वहां मुकीम रहे.

मुकाम खंभात बंदर जाना अजान देना

शाह अमरुद्दीन नकल करते हैं के कन्झुल करामात में लिख्खा हय के आप खंभातमें तशरीफ ले गये वहां जाकर आपने अझान दी तब काफीरों ने आपकी खिलाफ अर्झ की और लडाई के लीअे राजा को वर गला कर सिपाहीयों को आप के साथ लडने के लिये रवाना किये जब आपके करीब सिपाई आये तो वोह जमीन में कमर तक धंस गये और फौज को चलने की कोई ताकत न रही.

और येह खबर हाकिम को मीली तो वो खुद आपके साथ लडाई के लिअे रवाना होकर आपके करीब आया और वोह भी जमीन में धंस गया. और जब आप नमाझ से फारीग हुअे तब हाकीम को ईशारा किया के देख तुं हम पर काबिझ नही हो सकेगा और अगर तेरा ख्याले बद तेरे दिलसे न नीकला तुं और तेरा लश्कर तमाम झमीन में धंसकर फना हो जायेगा. उस वक्त हाकीमने आजीझी की और कहा

के मेरा गुना बख्श दो मुझे माफ फरमा दिजीये. और मुझे झमीन से छुडा दो में आपके पास आकर कदमबोसी करलुं फीर वोह रीहाई पाकर आपके पास आकर हाजीर हुआ और माफी चाही तो आपने उसे माफ कर दिया. राजाने आपकी खिदमतमें कुछ तोहफे भेजे उसे आपने कुबूल न किया तो राजा गुस्से होकर शहेर के वेपारीयों को हुकम दिया के हझरत को कोई खाने पीनेकी चीजें देवे नहीं. तो येह बात आपके मुरीदोंने आपके सामने पेश की तब आपने फरमाया के आप लोगों के पास जो कुछ खानेका मौजूद हो वोह अनाज यहां लाकर मेरे सामने रख दो आप के हुकम के मुताबीक सबने जीसके पास जो भी अनाझ था आपने सामने लाकर रख दिया तो आपने उस पर तीनबार ''वत्तीनी'' की सुरत पढ कर दम कर दी फिरतो वोह अनाज अेक साल और सत्तराह रोझ आपके मुरीद खाते रहे और उसमें से खेरात करते रहे मगर उसमें से कुछ कमी न हुआ बल्के जीतना अनाज रख्खा था वोह ईतना ही पाया.

खंभात के अंधे भीखारी को आंखे अता करना और जीन्दगी भरका खाना खिलादेना व मुसलमान करना

खंभात शहेर के अंदर अेक भीखारी भीख मांगता था और खंभात शहेरमें ही घूमता था उस वक्त आपका गुजर बाझारमें हुआ वहां उस अंधे भिखारी को आपने फरमाया के क्या में तुजे आंख दिलाउ या खाना दुं ? वोह बोला हुझूर मुजे आंख दिलाओ और उम्र भर तक खाना खिलाओ तो आपने आपका ''लोआब'' उसकी आखोमें डाला फौरन उसकी आंखें रोशन हो गई और वोह ईमान लाकर मुसलमान हो गया.

खंभातमें बांज औरतो को औलाद अता करना

आपकी करामतों का ईझहार शहेरमें होने लगा. तो कई अकीमा आकेराह (बांझ) औरतें आई और अपनी मुरादें पाकर अपनी गौदें भरने लगीं येह खबर जब राजा के दरबार तक पहोंची जीस से वोह भी आपका आशीक हुआ और आपसे दिलचश्पी रखता था मगर शहर के ब्रहमन और उन्के चेलेको आपकी तरफसे बहोत

बदगुमानी पैदा हो गई और आपकी झिन्दगी पर हमला करके मौत के घाट उतार देना वैसा सोचकर रातके वक्त काफिर आप पर हमला आवर हुअे. मगर वोह नाकाम रहे और आपको और आपके साथीयों को कोई नुकसान हुवा नही. येह खबर राजाको मीली तो उसे बहोत रंज हुआ.

खंभात के ब्रह्मन को मुसलमान करना

अेक रोझ राजाने अेक गाय सोनेकी अेक सुव्वर सोनेका बनवाकर ब्रहमन को गायदी और वोह गाय पातेही ब्रह्मनोंने उसके टुकडे करके आपसे में तकसीम कर ली और हझरतकी खिदमतमें सोनेका सुव्वर रवाना किया तो आपने उस सोनेके सुव्वर को अेक बयतुल खलामें रखने का हुकम नों दिया और कुछ दिनों के बाद राझाने ब्रह्मनुं के पास जो गाय सोनेकी दि थी. वोह वापस तलब की तो ब्रह्मनोंने जवाब दिया के दानमें दी हुई गाय को हमने आपसमें काटकर तकसीम करली है तब राजा बोला के हिन्दु गायको माता मानते हुअे उसको काटकर उसको तकसीम कर ली ईस बात पर राजा को उन ब्रहमनोंसे बहोत नफरत पेदा हुई और जब हझरत के पास सुव्वरकी वापसी की मांग की तो आपने फरमाया के कहीं बयतुल खलामें से मीला ईस बातका चर्चा अेक आम झल्से (सभा) में हुआ उस वक्त हझरतने कुरानशरीफ पढकर उसके माने समजाये जीससे ब्रह्मन बहोत खुश हुआ और मुसलमान होकर कलमा पढा.

अमानत दयानतदार को वापस दीलाना

अेक शख्सने किसी के वहाँ अमानत रखी थी मगर वोह अमानतदार ईन्कार कर गया तो दयानतदार हझरत शाह अली सरमस्त (रहमतुल्लह अलयह)की खिदमतमें हाझिर होकर अर्झ करने लगा के हुझूर मंयने ईस शख्स के पास अमानत रखखी हय और वोह ईन्कार करता हय तो आपने अमानतदार से कहा के तु उसकी अमानत वापस दे दे अगर ईस मस्जिद की कसम खाले तब उस बदखयानतदारने मस्जिदकी कसम खा ली उस वक्त वो झमीन में धंस गया तो फिर वो माफी मांगने लगा और

लाचार होकर रो रो के केहने लगा के मुझे माफ करके ईस झमीन से बाहर नीकालो तो मंय अमानत वापस देता हुं और मेरे गुनाहों से माफी चाहता हुं आपने उस झमीन में घंसे हुअे को बाहर नीकाला और अमानत उस दयानतदार को वापस दिला दी.

आपका विशाल की खबर देना अपनी कब्र दो कब्रो के बीच की वसीयत करना और वो कब्र वहां खुद-ब-खुद दुर होकर हजरत की कब्र के लीये जगा कर देना

हझरत शाह अली सरमस्त (रहमतुल्लह अलयह) वक्ते आखरी विसाल का आया उस वक्त आपके साहबझादा हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लह अलयह)से फरमाया के मेरा वक्त अब बहोत करीब आ चुका हय तो आप मुझे मेरे जो दो मुरीद गुजरे उनके बीच में मेरी भी कब्र बनवाना और वहां मुझे दफनाना और जब आपका विसाल हो गया उस वक्त आपकी बतलाई हुई मदफून की जगह न होने की खबर पाई, तो फीर आप वहां कब्रस्तानमें तशरीफ ले गये और देखा तो वहां जगह कुशादा पाई और आपको उसी जगह मदफून करने के लिअे कब्र खोदी गई और आपको कब्रशरीफ में लेटाकर आपका मुंह मुबारक हझरत शाह सुलेमान देखे तो आपने तबस्सुम में आपके दोनों लब मुबारक हिलते देखे तो आपकी केफीयत देखकर तमाम सामईन केहने लगे अल्लाहो अकबर कया शान हझरत की हय ! और आपको खाक के सुपुर्द करके फातेहा ख्वानी के बाद वापस कियामगाह पर तशरीफ ले गये.

फरीदुल असर, जुनेदुद्दहर, वलीअे बाकमाल, तकवा शेआर, कुतुबुल अकताब, हजरत सैयदना शाह सुलेमान रहमतुल्लाह अलयहे

वफात : हि.750, इ.स.1329

कुवे में दमकीया हुवा पानी डाल देना और काफिर जो आपके दुश्मन थे वो आपसे मोहब्बत करने लगे

हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह) पट्टन शहर में आपके दौलत सरा में रेहकर आप भी 'कात' मस्जिद में खुत्बा देते रहे और आपने ईल्म मुकम्मल हांसिल कर लिये तो आपको अल्लाहकी तरफ से कुत्बुल अकताब का खिताब मिला और आप बळे पाये के वलीअे कामिल होते हुअे और अपनी करामतों को किसी पर झाहिर होने से छुपाते रहे और आपका यही सेवा के खिदमते खुदा करते हुअे आपके दोलतसरा में रेहते थे. और वोह मोहल्लेमें काफीरोंका झोर बहोत था और वो आपको हंमेशा तकलीफें देते मगर आप उनको कुछ भी केहना या जवाब देना पसंद नहीं करते थे. मगर वहां के मुसलमानोंने आपको फरियाद की के ईन काफिरों की तकलीफ से हम मुसलमानों को ईस बस्ती में रहेना गंवारा नही फिर अपने मुसलमानोंको तसल्ली देके वहां अेक कूवा था जिस्का पानी तमाम काफिर भी पीते थे उस पानीपे आपने कुछ पढकर दम किया. फिर वो पानी जो भी पीता वो आपसे और तमाम मुस्लिमोसे मोहब्बत रखते हुअे आपके मजलीस में आया करते और आपसे बडी मोहब्बतसे पेश आते.

आप पर जादु करना सब्र से काम लेकर 700 बलाओंको कडाइमें जलाकर राख कर देना

येह खबर और दिगर मोहल्लेवाले काफिरों को हुई के हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह)से आपके मोहल्ले के करीबवाले काफीर झियादातर मोहब्बत रखते हंय, तो उन काफिरों को हसद होनेसे उन्होंने जब आप कुछ बीमार हुअे थे और

कुछ सेहत पाई तो दिगर काफिरोंने मशवरा करके सब मिलकर हझरत पे हमला करदें और आपको मार डालनेका मशवरा किया मगर किसीकी हिंमत नही हुई मगर रात के वक्त आपको ख्वाबमें ये दरपेश हुआ के कंई भयानक डरानेवाली शकलें आपके सामने आईं और दांतों को कडकडा कर आपको नापाक शिकलें डराने के लिअे आई. फिर आप ख्वाब से चोंके और देखा के काफिरोंने कुछ जादु किया हय और उसमें बदशिकल दिखाई देती हय तो आप बिस्तर से उठकर गुस्ल करके आपने उनकी तरफ ला होल....पळह के फूंका और चांपानेर के मीर को बुलाकर उसके पास अेक कडाई मंगवाई उसमें तेल और गाय का घी कुल सात शेर डाला और उसमें कुछ माअस के दाने पळहकर डाले, उसी वक्त उस कडाई में वोह बलाअें बाशकले सातसो थीं वोह सब कडाई में गीर कर खाक हो गईं और अेक शख्स चील की तरह उडता हुआ आपके सामने आया और फरियाद करने लगा के या हझरत या पीर अब हमको बचाओ, फिर आपने कहा सब्र कर ये मुल्क पाक हो जावे फिर उसने कहा, येह मुल्क तो अैसा ही हो और आपने कडाई उल्टी कर दी, फिर कडाई को झमीन में दफन करवा दी. फिर आपने फरमाया ईन्ना सजर तझ झकुनो तआमल असीमे पग्ली फी बोतुने तगीलल हमीम.

नागौर (राजस्थान) के मलीखादेव को भगाना

अेक रोझ हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह) नागोर शहर में तशरीफ ले गये वहां शहर में अेक बला कुत्ते की शकल की पैदा हुई थी और वहां खेती की पैदाईश को तबाह कर देती थी. ईससे लोग बहोत हेरान व परेशान थे. आखिरकार वहां के हाकिम तक जाकर रियायाने फरियाद की और कहा के अब हमारा हाल तबाह हो रहा हय. फिर हाकीम हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह)की खिदमत में हाझिर होकर तमाम वाकेआ आपके सामने पेश किया और अर्झ करने लगा के मुल्क विरान हुआ जाता हय. ईस केहर की बलाने जान के लाले कर दिये हंय तो आप हमारे उपर महेरबानी करके ईस बलासे नजात दिलाओ. तब आपने अेक कागझ के रुकके पर कुछ लीख कर हवा में उडा दिया वहां मलीखा नामी देव के पास कागझ पहुंचा और वो रुकका पढते ही मलीखा ईन्सान की शकल में

आपकी खिदमतमें हाझिर हुआ और अर्झ करने लगा के क्युं ईस गुलाम कमतरीनको बुलाया हय और जो आप हुकम दो मंय बजा रहा हुं मगर मेरा जी ईस शहर को छोडना चाहता नहीं. और ईस शहर के लोगों की उल्फत, मोहब्बत को तोळने को फिर आपने फरमाया के नागोर छोड दो. तो आपके मलीखा कदम बोसी करके अपने मकाम पर चला गया. हझरत की दुआओं के तुफेल से नागोर शहर की रियाया और हाकिम खुशहाल हुओ.

आप हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के हुकम मुताबीक पालनपुर (उत्तर गुजरात) जाना, मस्जीद तामीर करना

हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह) को हझरत रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमका ईर्शाद हुआ के आप पालनपुर जाओ और वहाँ अेक मुकाम अेसा था के उस मुकाम में अेक देवने कई पथ्थर जमा कर के लोगोंको फरेब और जादु के झोरसे पूजा कराता था और अपने को माअबुद बना बेठा था और वहां अगर नेक बंदा जाता तो उसको हेरान परेशान करता था. ईस लिअे आपको सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमने पालनपुर जाकर उस देव के मकान को ढाकर वहां मस्जिद बनानेका हुकम दिया था. ईस गरझ से आप पालनपुर जाकर वहां के हाकिम से मिलकर उसको हकीकतसे आगाह किया फिर हाकिमने अर्झ की के हझरत ये काम मुश्कील हय क्युं के ये देव बडा झालीम हय और उसने कई खुदा परस्तों को हेरान किया हय आपने फरमाया कुछ गम मत करो हमारा मुहाफिझ खुदा हय. और फरमाने नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम बजाना हय और उस मकाम में अपने मुरीद और साथीयों के साथ दाखिल हो गअे और उस काफिर देव को वहां से भगा दिया और उस जगह को साफ करके वहां आपने अेक मस्जिद बनवाई और आपने वहां खुत्बा पळ्हा मस्जिद आबाद हुई और वहां नमाझ होने लगी. मगर जब आप मस्जिदमें हाझिर न होते तो उस वक्त मौका पाकर वो काफिर देव नमाझीयों को सताता था ईस लीअे आपने वहां कयाम करके चालीस रोझ तक नमाझ अदा करते रहे और आपने ईस्मे आझम पळ्हा किया तब

उसने अपने जादु के झोर से दुसरी बलाओं उसकी मदद के लिओ बुलवाई तो आपने देवको और उसके साथीयों को पकडकर जलाकर खाक कर डाला. फिर तो वो मस्जिद आबाद हो गई और मुसलमान खूशु और खुझू के साथ नमाझें अदा करने लगे.

राहीब (पादरी) का इस्लाम कबुल कर लेना

हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह)अेक रोझ मस्जिदमें आलीमों और फाझिलोंके साथ बैठे हुअे कश्फो करामात की गुफतेगो कर रहे थे ईतने में हातीफसे खबर हुई के अेक साहिब आपकी आझमायश के लिअे आता है तो आप होशियार रेहना ईतने में वो राहिब आपके सामने आ कर बेठ गया. और केहने लगा के आप मुसलमानों के रेहबर हो तो मुजे भी कुछ करामत दीखाईअे और अैसा न हो सके तो मंय आपको अपना चमत्कार दिखाउं तो आपने कहा के अय मगरुर खुदा के प्यारे अपनी झुरुरत के वक्त अपनी करामत झुरुर दीखाते हैं वरना उसको छुपाते हैं ये सुनते ही वो गुस्से में आकर शेर की शकल में नमुदार हुआ उसी वक्त आपने उसपर नझर डाली तो वो गधे की शकल बन गया फिर तो वो बहोतही शरमींदा हो गया तो आपने उस पर रहेमत की नझर से देखा तो वो असली ईन्सान की शकल में हो गया और शेखी करके आसमान की तरफ उळा उसी वक्त आपकी चद्दर आपके पास थी उस चद्दर को हुकम दीया के उस राहिबको पकडला उसी वक्त चद्दर उळी और अेक चील बनकर उस राहिब को चीळीया की मानीन्द पकड कर आपकी खिदमत में हाझिर कर दिया फिर वो लाचार होकर ईमान लाया और मुसलमान हो गया.

आपकी दुआ से बरसात होना...

हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह)अेक रोझ मस्जिद के बाहर महेफिल के बीच बेठे हुअे थे उस वक्त बारीसकी मौसम थी और आप कुछ गुफतेगु कर रहे थे के ईतने में आसमान पर अब्र आया तो उस वक्त बेठे हुअे सामईनने अर्झ की के हझरत उठो बारीस आयेगा तो आपने फरमाया के खातीर जमा रखखो सुलेमान का अदब रखखेगा बारीश तो उस वक्त रास्तेमें चलता हुआ बनीया जा रहा था और वो

बोला के बारीस कीसीकी अदब करे नहीं ईतने में चंद कतरे बारीस के गीरे तो आप नाखुश हुअे आप शाह अबदालने बारीशकी तरफ नझर की तो बहुकमे परवर दिगार से जो अबर था वो बे आब (बगेर पानीका) हो गया और अेक कतरा भी बारीश हुआ नहीं और खेती की फसल सुखने लगी तो अेतराफ के लोग जमा होकर पट्टन शहरमें हझरत शाह बहाउद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)की खिदमतमें हाझीर होकर बारीश के लीअे दुआ चाही तो आपने फरमाया के हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह)की नाराझगी का बाईस हे अगर वो दुआ फरमाएं तो बारीश हो सकती हे. फीर तो सब के सब वहां से हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह)की खिदमत मेंसे हाजीर हुअे और बहोत मिन्नतें कीं और बोले के हम बरबाद हो रहे हैं. आप रहेम फरमाकर हमारी मुसीबत टाल दो तो आपने अबर की तरफ ईशारा किया और फरमाया के तेरी जुस्तजु में सब हेरान हैं ये सुखन आपके मुंह से नीकला तो ईन्सान की शकल में बरसात हाझीर हुवा और आपने उससे फरमाया के तु मुझसे ईतना बेअदब क्युं हुआ तो आजीझी करके मुआफी का तलबगार हुआ तो आपने उसे मुआफ फरमाफर फरमाया के जा अब असली सुरत में आकर हर जगाह अपने मामुल के मुताबीक बरसाकर और आयन्दा अेसी गलती न करना ये केहकर रवाना किया और बारिस शुरु हो गई लोग खुशहाल हुअे.

विशाल की मुरीदो व सामेइन को हाजर रखना, कुरआने पाक पढते पढते, सुरअे यासीन शरीफ पर खत्म होना और रुह का निकलना

हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह) आपका वक्ते वफात करीब आया तो आपने अपने सामईनोंसे कहा के जब मेरा वक्त वफात का आये तो तुम सब मेरे पास रहेना आपने जो वक्त बताया था उसके मुताबीक आपकी खिदमत में तमाम दुरवेश हाझीर हो गअे. आपका मर्झ बळ्हता गया और आप बेहोशी में भी कुरआन शरीफ पळ्हते थे और जब सुर-अे-यासीन पर पहोंचे तो उस वक्त आपका विसाल हुआ.

वफात बाद नेक बख्त खातुनबीबी को जनाजे पास बुलाकर मुरीद बनाना

आप सन हिजरी 750 में ईस दुनिया से परदा कर गये और आपके वफात का वक्त फझर आखिर वक्त में हुआ था.

आपके करीब में अेक नेक बख्त बीबी थी और उसका ईरादा आज या कल आपकी मुरीद होने का था. और आपकी खिदमत में हाझीर हुई तो देखा के आप रेहलत फरमा चूके हें तो बहोत परेशान हुई तो आपने आंख खोली और उस पाक दामन से कहा के नझदीक आ और आपने आपके हाथ पर बयअत दी फीर तो अेकदम गोगा (शोर) उठा के हझरत झिन्दा हय तो आपको मेदान में लेजाकर रखकर देखा तो आप वफात पा चुके हंय मगर आपके लब (होठ) मुबारक हीलते हैं ये वाकेआ (मामला) सफरमें जंगलमें बयाबान में हुवा हय तो आपके लिअे कफन की तलाश की मगर कहीं न मील सका और गयब से कपडा और मोहोर झरीन आ गया वो मोहोरे शरीफ को वहां दिखाई गई मगर उस पर लिखखा हुआ पव्हनेमें नहीं आया वो मोहरे सित्तेर (70)थीं ये एक शख्स लेकर अपने घर ले गया और तबरुक समझके कपडे में लपेट कर ले गया और उनको कब्र में रखखा ये कब्रआपके पहेलु मे हय.

हझरत शाहे सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह)के वाकेआत बहोत हैं और आप बाद-अे अलस्त हंय.

आप साहबे करामत थे! आपने झियादा कियाम पालनपुर में किया हय और वहां आपने मस्जिद तामीर कराई हय ईस मस्जिद का नाम मस्जिदे अददास हय.

आरिफ बिल्लाहिल मलिकिल मअबूद, उस्तादुल औलिया, अबुल औलिया, खुलासतुल मल्वैन, दलीलुल जाअेरीन, अमानतुल खाअेफीन, आरिफे हकक, गौसे झमानी, मेहबूबे यझदानी, कुत्बे रब्बानी, शिब्लीअे झमानी, उवैसे शानी,

सैयदना शाह कुतूब महमूद दादा कारन्टवी कद्दसल्लाहो सीर्रहु नव्वरल्लाहो

पैदाइश : हि.स.647, इ.स.1226, वफात : 5 रमझान हि.758 इ.स.1337, उम्र : 111 साल, उर्स – 25 शाबान

आस्ताना : मु.पो. कारंटा, ता.खानपुर, जी.महीसागर (गुजरात)

हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)की हालत हझरत शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह)के साहबझादे आपके अमीरे मस्उन हैं कूतबुल अकताब व गौसुल झमाँ, उवैसे झमाना शीबलीअे सानी मौलाना सैयद शाह खतीब महमूद कद्दसल्लाहो सीर्रहु व नव्वरल्लाहो.

नागोर में मुसलमानों का इमान बिगाडनेवाला मुखलखल जीन शैतान को भगाना

आप खतीब मादरझाद हैं और आपका खतीब महमुद से मशहुर होने का सबब ये हे के अेक रोझ आप नागोर शहर में तशरीफ फरमा थे के चंद मुसलमान जा रहे थे. आपने उनसे पूछा के कहां जाते हो उन लोगों ने कहा अेक सलीब की परस्तीश को जाते हैं जहां पर चमत्कार ये हे के गौनागुं किस्म के खाने आते हैं आप वहां गये और देखा के मुखलखल नामी जीन शैतानीयत से ये करता था के नजीस चीझ को खोराक की चीजों ईन्सानों को बताता और मुसलमानों के ईमान को खराब करता था हझरतने ईस जीन को फरमाया यहां से चला जा उसने जवाब दिया के मेरे बाप दादाने ये जगाह आबाद की हय, मंय नहीं जाउंगा आपने उस बुतखाने को ढा दिया और वहां मस्जिद तामीर की और मस्जिद का नाम कुव्वतुल ईस्लाम रख्खा.

नागोर में मस्जीदे कुव्वते इस्लाम की तामीर करवाना

मस्जिद तैयार हो जाने के बाद जब खतीब मिम्बर पर खुत्बा पढ़ने खडे हुवे तो ईस मुखलखल जीनने खतीब को मार डाला उसके बाद किसीकी हिंमत न हुई के वहां खुत्बा पढ़ा सके. हझरत सैयदना शाह मौलाना खतीब महमूद को जब ये मालुम हुआ तो आप वहां गये और मीम्बर पर चढ़कर खुत्बा पढ़ा ईस रोझ से आप खतीब महमूद के नाम से मश्हुर हुओ वरना आप मादरझाद कुतुब हंय. बहोत बड़ेवली हंय.

शाह सैयद महमूद गौषे झर्माका कारंन्टा शरीफ बरेहमन की बेटी को बचाने जाना

तोहफतुल कारी और दिगर मलफूझात में दर्झ है के अेक बरेहमन मोरली कीसन नामी अहमदआबाद शहर में आया और अदालते शाही में फरियाद की के में कारींटे का रेहनेवाला हुं वहा का राजा सीन्धुजी हल्लाल खोर कौम से हय अेक रोझ वो कमीना शराब पीअे हुवे उसके साथीयों के हमराह हवाखोरी को जा रहा था के उसकी नझर मेरे महोल्ला तरफ पडी और मेरी लडकी नेक अखबर रुपकुंवर तेराह सालकी बाला खाना पर खडी थी ईस पर उस बदझाद की नझर पडी और उस पर फरेफता हो गया और उसने मेर पास पैगाम भेजा के मेरे साथ लडकी की शादी करें वरना में ताकत से झबरदस्ती ले लुंगा. मैंने मजबूर हो कर उसकी बात को कबुल किया और छे (6) माह का वक्त लीया हय. में ब दरगाहे शहेनशाह व ब बारगाहे आलमपनाह गुलब्बाह आया हुं के या हझरत सलामत ये सरासर झुल्म हय के झबरदस्ती राजा खोर कौम का आदमी बरेहमन की लडकी से शादी करे. अैसा आपकी सल्तनत में ये पहेले कभी नहीं हुवा हय. ईस लिअे उम्मीद रखता हुं के आप अेक फोज लेकर जल्द और आसानी से वोह मुकाम फतेह कर लेंगे और मेरा भी काम हो जाअेगा. तब बादशाहने पूछा ईस झीले की पैदाईश क्या हे और उस राजा का लश्कर कीतना हय अर्झ किया तकरीबन 700 (सात सो) हथियारबंद झरापोश सवार हें और दो हझार प्यादा का लश्कर हय. अकसर उसके ताबेअ के लोग मुल्क वागड से लूटकर लाते हैं और गुझारा करते हैं. तब वझीरोंने मश्वरा

दिया के आमदनी वहां की कम हय चुनांचे पहाळ खोदकर चुहे मारने की मीस्ल है. सरदार मुरदार खार पर लश्कर ले-जाना बादशाह सलामत की फोज को मुनासीब नहीं है. सरदार मुरदार खोर काफीर हय और बरेहमन भी काफीर हय. दोनों जहन्नममें जायेंगे. जब सुलतान बहीलो सुबहानी मद्दझिल्लहु अलयहने वझीरों से ये मशवराह सुने तो बरेहमनको जवाब दिया के ये मुश्कील काम मुजसे न हो सकेगा. बरेहमन आखीर मजबूर और नाउम्मीद होकर गया गयब से उसके कान में आवाझ आई के अय बरेहमन तेरे गम की हालत कुतबुल अकताब कुतुब महेमुद से नहेरवाली शहेर में जाकर जल्दी से बयान कर. वहीं तेरी मुराद पुरी होगी. तब बरेहमन वहां से कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह) के पास गया जब हुझूरने बरेहमन को देखा तो फरमाया के अय आनेवाले बता कहां से आया हय और क्या चाहता हय. उसने अर्झ किया के या अमीरे मसउद में महेमुदाबाद उर्फ कारींठेसे ब दरगाहे सुलतानी फरियाद लेकर गया था. लेकिन बादशाह के वझीरोंने मेरी फरियाद न सुनी और मुजे वहां से नीकाल दीया अब में आपकी खिदमत में हाझीर हुवा हुं. उम्मीद हे के मेरा मकसदम पुरा होगा. तब कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह)ने उसे तसल्ली दी और अेक खत बादशाहको भेजा. उसका मझमुन ये था के काफिरोंके मुकाबले के लिये में जाता हुं ईस लिये कुछ लश्कर मेरे हमराह देना. ईन्शाअल्लाह वहां में रुसुमे ईस्लाम जारी करुं गा. बादशाहने फौरन ९०० सवार झराह पोश तैयार करके भेजा. बरेहमनने कहा के या हझरत अगर आपका हुकम हो तो अेक तदबीर करें ताके लश्कर का अेक आदमी भी न मरे और वो हरामखोर भी जहन्नम में पहोंच जाओ आपने फरमाया वोह क्या तदबीर हय. तब बरेहमनने तीनसो महाफा मओ सीजवाली के तैयार कराओ और अेक अेक महाफा में तीन तीन लश्कर के आदमीयों को बीठाओ और लश्कर के घोळे पट्टनमें (नहेरवाला) रख्खे और बारात के बहाने से महाफों को कारींठा की तरफ रवाना किये.

शेर सांप पर सवार होकर (सिन्धुजी) की फौज को हटाना

और बरेहमन बहोत जल्दी कारींठा में आया और राजा सिन्धुजी से कहा के मेरे रिस्तेदार मेरी लळकी की शादी में शरीक होनेके लिओ पट्टनसे महेमान आ रहे हैं. ईस

लिअे आप कारींठा गांउमें अेलान करादें के कोई शख्स महेमानोंकी तरफ देखे नहीं और उनको तकलीफ न पहोंचाअे क्युं के ईसमें औरतें परदादार हैं तब सिन्धुजीने बरेहमन के कहेने के मुताबीक गाउं में ताकीद करादी. फीर तो महाफुं की कतारें कारींठा से चार या पांच मनझील रहे गअे थे के ईतने में कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह) हुकमे खुदा से अपने दखादा के शेर पर सवार हुवे और हाथ में सांपका कोळा पकडा. नहेरवाला शहेर से कारींठा की जानीब चले. आप महाफुं से तीन रोझ पहेले कारींठा में दाखिल हुवे और सिन्धुजी का सर आपके कोळे से अलग किया. शेर और सांप को उन लोगों पर मुसल्लत किये बहोत से हरामखोरों को शेर और सांपने मारे और बाकी के लोगों को लश्कर के आदमीयों ने आकर मोत के घाट उतार दिये. उनकी तमाम जळें नीकाल दी और उनकी जगह पर मुसलमान आबाद किये.

सरकारे मदीना के हुकम पर कारन्टा शरीफ आबाद करना, मस्जीद तामीर करना

हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह)भी हमारे आका व मौला ताजदारे मक्की व मदनी मोहंमदुर्रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम के ईशारे से कारींठा में सुकुनत अखत्यार कीअे और मस्जिद तामीर कराई.

सुलतान महमूदखान का हजरत महमूद को कारन्टा शरीफ जाकर मदद का हुकम करना

सुल्तान महेमुदखान के हुकम के मुताबिक अमीरने थानेदारों के रेहने के लिये मही नदी के किनारे भादर नदी के करीब कीला बनाने का काम शुरु किया. कारीगर लोग दिन के वक्त दीवार तैयार करते थे लेकीन रात के वक्त दीवार गीर जाती थी. आखीर अमीरने सुलतानको अहमदआबाद ये वाकेआ लिखा. जब बादशाह को खबर मीली तो फीक्र हुई के येह काम सिवाय वली अल्लाह के कोई न कर सकेगा तो अेक शख्सने बादशाह को खबर दी के शहेर नेहरवाला उर्फ पिरान पट्टनमें हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह) हैं वो ये बला को दफे कर सकेंगे

तब बादशाहने आपको बुलाने के लिये खत और घोळा आपके पास भेजा. उसकी खबर पहेले से सरकारे मदीनाने हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह)से फरमाया था के बादशाह का घोळा और खत आपके पास आअेगा तो आप कारींठा जाकर कीले की बलाको दफा कीजीये. वहां सुकुनत अखत्यार कर के मेरे दीन की इशाअत किजीअे. हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह) खतका ईन्तेझार कर रहे थे के सुलतान महमूदखान का खत और घोळा आया.

देव को भगाना किला तामीर होना

आप घोळे पर सवार होकर कारींठा गअे उस वक्त चंद बदकार लोग शैतानीयत के दरजे पर पहोंच गये थे ईन पर हझरतने ईस्मे आझम पळ्हा तब वो लोग बद जानवर की सुरत में तबदील हो गअे और आखीर वो जलाअे गअे. और उनको भादर नदी में डालकर बहोत बळे बळे पथ्थर कंई हझार मन के उन पर रख दीअे गअे. जहां पर कीले की दीवार गीर जाती थी. वहां अेक देव था. वो जब गरदन उंची करता था तब दीवार गीर जाती थी फीर जब हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह) तशरीफ लाअे तो देव वहां से भाग गया. ईसके बाद किले की दिवार गीरी नहीं. ये वाकेआ हि.सन. 699 का हय और कीला हि. सन 761 में खलाईक के लीअे आबाद हुवा.

हजरत का खुत्बा सुनना रुपकुंवर लळकीका

अेक मरतबा कारींठे की मस्जिद में हझरत कुतुब महेमुद (रहमतुल्लाह अलयह) वाअझ फरमा रहे थे उस वक्त खलकुल्लाह का बहोत बळा हुजुम था. उस वक्त आपने हदीस बयान फरमाई के तालेबद दुनिया मुखन्नसुन व तालेबुल उकबा मोअतनसुन व तालेबुल मौला मुझक्करुन. जब आपने ये हदीस बयान फरमाई उस वक्त बरेहमन की लळकी रुपकुंवर जीस पर सिन्धुजी हलाल खोर राजा फरेफता हुवा था. बोह हाथ में मटका लेकर ओरतों के साथ पानी भरनेके लिअे वहां से गुझरी तब हदीस उस लळकीने सुनी तो ईश्के ईलाही उसके कल्बमें जोश मारने लगा और खयाल किया के अकसर लोग दुनिया की तलब या आकेबत के तालीब होते हैं. तालीबे

मौला तो हजारों में अेक होता है. ईस लिअे औरत और मुखन्नस से परदा क्या करना ये खयाल करके ईश्के ईलाही की मदहोशीमें घर पर गई और बरेहना रहेने लगी. लेकीन हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह)के सामने आती तो कपळे पहेन लेती और कोई आदमी उसके पास ईलाज करने को आता तो उनको ये लळकी मुखन्नस कहेती या झनाना कहेती. ईस वजेह से हर शख्स शरमिन्दा होकर चला जाता अगर किसीने बावजुद ईलाज किया तो फायदा न होता था गरझ रुपकुंवरका बाप मोरली कीसन और उसका भाई और शोहर और दुसरे रीस्तेदार हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह) के पास आअे. जब लळकीने हझरतको देखा तो कपळे पहेन लीअे मोरलीकिसनने कहा के पीर रोशन झमीर ईस लळकी को क्या हुवा है के आपको देखकर कपळे पहेन लीअे हैं और दुसरों को देखकर बरहेना हो जाती हय. आप बराअे करम ईसका आसेब दुर किजीअे. हझरतने फरमाया के अय बरेहमन लळकी को कोई बला नहीं हे बल्के ईश्के ईलाही की आतीश से सोख्ता हे अगर चे लडकी तुम्हारे नझदीक ना मक्बूल हय लेकीन अल्लाह के नझदीक मकबुल हय. हझरत कुत्बेझमाँ (रहमतुल्लाह अलयह)ने लळकी से कहा के तुम्हारे कल्ब पर जो केफियत तारी होती हे वो सुनाओ तब रुपकुंवरने कहा के दुनिया में झियादातर ईन्सान औरतें या मुखन्नास नझर आते हैं क्युं के झियादातर आदमी दुनिया के तालीब हंय ईस लिये मुखन्नास या औरतों से परदा करना झरुरी नहीं. हझरत कुतुब महेमुद (रहमतुल्लाह अल्यह)को मैं झाहेरन और बातेनन मर्द देखती हुं और ईस वजहा से आपसे हया करके कपडे पहेन लेती हुं. तब आपने उसके बापसे फरमाया के ये लडकी शिर्क से नीकलकर तालिबे अल्लाह हो गई है उसके अच्छे होनेकी उममीद न रखना आखीर में रुपकुंवर को अफसोस के साथ घर ले गये और लळकीने घर जाने के बाद खाना पीना छोळ दिया. फिर तो मजबूर हो कर उसको घरसे नीकाल दिया ये बरहेमनझादी हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)के पास हाझिर हुई और तीन रोझ तक आपकी खानकाह में रही और उसका दिमाग शहेवाते नफसानी वसवसे शयतानी से पाक हुवा फीर हझरतने उसको मुरीद बनाई और उसकी उम्र तवील बक्ष दीं व दुआअें दीं जहां आपकी ईबादत की जगाह थी वहां पाणी बहोत गहरा था आम तोर पर ईसको कुन्ड केहते थे वहां पर रेहनेका उसको

हुकम फरमाया और आपने फरमाया यहां पर ईबादत करना और मखफी रेहना झाहीर मत होना ये बयान मलफुझात में दर्झ हय के ये लळकी आज तक हझरत के ईशारेसे ईसी जगाह पर झीन्दा हे लेकीन किसीको नझर नहीं आती.

हुझूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के हुकम से हजरत सैयदुल सादात मख्दुम जलालुद्दीन जहांनीया जहांगश्त से मख्दुम सैयद कुतुबुल अकताब सैयद शाह खतीब महमूद कारन्टवी से कारन्टा शरीफ मुलाकात को आना

सैयदुस सादात कुत्बुल अकताब गौसेवाला हझरत जलालुद्दीन उर्फे मखदुम जहांनीया जहांगश्त रदियल्लाहो अन्हो हरमुकल पहाळीयों की और सहेराओं की सैर के लिअे गअे और दरियाओं को और बयाबानों की सैर करते हुवे ईस हद तक गअे के आफताबो महाताब ने आपसे मुसाफाह किआ. सफरके दौरान में अकसर औलियाओं की करामत को कुव्वते जलालत से छीन लिया और अपने वतन को गअे तब हझरत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमने हुकम फरमाया के अय मखदुम झी उलुम कारींठा कोहीस्तान में वाकेअ हय. वहां जाओ वहां गौसे झमां हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)से मुसाफा किजीये और मुलाकात किजीये हझरत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमके हुकम के मुताबीक आप कारींठा तशरीफ ले गअे और मस्जिद में ठेहरे और फरमाया के यहां खुदा के दोस्त की खुश्बु आती है. जब हझरत मखदुम जहांनीया (रहमतुल्लाह अलयह) के आने की खबर हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह) के खुद्दाम को हुई तो, वो कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह) के पास गये और अर्झ कीया की या पीर रोशन झमीर आप हझरत मख्दुम जहांनीया (रहमतुल्लाह अलयह) से हरगीझ मुसाफा न किजीये. कयुं के हझरत मख्दुम जहांनीया (रहमतुल्लाह अलयह) करामातें छीन लेते हैं तब हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)ने फरमाया के कम झर्फ ईन्सानों से करामत छीन ली गई है और आरीफों को करामतें बख्शी गई हैं. कुछ फिक्र की बात

नहीं के जो करामतें छीनी गई हंय वोह भी वापस दिलवाउंगा जब मख्दुम जहांनीयाने अेक रुक्का हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह)को लिखा असर और मगरिब के बीच में दोनों कुतुब और गौस की मुलाकात हुई और दोनों अवलिया अल्लाह मुश्कुराअे और बहोत खुश हो गअे. हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)का पयहन दोनों कंधों पर चाकवाला था और हझरत मख्दूम जहानीयां (रहमतुल्लाह अलयह)का कमीझ सीने पर चाकवाला था आप इस तरह से सीने से सीना लगाकर मिले के हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)का पैहरन सीने पर से फट गया और हझरत मख्दूम जहांनीयां (रहमतुल्लाह अलयह)ने फरमाया के हमारे दोनों के दरम्यान में कपळे का हिजाब न रहे, बाद में गुफतेगु हुई क्युं के हझरत मख्दूम जहांनीयां (रहमतुल्लाह अलयह) अपने बाप दादा से मरातिब पाअे हुअे थे. हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह) हझरत मख्दूम (रहमतुल्लाह अलयह)का हाथ पकळ के भादर नदी पर वोह चश्मा जहां पानी बहोत घेरा था, ले गअे जहां आपकी इबादतगाह थी, वहां चंद अजाएबात देखे और चंद करामात और मस्अले हझरत मख्दूम (रहमतुल्लाह अलयह)ने हल फरमाये. चालीस रोज तक वहां चिल्लाह में रहे और फिर बाहर आअे फिर हझरत मख्दूम (रहमतुल्लाह अलयह)ने फरमाया के आप मुजसे बयअत लीजीये. तब आपने फरमाया के मेरे वालिद शाह सुलेमान (रहमतुल्लाह अलयह) और मेरे दादा हझरत शाह अली सरमस्त (रहमतुल्लाह अलयह) जुनेदीया सिलसिलाह में बैअत लिअे थे और खलकुल्लाह को राहे हक बताअे और आप सिलसिले सोहरवर्दीया में हैं. ये जवाब सुनकर हझरत मख्दूम (रहमतुल्लाह अलयह)खामोश रहे. बादमें इस रात की तहज्जुद की नमाझ के वक्त हझरत रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमकी रुह मुकद्दस चारों खुलफा के साथ हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)के पास तशरीफ लाअे और फरमाया के अय कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह) सिलसिले बैअत सब मुज से हैं. हझरत मख्दूम (रहमतुल्लाह अलयह) जो कहें वोह कुबूल करो तब हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह) हझरत मख्दूम जहांनीया (रहमतुल्लाह अलयह) के मुरीद हुवे और सिलसिलाअे सोहरवर्दीया में दाखिल हुवे! बाद दो रोझ के हझरत मख्दूम (रहमतुल्लाह अलयह)ने फरमाया के

मरातिब में हम दोनों बराबर हैं चंद मुश्किलें ईन चिल्ले के दिनों मे तुमने आसान की और हझरत मखदूम (रहमतुल्लाह अलयह)ने गुजरी झबान में दोहरा पढा. साग लपेटा भात है और भात लपेटा साग है.

मख्दुमे जहांनीया जहांगश्त से करामते वापस करवाना

जिन औलिया अल्लाह की करामत आप ले आओ थे वोह सब हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)को दिये. लेकिन कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह)ने कुबुल नहीं किये और फरमाया के अय हझरत मख्दम जहांनीया (रहमतुल्लाह अलयह) मैं इश्के इलाही , रोझे अझल से मेरे बाप दादा के साथ पाया हुं. ये नेअमतों की झरुरत मुझे नहीं हैं लेकिन या मख्दूम (रहमतुल्लाह अलयह) गौर किजीये के अगर किसी आदमी के पैसे गुम हो जाओं तो कितना गम करता है. उन औलिया अल्लाहने कितनी महेनत और मशक्कत उठाने के बाद येह नेअमतें पाई होगी. हझरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमने फरमाया है के मोमिनों का दिल अर्शुल्लाह है तो ये करामतें जिनसे आपने ले ली हों उनको वापस कर दो फिर तो हझरत मख्दूम (रहमतुल्लाह अलयह)ने वोह सब करामातें वापस कर दीं और सब के सब औलिया अल्लाह खुश हो गओ. हझरत मख्दूम जहांनीया (रहमतुल्लाह अलयह)ने फरमाया के आपने मुजे कयामत के दिनकी जवाबदारी से बचा लिया और औलिया अल्लाह में मुजे बदनामी से साफ किया और अल्लाह का शुक्र बजा लाओ और अपने मकाम की तरफ तशरीफ ले गओ.

कुत्बे कारन्टा की शादीके लिये सरकारे मदीना के हुकमसे...

हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)की शादी के लिओ सरकारे दोआलम के हुक्म से रमझानुल मुबारक के महिने में हझरत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमकी रुह मुबारक चारों खुल्फा के साथ रात के वक्त हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)के पास तशरीफ लाओ और हुक्म दिया के अय महमूद ! हुक्म खुदावंदे करीम का है के तुम शाह सैयद झैनुद्दीन की साहबझादी के साथ

निकाह करो इस साहबझादीसे औलिया अल्लाह पैदा होंगे. तब हझरत कुतूब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)ने हझरत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमका हुक्म कुबूल फरमाया.

हझरत सैयद झैनुद्दीन साहबने बातेनी हझरत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमके इशारे से और झाहेरन सुलतान के हुक्म से झैनाबाद उर्फ अमरथनी आबाद किया हैं. गांव का नाम झैनाबाद रख्खा. सुलतान अहेमदाबाद के तरफ से आप वहां के हाकिम मुकर्रर हुअे थे. हुकुमत और कझायत आप इस इलाके की करते थे जब हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)ने शादी का पयगाम भेजा तो हझरत सैयद झैनुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)ने फरमाया के हझरत रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमने मुझे भी इशारा फरमाया है तो शादी के लिअे आप जल्द आईये दोनों तरफसे शादी का सामान तैयार हुआ. उनका इस्मे गिरामी अमतुर रउफ है. शादी करके दुल्हन को हझरत कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)के घर ले गये. हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह)की विलादत सन हिजरी 647 में हुई और आपका विसाल सन. हिजरी 758 के माहे रमझानुल मुबारक की तारीख पांच को हुआ. आपकी उम्र शरीफ 111 साल की थी.

आपकी औलाद - विशाल

आपके फरझंदे अव्वल शाह ईब्राहीम (रहमतुल्लाह अलयह) उर्फ अलीशाह हैं. आपका विसाल 9 शव्वाल को हुवा. उनके विसाल के वक्त हझरत शाह हुसैन (रहमतुल्लाह अलयह) शिकमे मादर में थे और दोयम कुतुब हुसैन (रहमतुल्लाह अलयह)हैं. आप दोनों की कब्र मुबारक दरगाह शरीफ में हझरत कुतुब महमूद के रोझे में है. तीसरे साहबझादे हझरत मुजतहेदुझ झमां शाह काझी मोहंमद (रहमतुल्लाह अलयहे) हंय. आपका रोझा अहमदआबाद में सारंगपुर में हय.

काझियुल आलम, आलिमे बा-कमाल, शैखुल शुयूख, जुनैदुद दुहर, फरीदुल अस्र, मुजतहेदुझ झमां, महबूबे रहमान, अलवासेलो, बेवासेलिला हिस्समद, तकवा शिआर, कुतबुल अकताब

सैयदना शाह काझी मोहम्मद

विसाल : 900 हि., इ.स.1492 आस्ताना : शाह हम्माद रोझा, मु.सरपुर, छोटी रेल्वे लाइन, हंजर सिनेमा के करीब, अहमदाबाद.

बचपन में अकेले रेहना या कालुसिंधी के साथ घुमना...

हझरत शाहे मोहम्मद (रहमतुल्लाह अलयह) हझरत शाह कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)के सबसे छोटे साहबझादे थे और बचपने से आपकी अैसी हालत थी के आप किसीके भी साथ में बैठते नहीं और कोई दिलकी बात बताते नहीं. आप बचपनही से लाडले होने की वजह से आपको कोई कुछ नसीहत नहीं करते थे.

आपके दिलो दिमाग का किसीको पता नहीं चलता था. और आप हंमेशा तन्हा रहा करते थे मगर आपको फकत आपका चाकर कालु नामी सिंधी था उसके साथ आप झयादा वक्त घुमते थे. आप शबाब तक पहोंचे वहां तक आपने कोई ईल्म हांसिल करनेकी तवज्जो न की और दुनियावालों को वहेम गुझरा के आप कालु सिंधी के साथ रहेकर अपना जददी विर्सा छोळकर ख्वामख्वाह सिंधी के साथ वक्त झाये करते हैं. ईस बातका चर्चा घर बहार होने लगा और अेक रोझ कालु सिंधी कहीं जा रहा था उस वक्त रास्ते में कई औरतें मौजूद थी और कहे रही थी के ईस शख्स ने हझरत खतीब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह) के दिलबर हझरत शाह काझी सैयद मोहंमद को खराब कर रखा हय और उन्हें कोई मोहलत नहीं देता के अपने खानदानके करीबवालों के साथमें रहे कर कुछ ईल्मेदीन हांसिल कर सके

येह बात जब ईस कालु सिंधीने सुनी तो आप की खिदमत में हाझीर होकर अर्झ करने लगा के आजसे में आपको कभी नहीं मिलुंगा क्युं के दुनियावाले मुजे बदनाम कर रहे हैं.

इल्मे दीन हांसील करने के लिये हुजरे में चले जाना

कुल्बुझझमां हझरत शाह कुतुब महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)के साहबझादे को खराब कर रहा हय तब आपने फरमाया. कुछ गम मत कर, मैं जब तक मिस्ले मेरे बाप के नही हो जाउं वहां तक तुजसे तो क्या मगर कीसीसे भी नहीं मिलुंगा. ये केह कर आप हज्जाम के वहां गये और सर मुंडा कर आपकी वालेदा के कदम पकडकर अर्झ की के मुझे ईजाझत दो हुजरेमें जाने की, आपकी वालेदाने आपको दुआओं देकर हुजरेमें जानेको रुखसत किया तो आप हुजरेमें दाखिल होकर हुजरा बंधकरके कुफल लगाकर ईल्मेदीन हासिल करने पर कमर बस्ता हो गये और रात और दिन ईसी शुग्ल में गुझारते अगर आपको नींद का झोंका आता तो आप नमक और लोंग खरल किया हुवा आंखोंमें मल देते तो आपको उसके दर्दसे नींद न आती और अगर कभी कुछ वकफा होता तो फौरन चौंक उठते. आपके पास ईन्सान की शक्ल में ईल्म पढ़ाने के लिअे कोई आता था वो कौन था, अल्लाह बेहतर जानता हय ! आप छे माहमें हाफिझे कुरआन और ईल्मे दीनसे मालामाल हो गये. आप कश्फो करामात से मुमताझ हुवे.

हाफेजे कुरआन होना व मकबुलीयत हासील करना

आप उस अर्से में अैसे दुबले पतले हो चुके थे के आपके जिस्ममे गोश्त का कोई पता न चलता था और वो हड्डीयों से चीमट गया था. मगर आपका चेहराअे मुबारक माहे ताबां की तरह चमक रहा था. आपने फरागते ईल्म के बाद हुजरे से निकल कर आपकी अम्मा के कदम चुमे फिर तो दुनिया में आम चर्चा हो गया के हझरत कुतुब महमूद(रहमतुल्लाह अलयह)के फरझंद हझरत शाह काझी मोहंमद हाफिझे कुरआन हुवे हंय और ये खबर आपके मामु को हुई. आप उनकी मुलाकात के लिये आपके पास तशरीफ लाये तब आप नींद (ख्वाब) में कलामे अल्लाह पढ़ रहे थे. तो आप के मामु साहबने आपको निंद से बेदार किया, आपने मामूंकी आवाझ पहेचान कर उठे और वझु करके कुरआन शरीफ पुरा किया, आपने कभी नाजाईझ गिझा तनावुल नही फरमाया आपके पास आपका अेक घोडा था वो भी गैर का घासदाना न खाता था.

अहमदाबाद में आना आपके घोडे का तकवा

आप जब अहमदआबाद सारंगपुर तशरीफ ले गअे और उस वक्त वहां के सिपाही घास दाना अतराफसे लूंट कर लाते और वो घास दाना आपके घोडेको डालते मगर आपका घोडा कभी घास दाना नहीं खाता था और फकत पानी पर गुझारा करता था और बहोत लागर (दुबला) हो चुका था, ये बात आपको आपके मुरीद केहते. घोडा अगर मर जायेगा तो खसारा होगा मगर आप किसीको जवाब न देते और गोया सुना ही नहीं वैसा करके टाल देते मगर अेक रोझ अेक काफला आया जिसके पास घास दाने बहोत थे, उनके पास से घास दाने खरीद कर उसे घोडे को डाला तो उसने उसे खा लिया.

गुजरात के बादशाहको सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम का ख्वाबमें आना और शाह मोहंमद रहमतुल्लाह अलयहे को काजीअे दिने इस्लाम पर मुकर्रर करना

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम अेक रोज बादशाह के ख्वाब में आकर फरमाने लगे के मेरा हमनामी मोहंमद हय वो काझीअे दीने ईस्लाम हय और वो अपने आपको पोशीदा रखता हय तो तु उनकी तलाश कर और उनसे मिल तो बादशाह को आपसे मिलनेका शौक पैदा हुआ. रोज बरोझ हर जगाह तलाश करता रहा मगर आपको न पा सका. मगर अेक वक्त अेसा आया के आप हझरत काझी मोहंमद (रहमतुल्लाह अलयह) खलीफा के मुकाम पर पहोंचे और उसके मुखबिरोंने खबर दी. तब खलीफा को वो खयाल हुआ के शायद वो हझरत काझी मोहंमद (रहमतुल्लाह अलयह) खुद तशरीफ लाये हैं के जो मेंने ख्वाब में देखे थे. ये केहकर खलीफा आपके ईस्तकबाल के लिये सामने आया. तो वो पेहचान गया तब आपने कहा के तेरे और मेरे मिलने का ये वसीला था. वर्ना तुं कहां सुलतान और में कहां दुरवेश, उसी वक्त सुलतान आपसे बगलगीर हुवा. और अर्झ की के आप मेरे यहां रहो और मकाम और वझारत कुबूल फरमावो. तब आपने बादशाह की दिलजोई के लिये ओहदा कुबुल फरमाया. और आप वहां मसनद नशीं रहे. और आप हंमेशा

रोझा रखते थे. आपने बादशाह से अपने ओहदे का इस्तेफा दे दिया और खुदा की बंदगी में मश्गुल रहे.

औरत को देव माहुन के चुगांलसे छुडाना

अेक रोझ का वाकेआ हय के अेक शख्स अपनी बीवी को महाफे में लिबठाकर जा रहा था और रास्तेमें कझाअे हाजत पेश आई. तो वो अपनी बीवी को महाफे में छोडकर कझाअे हाजत के लिअे तालाब की जानिब गया. उस वक्त वहां अेक देव (भुत) उस ईन्सान की सूरत में आकर महाफे के साथ औरत को लेकर वहां से चला. जब उसका शौहर फरागत पाकर आया और देखा के औरत और महाफा नहीं है. वहां वो बेचारा चारों तरफ ढुंढने लगा. मगर कहीं पता न चला. तब रास्तेमें अेक मुसलमान उसको मिला और वो बोला के कहां से आये हो तुम? आपने कहीं रास्ते में महाफा देखा? तब वो बोला के हां अेक औरत उसमें बैठी हुई है और महाफा जा रहा है. ये सुनकर वो दो मील तक दौळा और महाफे के करीब जाकर उस देव को ललकारने लगा के अय मलउन! कहां ये मेरी औरत को लेके भागा जाता है? तब वो देव बोला के ये मेरी औरत हय. और तुं उसे मुजसे छीनना चाहता है? और मुझहे डराना चाहता हय? इस तरह से वो दोनो जगडते हुअे अदालतमें फरियाद के लिअे गुजरात के काझीके नझदीक जाकर अपना अहेवाल सुनाए तब काझीने उस औरत से कहा के ईन दोनों का हाल सुना तब औरत बोली के मैं अपनी मां के मकान पर थी और मेरा खाविंद मुजे महाफे में बिठा कर अपने मकान पर ले जा रहा था. और उसे रास्ते में कझाअे हाजत दरपेश हुई तो वो तालाब पर फरागत के लिये गया और फारिग होकर मुजे मुहाफे के साथ दो कोस तक चला, ईतनेमें ये शख्स दौडा हुवा आया और ये आपसमें जगडने लगे. और ईसी हालतमें आप के पास हाजीर हुवे हैं ये दोनों बराबर हमशकल होने की वजहसे मैं कुछ बता नही सकती के मेरा शौहर कौन है ? फिर तो काझी भी गभरा गये और उन्होने मशवरा तय किया के फैसला मुश्कील हय मगर यहां से सब चलके सारंगपुर जहां हझरत काझी मोहंमद (रहमतुल्लाह अलयह) जरवागरे हैं उनसे ये माजरा सुनाकर सही फेंसला पा सकते हैं ईस गरझ से तमाम के तमाम सारंगपुर हझरत की खानकाह में हाजिर हुवे और वहां

जाकर तमाम हाल आपको सुनाया तो आपने अेक आफताबा (बदना) मंगाया और उस देवसे कहा के तुम दोनों में से जो उसका हकीकी शोहर हय वो आफताबे में से मुंहकी तरफ निकले, उसे हम ये औरत बख्श देंगे. वो देव उस बदने में घुसकर कलाम करने लगा, तब आपने बदने का मुंह बंधकर दिया तो वो देव बोला के आपने मुझे हिकमत से बंधकर दिया मगर मैं मेरी गलतीका अेकरार करता हुं और आईन्दा कभी अैसा न करुंगा. आप मुझे रिहा कर दो तो मैं मेरी तमाम उम्र आपकी गुलामी में रहुंगा तो आपने उसे बदनेकी कैद से रेहाई दी तो वो आपके सामने दस्त बस्ता होकर मुआफी का तलबगार हुवा. वो औरत उसके खाविंद को दिलवाकर उसे उसके मकान पर जाने की ईजाझत दी तो वो मियांबीवी अपने मकान पे गये और वो देव जिसका नाम माहुन था उसको भी आपने रजा दे दी.

साबरमती डुबती डुबती नाव इन्सानों की अपनी नालेन (जुती) से बचाना

अेक रोज हझरत शाह काझी मोहंमद (रहमतुल्लह अलयह) तफरीरह के लिअे साबर नदीके किनारे तशरीफ ले गये. उस वक्त बारिशका मौसम होने से नदी भरपूर जारी थी. वहां चंद लोग कश्ती में सवार होकर पानी में पार होने के लीअे जा रहे थे. नागाह अेक भंवर (गिरदाब)में कश्ती फस गई और ये करीब था के कश्ती डूब जाये तब कश्ती के ना खुदाने शोर मचाया तो आपने अपनी नालेन (जूती)को हुक्म दिया के ईस कश्ती को किनारे पर ला. उसी वक्त आप की नालेन ने कश्ती को पकडकर किनारे लगा दी और कश्ती के सवार बाआसानी नदीसे पार हो गये.

शैर का मकान बिछछुने ले लीया जो दिला देना

अेक रोझ का वाकेआ हय के हझरत शाह काझी मोहंमद (रहमतुल्लह अलयह) अपनी खानकाह में जलवा अफरोझ थे. ईतने में अेक शैर आपकी खिदमत में हाजिर होकर फरियाद करने लगा के मेरा मकान अेक बिच्छुने छिन लिया हय. तब आपने बिच्छु को बुलाया और हाजिर हुवा तो आपने फरमाया के तु ईस शैर बबर

को क्यूं सता रहा हय और उसका मकान किस लिये तुने छिना हय? तो वो बोला के ये शैर नाहक जानवरों को मारता है ईस लिये मैं उसको हैरान करता हुं. तो आपने फरमाया के जो जिसका कसब है वो किया करे ईस तरेह ये शैर भी अपना काम कर रहा है और तुं उसका घर छोळदे. मगर वो बिच्छु अपने झेहर पर गुरुर करता था. और वहां से निकलने को ईन्कार किया तो आपने अपनी नझरे अबदालियत से देखा तो उसी वक्त वो बिच्छु बकरी की सुरत बन गया. ये हाल देखकर शैर उसकी तरफ दौळा. वो भागा और अेक कूअे में जा गिरा तो मायुस हुवा. उसका फख्र तूटा तो आपने उसको बाहर निकलवाया और उसे उसके मकान का रास्ता बताकर रवाना कर दिया. और शेर को भी उसका मकान दिलाकर खुश किया.

आपकी औलाद न होना ख्वाब आना, आपकी औलादे पाक

हझरत शाह काझी मोहंमद (रहमतुल्लाह अलयह)के वहां अर्से तक कोई औलाद न हुई थी तो मोहल्ले की औरतोंने आपकी बीवी से कहा के आपकी गोद अभी तक खाली क्युं हय? ये बात आपकी बीवीने हझरत को कही तो आपने जवाब दिया के ये हाल कल तुमसे झाहिर करुंगा. ये केहकर आप मकान बंधकरके सोये तो आपकी बीवीने ख्वाब में देखा के अरबी झबान में अेक अलिफ और तीन हे खुशखत देखे तो आप हझरतने कहा के आपको परवर दिगारे आलम तीन फरझंद और अेक लळकी अता फरमाअेगा. फिर तो आपके बतन से जो साहबझादी पैदा हुई उनका नाम अकामलकअफीफा रखखा. और आपके तीन साहबझादे हुवे. (1) हझरत शाह सय्यिद हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) (2) हझरत शाह सय्यिद हामिद (रहमतुल्लाह अलयह) और (3) हझरत शाह सय्यिद हम्माद (रहमतुल्लाह अलयह)

वफात बाद की करामत - वफात साल

हझरत शाह काझी मोहंमद (रहमतुल्लाह अलयह) का वक्ते विसाल करीब आया तो आपने लळकों को बुलाकर दुआअें दीं. और आप बहक्के जान हुवे. आपका विसाल

रजब की पांच तारीख को हुआ है आपकी वफातके बाद आपके रौझए अकदस पर जो कोई आकर कुरआन शरीफ की तिलावत करता और उसमें कोई गलती होती तो आप मझारे मुबारक से उसकी गलती सुधरवाते थे. ये मामला काफी अर्से तक चला मगर अेक रोझ अेक दुरवेश फातेहा के लिये तशरीफ लाये थे और उन्होंने कहा के ये बात अच्छी नहीं क्युं के ये काम नबीयोंने भी नहीं किया हय, तो आप ईस कामसे बाअझ आये. उस रोझ से आपने गल्ती का निकालना बंद कर दिया. ईस बात के लिये शहेरमें खबर हुई तो वहां बडा हुजुम होता था ईससे आपको भी तकलीफ महेसूस होती थी.

हजरत सय्यिदना शाह काझीउल आलम शाह हम्माद सोहरवर्दी, कादरी के हालात

आपका नाम सय्यिद शाह हम्माद था । और खिताब काझीउल आलम था । आप के वालिद का नाम हजरत सैय्यिदना शाह मोहंमद बीन सय्यिद शाह कुतुब महमूद कारंटवी था। आप तीनो भाइ हजरत सय्यिद शाह आलम महेबूबे बारीसे मुरीद थे । जैसे (1) सय्यिद शाह हमीदुद्दीन चाहेलदाह (2) सय्यिद शाह हम्माद (3) सय्यिद शाह हमीद रहेमतुल्लाहे तआला आपने 12 या 18 साल की उम्रमें हर तरह के इल्म हांसील कर लिया था । उसके बाद इस्लाम की तब्लीग व दीन के फैलानमें लग गये. पहले गुजरातमें और आसपासके गांव शहेरोमें हिदायत व इस्लामकी बुलंदी के लिये घुमते रहे । और तोहीदो-रिसालत का पैगाम पहोंचाते रहे । काफी साल तक बादशाह के सिपाही व सेनापति बनके दीने-हक की बकां के लिये जेहाद करते रहे ।

आपकी गिनती उच्च दरजे के परहेजगार और मुतवककीया में शरीअत की रोशनीमें हलाल रोजी हांसील करते और सच्चाइ का रोशन मीनार थे । कभी कहीं अपने दोस्तो के यहां दावतमें जाते और वो खानेमें शक जाता तो आप उलटी कर डालते थे । और ये खाने पीनेकी अगर शक होता तो आप उस चिझको न खाते न हाथ लगाते ये आदत आपके घोडे में भी आपकी सोहबतसे आ चुकी थी वो भी शक वाला चारा न खाता । सुब्हानल्लाह

आखरी जीन्दगींमें आप अकसर वकत तन्हाइमें रहेना पसंद करते और अल्लाह तआलाकी यादमें लगे रहते आपकी खानकाहमें दुन्यादारीकी चर्चाव गुफतगुं बीलकुल न होती थी । आपकी वफात 36 सालकी उम्र में हुई थी । तारीखे ओलीया अे गुजरातमें तारीखे दककन के हवालेसे अेक किस्सा नकल कीया है वो ये है...

आप जयादातर अकेले व तन्हा रहते थे । खादीम आपसे कोइ सवाल करता तो आप जवाबमें ये फरमा देते के मेने अता कर दिया, मेनें दे दिया या में नहीं दुंगा । ये अल्फाज बोलनेसे आलीमोमें काफी हंगामा बरपा हो गया और सब आलीमोने गुफतगुं करके आपको कत्ल करने का फतवा तैयार कर दीया । वकत के बादशाह ये फतवे पर अमल करने, करवाने के लिये काफी बार कहेने में आया । बादशाहने ये फतवे पें अमल करनेका फैंसला कर लीया और कहा की जीस तरहा हुशैन मन्सुर के उपर कत्लका हुकम करनेका फतवा दीया था वैसा ही हुकम आपके भाइ हझरत सय्यिदना शाह काजी हमीदुद्दीन चाहेलदाह करे और अपने दस्तखत कर दे । तमाम आलिम हझरत शाह काझीउल आलम हमीदुद्दीन सहाब पास गये और सारा माझरा कहे सुनाया । हकीकत सुनकर हझरतने कहां में शाह सय्यिद शाह हम्माद के पास जाता हुं इन्हे समझाने की कोशीश करता हुं अगर वो मान गये तो ठीक है, वरना इस फतवे पे में लीख दुंगा ।

आप शाह हम्माद पास आये उन्होने कहा भाइ ये लोग तो नहीं जानते समझते मगर कया आप भी नहीं जानते ! आप तो जानते हो की में अपनी जानिब से कुछ नहीं कहेता कहेनेवाला और कोइ है ... मगर देखो ये फसाद कीसने कीया है उसकी जडमें काट डालता हुं । ये फसाद और वाकीयात बनानेवाले मींयाजी थे । वो ये दोनो भाइके उस्ताद थे । यानी शाह हमीदुद्दीन व शाह हम्माद रहमतुल्लाहे अलयह के हजरत शाह हमीदुद्दीन के कहा हम पर उस्ताद का हक है उसे बरबाद न करो । शाह हम्माद ने फरमाया और कुरआन करीम की आयत तिलावत की ओकतोलुल मुस्की-कबल ल-इझी (नुकशान करनेवालाको उसके सताने के पहले ही मार डालो) ये गुफतगु दो भाइके बीच चल ही रही थी के उस्ताद के पेटमें दर्द चालु हो गया । हजरत शाह हमीदुद्दीन को ये खबर मीली तो आप परेशान हो गये और आपने कहा की हाय रे मेरे उस्ताद ये जोरसे कहा उस लिये की कहीं शाह हम्माद की नजर हट जाये । और आपकी दुआ जो असर करती थी वो उस्तादके हकमें बदल जाये ।

मगर शाह सय्यिद हम्माद ने फरमाया के मींयाजी उस्ताद मेरे पास आकर ये फतवा रजु कर दे तो वो जल्दी ठीक हो जायेंगे ।

ये सुनकर हजरत शाह सय्यिद हमीदुद्दीन चाहेलदाह कादरी उस्ताद के पास आये और उपर की बात कही मगर उस्ताद मींयाजी ने कहा में अच्छी तरह जानता हुं की उनके पास जाउंगा तो ठीक हो जाउंगा । मगर अब 62 सालकी उम्र हो गइ है । शरीअत के हुकम चलते चलते अमल करते करते अब कुछ दिन रात बची है और थोडी उम्र बाकी है में शरीअत पर अमल पैरा रहुंगा और उस मुताबीक शरीअत की हिफाझतपे अमल करते जान दे दुंगा । आखीर कार आपका इन्तेकाल हो गया । फातेहा ख्वानी के लिये दोनोभाइ गये और काफी लोग भी उन्के जनाझेमें शरीक थे । हझरत शाह सय्यिद हम्मादने आपकी कब्र पर फुल रख्खे तो वो कबर के ढेर उपर से नीचे पड गये दो बार रख्खे उसी तरहा हुवा । ये देखकर सब हाजरीन हसने लगे तो आपने कब्रसे मुखातीब होकर फरमाया की उस्ताद का हक सामने आता है । मेनें आपकी दुन्या तो बिगाड डाली है उस तरहा आखेरत की मझासे भी महेरुम

कर दुंगा और ना उम्मीद कर दुंगा। ये कहेते आपकी कब्र हलन लगी और आपने तीसरी बार कब्र पर फुल रख्खे वो ठहर गये।

ये जीन्दा जावेद बयानात जो करीब 650 साल पहेले के है ये अकाबैरीन के पक्के सच्चे वाकियात पढकर भी हम सबक कयुं नहीं लेते ये झाहेरी शरीयत और बातेनी, इल्म तरीक हकीकत मारेफत के राझोको कयुं हम समझने की कोशीश करनेका सलीका भूल गये है। अल्लाह त्आला हमारी हिफाझत करे। आमीन.

हजरत काजी सय्यिदशाह हम्माद उल आलम रहमतुल्लाह अलयहे को विसाल के बाद मदारीजे विलायत अबुर करवाये

हजरत शाह हम्माद अल मशहुर काजी उल आलम रहमतुल्लाह अलयहे हजरत सैयदना शाह महमूद कारंटवी रहमतुल्लाह अलयहे के पोते और हजरत काजी सैयदना शाह मोहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलयहे के मंजले फरजंद है। आपकी विलादत 852 हि. में हुई और आपने 863 हि.को हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहेसे बैयत का शर्फ हांसिल कीया। बैयत से पहेले ताजदारे मदिना हुजुरे अेहमद मुजतबा मोहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहो तआला अलयहे व सल्लमने हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहेको ताकीद फरमाई थी के काजी उल आलम रहमतुल्लाह अलयहेको सिलसिलेमें दाखिल करके फैजान उर्फाने ईलाहीसे मुशर्रफ फरमाअें। बैयत से मुशर्रफ होनेके बाद हजरत काजी उल आलम रहमतुल्लाह अलयहेने 12 साल तक खुदा के रास्तेमें जिहाद कीया। इसके बाद 12 साल तक खिलवतगजी होकर यादे इलाहीमें मश्गुल रहे। रियाजते शाका और नजाराअे तजलीयात इलाही से इन पर जजब तारी हो गया था। यहां के 12 साल आपको ईसी आलममें जजब व मस्तीमें गुजर गअे। यहां तक के एक दिन शाह बदीउद्दीन तबउल मदार रहमतुल्लाह अलयहेकी रुह जाहीर हुई और आपसे फरमाया अेय हम्माद! कब तक दश्त जजब बेहोशी में सर गिरदां रहोगे। आओ हमारा हाथ थाम लो हम तुम्हें राहे सुलुक पर ले चलते हैं। लेकीन हजरत शाह हम्माद काजी उल आलम रहमतुल्लाह अलयहेने निहायत अदब व अेहतराम के साथ अर्ज कीया के मेरे लिये मेरे शेख करामतका दस्त काफी है। ईसके बाद ख्वाजा ख्वाजगां ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन संजरी अजमेरी रहमतुल्लाह अलयहेकी रुहे मुबारक पाकने नुजुल इजलाल फरमा कर फरमाया के अेय हम्माद। कब तक कुचअे जजब व

दहेशतमें भटकते रहोगे आओ हमारा हाथ थाम लो हम तुम्हें वासीले बहकक कर देंगे । लेकीन आपने बारगाहे ख्वाजा गरीबनवाज रहमतुल्लाह अलयहेमें भी सरापा मुअदब होकर अर्ज कीया हुजूर मेरी दस्तगीरीके लिये मेरे पीरोमुर्शीद हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहेका दस्त मुबारक काफी है । बाद अजां मेहबुबे सुब्हानी कुत्बे रब्बानी अबु मोहम्मद सैयद अब्दुल कादीर मोहीयुदीन गौषे जिलानी रहमतुल्लाह अलयहेकी रुहे मुकद्दसा जलवाआरां हुई और बसद हजार शफककत फरमाया अेय हम्माद ! आखिर कब तक अपने आपको ईस तरह आतीशे जजबमें सोखता करते रहोगे हमारा हाथ थाम लो हम तुम्हें वासीले बहकक के लिये देते हैं । लेकीन हजरत शाह हम्माद रहमतुल्लाह अलयहेने दस्तबस्ता अर्ज कीया अेय सरताजे ओलीयाअे जमाना बंदा कमतरीन के लिये हजरत सैयद मोहम्मद सिराजुद्दीन शाहेआलम बुखारी रहमतुल्लाह अलयहेका दस्त हकक विसाल काफी है । अैसी तवजजोह फरमाअें के खरमन वजुद व खुदी आतीश ईश्क मुर्शीदी में जलकर खाकत्तर हो जाअें । पस कमतरीन पर आपका ईतना ही करम काफी होगा । जिस दिन ईस अरवाह मुकद्दसाका नजुल हुआ था ये वही दिन था जिस दिन हजरत शाहेआलम मेहबुबे बारी रहमतुल्लाह अलयहेने सफर आखिर फरमाया था । ईन अरवाह मुकद्दसा की आमद की बरकतसे ये केफीयत जजबा जाईल हुई । रातका पीछला पहोर था हजरत शाह हम्माद रहमतुल्लाह अलयहे सारंगपुर तशरीफ रखते थे । दुरीके परदे उठे और यक बे यक हजरत शाह हम्माद रहमतुल्लाह अलयहेके रुबरु तुरबत मुकद्दसा शाहेआलम मेहबुबे बारी रहमतुल्लाह अलयहे जाहिर हुई । आपको मालुम हुआ के मुर्शीद बरहकक हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहे तो रेहलत फरमा गअे । आप ईसी वकत हालते बेकरारीमें अपना शिजरा और वो कुला मुबारका जो हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहेने बैयत होनेके वकत अता फरमाई थी लेकर रसूलाबाद की जानीब रवाना हुअे और खानकाहे शाहीया में वारीद हुअे । इस वकत तुरबते शाहीया पर कोइ इमारत नहीं थी मजार मुबारका खुले मेदानमें था । हजरत काजी उल आलम रहमतुल्लाह अलयहे ने मजारे शाहीया के गिलाफ मुबारक को पकडकर हालते इद्तराबीमें बयश्म पुरनम अर्ज कीया । अय बादशाहे मुल्के मआरेफत मेरा हाथ पकड लें अय आका आपको मेरा हाथ पकडना ही होगा इसलिये के जमाना आपको दस्तगीर कहेता है । इसके बाद अर्जकुना हुअे के बंदा दरसे गफलत न बरते हम्माद आपके दरेदौलत पर हाजीर हुआ है आरजुअे वली पूरी फरमा दीजीअे या फीर कमतरीन को दिलेशीकस्ता वापीस फरमा दीजीये लेकीन ये आप जैसे करीम आकाओं का दस्तुर नहीं है । हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह

अलयहे के मजार मुबारकसे आवाज आइ अेय हम्माद । इस तरह रो-रोकर अपनी जानको हिलाक न करो ईन्तेजार की घडीयां बीत चुकी अब साअत सईद आ पहुंची है । देखो सुल्ताने अंबीया महबुबे कीब्रीया जनाब अेहमदे मुजतबा मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम । इस फरमान जिशान के सुनते ही हजरत हम्माद रहमतुल्लाह अलयहेकी रुहे मुबारक तनेखाकी से बाहर आई और आप गश खाकर जमीन पर गीरे और रुहे काजी उल आलम रहमतुल्लाह अलयहे रुह हजरत शाहेआलम मेहबुबे बारी रहमतुल्लाह अलयहेके पीछे पीछे जानीबे मदीना तैयबा रवाना हुई और बारगाहे हुजुर पुरनुर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम से बारीयाब होकर बवसीलाओ जमीला शाही लुत्फे इलाही चशीदाओ जाम इरफाने इलाही हुइ और बारगाहे हुजुर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम से आपको काजी उल आलम का खिताब अता हुआ । ये वाकेआ तो था शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहेकी रुह मुबारकके हमराह मदीना मुनव्वरा हाजीर होकर फैजयाब होने और बारगाहे रिसालते मआब सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम से काजी उल आलम का खिताब पाने का । अब जरा रोजओ शाहीया का भी वाकेआ सुनीये जब दिन नीकला और रोजओ शाहीया के मुजावर आओ तो देखकर हैरतजदा हुओ के मजारे मुबारक शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहे पर हजरत शाह हम्माद रहमतुल्लाह अलयहे को मुरदा यानी बेहोश पाया । आपके जिस्म मुबारक पर ईस वकत सिपाहीयों का लिबास था सबने एक जबान कहा के मालुम होता है के किसी लश्करी से रातमें कोई बेअदबी मजारे मुबारक पर हुई ईसलीये अपनी सजाको पहुंच गया यआनी मर गया । आस्तानओ शाहीया के फुकरामें से एक हकक रसीदा फकीर ने जब ये माजरा देखा मुजावरान रोजा शाहीया ईस लश्करी की तकफीन व तदफीनमें जल्दबाजी कर रहें हैं तो ईनको हिदायत की के खबरदार ईस लश्करी को आप लोग मुरदा तसव्वुर न करें और न ईसकी तकफीन व तदफीन में जल्दी से काम लें । ईस हालत व केफीयत से एक राज वाबीस्ता है अभी चंद घडीयें गुजरी थीं के काजी उल आलम रहमतुल्लाह अलयहेके जिस्म बेजान में हरकत पैदा हुई और आप अंगडाई लेकर बेठे और मजारे शाहीया को बोसा दीया । बारगाहे शाहीयासे आपको ईशारा रुहानी हुआ के बातीनी तकमील तो हमारी थी हम जाहीरी तरीका पर तुम्हें फरमोश नहीं कीया है । अपनी हयाते जाहेरी की में नेअमत व खिरका खिलाफत व ईजाजत बतौरे अमानत मीयां अेहमद मख्दुम रहमतुल्लाह अलयहेके सुपरद कर दीया था अब जाओ ईनके पास जाकर अपनी अमानत ईनसे ले लो । आप मुर्शीदे गिरामीका हुकम पाते ही केफीयते शबाना से सरशार जजबाओ शबाना के साथ

काशानाओ आलीया हजरत मीयां अेहमद मख्दुम रहमतुल्लाह अलयहे पर हाजीर होकर तालीब नेअमत व अमानत हुओ । मख्दुम साहब रहमतुल्लाह अलयहेने बतोरे मजाह फरमाया आपको हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहेने भेजा है आपके ईस दावे का शाहीद भी आपके पास है ? आपने जवाब दीया अपने ईस दावे का में खुद शाहीद हुं ये सुनकर हजरत मीयां अेहमद मख्दुम रहमतुल्लाह अलयहेने तबस्सुम फरमाते हुओ फरमाया आपकी ये बात अजरुओ शरीयत कैसे सही हो सकती है के एक शख्स अपनी अमानत तलब करे और खुद को बतौरे शहीद भी पेश करे । हजरत काजी उल आलमने अर्ज कीया मेरे ईस दावे पर आप भी तो शाहीद हैं के जो कुछ में केह रहा हुं वो बात गलत नहीं । बिलआखर हजरत मीयां मख्दुम रहमतुल्लाह अलयहे हजरत काजी उल आलम रहमतुल्लाह अलयहेको अपने हमराह लेकर रोजा-ए-मुनव्वरा हजरत शाहेआलम मेहबुबे बारी रहमतुल्लाह अलयहे पर हाजीर हुओ । जैसे ही दोनो बुजुर्गवार मजारे शाहीया के करीब आओ मजार मुबारक का तावीज एक तरफ अलायदा हो गया और हजरत शाहे आलम मेहबुबे बारी रहमतुल्लाह अलयहेका कामत नुरानी जाहीर हुआ । ईस वकत अैसी तजलीयात जाहीर हुई के खानकाह शरीफके दरोदिवार रोशन व मुनव्वर हो गओ । कसम बखुदा की सुरज तो ईनका गुलाम है ईसलीये ईनकी रुख की तलअतों से शरमींदा है । अलकिस्सा मुख्तसर हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहे जिस्म मुबारकके साथ जाहीर होकर मीयां मख्दुम रहमतुल्लाह अलयहेको हुकम दीया काजी उल आलम रहमतुल्लाह अलयहेको खिरका पहेनाओ । काजी उल आलम रहमतुल्लाह अलयहेने दरबारे शाहीयां में दस्तबस्ता अर्ज कीया जबके हुजुरे बाला बजाते खुद जलवा अफरोज हो चुके है तो अब ये खिरका मुजे आप अपने दस्त मुबारक से पहेनाकर सरफराज फरमाईये और ये अशआर पढे ।

अगर आप शर्फ मंजिल शाही से मुजे नवाज देंगे तो मुज जैसे गदा का सर दुनिया की नजरो में उंचा हो जाअेगा । अलकिस्सा मुख्तसर हजरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहेने आपको अपने दस्त मुबारकसे खिरकाओ मुबारका पहेनाया और सीनाओ फैज गंजसीना से लगाकर पैशानीको बोसा दीया और फरमाया जाओ हमने आज से तुम्हें मुकामे कुन फयकुन अता कीया । (अज सदहिकायत फारसी सफा-51-55, रेहानतुल अबरार फारसी सफा-242)

(नोट : ये हजरत शाह सैयद हम्माद रहमतुल्लाह अलयहे, हजरत ख्वाजा मियां महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाहे अलयहे के चिचा और उस्तादे मुहतरम हंय)

ख्वाजा महमूद दरियाई दुल्हा के वालिदे गिरामी

सुल्तानुल आशेकीन, बुरहानुल आरेफीन, ताजुल मोहककेकीन, आलिमे कुनूझुल्लाह, कामिले फी तरीकुल्लाह, अल गौसु फी बहरिल्लाहे, कुत्बे अकताबे आलम, अता-अे शाहे आलम

ख्वाजा हजरत सैयदना शाह हमीदुद्दीन

आरिफ बिल्लाह चाहेलदा सोहरवर्दी कादरी

पैदाइश : हि.813, इ.स.1392, वफात : 5 सफर हि.911,
इ.स. 8 जुलाइ 1490, उम्र : 98 साल
आस्ताना : मु. बीरपुर शरीफ, जी.महीसागर

हझरत शाह हमीदुद्दीन कुत्बुल अकताब तालिबो आरिफे रब्बे यगाना अैसे पीरो शाह थे के कभी आपने अपनी उम्रमें सुन्नत और मुस्तहब को तर्क नहीं किया और आप चलते वक्त आगे पीछे नझर न उठाते थे. बल्के आप अपने मुंह मुबारक पर नकाब डाले रखते और आप जनाना हरमु की तरफ कभी नझर नहीं करते थे और आप मस्जिदमें ही नमाजें बाजमाअत अदा करते थे. और ईबादतमें जो कुछ नेअमतें आपको हांसिल होती वो यारोंको अता कर देते थे. आपने अहमदआबाद में बारह साल तक ईल्म हांसिल किया हय. आपने कभी लझीझ खाना तनावुल नहीं फरमाया है. आप हकीकत और मारेफत से आगाह थे और अपना भेद किसीको न बतलाते और आप कभी चारपाई पर नहीं सोते थे और आपकी गिझा नाने जव थी. आप कभी किसी के वहां झियाफत में जाते तो अेक दो लुकमा खाकर वापस घर को चले आते.

इल्म हांसील करने शाहेआलम सिराजुदीन महेबुबे बारीकी दर्सेगाहमें जाना व मुरीद होना

जब आप बालिग हुवे तो आपको खुदबखुद तबीअतमें तनाव हुवा और आपको हझरत शाहेआलमके पास जानेका दिलमें जोश पैदा हुवा और आपने कहा, मैं कल फजरकी नमाझ के बाद हझरतकी बारगाह में हाझिर होउंगा और उनकी खिदमतसे

सरफराझ होउंगा. आप आपकी बारगाह में पहुंचे उस वक्त वहां बडा मजमा था. आप उस जगह पर मस्जिद के गोशेमें बैठे तो हझरत शाहेआलम (रहमतुल्लाह अलयह) कहेने लगे खुद्दाम से के हझरत शाह हमीदुद्दीन को मेरे पास लाओ. तब खुद्दाम वहां मस्जिद में आपको बुलानेके लिये पहोंचे. उस वक्त वहां बहोत बळा झमेला था, उसमें हझरत शाह हमीदुद्दीनको कोई पहेचान न सका और पुकारा आपके नामसे मगर ईस नामके बहोतसे ईन्सान उस जल्सेमें बैठे हुअे थे तो खुद्दामने हझरत से जा के कहा के ईस नाम के बहोत ईन्सान मौजुद हैं तो हम किसको बुलावें तब आपने कहा के जाओ और शाह हमीदुद्दीन ईब्ने मोहंमद के नामसे बुलंद आवाझमें पुकारो. तब खुद्दामने ईसी नामसे पुकारा तो ईस नाम से कंई ईन्सान हाझिर हुवे तो खादिम घबराये और वापस जाकर हझरत से कहा के ईस नाम के कंई ईन्सान हैं तब आपने कहा के अेक तालिबे ईल्म है ईस शिकल का है, और फलां गौशे में मस्जिद के बैठा है और सबक पळह रहा है, उनको ले आओ. फिर तो हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) को हझरत शाहेआलम के पास लाअे गये तो आपने फरमाया, अय शाह हमीदुद्दीन बिरादर! के क्या फरमाते हैं अहले शरीअत ईस हकीकतमें के फरिश्तों को खुदा होवे दीदार ! दिया ना हो कहो मर्द होशियार, तब हझरत शाह हमीदुद्दीनने फरमाया, ये दीदार की दौलत हझरत जिब्रईल अमीन के लिये है. ये सुनकर हझरत शाहेआलम (रहमतुल्लाह अलयह)ने आप के सामने चंद कदम बळहकर बडी ईज्जत के साथ बगलगीर किये और फरमाया के जो कुछ मुजे अता हुवा वो मैंने बशौके दिल तुमको दिया और आपको मुरीद बनाये. आपको शजरा अता किया और आपने फरमाया के हमने शाह हमीदुद्दीन के उपर जो बोझ रखखा है वो अगर पहाड पर रखते तो वो मिस्मार होकर झमीनमें नाबुद हो जाता मगर ये तो अल्लाह के मकबुल बंदे हैं।

सैयद समीउद्दीन उर्फ हझरत काझी साधन

हझरत शाह समीउद्दीन कदद सल्लाहो सीर्रहु हमदानी अली सैयद की औलाद से थे. और आपको बादशाहने झैनाबाद का काझी मुकर्रर किये थे. उनकी छे लळकियां थी. उनमेंसे चार लडकीयां हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)

के अकदमें दी थी. अव्वल हझरत बीबी फतेह मलक बीबी, दोयम हझरत बीबी माह मलक, सोयम हझरत बीबी राजेमलक और चाहारुम हझरत बीबी मलक ये चारों बीबी अेक की वफात के बाद दुसरी ईसी तरहा चार बीबी हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) के अकद में दिये गये थे. और हझरत समीउद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) के पांचवी साहबझादी बीबी मखदुम थी. उनका अकद हझरत शाह झैनुल आबेदीन उर्फ फरीदुद्दीन साहब के साथ में दिये थे. आप ओड के हाकीम थे आप का कयाम ओड के कस्बे में था और आपका रोझा आज भी ओड के कस्बे में मौजूद है और वहां आपका उर्स बडी धुम धाम से मनाया जाता है. और आपकी छठ्ठी साहबझादी हझरत बीबी मरीयम मलक थी उनके साहबझादे हझरत शाह अल्हादिया थे. और वो कस्बे झैनाबाद में वफात पाये है. जब हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) ने बीरपुर बसाया तो आपके ससूर को आपने झैनाबाद से बीरपुर बुला लिअे.

पेशीनगोइ व शाह सैयद महमूद दरियाइ के लिये सरकारे मदीना की बशारत से निकाह करना

और आपने बीरपुर गांव आबाद किया और कस्बे बीच आप रेहने को आये जब कारीठे को बसे करीब 200 साल हुवे तब बीरपुर में ईस्लाम फैला और फिर हझरत शाहआलमने फरमाया के ईनके आने से मैं बहोत खुश हुं और आपके पास बत्ती और तेल था. उसको अेक बार रोशन किया. और आपने फरमाया के ईन्की पुश्त से अेक अैसा महेबूब पैदा होगा के वो अपने वक्त का कुत्बुल अकताब होगा और उनसे सब फैझियाब होंगे. अेक रोझ सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमने ख्याबमें हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) को फरमाया के तुमसे उम्र भर में अेक सुन्नत फौत नहीं हुई और अेक सुन्नत बाकी हय वो ये के आप निकाह कर लो ये मेरा फरमान है. और आपकी पुश्त से बहोत से औलिया पैदा होनेवाले हंय. ये हुकम सरकार का पाकर आपने हझरत शाह समीउद्दीन साधनशाह के घर शादी का पयगाम भेजा तो आप खुश हुवे मगर हझरत शाह साधन के भाईने ईन्कार किया अेक रोझ हझरत शाह हमीदुद्दीन हुजरेके बीच ईबादत में मशगुल थे वहां हझरत शाह

साधन आपके भाई को हुजरे में ले गये. और दिखाये के आपकी शान क्या है और कैसा आपका बुलंद मरतबा हय वहां जा के बैठे तो देखा के आपके बाजु में दो शैर रखखे है ये देखकर हझरत शाह साधन के भाई खुश होकर कहेने लगे के बेटी का निकाह हझरतसे कर दिजीये. और आपका निकाह कर दिया गया कंई मुद्दत के बाद हझरत शाह महमुद (रहमतुल्लाह अलयह) हुकम रब्बे माअबुद से पैदा हुवे. और उसके बाद भी ईस शाह के उस बीबीसे फरझंद हुवे.

हझरते सैयदना शाह हमीदुद्दीन चाहेलदा निकाह का वाकियात

हझरत सैयद हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे की शादी जैनाबाद उर्फे अमथनी शहेर के सादात खानदान में हझरत सैयद समीउद्दीन उर्फ काझी सादात की चार शहाबझादी से अलग-अलग अेक के बाद अेक आपने निकाह कीया था ।

हुझूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के मुत्ताबीक आपने ये निकाह कीये थे । हझरत सैयद समीउद्दीन का खानदानी रिश्ता हझरत मीरां सैयद अली हमदानी ने मीलता है । आपकी पहेली बीबी हझरत सैयदा फतेहमलक से निकाह हुवा था । जीनसे हझरत सैयद हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे के यहां (1) हझरत सैयद सैयद शाह मारुफ (2) हझरत सैयद शाह ख्वाजा महमूद महबुबुल्लाह उर्फे दरियाइ दुल्हा तझकरीयह हाझा (3) हझरत सैयद शाह अहमद पैदा हुवे ।

हझरत सैयदा बीबी फतह मलक के इन्तेकाल के बाद शाह हमीदुद्दीन साहबने सैयद समीउद्दीन की दुसरी सहाबझादी माहे मलक से निकाह कीया । उनसे दो लडके और अेक लडकी (1) हझरत सैयद शाह चांद महंमद (2) हझरत सैयद शाह महंमद पैदा हुवे । ये दोनों वलीअे बा-कमाल थे । (3) हझरत सैयदा अमतर्रउफ बीबी - वो भी अपने वकतकी वलीयां थी ।

उसके बाद आपने तीसरी शादी सैयदा बीबी राझे मलक से की । उनसे अेक सहाबझादे हझरत सैयद मोहम्मद गौहर पैदा हुवे । और दुसरी औलादे हुइ मगर बचपनमें सब इन्तेकाल हो गये । और तीसरी बीबी हझरत सैयदा बीबी राझे मलक भी दुनियासे रुखसत फरमा गइ ।

उसके बाद आपने चोथा निकाह हझरत सैयद बीबी मलक से किया । आपसे दो फरजंद (1) सैयद शरफुद्दीन (2) सैयद हुशन पैदा हुवे. कुछ औलादे और भी हुइ जो बचपनमें गुजर गई ।

हझरत शाह हमीदुद्दीन व हझरत शाह मंझन उर्फे शाहेआलम बुखारी (रहमतुल्लाह अलयह)

लिबासे (झर्रीन कपडे) से शाहे आलमबाबा से शाह हमीदुद्दीन का दुन्यवी तरीकेसे पसंद ना आना

हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) अहमदआबाद शहेरमें मद्रसअे शाहेआलम (रहमतुल्लाह अलयह) के पास शबोरोझ ईल्म हांसिल किया करते थे. हझरत शाहेआलम (रहमतुल्लाह अलयह) सुनहरा जोडा (झर्रीन कपडे) पहेना करते थे. ये झाहिर में तो झर्रीन मालुम होते थे मगर हकीकतमें लिबास टाट (खदळ) का था लेकिन ये लिबास झाहिरी झर्रीन होना हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)को पसंद नहीं था. ईस लिये आप हझरत शाहेआलम (रहमतुल्लाह अलयह) की खानकाह में नहीं जाते थे मगर अेक रोझ हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) के चचा हझरत शाह दाउद (रहमतुल्लाह अलयह) हझरत शाहेआलम (रहमतुल्लाह अलयह)की खानकाह में मौजुद थे. उस वक्त हझरत शाहेआलम (रहमतुल्लाह अलयह)ने फरमाया के हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) आपके भतीजे (भतीजा) हमारे मद्रसे में आते हैं. मगर कभी भी हमारी खानकाह में आते नहीं और न हम से मुलाकात लेते हैं. आप हमको खुब जानते हैं और पहेचानते हैं और उनका नसीब हमारे यहां लिखा है और आप उनसे पूछे के ना मिलने का सबब क्या हय? अेक रोझ हझरत शाह दाउद (रहमतुल्लाह अलयह)ने आपसे कहा के आप हझरत शाहेआलम (रहमतुल्लाह अलयह)के पास क्युं नहीं जाते? तो आप बोले के मैं अपनी तरफसे कोई शक नहीं रखता और उनकी अझमत को मैं पहेचानता हुं मगर आपका झाहिरी लिबास देखकर आपके पास जाना मुझे खुश नहीं आता. आपकी कमली (चद्दर) सुर्ख है, आप बिस्तरे गौहर पर सोते हैं और रातको तन्हाई में खुन के आंसु रोते हैं तब हझरत दाउद (रहमतुल्लाह अलयह)ने फरमाया के अगर आपका कपडा सुफेद होता तो आपका सब भेद झाहिर हो जाता झाहिरमें तो लिबास झर्रीन अतलसी है, उसमें कोई शक नहीं. हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)ने कहा, हां मगर दुनिया ईस चीझ से नावाकिफ है.

हझरत शाह हमीदुद्दीन का शाहे गुजरात से मुलाकात का ईन्कार करना

अेक रोज बादशाह को ख्याल आया के मैं हझरत से जाके मिलुं, वो आपकी खिदमतमें हाझिर हुवा मगर आपने उसकी ताअझीम न की और मुलाकात भी न ली. फिर बादशाहने आपसे मिलनेके लिये कंई उल्मा से खुशामत करके मिलना चाहा और आपको अती उझ्झाह आयत लिख भेजी, फिर आपको उसका ख्याल आया मगर बादशाह से मुलाकात की नहीं और आप नदी पे वुझू के लिये तशरीफ ले गये. मगर नदी का पानी बदबु मार रहा था, और पानी कम हो चुका था वो वक्त नमाझे झोहर का था. आपको वझू के लिये पानी दरकार था. ये सोच में थे के यकायक नदीमें पानी भरपुर हो गया. आपने वझु किया तब से ईस नदीमें पानी आपके रोझे के करीब में सुखता नहीं बल्के बेहता ही रेहता हय. कभी उपर और नीचे दुरदराझ पानी नदी का खुश्क हो जाता है मगर आपके दरवाजे के करीब में पानी बहेता ही रहेता है. जब ईस बातकी खबर आम हुई तो लोगोंने सोचा के उपर पानी बहेना बंद हो मगर बुलंद दरवाझे के करीब पानी बहेकर नीचे जा रहा है. ईसकी खोज लोग करने लगे के कहीं कूवे में से या कोई नहेर से पानी आता है ? मगर किसीको उसका पता चला नहीं, ये खबर खलीफाने सुनी तो वो मुलाकात के लीये खलीफा दूसरी बार हाजिर हुवा. तो आप पहाडोंमें चले गये. खलीफा दो तीन रोझ तक आपके मिलने की तमन्नामें हजारों ईन्सानोंको साथ लेकर आया और लोगोंने भी शिफारिश की के बादशाह मिलने के लायक है उसको मिलना चाहिये. मगर आपने फरमाया हमको दुनियादारों से क्या काम शाहों से मुजे क्या सरोकार? जब ईसरार बहोत हुवा तो आपने मिलने के लिये तीन शरतों का ईकरार कराया: अेक तो ये शर्त हय के मेरा जी चाहे वहां तक बैठुं और दुनिया का कोई मामला हमारे पास न लाये. और ईस्लामी लिबास पहेनकर हमारे पास आये, कोई रंगीन लिबास न पहेने, हमारे लिये कोई मालोझर के तोहफे न लाये. ईस शर्त से आपने बादशाह से मुलाकात की मगर बादशाहने हाझिर होकर मोहरों के दो तीन तबक पेश किये, आपने फरमाया अैसा क्युं किया और हमारी क्या शर्तें थीं? जो चीझ तुम लाये हो वो तो गरीबों और मोहताजों का हक है, ये केहकर आप वहां से उठ खडे हुवे और चलने लगे. तब

बादशाहने अर्झ की के ये तोहफा रजामंद और खादिमों को दे दिया जावे. मगर आपने ईन्कार कर के वोह मालोझर वापस ले जाने का हुक्म दिया. बादशाह शरमाकर मायुस हुवा और उसने आपके लिये अेक असा (लकडी) बनवाया. उसमें मोहरें भरी हुई थीं आपकी खिदमतमें भेजी और कहेला भेजा के असा सब अंबियाकी सुन्नत हय मगर जब आपने दूर से असा देखा तो फरमाया उसमें मुरदार की बू आती है ईस असा को कुत्तोंको डाल दो. तब वझीर बादशाह के पास जाकर हाल से आगाह किया और फिर बादशाहने खरबुझे मंगवाये उसमें मोहरे भर के कंई टोकरे में रखकर उस पर अेक अेक खरबुझा सादा रख्खा ,ये तोहफे हझरत को भेजे गये और कहेला भेजा के ये तोहफा आप कुबूल फरमाऔ तब आपने उन खरबुझोंमें से अेक अेक सादा खरबुझा ले लिया और बकिया खरबुझे वापस कर दिये तब बादशाह खुश हुवा और अर्झ की के आप मुजसे कुछ तो फरमाओ तो आप बोले के मुजको चौबीस आम के दरख्त बक्षिस और झमीन चोबीस कस्बा मुजको बक्षिस कर दे. गरझ झाड और झमीन हझरतने लेकर फुकराको अता किये.

हझरत शाह सैयद हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयह का मर्तबए गौस और कुत्बीयत का पाना

अेक रात को आप ईबादत में मशगुल थे के हातिफे गैब से आवाझ आई के आपकी रियाझत और ईबादत मकबुल है. आपको गौस या कुत्बुल अकताब में से आप चाहो वो मरतबा अता करें तब आपने अर्झ की के मैं ईस मरतबे के लायक कब हुं? फिर हुक्म हुवा के हम तुमको कुत्बीयत और गौसियत के मरतबों से नवाझते हंय और बवक्ते फजर बुखारा (रशिया) के शाह रासद का कासिद खत लेकर आपकी खिदमत में हाझिर हुवा, उसमें लिखा हुवा था, आप खुश हों, आपको गौसीयत और कुत्बीयत मुबारक हो. अेक रोझ का वाकेआ हय. के अेक धोबी का बैल गुम हो गया था. उसकी तलाश में जंगल की तरफ ईधर उधर घुमता था. वहां हझरत शाह हमीदुद्दीन साहब रहमतुल्लाह अलयह को झमीन पर लेटे हुवे देखा और वो आपके करीब जाने लगा तो आपके तन से सर को अलाहिदा (अलग) देखकर गभरा गया और आपने उसके पांवों की आहट सुनकर बैठ गये

अपनी असली हालत में और आपने धोबी को बुलाया. उसे अपने पास बिठाकर पूछा के क्युं यहां आया है. मगर वो गभरा गया और अपनी बातको भूल बैठा था और कुछ न बोल सका. तब आपने उसे कहा के तुं तेरे गुम शुदा बैल की तलाश में आया है मगर तेरा बैल चराहगाह में चरता हय. मगर यहां तुने जो राझ याने हमारा हाल देखा हय वो किसीसे झाहिर न करना अगर झाहिर किया तो तुं मर जायेगा और जब तक तुं ये राझ किसीसे न कहेगा वहां तक अमान में रहेगा वो वहां से आपसे ईजाझत लेकर चला. और चराहगाह में उसने बैल को पाया ये बात जब तक शाह हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे ईस दुनियामें बाहयात रहे वहां तक धोबीने ये राझ किसीसे नहीं कहा बाद आपके विसाल के हकीकत से लोगोंको आगाह किया.

बीरपुर की सरझमीं पर ईस्लाम की ईब्तेदा

रिवायत है के गौषुल आलम हझरत हमीदुद्दीन रदियल्लाहो अन्हो को सरकारे मदीना राहते कल्बो सीना मोहंमदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम की बारगाह से हुक्म हुआ के अय हमीदुद्दीन ! अेक मुकाम जिस्का नाम (पादला) यअनी बीरपुर है तुम उस जगह जाकर रहो और ईस्लाम को जारी करो. ये हुक्म आपको ख्वाबमें ४० सालकी उम्रमें पेहली बार हुआ. आप जब अहमदआबादसे कारंटा शरीफ अपने दादा हझरत कुतुब महमूद रदियल्लाहो अन्होकी बारगाह में हाजरी देने और फातेहा व कदमबोशी करने हाजिर हुअे तब वहां दूसरी बार ख्वाबमें सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमने बीरपुर जानेका हुक्म फरमाया. सरकार का हुक्म पातेही आप अपने साथ (2) कव्वाल (2) खादिम और (5) दुरवेश कुल नव साथीयों को साथ लेकर पादला (बीरपुर) शरीफ में जहां बीरापगी की खली थी वहां कयाम किया. उस झमाने में बीरापगी उस गांव का बडा ठाकोर था. और बीरपुर से करीब पीरमगली पहाळ के नीचे के हिस्सेमें दोहलपुर गांव आबाद था. उस गांव में सिद्धपुर के सिद्धराजसिंहकी अवलाद में से अेक लडका वहां का राजा था. जिस्का नाम वाघजी था. हझरत हमीदुद्दीन अलयहिर्रहमाने जब उस खली में (7) दिन गुझारे तो आपके साथीयोंने अर्झ किया, या पीर! ईस जगह कोई आबादी नहीं है. लेहाझा यहां रेहना अक्ल के खिलाफ है. हझरतने फरमाया, ये जगह मुझको

बहोत अच्छी लगती है. ईसी जगह में हमारी जमाअत के गुंबदे होगे. ईसी जगह मेरी और मेरे फरझंद मियां काझी शाह महमूद के कबीले की कब्रें होगी. खादिमोंने अर्झ किया, या पीर ! आपका अव्वल वतन कारंटा और दूसरा वतन सारंगपुर (अहमदआबाद) है. ईस जगह आपकी कब्रें कैसे होंगी ? आपने जवाबमें फरमाया के हक तआलाने गांव पादला (बीरपुर) मुझको और मेरे बेटोंको अता किया है. जब (12) दिन का वक्त ईस खलीमें गुझारे तो बीरापगी के दो, तीन कोली और नोकरोंने आकर कहा के अय मियां! ये खली और ये झमीन हमारी मिल्कत है, लेहाझा तुम यहां से चले जाव और अगर ईस ईलाके में रेहने का शौक है तो दोहलपुर में जाकर रहो, के वहां राजा है वोह आपकी खिदमत करेगा. हझरतने जवाब दिया के तुम्हारे पगीको केह देना के मैं फकीर शख्स हूं और अल्लाह पाकके हुक्मसे आया हुं, ईन्नल अर्द युरेषोहा मिन ईबादियस सालेहुन.

तरजुमा : बेशक झमीन के वारसदार अल्लाह के नेक बंदे है लेहाझा बंदे को जिस जगह रेहने का हुक्म होगा वहां रहेंगे. पगी के नोकरोंने वापस जाकर वैसाही जवाब सुना दिया. बीरापगीने सोचा के अैसा न हो के जैसा हाल कारंटा का किया, कहीं मेरे गांव बीरपुर का न करे, ईस लिये भलाई ईसी मे है के जल्द से जल्द ईन लोगों को मेरी खली से भगाओ. ये ईरादा कर के चालीस कोलियों को आप के पास ये केहने को भेजा के सिधाईसे चले जाएं तो ठीक है, नहीं तो मारपीट कर के बाहर करो, और अगर वोह तुमको आंखें दिखायें तो तुम उनका माल-सामान लुटकर जानसे खत्म कर देना.

बीरापगी और हझरते हमीदुद्दीन से जंगकी ईब्तेदा

जब बीरापगीने 40 कोलीयोंको हुक्म दिया, कोली दोडकर हझरत हमीदुद्दीन के पास आये और केहने लगे के अय मियांसाहब ! खैर चाहते हो तो यहांसे चले जाओ, नहीं तो तुमको खत्म कर दिया जाओगा. माल सामान और कपडे लूट लिये जाओंगे. ये केहकर गाली गलोच किया और खादिमोंका कुछ सामान लेकर चले गओ. ये हरकत देखकर हझरत के खादिमोंने जंग करनेका ईरादा कर लिया मगर हझरतने फरमाया, अल्लाह तआलाका अेक नाम हकीम है. और वोह हकीम अपनी हिकमतसे

ईन बदमाशों को तबाह और बरबाद कर देगा. तुम सब्र करो. ईन्नल्ला-ह मअस साबेरीन.

तरजुमा : अल्लाह सब्र करनेवालोंके साथ है, ये केहकर खादिमोंको जंगसे रोक दिया और कोलियों को हिकमत से जवाब दिया के आजके दिन हमको कुछ काम है. अभी हमें माफ करो कल ईन्शाअल्लाह (अगर अल्लाहने चाहा) तो दूसरी जगह चले जाओंगे. ये सुनकर कोलियोंने वापस जाकर बीरापगीको जवाब सुनाया के आज के रोझ हमने खुब दादागीरी से काम लिया है. वोह कल चले जाओंगे और उन्से कुछ सामान भी लूट लाये हैं. सामान पगीके सामने रखखा. पगी देखकर खुश हुवा और दिलमें यकीन कर लिया के ये लोग कल दूसरी जगह भाग जाओंगे.

हझरते हमीदुद्दीन का बीरापगी को दफअ करने के लिये दोहलपुर के राजा वाघजी से मश्वरा

हझरते हमीदुद्दीनने बीरापगी की धमकी सुनकर ये तकलीफ दूर करनेके लिये काम किया के अेक खादिम को दोहलपुर के राजा वाघजी के पास ये पैगाम लेकर भेजा के मैं (हमीदुद्दीन) हझरत शाह अली सरमस्त रदियल्लाहो अन्होकी अवलाद से हूं और तुम राजा सिद्धराजसिंग की अवलाद से हो. हमारा तुम्हारे खानदानवालों से बहोत झमाने से दोस्ताना तअल्लुक है और हम तुम्हारे पडोश में ईस पहाड की नीचे ठेहरे हुअे हैं. तुम हमारी मुलाकात के लिये आ जाव, हमको तुमसे जो कुछ कहेना है वोह सुनकर चले जाना. राजा वाघजी आपकी फरमाईश सुनकर घोडे पर सवार होकर हझरतकी खिदमतमें आया और गुलामी झाहिर की. और अपनी हकीकत झाहिर करते हुअे अर्झ किया, या पीर! ईस खली में आपके लिये रेहना अच्छा नहीं है मैं आपका खादिम हूं. उम्मीद रखता हूं के खादिम पर महेरबानी फरमाकर दोहलपुर तशरीफ लाओंगे. हझरतने फरमाया के अय राजा ! तुम्हारे पास क्युं न रहूं ? तुम तो हर अेअतेबार से कद्र के काबिल हो. लेकिन अभी अेक जरूरी काम है अगर उसे तुम पूरा करो तो कहूं राजाने कहा, सरकार ! फरमाईये क्या हुक्म है ? हझरतने फरमाया के ईस पादला (बीरपुर)में बीरापगी रेहता है, उसकी मौत करीब है, तुम अपनी फोज से हम्ला कर के उसे जानसे खत्म कर दो. उसका माल सामान तुम्हारे लिये

मुबाह है, मैं पादला (बीरपुर) में रेहना चाहता हुं. राजा वाघजीने जवाब दिया के या पीर ! ये पगी मुझसे ताकतवर है, बार बार उस पर मैंने हमला किया मगर मैं कामियाब न हुआ. लेहाझा में डरता हूं के वोह दोहलपुर को मुझसे हडप कर लेगा, फिर मेरे पास कोई अैसी जगह नहीं है के वहां रहुं. हझरते हमीदुद्दीनने फरमाया के अय राजा ! कोई फिक्र न करो और अल्लाह के करमसे सब मुआमला ठीक होगा. दिलमें शांति रखखो और यकीन से जानो के लौहे महफूझ में लिख्खा है के ईस सरझमीन पर हमीदुद्दीन कादरीकी कोशिश से ईस्लाम होगा और तुमको ये ईलाके का बडा दरजा मैं दूंगा. लेहाझा ताखीर न करो, और बीरापगी पर हमला कर दो. राजाने सलाम करके अर्झ किया के या पीर ! आज ही की रातमें हमला कर मगर आपसे पूछना ये है के अगर ईस जंगमें मेरे घोडे और सिपाही मारे गये तो उसके खर्च के बारेमें आप क्या फरमाते हैं ? आपने फरमाया, घोडोंकी कीमत और फोजीयों की अवलाद का खर्च मैं दुंगा. राजाने कहा के हझरत ! आप तो दुरवेश, हो घोडों और फोजीयों के वारसों को खर्च कैसे दोगे ? हझरतने फरमाया, अल्लाह के खझानेसे दूंगा. राजाने कहा, अल्लाह का खझाना कहां है ? आपने फरमाया के झमीनमें. ये फरमाकर फरमाया, ये बंधझमीन को खोदकर देखलो. राजाने जब खोदकर देखा तो रुपिया और अशरफियोंसे हंडीया भरी हुई पाई. ये देखकर यकीन हो गया और आपकी बारगाहमे सलाम करके अर्झ करने लगा, या पीर! ईस गुलाम के लिये दुआ करें के कोई तकलीफ न हो. आपने फरमाया, राजा शांति, रखखो और अपने काममें आगे बढो.

राजा वाघजी के लश्करका बीरापगी के उपर झबरदस्त हमला और बीरापगीका कत्ल

राजा वाघजी हझरत का हुक्म पाते ही अपने मकान पर आया और लश्कर को तैयार कर के आधी रातको पादला (बीरपुर) आ गया तमाम कोली और उनका सरदार बीरापगी शराब पीकर मस्ती से सो रहे थे. राजा वाघजी के लश्करीयोंने अेक अेक कोलीको कत्ल किया और बीरापगीको पकडकर झिंदा रखखा ताके दफ्न किये माल, खझाने का पता मालूम हो. बीरापगी को बांधकर पूछने लगे के

खझाना बतावो नहीं तो जानसे मारे जाओगे. बीरापगीने जानके खतरे के डरसे दफन किया हुआ तमाम माल और खझाना बता दिया. राजा वाघजीने उस जगह से खोदकर देखा तो रुपिया और सोने-चांदी से देगें भरी पाई. ये दौलत देखकर खुश हुआ और खझाना और बीरापगीको हझरत हमीदुद्दीनकी बारगाहमें लेकर हाझिर हुआ. हझरत हमीदुद्दीनने फरमाया, अय कोली ! तू अल्लाह के बंदोंको बाहर करना चाहता था ? बीरापगीने अर्झ किया, सरकार ! आपके रुख को मैं न पहेचान सका, ईसी सबब से अपने किये हुओ अमल की सझा पाया. अब अेक चीझ खुदाके वास्ते से आपसे चाहता हूं, हझरतने फरमाया, खुदावास्ते से जब मांगता है तो मांग, बीरापगीने अर्झ किया, मेरी तलब ये है के ईस पादलामें मेरा नाम बाकी रहे. हझरतने फरमाया के पादलामें ईस्लाम आनेकी तारीख अबजद की गिन्ती खैर मुदाम से निकली है. लेकिन तूने जब खुदाका वास्ता दिया है तो ईस पादलाका नाम बीरपुर रखा जाता है. ईसके बाद हझरतके हुक्मसे वाघजी राजाने दोहलपुर गांवकी तरफ लेजाकर रास्ते ही में बीरापगी को कत्ल कर दिया.

बीरपुरमें ईस्लाम का झंडा बुलंद और मस्जिदे अव्वल की बुनियाद

आगे के बयान में हझरत हमीदुद्दीन के कोल के मुताबिक बीरपुरमें ईस्लाम फैलने की तारीखे हिजरी लफ्झे खैरमुदाम से ईस तरह निकलती है के ईस जुम्ले के हर हर्फको जुदा जुदा करके हर अेक केनीचे उस हर्फके अददको लिखकर ईस नक्शे के मुताबिक जोडो तो खैरमुदाम के जुम्ले के कुल अदद ८९५ निकलते हैं.

खैरमुदाम लफ्झ के अदद

खे	ये	रे	मीम	दाल	अलीफ	मीम	खैरमुदाम
600	10	200	40	4	1	40	हि. 895

ईस खैरमुदाम लफ्झसे बीरपुरमें ईस्लाम फैलनेकी तारीख निकलती हैं और ये भी पता चलता है के बीरपुर शहेरके लिये हझरत हमीदुद्दीन अलयहिर्रहमाकी दुआओ खैर हमेशा के लिये है क्युं के आपकी झबानसे खैरमुदाम का जो लफ्झ निकला है उसका मअना हमेशा की भलाई है.

हझरत हमीदुद्दीन बीरापगीकी खलीसे काफला लेकर बीरपुर गांवमें आये और मस्जिदका संगे बुनियाद किया. ये मस्जिद आज तक बीरपुर बाजारमें आपकी यादगार है. मस्जिदकी तअमीर के बाद बीरपुर शहेर बसाने में आप मसरुफ हो गअे.

गुजरात के हर शेहर से हर अेक कौम को आपने बीरपुर में आबाद किया

मस्जिद की तअमीर के बाद आपने बादशाह मुझफ्फर हलीम को बुलाया और हुक्म झाहिर फरमाया के गुजरात के हर हर गांव और कस्बों से दीनदार, मुसलमान, हिन्दु, ब्रह्मन, किसान, सब्जी बेचनेवालोंको फेहदो के बीरपुरमें जाकर आबाद हो जाअें. बादशाहका हुक्म पातेही हर कौम के लोग बीरपुरमें आकर बस गअे. उस वक्त जिस शख्स को जिस चीझकी जरुरत हुई, हझरत हमीदुद्दीनने उसको खुशी से दी और बहोत से लोगों को अपनी तरफ से मकान भी तैयार करके अता किये. बहोत से लोगों को झमीन भी अता की. हझरते हमीदुद्दीनने दो साल तक बीरपुर की पब्लीक को हाकिम के हैसीयत से संभाला. आपकी ईस हुकूमतके झमाने में दोहलपुर का राजा वालजी हर महिने दो तीन बार आपकी मुलाकात के लिये आता जाता था. अेक बार बीरपुर के हिन्दुभाई खुफिया तौर पर राजा वाघजी के पास जाकर कहने लगे, अय राजा ! तुम तो बडे राजा हो, बीरापगी को तुमने कत्ल करके उसकी जगह मुसलमानों को दी है. अब वोह मुसलमान वहां गाय झबह करते हैं. ईसका अझाब तुम्हारे उपर होगा, बेहतर ये है के मुसलमानों को अच्छी तरकीबसे मना कर दीजीये. वाघजी राजाने जवाब दिया के उस गांव के झिम्मेदार वोह हैं. अगर मेरे दोहलपुर पे अैसा काम होता, अलबत्ता जरूर मैं रोक देता. उस बीरपुर से मेरा कोई तअल्लुक नहीं है. तुम दूसरी बार अैसी बातें लेकर हमारे पास न आना. राजा का ये जवाब सुनकर तमाम हिन्दुओंने आपसमें मश्वरा किया के राजा को किसी चीझ की लालच देकर गाय झबह करनेवालों को हम कत्ल करवाअें. आखिरकार 660 रुपिये की मुबलिग रकम सिक्कये महमूदी खुफिया तरीके से भेजकर ये खबर लिख भेजी के अय महाराजा ! तुम हिन्दुओं के सरदार हो. उम्मीद है के तुम गायको झबह करनेवालों को कत्ल करोगे, हम वअदा करते हैं के हर साल ईस रकम को डबल

करके आप को पहोंचाऒंगे. राजाने हिन्दुओंकी ये बात सुनकर अपने वझीर से मशवेरा किया. राजाने कहा के गाय को झबह करने से रोकना हिन्दु मझहब में अफझल तरीन काम है. और 660 सिक्कये महमूदी का हर सालाना भी अच्छा है. हझरत हमीदुद्दीन हमारे साथ खालिस दोस्ती रखते हैं, जो कुछ तुम कहोगे वोह कुबूल कर लेंगे और यकीन है के गुझारिश करने से मुसलमानों को गाय झबह करनेसे रोक देंगे. ये दिलमें सोचकर अेक अरझीनामा लिखकर वझीर के साथ भेजा के या हझरत ! हमने सुना है के आप रातभर ईबादत करनेवाले, हमेशा रोझा रखनेवाले और गौश्त वगैरहसे परहेझ करनेवाले हैं. लेहाझा आप से कुछ लोगों की गुझारिश है के बीरपुर के रेहनेवाले मुसलमानों को गाय झबह करने से आप मना फरमा दें और अगर गोश्त खानेकी ईच्छा हो तो भेंस, बकरी, या मुरघे का गोश्त शोकसे खाऒं मगर गाय को झबह करने से आपका रोक देना ईस बंदे पर बडा अेहसान होगा. हझरत हमीदुद्दीनने फरमाया के ये काम मैं न करूंगा और मुसलमानों को ईस कामसे मना करना दीने मोहंमदी में जाईझ नहीं, तुम ईस शहेरसे, चार कोस दूर रेहते हो. ईन खयालों को छोड दो, क्युं के ये बात अशक्य है. वझीर ये बात सुनकर हझरत की खिदमत से उठकर राजा वाघजी के पास आया और जो कुछ सुना राजा से कहा. राजा सुनकर चूपचाप होकर बैठ गया और चार, पांच दिन अवाम के सामने न गया तो हिन्दुओं की अेक जमाअत राजा के पास आई और हंगामा मचाया और केहने लगी के अय राजा ! तुम्हारी (हिन्दु) जमाअत के लोग झियादह हैं और मुसलमान लोग कम हैं. अेक हमला करके तबाह करदीजीये. गया झबह करने से तौबा करवाईये, आप अगर ये काम करेंगे तमाम जगह के हिन्दुओंमें नेक नामीसे मशहूर हो जाऒंगे, और लोग तअरीफ करेंगे के फलां गांव का राजा अैसा है जो गाय झबह करने से मुसलमानों को रोकनेमें कामियाब हुआ है. राजा वाघजीने जवाब दिया के तुम जो केहते हो सब कुछ सही है, मगर हझरत हमीदुद्दीन और हमारे दरम्यान बाप दादासे पुराना संबंधऔर तअल्लुक है. हझरत हमीदुद्दीन हझरत अली सरमस्त की अवलाद हैं, और मैं सिद्धराज का बेटा हूं, हझरत हमीदुद्दीन जहां होगे वहां हमारे लिये अदब जरूरी है. उनके साथ बेअदबी करना बेफायदा है. ये सुनकर तमाम हिन्दु अेक होकर राजाके सिपाहीओं को कहेने लगे के

अय सिपाहीओ ! तुम और तुम्हारा राजा मुसलमानों के गुलाम बन जाव. गाय के झबह होनेका गुनाह तुम्हारे झिम्मे होगा, मरने के बाद गाय झबह करनेका जवाब क्या दोगे ? अब लिखखा हुआ सालियाना देनेका करारनामा हमको वापस दे दो, ईस लिये के हिन्दु मझहब का काम उनकी मरझीके मुताबिक नहीं होता. वझीरोंने आये हुओ तमाम हिन्दुओंको जवाब दिया के तुम लोग आज रोज जाव, कल बादशाह को पूछकर जवाब देंगे. उस रोझ हिन्दु लोग वापस आये और राजपाटके वझीर और मामलतदारोंने अवाम की बातों को राजाके सामने पेश कीं, राजा वाघजीने जवाब दिया के आप लोग मेरे राजपाट के मिम्बर हो, जो कुछ अच्छा जानो मुझको सलाह दो, यकीनन तुम्हारी नेक सलाह पर अमल किया जाओगा. वझीरोंने राजा वाघजीको मश्वरा दिया के गाय को झबह करने से रोकना सवाब का काम है. और सालियाना की रकम झियादह हासिल करना भी अच्छा है. लेहाझा मुसलमानों को दादागीरी से गाय झबह करनेसे रोको, और गाय के अदब करनेकी ताकीद करो और ईसके झामिन बनावो. अगर वोह गाय न झबह करने की झमानत न दें तो मुसलमानोंको बीरपुरसे बाहर कर दो. वझीरो का मश्वरा राजाके दिलमें उतरा और मुसलमानों को उसी मुताबिक लिखकर भेज दिया. मुसलमानोंने राजा का हुकमनामा पढा और हझरत हमीदुद्दीन चाहेलघा की खिदमतमें आये और जो कुछ सर पर मुसीबत आई, हझरतको सुनाई और अर्झ किया, या पीर ! हम सब आपके गुलाम हैं. अगर हुक्म हो तो तमाम रजपूतों को जहन्नम में पहोंचा दें और हम भी शहादत का जाम पी लें हझरत हमीदुद्दीनने फरमाया के अय ईस्लामी भाईओ ! मैंने तुमको वहां आबादी बढाने के लिये बसाया है, मरने के लिये नहीं, लेहाझा सब्र से काम लो, बेशक! अल्लाह सब्र करनेवालों के साथ है. ईन्शाअल्लाह ये मुश्किल हिकमत और समजदारीसे दूर की जाओगी. जल्दी करने से कुछ न होगा. जल्दी काम शयतान का है, ईत्मीनान का काम रहमानका है (हदीस) मुसलमानों ने अर्झ किया, या पीर ! आप जो मश्वरा देंगे, मुसलमानों को दिलो जान से कुबूल है.

राजा वाघजी की हझरत हमीदुद्दीन के साथ गद्दारी और सुल्तान महमूद बेगडा का लश्कर बालासिनोर की धरती पर

हझरत हमीदुद्दीन अलयहिर्रहमाने राजा वाघजी को खबर भेज दी के मुसलमान तो जंग करने के लिये तैयार हैं, मगर जंगमें फायदा कुछ नहीं है और नुकसान झियादह है. लेहाझा ईस बात पर अेक महिना सब्र करो. मैं मुसलमानों को अपनी सलाह से समजाउंगा और जो कुछ तुम्हें कहेना है तुमको भी कहुंगा. ये केहकर राजा को तसल्ली दे दी. और बादशाह महमूद बेगडा को अेक खत लिख भेजा के ये फकीरने हुझूर सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम के हुक्म से ये गांव को ईस्लाम मझहब से आबाद किया है. मगर ईस गांव के आसपास काफिरोंकी बस्ती झियादह है. वोह मुसलमानों को कोई न कोई बहाने से तकलीफ पहोंचाते हैं, तुम नाईबे मोहंमदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) हो. उम्मीद है के अेक थानादार को 500 घोडे सवार लोखंडी बख्तरवाले बहादुरों के साथ भेजेंगे ताके बीरपुर के मुसलमानों की हिफाझत करें और रजपूतों की नस्ल और जड को उखाडकर फेंक दें और मुसलमान अम्नो अमान से रहें और खास करके रजपूतों को यहां से बाहर करो, बादशाह महमूद बेगडाने हझरत का खत पढकर अेक थानादार जिस्का नाम मुझफ्फर खान था, 500 घोडे सवार सिपाईओं के साथ बालासिनोर में भेजा और हुक्म कर दिया के हझरत हमीदुद्दीन की जो मरजी हो उसी मुताबिक काम करना. मुझफफरखान अहमदआबाद से फौज लेकर बालासिनोर आ गया और हझरत की खिदमत में खबर पहोंचाई के या पीर ! ये बंदा फौज लेकर बालासिनोर आ गया है, अगर हुक्म हो तो रातों रात बीरपुर के आसपास के रहेनेवाले रजपूतों को हमला करके जहन्नम में पहोंचा दिया जाअे. या हुक्म हो तो बंदा रूबरू कदमबोसी के लिये हाझिर होवे. हझरतने जवाब लिखकर भेजा के रजपूतों को मारना नही है मगर डराकर भगाना है लेहाझा रूबरू आकर मुलाकात करो मुझफ्फरखानने हझरत के हुक्म के मुताबिक रूबरू मुलाकात करके कदमबोसी की. हझरत हमीदुद्दीनने फरमाया के तुम अपनी फौज लेकर नाथा मंदिर के पास के मैदान में आकर ठेहरो. मुझफ्फरखान थानेदार अपनी शानो शौकत के साथ फौज लेकर आया और पूरे

मैदान की बोर्डर बनाकर डेरा डाला. इस मंदिर में हर साल दशेरा के दिनों में नाथादेव की पूजा करने के लिये हिन्दु लोग जमा होते थे और इसी मैदान में (9) रात रहेते थे. हझरत हमीदुद्दीनने ये सोचकर ईस मैदानमें लश्कर को रेहनेका हुक्म दिया के वहां रहेने से लश्कर, किल्ले का काम देगा. जब दूसरा दिन हुआ, हझरत हमीदुद्दीनने राजा वाघजी को ये पैगाम केह भेजा के तुमने हिन्दु अवाम के कहेने से मुसलमानों पर गलत नझर उठाई है, लेहाझा जंग करने के लिये तैयार हो जावो, ये पैगाम पहोंचते ही राजा वाघजी के महल में डरसे धरतीकंप पैदा हो गया के हझरतने बादशाह का लश्कर बुला लिया है अब भागकर कहां जाउं ? बहोत परेशान होकर औरतों और बालबच्चों को तसल्ली देकर हझरत हमीदुद्दीन की खिदमत में आकर अरझीनामा पेश किया के या हझरत! आप खुदा के महबूब हो और आपको लायक नहीं है के आप अपने पाले हुअे के साथ जंग फरमाअें हझरतने फरमाया, गलती तुम्हारी तरफ से है, हमारी जानिब से नहीं. अय राजा ! पुरानी महोब्बत की वजह से अभी भी तुमको मैं सहूलत देता हूं के खूनरेझी नहीं कराउंगा. राजाने कहा, मुझे यकीन है के कल या परसों बहोत बडी जंग होगी. हझरतने फरमाया, तुम यकीन रखखो और शांति रखखो के हमारी निय्यत खूनरेझी की नहीं है मगर शर्त ये है के तुम ईस जगह को छोडकर पांच, छे कोस दुर जाकर रहो. राजाने कहा के या हझरत ! सुल्तान का लश्कर बोर्डर बनाकर घेराव किया हुआ है. बाल बच्चों को लेकर मैं कैसे बाहर जाऊं ? हझरतने फरमाया, अय राजा ! जावो तुमको अेक महिने का टाईम दिया जाता है. बगैर खौफो खतरे के जावो. और अपना सामान आहिस्ता, आहिस्ता ले जाओ और अगर हो सके तो अपने मकान के दरवाझे, खिडकीयां औरईट, पथ्थर वगैरह भी अपने साथ ले जाओ. राजा वाघजीने लाचार होकर हुक्म कुबूल किया और दोहलपुर की झमीन छोडकर अपने हिन्दु भाईओं के साथ देहवाडा में आकर रहा. ईस देहवाडामें कुछ मुसलमान भी रहेते थे. वोह रजपूतों के डरसे भागकर हझरत की खिदमत में आये. हझरतने उन मुसलमानोंको बीरपुरमें रहने की जगह दी और मुझफ्फरखान फोजदार को हुक्म फरमाया के तुम नाथा मंदिर के मैदान को छोडकर दोहलपुर पीरमगली के पहाड की वादीमें आकर रहो. मुझफ्फरखान फौज लेकर पिरमगली के करीब आ गया और फौज की बोर्डर

बनाकर रहेने लगा. उसी पहाड पर राजा की हवेली के पास मस्जिद की बुनियाद डाली. उस मस्जिद की निशानीयां आज तक झाहिर हैं, दो, तीन महिने तक नाथा मंदिर का मैदान खाली रहा. उस मैदान में हझरत हमीदुद्दीन रदियल्लाहो अन्होने 2000रु. अपना खर्च करके लश्कर की हिफाझत के लिये किल्ला बनाया. मुझफ्फरखान फौजी लश्कर के साथ उसी किल्ले में रहेने लगा और कस्बये बीरपुर और आसपास के गांव को अपने अधिकार में ले लिया. और सैर और शिकारमें मशगूल हुआ, उसके बाद हझरते हमीदुद्दीनने बिरपुर के आसपास के गांव से महसूल (टेक्ष) वसूल करके लश्कर के खर्च के लिये हाकिम मुझफ्फर को दिया और बीरपुर कस्बे की झमीन से कुछ हिस्सा मुसलमानों को और कुछ हिन्दुओं को दिया और कुछ झमीन जरूरी खर्च के लिये अपने कबजे में रखखी. उस मंदिर के आसपास घोडे बांधने का ईन्तेझाम किया. वोह मंदिर उसी झमाने में खत्म हो गया और मुझफ्फरखान फौजदार की बीरपुर से बदली हो गई.

हझरत सैयद मीरान्जी अलैहिर्रहमा फौज के कमान्डर बनकर आये और जामे शहादत नौश किया

जब मुझफ्फरखान फौजदार की बदली हुई और उसके बाद दूसरे फौजदार के आनेमें ताखीर हुई तो उसी झमाने में राजा वाघजी ने हझरत हमीदुद्दीन के साथ दूसरी बार जंग शुरु कर दी. हझरत हमीदुद्दीन अलयहिर्रहमह बीरपुर के तमाम मुसलमानों को अपने साथ लेकर मुकाबले के लिये मैदान में उतर आये और राजा वाघजी को झबरदस्त हार दी. और राजा वाघजी का पीछा किया मगर राजा वाघजी पहाडों में जाकर छुप गया. उसी दरम्यान महमूद बेगडा की जानिबसे अली-ए मुरतझा के मोती और मुस्तुफा सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के बाग के उगते फूल हझरत सैयद मीरान्जी अलयहिर्रहमह शाही लश्कर के साथ कमान्डर बनकर बीरपुर आ गये और ईस जंगमें शरीक हो गये. राजा वाघजी और हझरत मीरान्जी के दरम्यान अेक साल जंग होती रही. ईसी जंगमें हझरत सैयद मीरान्जीने राजपूतों के हाथ से शहादत का जाम नौश किया और शहादत के दरजे पर पहोंचे. आपका मझारे पाक किल्ले के करीबकी मस्जिद के पास है और आपकी करामतें बीरपुरमें झाहिर हैं.

बीरपुर की धरती पर
हझरत हमीदुद्दीन की शाने हुकूमत

हझरत सैयद मीरान्झी अलयहिर्रहमहकी शहादत की खबर जब महमूद बेगडा को हुई तो वझीरों को हुक्म दिया के सैयद मीरान्जी की जगह पर दो तीन फौजदारों को बीरपुर भेज दिये जाअें. लेकिन ईस जगह की झिम्मेदारी किसी फोजदारने कुबूल नहीं की और दो साल तक बीरपुर, फौजदार से खाली रहा. यही खाली झमानेमें बीरपुर की हुकूमत की सारी झिम्मेदारी हझरत हमीदुद्दीनने अपनी झिम्मेदारी में ले ली और राजा वाघजी के साथ मुसलसल जंग करते रहे.

ईस हुकूमत के झमाने में आपके साहबझादे हझरत महमूदमियां दरियाई दूल्हा अलयहिर्रहमाह अेक जझबअे दीनी लेकर हझरत वालिदे गीरामी हमीदुद्दीन की बारगाह में हाझिर हुअे और अर्झ करने लगे या हझरत, अगर आपकी ईजाझत हो तो नाथादेव मंदिर के मैदान में अेक जामेअ मस्जिद की बुनियाद रखखुं. हझरत हमीदुद्दीनने फरमाया, क्युं नहीं ? जरुर रखखो. हझरते महमूदने उस मैदान में मस्जिदकी संगे बुनियाद रखखी और दिवालें जब तैयार हो गई तो छत बनाने के लिये कारंटा शरीफ से लकडियां लाये तो वोह लकडियां दीवाल के फासले से तीन गझ छोटी थी. हझरत महमूद दरियाई दूल्हाने अपनी करामतसे उस छोटी और सुखी लकडीयों को हाथ से खीचकर छे गझ लंबी कर दीं. ये वाकेआ जब हुआ आपकी उम्र 14 सालकी थी जिसका तफसीली बयान मकातिहुल कुलुब किताब में हैं.

राजा वाघजी की झबरदस्त हार और
हिन्दु, मुस्लिम समाधान

जब राजा वाघजी हझरत हमीदुद्दीन के साथ जीत नहीं पाया तो ये केहते हुअे समाधान करने के लिये आया के या हझरत ! ये बंदा सिंधराजसिंह की अवलाद से है और आप हझरत अली सरमस्त की अवलाद से हैं और हमारे और आपके बीच बाप, दादा के झमाने से महोब्बतका राबता है. बंदा बादशाही का दअवा लेकर नहीं आया बल्के ईस उम्मीदसे आया है के आप हुझूरकी रईय्यत की हिफाझत करें और मेरे घोडेसवार सिपाहीओं को आपकी खिदमत के लिये बीरपुरमें छोड दूं और

बीरपुर के आसपास के देहात के महसूल (टेक्ष) और बीरपुर के हिन्दुओंको आपसे लडाने का सालीयाना रकम देनेका जो करारनामा लिख दिया था वोह रकम वसूल करके अपना खर्च निकालूं, हझरत हमीदुद्दीनने फरमाया के हिन्दुओंको लिख्खे हुअे करारनामे की नकल मुझे भेज दो, मैं उसे पढकर जो कुछ रददो बदल करना हो तो कर दूं. राजा वाघजीने ईस करारनामे की नकल मुन्शीसे नकल करवाकर भेज दी. हझरत हमीदुद्दीनने उस करारनामे को पढा. लिख्खा हुआ था के अय राजा, बीरपुर के गाय झबह करनेवाले मुसलमानों को झबह करने से रोकने या उनको जानसे मार डालने के बदले में तुमको 660 सिक्क्ये महमूदी दिया जाअेगा. हिन्दुओंका ये करारनामा सुनकर हझरत हमीदुद्दीन को गैरत आई और बीरपुर के मुसलमानों से आपने कहा के अय भाईओ ! देखो हिन्दु हमारे साथ कैसी दुश्मनी रखते हैं ? अैसे लोगों की सजा वही है के ईनको अैसे ही राजा के हवाले कर दिया जाअे ताके वोह उनका दिमाग ठीक करें और हम हमारे काममें कामियाब रहें. तमाम मुसलमानोंने आपके फैसले को कुबूल किया. हझरतने वाघजी को अपने पास बुलाया और समाधान ईन शरतों के साथ किया के (1) मुसलमानों को गाय झबह करनेसे कोई रोकटोक न हो (2) हिन्दुओंने सालीयाना रकम देनेका जो करार किया है, उस रकम का चोथा हिस्सा बीरपुर के गांवों से वसूल करो (3) बीरपुर के गांवका वांटा वाला हिस्सा तुमको ईस लिये देता हूं के बीरपुर कस्बा या बीरपुर के आसपास के गांव को कोई जरूरत पडे तो ईसे बेचकर पूरा करो. राजाने हझरत हमीदुद्दीनकी इन तमाम शरतों को कुबूल किया और कुछ घोडेसवार सिपाहीओं को कस्बअे बीरपुर के लिये छोडकर खुद अपने गांव देहवाडा चला गया. ईस तरह बीरपुरकी सरझमीन में ईस्लाम का झंडा हझरत हमीदुद्दीन अलयहिर्रहमहके कदमों की बरकत से कायम हुआ. (बहवालाअे तोहफतुल कारी बाब तीसरा, पेज-45 से 50 तक)

हझारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है
बडी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

झाड की झडके पास उंगलीसे बावरी नदी बना देना

हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) आपके साहबजादे मियां महमूद को साथ लेकर बाहिर तशरीफ ले गये थे. वहां आप दोनों को वझू करने की झरूरत दरपेश हुई. आपने ईर्दोगिर्द पानी की तलाश की मगर कहीं पानी नझर नहीं आया तो आपने अेक झाड की जड में उंगली से खत किया. फौरन उस झाड की जड से पानी बहेना शुरु हुवा ये जगाह बीरपुरमें चीखली झोझा के जंगलमें है. उस पानी से आप दोनुं ने वुझू किया और आप झिक्रे ईलाही में मश्गुल हुवे. फिर वो पानी का चश्मा बहेता रहा और ये पानी कस्बे के नझदीक आ गया तो लोगोंने देखा के पानी हम पे झोर करेगा. ये सुन कर आपने पानी को कहा के कस्बे के किनारे किनारे बहे जा. आपके फरमाने से नदी आगे बहेने लगी और मही से मिल गई.

हझरत शाह ख्वाजा हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) हैं गौसे बेमिसाल का विसाल

आप सुलतान से मिले थे उस रोझ से आपकी शोहरत दुर दुर तक हो चुकी थी. उसी रोझ से आपका दिल यही चाहता थाके ईस दुनियामें रहेना और अपने सर पे बोझे अंबार उठाना बराबर हय. ईससे तो ईस दुनिया को छोडकर दारे उकबा पहोंच जाना अच्छा हय. क्युं के बादशाह और दुनिया के मोअतबर बाईल्म हुनर लोग आपसे मुरीद होने की तमन्ना रखते थे मगर आपने किसीको भी मुरीद बनाने के लिये मंझुर नहीं किया. आप फरमाते. परवर दिगारे आलमकी तरफसे मुझको ईशारा होगा तब उसीको मुरीद बनाउगा और उसे नेक दरजात दिलाउंगा. हझरत शाह महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)को ख्वाहिश हुई के मैं अपने वालिद साहब से बयअत लूं ईन दिनों में हझरत महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)का अेक मजझुब खादिम था, उसके पास दुःखी लोग जाते तो उनसे बहोत लोग फयझ पाते थे. अेक रोझ हझरत मियां महमूद (रहमतुल्लाह अलयह) उस दुरवेश के पास गये तो उन मख्दुमने जो उनके सरपे टोपी थी. वो टोपी हझरत शाह महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)के सर पर रख दी. वो टोपी आप अपने वालिदे बुझुर्गवार के पास लाये और आपके सामने रख्खी और अर्झ की के ये टोपी को क्या करुं? तब आपके

वालिद साहबने फरमाया, उसे अपने पास रख्खो. उसका हाल गायब उसीसे था और ये भेद आप किसी से न केहना. वो फैझ होना बंद हो गया और खादिम वहां से चला गया. उसी रात को हझरत शाह मोहियुद्दीन जीलानी गौसुल आझम दस्तगीरने हझरत शाह महमूद रहमतुल्लाह अलयहके ख्वाबमें आकर फरमाया के आपके वालिद साहबका विसाल अनकरीब है तो आप उनसे रस्मे जिकरूल्लाह सिख लो और आपसे बयअत होकर खिरका व खिलाफत तलब करो क्युं के आप ईस झमाने के झबरदस्त वलीअे कामिल कुत्बुलवरा गौसे झमां हैं. पीरे मुगां हैं और आप अपनी हकीकत को छुपाये रखखे हैं ईस झमाने में आपका सानी और कोई नहीं और अब आप ईस दुनियामें तीन रोज के महेमान हैं ये हकीकत आपने हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)को भी ख्वाबमें झाहिर की और फरमाया के आप अपने फरझंद को बयअत देकर करामतोंसे उनको सैर करो. तब हझरत शाह महमूद रहमतुल्लाह अलयह वक्त नमाझे तहज्जुद के आपके वालिद के पास तशरीफ ले गये वहां आपने अेक जिगरी कही.

जिगरी

तुमने पर हरी अमने केम सरी नावलियो निंदडी नहार रे
ते केम हुवे रे निकालु जेने कुटुंब नव बहार रे
बे जीवन काये होय तो बदलिये नावेलो बदलो केम जाय रे
जे आवे जेना लाभ नो होवो ते हेन तेज सोहार रे
साथीडा वीती मामरी नावलिया धरणे कान रे
अेक जहो न पाखल ता हरी निंद रे
बे जीवन लोगा मांहा गवार रे
तुं चढ सोवे सुख से जडी अमने सैयाने लाज रे
ओ साजन कथा न किजीये अवसर न आवे काज रे
हुं रे जागुं तुमरे कारन तमने निंद सवा परंपार रे
सेज सूना धन तन मली पासे सरिया भरथार रे
साईन खोल पुरानिया लीखा माहरि लिलाट रे

नीत उठीने केहने किये अपना घरनो राड रे

काझी मोहंमद तन साह चाहे लिदा सेवन थारा पाउं रे

मेहमूदने छे भुलम अेन कहानी आईस आवे चितार रे

कही तुम आपसे आई नहवी हां मगर भेजे हुवे महेबूबे सुब्हानी

केह महीयुद्दीन जनाब अब्दुलकादर किये होशियार होके नाशर

वले बाकी है मेरी उम्र अेक रोझ करुं खिर्का ईनायत हो दिलशोख

ये सुन फिर आप अेक जिगरी बनाये, ईबारत उसकी बावा को सुनाये

ईसी तरह हझरत महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयहेने आपके वालिद साहब को अेक जिगरी कहे सुनाई. तब आपने फरमाया के गभरावो नहीं अभी मेरी उम्र का अेक रोझ बाकी है. तब आपने अेक और जिगरी सुनाई.

जिगरी

उठ रही हे रातकी उठ पीयु सो तरावे

रावन वेला नेव तीरे के लेट गंगावे

घटती जावे घडी घडी पीछे बल कहो करे

पर घर होश देखकर पस्तावे गेरे

कहे महमूद को मनजहना शहे पाया पुरा

सव सके तो रावके ने उगे सवेरा

ये जिगरी हझरत शाह मियां महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)ने आपके वालिद साहब को सुनाई तो आप खुश हुवे और दूसरे रोझ फजर में हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)ने हझरत मियां महमूद (रहमतुल्लाह अलयह) को आपके पास बुलाकर खिरका खिलाफत का अता किया. आपको बैअत की ईजाझत दी. हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)ने ६३ ईन्सानों को बैअत देकर आप मुल्के बकाकी जानिब तशरीफ ले गये. कालु ईन्ना लिल्लाहे वईन्ना ईलयहे राजेउन.

बुरहानपूरकी औरतको विशाल के बाद गैबाना मुरीद बनाना व शजरा अता किया

बुरहानपुर शहेरमें हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)की अेक औरत बहोत चाहनेवाली थी. उसको हातिफे गैब से खबर हुई की हझरत का विसाल हो गया है. ये खबर के सुनते ही वो झार झार रोती थी और केहती थी के सद अफसोस के आपकी मुरीद न हो सकी. ये केहते केहते है-हा-ता-है-हा-ता उसी फिक्र में रोया करती थी. तो रातको ख्वाब में उसको बयअत दी और वो औरत ख्वाब से बेदार हुई तो शिजरा भी उसने झाहिर में देखा तो वो खुशहाल हो गई.

बयअत यअनी मुरीद बनने के वाकेआत

हझरत महमूद दरियाद दूल्हा अलयहिर्रहमकी उमर शरीफ जब (15) सालकी हुइ तो वालिदे गेरामीकी बारगाहमें हाझिर होकर के मुरीद बननेकी तमन्ना झाहिरकी तो वालिदे गेरामीने फरमाया के इस नेक काममें दैरी न करनी चाहिये. हझरते महमूदने अर्झ किया के आप बतायें के में हझरते सैयदे शाहेआलम बुखारी अहमदआबादीसे मुरीद बनुं या हझरत सैयदना जलाल उर्फे शेख जीयोसे मुरीद बनुं ? आपके वालिदने मशवेरा किया के हझरते शाहेआलम बुखारी हमारे पीर है, और हझरत सैयद शैख जीयो भी हमारे सिलसिलेके खलीफा है. इन दोनों बुझुर्गोमेसे जीन्की तरफ तुम्हारे दिलका अकीदा जमे मुरीद बन जाव हझरते महमूद ये सुनकर रसूलाबाद (अहमदआबाद) जाकर हझरत शाहेआलम बुखारीसे मुरीद बननेकी ख्वाहिश झाहिर की के या पीर! मुझे मुरीद बना लीजीये. हझरत शाहेआलम बुखारीने गरदन झुकाकर मुराकबा करके जवाब दिया के सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमका हुक्म है के आप अपने वालिदसे मुरीद बनो. ये सुनकर बंदा आपकी बारगाहमें मुरीद बनने के लिये हाझिर हुआ है. मैंने सरकारे मदीनाका हुकम आपको सुना दिया वैसे आपकी जो मरझी हो वोह करें, हझरत हमीदुद्दीन साहबझादेकी बात सुनकर हंसे और खामोश हो गये (पे.115)

आखिर वही बात सामने आइ जिसको हझरते शाहेआलम बुखारी अलयहिर्रहमाहने हझरते महमूदके बारेमें जो बचपनमें फरमाया था के अय

हमीदुद्दीन (ये महमूद) आपका हिस्सा है. यअनी आपके हाथ मुरीद बनेगे.

ये वाकेआ होनेके बाद हझरते महमूदने दो महिने के बाद फिर अर्झ किया, हुझूर! मुझको मुरीद बना लीजीये. हझरते हमीदुद्दीनने फरमाया, लौहे महफूझमें देखकर जवाब दुंगा. हझरते महमूदने अर्झ किया, या शेख! लौहे महफूझ दूर नहीं है. हझरते हमीदुद्दीनने फरमाया के, आज नहीं देखुंगा, ये सुनकर हझरते महमूद वापस लौट आये. और अेक महिने के बाद फिर वालिदकी खिदमतमें हाझिर हुअे. और अदबसे अर्झ किया, या हझरत! मुझे मुरीद बना लीजीये. हझरते हमीदुद्दीनने फीर नझरें फिरालीं. हझरते महमूदने अर्झ किया, या हझरत! मुरीद बननेकी तमन्ना जब मैंने झाहिरकी थी तो आपने फरमाया था के आपका अकीदा जिधर झियादह जमे मुरीद बन जाव. या हझरत मैं पक्के अकीदेसे आया हुं क्युं के बुझुर्गोंकी बारगाहमें अकीदत ही काम आती है न के चापलूसी. ये कहेकर हझरते महमूद अपने घर वापस आये. कुछ दिनों के बाद लोगों के झरीअे मअलूम करवाया के हझरत मुरीद बनानेमें क्युं ताखीर फरमाते हैं? हझरते हमीदुद्दीनने जवाब फरमाया के, मैं महमूदके बारेमें लौहे महफूझ में मगफूर (बख्शाहुआ) लिखखा हुआ जब देखुंगा मुरीद बना लुंगा. हझरतका ये जवाब सुनकर लोग वापस आये और हझरते महमूदको जवाब सुनाया. हझरते महमूद ये बात सुनकर बहोत फिक्रमंद हो कर गये. हझरते महमूद अेक रोझ अेक मेहफिलमें बातचीत के दरम्यान फरमाने लगे के वालिदे गिरामी मुझे क्यों मुरीद नहीं करते ? और लौहे महफूझ देखनेका वअदा करते रेहते है ? ये बात करनेकी खबर हझरत हमीदुद्दीनको हुइ के हझरते महमूद मेहफिलोंमें अैसी बातें करते हैं ? हझरते हमीदुद्दीनने अेक शख्सको फरझंद महमूद के पास भेजा के किसीकी बातें गायबाना करना गीबत है और ये शरीअतमें जाइझ नहीं. आपने ये खबर सुनकर कुछ दिन सब्र किया और अेक रोझ फिर वालिदकी खिदमतमें हाझिर हुअे. तो देखा के कमरा बंद है और हझरत आराम कर रहे थे. हझरते महमूदने कमरे के दरवाझे पर खडे रेहनेवाले खादिमोंसे पूछा के हझरतको आवाझ दीजीये, खादिमोंने अर्झ किया, हझरत! आराम कर रहे हैं, हमको जगानेकी मजाल नहीं है. अगर आपको जरुरत हो तो आप जगाइये. हझरते महमूद हाथ बांधे वालिदके कमरेके दरवाझे पर वालिदकी मुलाकातकी आरझु लेकर खडे होगये और उस

तमन्नामें कुछ शेअर बयान करने लगे, बयान करते करते इश्कके जझबे इत्ने बढ गये के अपने होश भी खो दीये और अेक मुद्दत तक खाना-पीना छोड दिया. बदन पर सतरे औरत छुपाने के लिये अेक पुराने कपडेका टुकडा बांधरखबा, बाकी सब कपडोंको उतार दिया और मस्तों जैसी कैफियत हो गइ. उस वक्त बहोतसे लोग रुहानी भेदोंको जाननेवाले हाझिर थे उन्होंने कहा के या हझरत महमूद! आपकी बेचेनीका सबब क्या है ? आपके चेहरेका रंग झअफरानी क्यों हो गया हो ?

आप जब होशमें आये तो जवाब फरमाया के मुझको बगैर पीरके रेहनेकी आग और तडप जला रही है, पीर न होनेके गम और रंजका असर मेरे दिलके उपर इस कदर है के मैं बेहोश हो जाता हुं. आपने फिर उस गमको झाहिर करते हुअे कुछ शेखर फिर पढे.

इस वाकेआके बाद अेक रोझ हझरत हमीदुद्दीन अलयहिर्रहमा अपने घरके दीवानखानेमें बेठे हुवे थे और उस मेहफिलमें बहोतसे आलिम और फाझिल हझरात भी थे, तसव्वुफके बारेमें बात (डीसकस) चली ही थी. कुछ लोगोंने शरीअतके बारेमें बयान किया, कुछ लोगोंने तरीकतकी बातें, और कुछ लोगोंने मअरेफत और हकीकतके बारेमें बयान किये. इसी बीचमें हझरत सैयदना हमीदुद्दीन अलयहिर्रहमह आलिमों और सूफियोंकी तरफ नझर करके फरमाने लगे के अय दोस्तो! जब शरीअतकी ये बातें लोगोंकी समजमें नहीं आतीं तो तरीकत, हकीकत, और मअरेफतकी बातें कैसे समजमें आयेंगी ? ये बातें तो इन्के सामने अफसाना (मनघडत कहानी) जैसी मअलुम होंगी. हझरत हमीदुद्दीन अभी इसी बातचीतमें थे के अचानक हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा उसी मेहफिलमें आ गये. और कुछ शेअर मुरीद बनने के बारेमें बयान किये. हझरत हमीदद्दीनने फरमाया बेटा! मेरी झिंदगी अभी बाकी है, बेचेन और हेरान न हों में तुम्हे मुरीद बनाउंगा. हझरत महमूदने उस वक्त चंद मरतबा लौहे महफूझकी तरफ निगाह करके वालिदे गिरामीसे अर्झ किया, अब्बाजान! आपकी उम्रसे सिर्फ सात दिन अब बाकी रह गये हैं. ये केहकर फिर कुछ शेअर सुनाने लगे और मुरीद बननेकी तडप झाहिर करने लगे. हझरत हमीदुद्दीन ये शेअर सुनकर फरमाने लगे, अय बेटे, अभी मेरी उम्रसे अेक हफ्ता बाकी है, क्युं बेचेन हो ? हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा ये सुनकर झियादाह फिक्रमंद

हुअे के अब्बा हुझूरकी उम्रसे सिर्फ अेक हफता बाकी रह गया है. फिर भी मुजे मुरीद नहीं बनाते और देरी करते हैं. अब हझरत सैयदना गौषेआझम सरकारे बगदादकी रूहेपाकका वसीला लेकर आपकी बारगाहमें अर्झ करुं के आप सिफारिश फरमाकर मुझे मुरीद बनवादें. ये सोचकर हझरते महमूद दरियाइ दूल्हाने अेक अरझीनामा लिखकर रिजालुल गैब (अवलियाकी जमाअत)के साथ बगदाद रवाना किया. वोह अरझीनामा मिन्टोंमें बगदाद शरीफमें सरकारे गौषेआझम रदियल्लाहो अन्होकी बारगाहमें पहोंचा. सरकारे बगदाद रदियल्लाहो अन्हो रुहानी परवाझसे बीरपुर तशरीफ लाअे. हझरते महमूद दरियाइने हझरते गौषेआझमसे अर्झ किया, हझरत! मुझसे कोनसा गुनाह हुआ है के हमारे वालिद मुझे मुरीद नहीं करते ? गौषेपाककी रुहे पाकने जवाब दिया के, आपके वालिद अभी आपको मुरीद बनाअेंगे, ये केहकर सरकारे गौषेपाककी रुहपाक हझरते महमूदको लेकर आपके वालिदकी बारगाहमें हाझिर हुइ. और फरमाया, अय भाइ हमीदुद्दीन! आपके साहबझादे तमाम खूबीयोंके मालिक हे फिर भी तअज्जुब लगता है के आप इनको मुरीद बनानेसे क्युं गफलत करते है ? अब बेहतर ये है अपने लडकेको मुरीद बना लीजीये. हझरत हमीदुद्दीनने गौषेआझम रदियल्लाहो अन्हो के हुकमको तस्लीम करते हुअे अर्झ किया, हुझूर कुछ दूसरे लोग भी मुरीद बनना चाहते हैं लिहाझा कल फजरकी नमाझ के बाद उन तमाम लोगों के साथ मुरीद बनाउंगा उन सबके सामने खिलाफतका जुब्बा पेहनाउंगा और खिलाफतनामा भी लिखकर दुंगा. जब दूसरा दिन हुआ तो फजरकी नमाझके बाद हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा और हझरत शाह चांद मोहंमद और हझरत शाह अहमद और हझरत शाह लाड मोहंमद उर्फे शैखुल इस्लाम हझरत शाह प्यारुल्लाह वगैरह और दूसरे पचास, साइठ मर्दोंको हझरते महमूदके साथ बरोझ जुमेरात मु. चांद-5 सफर हि. 911 को बाद नमाझे फजर हझरते हमीदुद्दीनने अपने सिलसिलेमें दाखिल कर के मुरीद बनाये और खिलाफतका जुब्बा पहेनाये और खिलाफतकी सनद देकर नसीहत फरमाइ के, अय फरझंद महमूद! आजसे जो शख्स आपके पास मुरीद बननेके इरादेसे आये तो आप उसे मुरीद बनाना. इस इजाझतकी खुशीमें भी हझरते महमूदने कुछ अशआर पढे, हझरते महमूदको खिलाफत अता करनेके बाद हझरत हमीदुद्दीन रदियल्लाहो

अन्होने मु.चांद-7 सफर हि.911 को तहज्जुदके वक्त बीरपुर शरीफमें इन्तेकाल किया. इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजेउन.

ख्वाजा महमूद महबुबुल्लाह व पड पोता मुरीद व जानशीन बनाना

हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)ने आपके पोते हझरत शाह प्यारुल्लाह (रहमतुल्लाह अलयह) का पहेला हाथ पकडा और उनको करामत अता किये, फिर आपने आपके नूरेनझर हझरत शाह मियां खवाजा महमूद (रहमतुल्लाह अलयह) शमसुल आरेफीन का हाथ पकड कर खिलाफत अता की. उनको बयअत की ईजाझत दी. जब हझरत मियां महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)ने खिलाफत पाई तो उस वक्त आपने जिगरी कही.

जिगरी

बलैयां क्युं न लुं मुज मिलीया चातर नाथ
मेरा जिगरा जहां घटमां नहां बलैया क्युं न लुं
रलीया मानुं नित नवलीया, अपने सांई के काज
आज साजन हम घर आया, पुगेमन के काज
सुन सहेली काम कहेली, मुज पीयु अयसा नी हा
जीमें कहीया सो ईनकी ता हस हस उत्तर दय हा
मीर समाने सांई कीते, दुनिया साचा मान,
महमूद लाखे ना हब हुआ मीरे चाईलदा के लिखे कुरबान

पानी दो तरफ हो जाना

जब हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)को गुस्ल देकर कफन पहेना कर आपका जनाझा दोश बदोश सब ले चले उस वक्त बावली नदीमें बडी झोर की पुर आई थी. और सब हेरान थे के अब किस तरह नदी पार कर सकेंगे. ईतने में पानी

बहुक्मे खुदा दो तरफा हो गया. और रास्ता साफ हुवा. तब जनाझे के सब हमराही खुशी खुशी नदी पार कर गये और जो पीछे रेह गये वो वहीं रुक गये. क्युं के पानी पेहले की तरह मिल गया और नदी पुरजोश बहेने लगी.

हझरत शाह हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे के जनाझा की करामत...

हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)ने सफर महीनेमें पांचवीं तारीख को हझरत शाह मियां महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)को खिलाफत दी और तारीख छेह सफर बरोझ पंजशम्बह (जुमेरात) शब को आपने विसाल फरमाया. सन हिजरी 911 बरोज जुम्आ को आपको सुपुर्द (मझार मुबारक) खाक किया गया जहां आपका रोझा मुबारक हझरत शाह काझी महमूद दरियाई (रहमतुल्लाह अलयह)के नाम से मशहुर हय वहां आपको मदफुन किये. आपका मझार गुम्बद में कठहरे के अंदर बीच में हय अव्वल मझार हझरत काझी महमूद (रहमतुल्लाह अलयह) महेबुबुल्लाह उर्फ दरियाई दुल्हा का हय. आपके करीब हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)का हय और बाद में तीसरा मझार हझरत शाह मौलाना अेहमद साहब (रहमतुल्लाह अलयह)का हय.

हझरत सैयद काझी महमूद दरियाई (रहमतुल्लाह अलयह)ने बाद मदफुन वालिद साहब के अेक जिगरी कही वो येह हय.

जिगरी

मेरा बाबुला रे क्यूं तुं रहीया बसा, ये दुख किसरे कहुं
मेरा मेरा बाबुला हे रुस सिधारे, हो किस दोहरा कहूं राव
पोपट के परन उड गया हो सिंधु सखी पाउ
उसरे भुलावे हु रही, मेरा बाबुला क्युं जाय
मन पछतावा हो रहा सौयो बहोरन मिलीया आये
काझी मुहम्मद तन शाहे चाये बधा महमूद महमूद सियोग पाउं
दिये क्या सोमे सहीया, अब अपने थी मत जाईअे

गझल

रहे कुत्बुल अकताब व गौसे जहानी,

अवैस अर्शे और सिब्ली अस्र साए

शहे आ रेफांरे उस्तादे दो आलम

झहे पीरो सरवर जिन्हें इन्सो जानी

वो थे दाफअे शिर्क कुफ्र और बिदअत

दो आलम पे थी साहब महेरबानी

हमीदे हमीद शहे दिने आलम हे उन्का

थे अहेले तलब व अेहले मआनी

वो फिर जिस घडी पयक आया जलका

किये कस्द यहां से बहारे जनानी

कलाम गुफ्त मेहबुबुल्लाह रह्मतुल्लाह अलयह दर वक्ते विसाल हझरत शाह हमीदुद्दीन रह्मतुल्लाह अलयह

मेरा बाबुला रे कंई तु रहीया बसार....

ये दुख किसरे कहुं.....

मेरा बाबुला रे शेस सिध्धारे......

हुं किस घर आंखु रोउं.....

पोपट के परन उड गया.....

हुं सयुंन सुखे पाउं.....

मन पछ्तावा हो रहीया.....

सबु भवरन मिलीया आये.....

काझी महम्मद तन शा चाअेलदा.......

महमूद सयोग पाउं......

दी क्या सोमे सहीया....

अब सपने कहींमत जाउं.....

अलाप मां बवक्ते विसाले गुफ्त महेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह

हमे बनाओ खाक के ये मेरी बुनियाद....
सो भी रहेने ना पायगी हेठी हे बरबाद....
कागुल केसी पुतली मानस नाम धराओ....
आप तमाशा देखने दोरे बादाह पहेराओ....
जो तू रख्खे तू रेहना जी तू दे सो खाओ....
गले हमारे जीवळे जत खींचे तत जाओ....
बालम चरत ईस सांई के ताना लिख्खुं संदेस...
सियाही क्या सोना होवे कागुल गओ बिदेस....
धरती सब कागल करुं और लिखकर दिन बनराओ....
सात समंदरकी मस करुं तो येक गुन लिख्खो जाओ....
लिखन हारा लिख गया बेहतर न लिख्खे कोई.....
करम जो अकहर पड गओ अदकन ओछा होओ...
मुरखा रेहता बनमें फिर चरता बेह सीम....
आहिर कारे बस पळा कुछ कर ली नो कीम....
अमीन जो सावज बिगळो न लीओ कुछ बिचार....
हीळे हाम कहेने थे लिख्खा लाओ लीलाळ....
ना मुझ मिले ना मन रहे ना तु दीजी छैया
मिल रे आप सवादीयां नुला तेरा ने यहा....
राम कली बैरागनी उसे न कहीयो कोई....
कही उसको राहवनने थे बेठा दस सर खोओ....

हझरत ख्वाजाओ ख्वाजगान, काजीयुल कुझात, कुदवतुल अस्फेया, जुब्दतुल अवलीया, मुजद्दीदे सिलसिलओ सुहरवर्दीया शाहीया, हुझूर पीराने पीर दस्तगीर सैयद शाह महमूद महेबुबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाहे अलयहे के हालात व वाकेआत

आपकी पैदाइश हि.स.873 इ.स.1438 में हुई। आपकी जाओ पैदाइश के बारेमें तोहफतुल कारीमें मफातीहुल कुलूब ला जालतिल कुरुब के हवाले से मरकूम है की उनकी पैदाइश विलादत ख्वाजा हमीदुद्दीन की जाओ सुकूनत मोहल्लओ सारंगपुर अहमदाबाद मौजुदा सारंगपुर दरवाजा के बाहर सिम्ते मशरिक वाके कालुपुर रेल्वे स्टेशन के करीब में चार तोडा कब्रस्तान के पास जहां आज हजरते दादा हुझूर सैयदना शाह मोहम्मद बीन खतीब कुतूब महमूद कारंटवी रहमतुल्लाहे अलयहे का आस्ताना है। और जो मस्जीदे शाह हम्माद है वहीं आपका पैदाइशी घर था।

नमाजे तहजजुद के लिये वालीद, चाचा को निंदसे उठाना

अेक रोझ का वाकेआ हय के हझरत सैयद खवाजा महमूद मेहबुबुल्लाह उर्फ दरियाई दुल्हा के वालिद साहब हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) और आपके चचा हझरत शाह हम्माद (रहमतुल्लाह अलयह) अेक रात जंगलमें जा कर ठेहरे थे. और वहां आप दोनों साहबों को नींद आ गई और नमाझे तहज्जुद का वक्त फोत हो जानेका ईमकान था. उस वक्त हुक्म खुदावंदे करीम से हझरत मियां महमूद (रहमतुल्लाह अलयह) की रुह मुबारक उस जंगल में हाजिर हुई और चचा और अब्बा को आवाझ देकर जगाया और फरमाया, उठो शायद नमाझे तहज्जुद फोत न हो जाये. तो आप दोनों साहब उठे और हझरत शाह हम्माद (रहमतुल्लाह अलयह)ने

फरमाया के ईस भयानक जंगल में जहां शेर डकारें ले रहे हय वहां आप कौन हैं जो हमको जगाये हैं? तब हझरत मियां महमूद(रहमतुल्लह अलयह)की रुहे अकदसने सलाम किया और कहा, मैं आपका भतीजा हुं और हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लह अलयह)के मकान में पयदा होनेवाला हुं मैं अबतक रुहे अकदस हुं मगर आज से बाराह साल के बाद ईस दुनिया में पैदा होउंगा. और मेरा नाम महमूद होगा. और आप मुझे आपका खादिम जानो. ये कहे कर आपकी रुह अर्श की जानिब रवाना हो गई. और आपके वालिद साहब और चचा मकान पे तशरीफ लाये. शबो रोझ आपके ईन्तझार में रेहते और दुआएं देते.

हझरत सैयदना ख्वाजा शाह महमूद कुत्बे रब्बानी महेबूबे यझदानी कादरी, सोहरवर्दी कारंटवी रहमतुल्लाह अलैहे की बशारत

निशानी सूरतो सीरतश दादा फरमूदा अन्द के बअद अझमा
बचहारुम कुरसी हमनामें मा चुनीं व चुंना पैदा ख्वाहद शुद
वदेगे के मा उ रा बहझारु महेनतो - शिद्दत पुख्ताअम
तसर्रुफें आं देग बदस्तें उ बाशद आं खल्फ
बिरादर-झाद अे-तु ख्वाहद शुंद
(हवाला : तोहफतुल कारी कलमी पेज-180)

हझरत सैयदना शाह हमीदुद्दीन चाहेलदाह (हझरत ख्वाजा दरियाइ दुल्हा के वालीद) से अपने सगे बिरादर भाइ हझरत ख्वाजा सय्यिदना रइसुल अवताद शाह हम्माद कादरीने फरमाया की कया आप नहीं जानते ? की अपने सगे दादा हुझूर सय्यिदना अमीरे मस्उद फझाइलुल बरकात, कुत्बे रब्बानी, खास्सअे मअबूद, अबुल औलीया, अबुल बरकात, सैय्यिदना शाह कूतूब महमूद दादा कादरी सोहरवर्दी रदियल्लाहो तआला अन्होने अपनी नेक बशारत देते हुवे उन्के (ख्वाजा दरियाइ) के बारेमें युं फरमाया था की सुरत व सीरत (अख्लाक-आदत) की निशानी देते हुवे फरमाया था की हमारे बाद मेरी अेक चोथी पुस्त मेरे हम नामे नामी मेरे जैसा और वैसा ही पैदा होगा । जो देग हम हजारो (साल) की महेनत, मुस्ककत बरदाश्त करके पकाइ है वो देग को बाटने को (तकसीम) करनेका उसके हाथोमें होगा । वो साहेबझादा वलीझादा तुम्हारे भाइका फरझंद (बेटा) होगा वो अभी पैदा नहीं हुवा है ।

दादापीर हझरत सय्यिदशाह शाहेआलम महबूबे बारी (रहमतो रिदवान) की बशारत

ख्वाजा दरियाइ दुल्हा के वालीद हझरत सय्यिदना शाह हमीदुद्दीन चाहेलदाह कादरी सोहरवर्दी अपने फरजंद (बेटै) शाह महमूद दरियाइ को (कमशीन उम्र) बचपनीकी हालातमें हुझूर पीरो मुर्शीद हजरत शाहजी शाहे आलम बुखारी, सोहरवर्दी रहमतो रिदवान की बारगाहमें शाह महमूद दरियाइ को दुवा के लिये ले गये।

हझरत शाहे आलम महबूबे बारी बुखारी ने बच्चे शाह सय्यिद महमूद दरियाइ को अपने हाथोमें ले लिया लेनेके बाद अपनी बगल के थोसे दोनो हाथो से उंचा किया वहां तक जहां तक आपके हाथ उंचे होते थे और शाह महमूद दरियाइ को उछालते और फरमाया की काझी का शिमला भारी है। ये उछालते वकत हझरत महमूद दरियाइ के पग हुझूर शाहे आलम के अमामा मुबारक को टकराते थे। ये देखकर हझरत शाह सय्यिद ख्वाजा हमीदुद्दीन कादरी सोहरवर्दीने पीरो मुर्शीद के पास से बेटे शाह महमूद दरियाइ को ले लीया और पीरो मुर्शीसे फरमाया की हुझूर बेटे शाह महमूद के पग आपके अमामा मुबारक को लगते थे उस लीये मेने शाह महमूद दरियाइ को ले लीया है। उस लिय में ये गुस्ताखी से माफी मांगता हुं, आप माफ फरमाये। ये सवाल के जवाबमें हुझूर शाहे आलम सरकारने फरमाया की ये गुस्ताखी, बे अदबी नहीं हुइ है बल्की में उसे उंचे दरजे पर रख रहा था। लेकिन अल्लाह तआलाकी मरजी कुछ और होगी। में शाह महमूदको मरातीबे बुलंदी पर ले जाना चाहता था, लेकीन कया करे मेरी तमन्ना मरजी पूरी न हो शकी। शाह महमूद बडे दरजेवाला इल्काबवाला होगा। में उसे (मुरीद व खिलाफत) दोनो कामो की जीम्मेदारी आप शाह हमीदुद्दीन को अता करता हुं ये काम आपके अलावा और कोइ न कर शकेगा सुब्हानल्लाह।

अल्लाह तआलाके करम व अहेसान से ख्वाजा दरियाइ दुल्हाने ये बशारत के मुताबीक ही अपने वालीद के मुरीद बने और आपही से खिलाफत मीली। ये जीन्दा जावेद बशारत करनेवाले हुजूर शाहजी को लाख लाख सलाम।

सिकमें मादर में वालिदा का गुंह पोक खाना

जब बारह साल पुरे हुवे तब आप अपनी वालेदा माजेदाह के शिकम मुबारक में तशरीफ लाये. उस अरसे में हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लह अलयह)ने अेक किशान से गेहूं (गन्दुम) मंगवाये जब वोह गेहुं मझारेने हाजिर किये तो हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लह अलयह)ने अपने मकान में अेक तरफ डलवा दिये. उस वक्त आपने शिकमे मादर से कहा कि गन्दुम नजीस हैं तब आपके वालिद साहबने मझारे से पुछा (कहा) क्युं तुने अैसे नजिस गन्दुम हमको दिये ? तब वो बोला के मैं अभी

झटक झाटकर खलयान से लाया था. उसीमें से आपकी खिदमतमें पेश किये हैं. उसी वक्त हझरत मियां महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)ने शिकमे मादरसे जवाब दिया के अय कमबख्त! क्युं तकरार करता हय ? क्या तुं अंधा था ? के अेक मुरदार ईस गेहुं में गिरा था? के अेक शिकारीने सुव्वर को तीर मारा था और वो झख्मी सुव्वर तेरे खलयान से होकर भागा जा रहा था, उसके खून के कतरे गेहुं में गिरे थे. ये सुनते ही वो मझारा (किसान) गभराया और उसी वक्त उसकी आंखों की रोशनी चली गई और वो सर कुट कुट के रोने लगा. और बहोत आजिझी की तब आपने दुआ दी तो उसको आपकी दुआ से बिनाई मिली. और उसको रझा दे दी. और वोह गेहुं आपके वालिद साहबने अेक गडङ्खा (खड्डा) खोदकर दफन करवा दिये.

मेअराज में सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम नूरे महमूदी से मुलाकात होना...

हझरत सरवरे काअेनात मेअराज में और साथ में नूरे मेहमूदी (अर्वाह) का होना. अेक रोझ सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम उम्मे हानी के मकान पर तशरीफ फरमा थे. रातका वक्त था. बफरमाने ईझदी हझरत जिब्राईल अमीन आपकी खिदमत में तशरीफ लाये और आपको ख्वाबसे जगाकर पयगामे खुदावंदी सुनाया और कहा के चलीये आज मेअराज की रात हय. परवरदिगारे आलमने आपको बुलाया हय. सवारी के लिये बुराक हाझिर हय. तब आप बफरमाने ईझदी खानअे काबामें तशरीफ लाये और आप वहां से मस्जिदे अकशा तशरीफ ले गये. वहां मस्जिदे अकशामें तमाम नबियों, रसूलों और औलादे आदम की नेक रुहें गौसो कुतुब, अब्दाल, शोहदा, आमिल, कामिल, वली और नेक रुहें हाजिर थीं. उस वक्त सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम तमाम रुहों से सलामो तसलीम लेते हुवे रुहे महमूदी के करीब तशरीफ लाये. जो आपकी बहोत ही करीब थी. उस वक्त आपने हझरत जिब्राईल अमीन से फरमाया के येह रुह किसकी हय, और कहां पैदा होगी? तब जिब्राईल अलयहिस्सलामने फरमाया के येह रुह अेहले बैतमें पैदा होगी. हझरत शाह हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह)के घर का चिराग हय. गरीबों का गमगुशार और खासअे माअबुद होगे. तब आपने आपकी रुह को आपके करीब साथमें लेकर आपकी रुहको लामकां तक सैर कराई.

कलाम

भोरे पंखा दु हो बल गये
आज ह सोरानी धोले आज
हुं सोफो लरुं बा समा
आज हुं सो कनुल बहे नकशे
बेहतोर न बेठी ता समा
आज हुं सो चकवा-चकवे
ईन बीच समंदर आसमान
आज हुं शोर सये कली कली
बोगेन उनकी जाबमान
आज सो बादल छाईयां
रेहनबा भरे सो तारमांन
आज हुं नेन लंदेरे
आंख भरे सो सरमां
आज हुं सोबन हते पंतासरे
ओडेन उनके कह्या मान
आज सो महमूद सांईका
कन्ही न लईया छैया माना

जिगरी दादरा

घडी आली बावली मत घडी बजाय
हु मेरे रोह से रंग रमु, मतरेन दायय...घडी आली
जितने कहावतें किये, घडी पाली पापी
सो तन लागी मेरडी, हुं खडी संतोप....
बरसा सोकी, करखडी, बलिहारी तेरी
आज सोथन कानेह हे, शहे की और मेरी...
शाहा मिलन का आवहे तुज दिल सुंलाचान
खींच करी दिन टुकडा, पांच पेहर की रातां

सीस बधावो उसे दुं जो, शाह में लावे

केत हे मेरा रसीला, लो मान हाथ से जावे

महमूद सांई का चाह दे, कितयां सो बातां

जिसके सईसु नेहहे, दिन और रातां

सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की आयते करीमा के दर्स देने में हजरत महमूद दरियाइ की रुह का होना

अेक रोझ रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम अपने सहाबा के साथ बैठे हुवे थे के, नागाह हझरत जिब्राईल अलयहिस्सलाम तशरीफ लाये और बाद सलाम के पैगामे ईलाही की आयते करीमा आपको सुनाई वो ये हय. ''अल मुनाफेकुना वल मुनाफेकातो बअदोहुम मिम बअदिल आखेराह'' ये आयत शरीफ आपने अपने सहाबा को सुनाई और कहा के आखरी झमानेमें औरतें मर्दों पर गालिब होंगी और हाकिमे हुक्काम में ओहदों पर फायझ होंगी और मझहब की तरफ रगबत कम होगी और शर्म और हया न रहेगी. जवान बूढों का अदब न करेगें और बच्चे बेबाक होंगे और अच्छे बुरों की तमीझ न होगी. जो ईमानवाले नेक होंगे वो खामोशी अखत्यार करेंगे उस वक्त मियां महमूद दरियाई (रहमतुल्लाह अलयह)की रुह अकदस हाजिर थी और जब आप ईस दुनियामें तशरीफ लाअे और आपकी उम्र शरीफ दो साल की थी तो आपने जो आयते करीमा सरकारने बयान फरमाई थी ईसके मुताबिक दुनियावालों का हाल देखा तो आपने अेक अकदा बनाया.

अकदा

युं जग वा परकारी सैयो कोई सत पर नाही

जन जन पाप सो आदर अपना रहीया ना कोई

अपने आलु हस मिलें मुख मीठा बोलत

जहां न देवे छावे नम चले नेह अत धन जोडे

लुन जीनको खावे तीन सामे होवे

हेडा पापी जड रहीया मन मेल न धोवे

अेकाकार सो युं हुवा कोई बीगत न पावे

धन सना से धन पती धन तुके कहावे
भेद नहीं मुख अपने सीख और दीन देवे
बेटी बीयावें आपने दाम उसका लेवे
अेस अ करम जे करे बीयाज उसका खावे
बोल सतका मन धरे युं महमूद आखे
सुगलो भीतर वे भलाजी अचार अपना राखे
अवसे पर संसार के ये काल उजाळे

विलादते हझरत महमूद महेबुबुल्लाह (रहमतुल्लाह अलयह) पैदाइश के वकत शर्मगाह परसे हाथ न हटाना

आपकी विलादत के मौके पर जब शिकमे मादर से अझहर हुवे तो आपने अपना अेक हाथ आंख पर रख्खा और दुसरा हाथ आपने आपकी शर्मगाह पर रख्खा था. ये हालत देखकर दाया गभराई और सोचने लगी के अब क्या किया जाये और तहेनीयत कैसे दूं के लडका हे या लडकी. ये सोचकर दायाने आपके दस्त मुबारक को हटाना चाहा मगर आपने अपना हाथ हटाया नहीं. और झबान से फरमाया के जा कहे दे के लडका है ये सुनते ही दायाने खेसो अकारब को मुबारकबाद पहोंचाई और सबको हाल से आगाह किये और आपको छुहारे का शरबत पीलाना चाहा मगर आपने नहीं पीया. फिर दूधपीलाने की कोशिश की मगर आपने नहीं पीया तो सब की सब बीबीयां वहां जो हाजिर थी वो सब गभराई आपके वालिद साहब को खबर दी के आपके नूरे नझर न शरबत पीते हैं न दूधपीते हैं तो आप मकानके अंदर तशरीफ ले गअे और आपको गोद में लेकर फरमाने लगे के अय बीबीयो! तुम जानते हो ? तब बीबीयोंने जवाब दिया हम नहीं जानते. आपने फरमाया ये शाहझादा झाहिद और सायम और ईबादत पर कायम रेहनेवाले और मुश्ताक अल्लाह और मताअे शरअे रसूल सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम और गौसेखल्क हैं. और कुतबे अबरार हैं, बगयर मगरिब के रोझा ईफतार न करेंगे ये सुनकर हझरत शाह महमूद (रहमतुल्लाह अलयह)ने अपनी आंख पर से हाथ हटा लिया तो आपके वालिद साहब बहोत खुश हुवे और जिगरी कही.

जिगरी

किरया आज सांई मुज कीते, सैया तेई कुछ सुनयां
वो दुःख मेरे जीवका बहाना, जी भेद न लीते गीनयां
माता-पिता नीन भेद बीताते, पूछने पंडित जोसे
जिसके पीनजर मास न लोहुं, तस क्युं जीवन होसे
मोला देखको अे अेसा नदयुं, जीस तहीं ये देख जावे
बाहे तुं मिलकर मता जो पीता, पन भेद न कोई न पावे
तावसक तन चट पटे, कंई कही ना सोहावे
कह्या पीया कुछ अंगन लागे, नैनुं नींद न आवे
बाजु भेदन किसे ना कहुं कही भरम ना पूछा
सो पर मेरी जीव के जाने, पीयु मेरे को सुजहा
पीयु पीयु कर जीभा सुखाने, तो सांई मुख दीठा
पीयुने मिल मियां यूं कीते, दुख बिठाकर लीता
युं सययर श्रीजन मेरे, मान सीयुं में दीता
सो सुत्ता में परतक दीठा, महमूद मोहा कीता
केय करदा शाह मेहबुबुल्लाह व विलायत याफतन दाया

पैदा होते ही रोझा रखनेका शरई किरदार

हझरत महमूद दरियाई दूल्हा के पैदा होने के बाद आपकी वालिदाअे मोहतरमाने चाहा के फरझंदको सीनेसे दूधपिलाअें मगर बार बार पिस्तान मुंहमें रखने के बावजूद आपने कुबूल न किया. पूरा दिन अैसे गुझरा मगर जब मगरिबका वक्त हुआ आपने दूधपिया. यही मअमूल रोझाना रहा के दिनमें आप दूधन पीते और मगरिब के वक्त पीते. जब चंद दिन अैसे ही गुझरे तो आपकी वालेदा और दूसरी औरतोंने आपके वालिद हझरत हमीदुद्दीनकी खिदमतमें आपके इलाज करनेकी गुझारिश की. हझरत हमीदुद्दीन घरमें आये, साहबझादेको गोदमें उठाया और फरमाने लगे, तुम इस बच्चेको नहीं जानते, ये बेटा साईमुददहर (हमेशा रोझे रखनेवाला) और काईमुल्लेल (रातभर इबादत करनेवाला) होगा. ये खुशखबरी सुनकर आपकी वालेदा बहोत खुश हुई.

दूध पीने के झमानेमें हझरत शाहेआलमकी बारगाहसे बुझुर्गी और मुरीद बननेकी खबर

हझरत हमीदुद्दीनका अेक मकान मुबारक सारंगपुर अहमदआबादमें भी था. आपने हझरते महमूदको दूधपीने के झमानेमें कुछ दिन यहां भी रखखे. इस रेहने के झमानेमें अेक बार अपने बेटे को हझरते शाहेआलमकी बारगाहमें लेकर आअे. हझरते शाहेआलमने हझरते महमूदकी दोनों बगलें पकडकर उछाला और फरमाया, काझीका शिम्ला भारी है. काझी शिम्ला भारी है, ये केहते और उछालते रहे. इस उछालने के दरम्यान महमूदके पांव हझरत शाहेआलमकी पघडी मुबारकसे लग गये. जिसे देखकर हझरते हमीदुद्दीनने अपने साहबझादेको आपके हाथोंसे अपनी गोदमें ले लिया और फरमाया, हुझूर ! मेरे बेटे के कदम आपकी पघडीसे लगे हैं, ये गुस्ताखी हुई है, माफ फरमाना. हझरते शाहेआलमने फरमाया, ये कोई बेअदबी, गुस्ताखी नहीं है, रब तआलाने इस बेटेको अैसी ही ईज्जतवाला बनाया है. मैं चाहता हूं के ईस महमूदको अपने मुकामसे भी उंचा बिठाउं मगर क्या करुं रब तआलाकी मरझी कुछ और है. मेरी तमन्ना पूरी न हुई. अब इसकी किस्मत तुम्हारे हाथोंसे (मुरीद) बनने की है, इनको कोई मुरीद न बना सकेगा.

ख्वाजा दरियाइ का उगला हुवा दुध - दाया का चुस लेना

हझरत मियां महमूद आपकी अम्मा का दूध पीते और छोहारे का शरबत दाया पीलाया करती थी. अेक रोझ दायाने छुहारे का शरबत पिलाया मगर शरबत के पीते ही आपको केअ आई. केअ करदा सीरा अेक कपडे पर गिरा तो कपडे का दाग दायाने मलमल कर धोया मगर दाग कपळे पर से गया नहीं. ये देखकर दाया गभराई और सोचने लगी के ये दाग कपडे से कैसे दूर कर सकुं ? ये सोचमें थी के उसके दिलमें कुछ खयाल अेसा गुजरा के कपडे पर जो केअ का दाग था उसने उलफत करके चुस लिया. उसी वक्त उसके दिल का गुंचा खिल गया वो नझदीक और दुर के हालात देखने लगी रोशन झमीर हो गई और उसका सीना नुरुल अला नुर हो गया. अेक रोझ का झिक्र है के हझरत शाह हम्माद रहमतुल्लाह अलयह मजलिसे नबवी में खुश हाल बेठे हुवे थे. मगर आपका रुमाल मकान पर भूल गये थे. और

उसकी तलाश में थे. और आप अपनी नझरों को दाहने बायें फिराते थे मगर रुमाल नहीं पाते थे. रुमाल घर पर भूल गये थे. ये दिल में सोचने लगे के ईतने में दायाने आपको रुमाल ला दिया. तब आपने दाया से कहा के ये नेअमत तुझे कहां से मयस्सर हुई ? तब दायाने कहा के आपके भतीजे को अेक रोझ केअ हुई थी और वो कपडे पर गिरी थी. मैंने उसे बहोतेरी धोया मगर केअ का दाग जब गया तो मैंने उसे चुसा. उसी रोझ से मेरे दिल के गुंचे खिल गये हंय. ये सुनकर आप बहोत खुश हुवे और दुआअें दी.

हराम गिझा (बोराक) से वालेदाको बचाना और सात सालके बाद ईंटसे गवाही पेश करना

रिवायत है के आप जब वालेदा के पेद मुबारकमें थे उस झमानेमें अेक शख्सने आपकी वालेदा की खिदमतमें खानेकी कोई हराम चीझ नझराने के तौर पर पेश की. वालेदाने उसे खा ली. खाने के बाद वोह चीझ हझम न हुई और पेटमें दर्दकी शिकायत हो गई. पेटका दर्द झियादह होनेसे आपको उलटी हुई और खाई हुई चीझ तमाम बाहर निकल गई. इस वाकेआ के कुछ दिनों के बाद हझरते महमूद पैदा हुअे और जब सात सालकी उम्र हुई तो आपने पेटके दर्दका सारा किस्सा बयान किया मगर वालेदाने कुछ ध्यान न दिया. आपने दोबारह ये किस्सा वालेदासे तफसील के साथ और वक्त, दिन के साथ बयान किया तो आपकी वालेदाने फरमाया मियां महमूद ! गवाह पेश करो. आप उठे और मकानकी दिवाल की वोह ईंट उठाकर लाअे जिस पर आपकी वालेदाने उल्टी की थी. उस ईंट पर उल्टीके दाग भी मौजूद थे. ईंटसे फरमाया, ईंट गवाही दे तो हुक्मे रब्बीसे ईंट उमदा अंदाझसे केहने लगी के मियां महमूद जो केहते हैं वोह बात सच है. (वल्लाहो अअलमो बिस्सवाब)

अय ताईरे लाहूती उस रिज्ककसे मौत अच्छी
जिस रिज्कसे आती हो परवाझमें कोहाती

हझरत ख्जाजा महमूद महबुबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रहमतुल्ला अलैहे के निकाह का बयान

जब हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा बीरपुर शरीफ से ओळ (मु.ओड, ता.जी.आणंद) अपने खाला सैयदा बीबी मख्दुमा के वहां तशरीफ ले गये । अेक दिन हुझूरे अकरम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने आपको हुकम दिया के आप शादी करो कयुंकि आपकी नस्लमें (अवलादमें) कई मशहूर वली अल्लाहकी कतार पेदा होनेवाली है और जयादा जरुरी है के मेरा तोहफा पेदा होगा. आप आपके खालु सैयद शेख फरीद रहमतुल्लाह अलैहे के वहां शादी का पैगाम भेजो. हमने शेख सैयद फरीद रहमतुल्लाह अलैहे को भी पैगाम भेजा है. आपकी सहबजादी बीबी फतेह मलककी शादी हझरत पीरशाह हमीदुद्दीन चाहेलदा रहमतुल्लाह अलैहे के साहेबझादा खलफे अशरफ महमूद मेहबुबुल्लाह हझरत दरियाइ साहब रहमतुल्लाह अलयहे से करने में आये. हझरत सैयद झैनुल आबेदीन साहेबे (रहमतुल्लाह अलयह) हझरत रसूले अकरम नूरे मुजस्सम (सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम) का फरमान कबुल किया. आपके खालु हजरत सैयद शेख फरीद उर्फे जैनुल आबेदीन जो हजरत बहाउद्दीन जकरीया मुलतानी शोहरवर्दी की नस्लमें से थे.

दुसरी तरफ हझरत शाह गौषुलवरा पीर हमीदुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) ने बीरपुर शरीफसे ओड गांव में दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे की शादीका पैगाम भेजा. उन्होने फौरन ही शादी पैगाम कबुल कीया और फरमाया मुझे दरियाइ रहमतुल्लाह अलैहे से मेरी साहबझादी बीबी फतेहमलककी शादी करनेमें आये वो बात मंझुर है.

और इस तरह ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे की बारात बीरपुर शरीफसे गांव ओड, ता.जी.आणंद आई और आपका निकाह राबीआअे सानी, मरयमे झमानी बीबी फतेह मलक के साथ हुआ.

उस नेक खातुनसे आपकी आठ औलाद हुई . तीन बेटे (1) सैयद शाह लाल मुहम्मद (2) सैयद शाह अबू मुहम्मद अशरफखान और (3) सैयद जमाल मुहम्मद और पांच दुख्तरे (1) सैयदा बीबी साहिबा (2) सैयदा बीबी साहिबा जमाल (3) सैयदा बीबी साहिबा दौलत (4) सैयदा बीबी साहिबा चांद (5) सैयदा उम्मतुल अजीज साहिबा पैदा हुई.

बारगाहे गरीब नवाझमें ख्वाजा दरियाइ की हाजरी

और उसके बाद अजमेर शरीफसे तीन कोस (मंजिल) पर हझरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलयह और हझरत कुत्बुद्दीन बख्तीयार काकी रहमतुल्लाह अलयहकी रूहे मुबारक आपके ईस्तकबाल के लिये आई. उस वक्त हझरत बख्तीयार काकी रहमतुल्लाह अलयहने हझरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलयहसे अर्झ की के ईस कमसीन बच्चे के ईस्तकबाल के लिये आप तीन कोस तक तशरीफ लाये हैं ये राझ क्या हय? क्युं के आप शहेनशाहे हिन्दुस्तान अताओ रसूल हैं और ये कमसीन बच्चे हैं, उस वक्त आपने फरमाया के ईन्हें बच्चा मत समझो ये मेहबुबुल्लाह हैं. उनका दरज्जा अल्लाह त्आलाने बहोत बडा बनाया है. अगर हम उनके ईस्तकबाल के लिये तीन मंजिल आते तो बहेतर था. आप अपने झमाने के गौसुल अकताब कुत्बेझमां मेहबुबुल्लाह खिझर सिफत हैं. उस वक्त आपने अेक उकदह कहा

लालन तु क्यु रूसे सरीज प्यारा
पतीज करू तो जग जाने सारा
सचकी तांई कयाई चहलावुं
नीकल नाकमें जीबीन लाउ
सेहा तु मागे तो में सीस धर लावुं
नवल प्यारे तई मुझे जाने
तो मुझे अपना चाकर जाने
काची घडी तई मुझे जाने
तो मुझे अपना चाकर जाने
काची घडी लीयाउ पानी
ख्वाजा कुत्बुद्दीन अल्लाह प्यारा
बनवा महमूद दास तुम्हारा

सुल्तान मुझफफर शाह हलीम के वझीरोंका ख्वाजा महमूद दरियाइ की मुलाकात को आना...

हझरत महमूद महेबुबुल्लाह दरियाई रहमतुल्लाह अलयह जब इश्के ईलाही में विर्दो वझाईफ करते और ईश्के ईलाही में कुछ कलाम और जिगरी का शुग्ल करते तो आप पर वज्द तारी होता और आप ईश्के ईलाही में रोते तो आपकी आंख मुबारकसे खून के आंसु बेह निकलते थे. जो कतरे झमीन पर गिरते तो अल्लाहु का नक्शा बनता था. उस वक्त तमाम मशाईख हाजिर होते थे, ये हाल देखकर तमाम ईर्द गिर्द से लोग जमा हो जाते थे ये खबर तमाम गुजरात में फैल गई और ये खबर सुलतान मुझफ्फर हलीमने सुनी तो बादशाह को आपके दीदार का शौक हुवा तो सब वजीरोंको बुलाकर मश्वराह करके अपने खास वझीर को उसके साथमें कई फौजी सिपाही और दिगर खिदमतगारोंको बीरपुर की तरफ रवाना किये और यहां के हालात से आगाह होकर बादशाह को हकीकतसे ईझहार करें ईस गरझ से वझीर मअे लश्कर के बीरपुरमें हाजिर हुवा उस वक्त आप बच्चों के साथ में मेदानमें जल्वा अफरोझ थे. जब लश्कर को बच्चोंने देखा तो वो सबके सब मारे देहेशत के भागकर अपने अपने घरमें जा छुप गये. मगर हझरत अकेले उसी मेदान में खडे थे जब वझीर आपको अकेले खडे देखकर आपकी तरफ घोडा लेकर आया और आपसे पूछा के हझरत मियां महमूद रहमतुल्लाह अलयह कहां हैं ? आप बताईअे. तब आपने जवाब दिया के मुझे सब महमूद कहेते हैं तब वझीरने दिलमें सोचा के ये तो बच्चोंके साथ चोगनबाझी में शुग्ल करते हैं तो खुदाके मेहबूब कैसे हो सकते हैं? मगर वो खुद झुल इरफान इनसांने कहा कुल्लु यवमिन हुवा फी शान और हदीसे ली मअल्लाह अबगर वो हझरत से आगाह हुवा और उसी वक्त घोडे की झान से उतरकर केहने लगा हझरतसे के अय बुलबुले बागे जिनां ! के आपके जीगरी केहकर रोनेकी हकीकत बळे जोरो खराश से होती रही है के हझरत शाह हमीदुद्दीन के जिगर पारा जिगरी बनाते हें और जब ईश्के ईलाही में रोते हैं तो खून के आंसु रोते हैं. वो खुन के कतरे झमीन पर गिरते हैं तो अल्लाहुका नक्शा बन जाता है. तब आपने कहा मैं अेसी जिगरीयां बनाता हुं. उसका भेद कोई खोल नहीं सकता अेर अैसा खून मैं रोता हूं के हक और मुझमें परदा रहे जावे. फिर वझीरने कहा के उसकी गवाही चाहीये. जब ये

बात आपने सुनी तो कहा, अय भाई ! तू अब यकीन रख, गवाही तो मुन्किरों के लिये चाहिये और मकर के वास्ते हाजत नहीं रहेती और अयां का भी कहीं बयान होता हैं ? ये केहकर आप बेहोश हो गये और अेक आह मारी तो उस दम आपकी आंखोंसे खून जारी हो गया और आपने ये कलामे आयत पळहा.

कुल नारे जहन्नमा अस तुददोहुररन लव केलु यफ कहुना फलेयदहुकु कलीलंव वले यबकु कसीरन खैरुन बेमा कानु यफसेबुन

उकदह – ख्वाजा महमूद दरियाइ का खुन के आंसु बहाना

रुत रोअे दो लोईना सुन मेरे मीता
सुरत बीर बहो टीपां की अबरत कीता
मिलमिल सही समानीया मुझ पुथन आवे
नेन सुराते की होवे रत मांहे तरावे
किस किस बेदन हुं कहुं जी पीयुं युं कीता
आपे परत उपाय कर दुख हम सर दीता
रुत जो आई पीयुं बीनारत रोई बहाया
राता बल समना लिया उस रगत सजाया
पूछो जाय पलास को था उस बनमान हान
राते की साकेल मुखे होवे पळीठा नेहान
नेतो लोहुं राअेता में रगत बहाने
सैये बेल चनोटीयां उस रगत सचाने
जोन पतीजी मुझको जा देखी उसका नहा
अजो सुका जल नेन का चनोटी मान हान
महमूदमन में अेक मना सांई काने धाया
राजी नळी मोहंमद ये गिनाया बेर जाहे पाया
किस किस भेदन हुं कहुं यूं मीत मीबाया
तो ईस नेनों मेरे सैयो सुखमें पाया

सुलतान मुजफफरशाह बादशाह ख्वाजा दरियाइ की मुलाकात में आया खीदमतमें जागीरी पेश करना...

फिर सदरे जहां ने लहु के कतरों को अेक कपळे पर शोक से लिये और यहां से रवाना होकर बादशाह मुझफ्फर हलीम की खिदमत में हाजिर हुवा. जब सुलतान तमाम हकीकत से आगाह हुवा और खुशी के साथ नमाजे शक्रे दुगाना अदा की, अलहम्दोलिल्लाह कहे के बोला के अैसे कुतबे दीन वली अल्लाह गुजरातमें हैं ईस बात से वो बहोत बहोत शुकराना अदा करने लगा और आपकी खिदमतमें नझराना पेश किया. उसमें कई सोना महोर के भरे हुवे थान थे. और कहीं जागीर का नझराने का दस्तावेज भी आपकी खिदमत में पेश किया, मगर आपने उसमें से कुछ भी लेना मंझुर नहीं किया. फक्त बादशाह के मान की खातिर, अेक अशरफी ले ली. वो भी गरीबों को तकसीम करदी और बादशाह की तरफसे जागीर का दस्तावेज था उसके पीछे आपने अेक कलाम, नसीहत आमेझ लिखकर वापस कर दिया.

कलाम अव्वल नसीहत

आजन चीचे किये पत खोवे पीछे हाथ मले क्या होवे
तेअ किया बुजाह कहेरे सहेली वडर हवेली गरब थहेली
जिसका मरीजन जागत होवे सो क्युं नींद नचिंते सोवे
जहां नगहत बहेतर आईनसानसा देख न जाले जीवन रासा
कैसे उथ नहुसे साथा बहोत कहे सुं बहो सुं माथा अपनी
करके कन मन मानहा ये जग जाने फिरते छाना
छोड सवारत जो बद होवे पापन पेटन भरयो कोई
महमूदसांस जो जिसका जाउं उसको सरकार न कहे और राउं
किये तुं अपना जी ललचावे पासे और दिन करने जावे

उकदह - दिगर पंद आमेझ

बहोने बीरजुं जीवको पन बार न आवे
भुला दुनिया देखकर उस केरी धावे
नयनुं परतक देखती हैं नागन कारी
कोन कोन आयत सनखारों ये अेसी जोग हारे

सो तुझको क्युं होई सेरी जीव पचारे
जो तू मन में नचिंत हे सुन बचन हमारे
फुल महकते बाळीयां जहां भवर बहेलाते
सब साजन मिल बेठते और अंग नमाते
ते मंदर मंगल हुवे हस तोब बजाते
वे ठांवा सुनिया होयां मनडरी सोजाते
जीत सभुं हस हस बोलने और जीव पन हाते
ते ईन पथुं चल बसे हमु खोजन पाते
जे सरोवर हंस गोरी सो सरवर सोकाने
जाते दीनुं अेम हेरी मुरख अयाने
महमूदअेसा चालीअे जेसा मुख थे बाची
तीस तु मुरख आखीये जी सोने राची
जीन सर छत्तर डोलाती पुंजा सोते
जाने ईस कलमा नहीं वो कभी न होते

उकदह - सोयम नसीहत आमेझ गुफत

जिसका परीचन चाउं करे तक सेजन आवे
हीळा जिनका बजर काजी फिर न जावे
भा ईन कीरा जीवना जीस मत पछुहां
सो कीया जीव पीयु बिना तन उसका लोहा
सांईं बिन सोअे नींद भरे सुख रेन बहावे
सीयु में हस बोलते तस लाज न आवे
जीन गहन सरीजन गुन करे मन ओरुलीया
नत कही पर हंस लो नयना में रगत बहाया
मीत पीछुहा बीराह जल लु बलहकमी माअे
पार परम का हब लीयाजी प्रीत आयाअे
महमूदसुनोरे सांईयां यूं रैन दना हान
बहु साधर मुख देखने ने में मेरे मान हान

आख सदर जहां मुझको कब मिले सो सांई

तन मत लोह हो रहा शेह कीरे तांई

सुलतान मुजफफर हलीमने हजरत हमीदुद्दीन चाहेलदा से मुलाकात चाही मगर....

ये कलाम जब सुलतानने पढ़ा तो उसको बहोत पसंद आया और फरेफ्ता हो गया और आपकी खिदमतमें चांपानेर से रवाना होकर बीरपुर आया और आपकी मुलाकातसे बहोत खुश हुवा आपने बादशाहको दुआओंसे नवाझ कर दरजात हांसिल किये और बादशाह को आपके वालिद साहब से मिलने की बहोत आरझु थी मगर हझरत शाह हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहने दुनियादारों से मुलाकात करना बंद कर दिया था ईस लिये आपने बादशाह की मुलाकात ली नहीं. तब बादशाहने कुछ वझीफा के लिये कहा तो आपने नीचेकी आयत शरीफ और शेअर भिजवाअे आयते कुरआन शरीफ वमा मिन दाब्बतिन फिल अर्दे इल्ला अलल्लाहि रिज्कह.

शेअर

मा आबरू फर व कनाबत नमी बरेम

बा बादशाह बगोई के रोझी मुकदरस

ये सुनकर बादशाह अपनी राजधानी अहमदआबादकी जानिब राही हुवा.

दुनिया खुबसुरत शीकल में झर्रीन लीबास में आना खवाजा महमूद महबुबूल्लाह की पास

अेक रोझ दुनिया खुबसुरत शक्लमें झर्रीन पोशाके तन झेब करके हझरत मियां महमूद रहमतुल्लाह अलयहकी खिदमतमें हाजिर होकर अर्झ करने लगी के आप मुझे अपनी गुलामीमें रखखो मगर आपने दुनियाको पहेचान लिया था और आपने फरमाया के तुझे खबर नहीं के हमारे आका नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमने फरमाया हय अद दुनिया झी-फतुन व तालेबोहा किल्लाबुन.

याने दुनिया मुरदार है और उसका चाहनेवाला कुत्ता हय और फरमाया के कौले पयगम्बर हय के,

तालेबद दुनिया मुखन्नसुन व तालिबुल उकबा मुअन्नसुन व तालेबुल मौला मुजक्कुरुन याने तलब करनेवाला दुनिया का हिजळा है और तलब करनेवाला उकबा का औरत हय और तलब करनेवाला मौला का मर्द हय.

फिर आपने फरमाया के ये तेरे दोनों हाथों में क्या हय? तब उस मक्कार दगाबाझ दुनियाने जवाब दिया के मेरे अेक हाथमें रस्सी है और दुसरे हाथमें असा हय और जो मेरा तालिब हय उसे मैं रस्सीमें बांधती हुं और असे से उसे मारती हुं और फिर आपने फरमाया के तेरे सरमें टाल किस सबब से पडी हैं ? तब उसने जवाब दिया के जो कोई मुझसे निकाह (शादी) करे और वो खर्च करे तो मुजको न पा सके उस वक्त जब मैं उससे जुदा होना चाहती हुं तो वो ईन्सान मेर पीछे दोळ कर मुझको पकळना चाहता है मगर मैं उसके हाथ नहीं आती मगर मेरे सर के बाल उसके हाथमें आ जाते हंय तो मैं झोर करके उससे छुटती हूं तो उसके हाथ में मेरे बाल रहे जाते हैं मगर तालेबाने हक को जब मैं फसाने जाती हुं तो वो मुजे अपने नालैन (जूतों) से मारते हंय ये उसका कहेना था के आपने अपने नालेन को हुक्म दिया तो वो भाग निकली और आपने ये आयत पळही. यवमा योहयी अलयहा फी नारे जहन्नम फत्तकु यावेहा जबाहो हुम व जोनुबहुम व झहुरोहुम हाझा मा कत्तरतुम ले अन्फोसेकुम फझुकु मा कुन तुम तक्ने झुन.

फिर तो दुनिया वहां से भागी और आगे जा कर रास्तेमें झर का (सोने का) ढेर हो गई नागाह वहां दो अफगान दफारे हिन्द से ईसी मुकाम पर आये अेक का नाम था शुजाअतखान और दुसरेका नाम था रुसतम खान उस सोने के अंबार के करीब आओे तो शुजाअत खानने वो झेवर उठा लीया और रुस्तमखान से छुपाया तब रुस्तमखानने कहा के ये झर में मुझे हिस्सा दे तो शुजाअतखानने जोशमें आकर कहा के तेरी अक्ल और होश कहां है? तो रुस्तमने कहा के ये दोलत हक तआलाने अपनी महेरबानीसे अता की हय और उसकी तलब में अपने मकान से यहां तक आओे हंय. शुजाअतने दिल में ठाना के रुस्तम ये दोलत में से उसकी ताकत से हिस्सा झरुर लेगा और वो गझबनाक होकर मोका पाकर रुस्तम को तलवार के अेक वारमें काम तमाम कर दे मगर रुस्तमने भी तलवार खींची दोनों में तलवार के वार

पर वार होने लगे. और दोनों झखमी होकर बेहोश होकर झमीन पर गिरे. दुनिया ये तमाशा हझरतको दिखाकर ये उकदा केहती हुई गायब हो गई.

उकदा दर पश्ता महेबुबुल्लाह

आज हुं सो बाल कुंवारी, मसवा सुन कंथ प्यारे
वर बहेतरी मैंने कीती, छील पाळे छोळी जीते
में किस्से न हाथा देता, मोल खोयान लाहा लीता
कोई आ कहे ये मेने राई, वर बाप भोवे भाई
मत बोल औसा कोई माने, सत मेरा कोई न भाने
पर महमुदीन मेरी जाने, हुं सुधही आते पेछाने
जी मन दन कदरुं बता दहा, ने यहां सांईसदन सुधा मांधा

जब दुनिया ये दोनों अफगानों को मानिन्दे मुरदा कर के भागी और हझरतने तमाम वाकेआ देखकर उन पठानों की लाश पडी थी वहां तशरीफ फरमाकर आपने दुआ दी तो वो दोनों अफगान नई जिंदगी पाकर होश में आओ. शुजाअतखान के बाल लंबे थे वो सब खूनमें आलुदा थे तब हझरतने उन अफगानों से कहा के तुम अपना जिस्म और कपळे पाक करो ये कस्बे में बेफिक्र चले जाओ. तो हझरत के केहने पर उस गाउंमें गओ और वहां अमन चैन से रहेने लगे.

मुजफफरशाह और दुख्तरे धोबन

अेक रोझ हझरत शाह खव्वाझा मियां महमूद रहमतुल्लह अलयह ईबादते ईलाहीमें मशगुल थे आप ईश्के ईलाही में मस्त थे उस वक्त गुजरातके बादशाह मुझफ्फर हलीम आपकी ईबादतगाह में हाजिर थे उस वक्त आप शुगुल अझकार में महव थे आपने बादशाह की तरफ नझर उठाकर भी न देखा तब बादशाह को दिल में ख्याल आया के में गुजरातका बादशाह हुं और ये तो दुरवेश हैं मगर मेरी कोई ईझझत नहीं करते हैं. इस बात का आपके दिलमें ख्याल आया के बादशाह को फख्र है तब आप उठे और बादशाह का हाथ पकडकर हुजरे में ले गओ. कहा के आंखें बंध करो बादशाह ने आंखें बंधकीं तब बादशाहने अपने आपको अेक वसी मेदानमें

जहां अेक तालाब था वहां खळा पाया उस वक्त बादशाहको पानी पीने की हाजत हुई तो उसने ईर्द गिर्द देखा तो तालाब पर अेक धोबी कपडे धो रहा था उसके करीब पहोंचा तब धोबीने कहा के तुम कहां से आ रहे हो और क्युं आओे हो? तब बादशाहने कहा मैं राह का भूला हुवा हुं मुझे भूख लगी हे अगर आपके पास कोई खाना हो तो मुजे खानेको दो. धोबीने कहा हमारे यहां खाना मुफ्त किसीको नहीं दिया जाता मगर ये मेरे धुले हुवे कपडोंका गठळा उठा लो तो मैं तुमको मेरे मकान पर खाना खिलाउंगा. बादशाह बहोत भूखा हुवा था ईस लिये धोबीकी बात मंझुर कर ली और धोबी के साथ गठळा उठाकर धोबीके मकान पहोंचे वहां खाना खाकर वहीं धोबी के घर बादशाह ठेहरा उस शहेरका नाम लोग बल्ख केहते थे. बादशाह हमेशा धोबी के साथ तालाब पर जाता और शामको धोबी के साथ वापस आता कुछ अरसा गुजरा तो धोबीके दिलमें ख्याल गुझरा के उसकी अेक लडकी औलादमें थी वो शबाब में पहोंची तो धोबीने उसकी औरतसे कहा के हमारी लडकी जवान हो चूकी हे तो उसका जोळा तलाश करना चाहिये. स्त्री फिक्र में थी के धोबी के दिलमें ख्याल आया के ये लडका अपने यहां हे वो शरीफ और नेक लळ्का हे वो मंझुर करे तो उसके साथ शादी कर दें ये सोचकर बादशाह से पूछा के तुमको शादी करना दरकार हे? तो बादशाहने मंझूर किया और शादी कर दी. धोबी की लळ्की से बादशाह के तीन फरझंद हुवे और कुछ अरसे के बाद धोबी और धोबनका ईन्तेकाल हो गया और बादशाह उसकी मिल्कतका हकदार हो गया मगर कुछ अरसेमें बादशाह धोबीकी जो मिल्कत थी वो खर्च कर चूका क्युं के बादशाह से कोई महेनत न होती थी. जब मकानमें मआशकी तंगी होने लगी तो मियां बीबीमें जगडा पैदा हुवा. धोबी की लडकीने कहा के ईस शहरमें हझरत मियां महमूद रहमतुल्लाह अलयह रहेते हैं वो रहेम दिल हैं लोगों को कर्जे हसना देते हैं वो गुजरातके बादशाह हैं. येही शहर बल्ख के शहेनशाह हैं और नाम उनका सैयद खव्वाझा मियां महमूद महेबुबुल्लाह है तो तुम उनके पास जाओ और अपना अहेवाल कहो तब बादशाह अपने तीनों फरझंदोंको लेकर चला अेकने बादशाहकी उंगली पकडी, दुसरेको पुश्त पर बिठाया और तीसरेको कमरमें बिठाकर सरे बाजार होकर हझरत की खिदमत में हाजिर हुवा और आपको देखकर पहचान गया और बहोत शरमिंदा

हुवा. तब हझरतने कहा शरमाओ नहीं मुझफ्फर क्या बात हय. तब उसने कहा मुझे पांचसो रुपिये (मुबलीग) कर्झ दो तब हझरतने कहा तुम मुझे कबाला (चीठ्ठी) लिख दो और उस पर महोर कर दो तो बादशाहने कबाला लिख दिया और उस पर महोर अंगूठेकी कर दी तो आपने पांचसो मुबलीग देकर रवाना किया. बादशाह खुश हुवा और अपने फरझंदोंको खिलाया कुछ अरसे के बाद पैसा खर्च कर डाला और वोही तंगी दर पेश हुई और मकानमें फाकेकी वजह से जगडा होने लगा. तब बादशाह लाचार होकर कुल्हाडी लेकर जंगल की तरफ रवाना हुवा तो दूर से कोई सुफेद लिबास पेहने हुवे पानी के किनारे खडे हुवे दिखाई दिअे. बादशाह उस तरफ चला तो वहां हझरत महेबुबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयहने बादशाहको बुलाया. वो आपको पहचान गया मगर शर्म के मारे आंख नीची कर ली तब हझरतने बादशाहका हाथ पकडा और कहा आंखें बंधकरो जब आंखें बंधकरके खोलीं तो वही मुकाम बीरपुर हझरत की ईबादतगाह और वोही हुजरा और वोही महेफिल थी वहां बरसों के बरस गुझरे थे और यहां अेक पल. ये करामात हझरत की देखकर बादशाह बहोत ही फिक्र में था. यहां से हझरत से ईजाझत पाकर अपने तमाम वझीर वुझरा और लश्कर को लेकर वापस अहमदआबाद गया. बाद अेक मुद्दत के हझरतने अेक खादिमको कहा के बादशाह के पास जाकर अपना कर्ज ले आओ तब खादिम बादशाह की खिदमत में हाझिर होकर हझरतका पैगाम सुनाया के हझरतने जो आपको पांचसो रुपिये कर्झ दिया हय वो मंगवाया हय तो सुलतान बोला के हझरतका अेक दाम भी मेरे पास नहीं. ये जवाब सुनकर खादिम वापस आया और जो बात हुई वो झाहिर किया. आप बोले कोई फिक्र नहीं दोबारा खादिम को (चीठ्ठी) रुक्का जो बादशाहने लिख दिया था वो लेकर भेजा. खादिमने बादशाह की खिदमतमें हाजिर होकर रुक्का बादशाह को दिया. बादशाह रुक्का देखकर भी ईन्कार करने लगा के मैं गुजरातका बादशाह हुं और मुजे क्या झरुरत के मैं पीर से पैसे मागुं. और लुं. मगर उसके गवाह हों तो लावें. फिर खादिम हझरत के पास वापस आ कर हकीकत बयान की तब आपने फरमाया कोई फिक्र नहीं. गवाह बुलाउंगा और उनसे गवाही दिलवाउंगा. अेक रोझ हझरत सुलतान मुझफ्फरके यहां तशरीफ ले गये और कहा के तुझे फख्र बहोत है और हुकुमत के नशेने दिल तेरा वीरान किया हे.

मगर मेरे पांचसो रुपिये मुजे दे दे तब बादशाह बहोत गभराया. और कहने लगा के मुजे क्या झरुरत थी के आपके पाससे कर्ज लुं. मगर गवाह हो तो बहेतर हे. तब आपने खत बादशाह को दे कर कहा के खत बराबर है. सही और महोर भी मेरी है मगर मेरी समजमें नहीं आता के मैंने आपसे कर्जा क्युं लिया. ईस लिअे गवाह हो तो मेरे दिलकी परेशानी दुर होवे. तब आपने सुलतान को पकळकर कहा के चलो शहेर के दरवाझे की तरफ चलें तो सामने से अेक महाफा आता हुवा नजर आया, उसमें बादशाह की बीबी (धोबन) और तीनों बच्चे बेठे हुवे थे और वो केहने लगे के तू बडा बेशर्म और बेहया है. हम को छोळकर यहां आकर छुपा है ? ख्वाझा मियां महमूद रहमतुल्लाह अलयहेका प्यार हम पर कर्झका तकाझा करता हे कर्ज लेनेको बहोत रोज गुजरे हैं मगर आज तक उनको दिये नहीं ये केहकर वो महाफा वहांसे गायब हो गया तब सुलतान बहोत शरमिंदा हुवा और हझरत के कदमों पर गिरा और कदम बोसी की. हझरतने फरमाया के तुम्हारी बादशाही बेहतर हे या हमारी फकीरी?. बादशाह को तसल्ली देकर बादशाह के मेहमान ठेहरे और बीरपुर तशरीफ ले गअे.

हाकीम का सर नझर नहीं आता

अेक रोझ हझरत शाह महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयहे को आपके वालिद साहब आपका हाथ पकळकर मद्रसे में ले जाकर उस्ताद के पास छोळ आये थे. वहां आप और बच्चों के साथ में कुरआन शरीफ पळह रहे थे के अेक महेमुदनगर का सरदार उसके सीपाहीयों को लेकर जा रहा था. उस वक्त मकतब के बच्चे कुरआन शरीफ पळहते थे तो उस हाकिम को देखनेके लिये मकतब से बाहर निकल आअे. उनके साथ हझरत भी मकतब के बाहर तशरीफ ले गअे. और आपने उस्ताद को बोला के हाकिम के तन पर सर दिखाई नहीं देता तब उस्ताद बोले के खामोश रहो ये हाकिम है. होश रखखो कौले नबीअे करीम हे के मन सकत सलम व मन सलम नजाहो. ये कोल पर अमल करो और अपनी झबान को संभालो, अगर ये सुन जाअे और खफा हो जावे तो बडी मुश्कील हो जावे और यहां रहेना मुश्कील हो जावे, वेसा केहकर उस्तादने आपको दो तमाचे मारे तो आप खामोश होकर सबक

पळ्हने लगे. हाकिम शिकार के लिये सीधा जंगल की तरफ रवाना हुवा, ईतने में उसके दो सिपाही आपस में लडने लगे और दोनों तलवारें खींच कर तेजबाझी करने लगे तो हाकिम उनको छुळाने दोळा तो अेक की तलवार हाकीम की गरदन पर लगी तो उसी वक्त हाकिम का सर गरदन से अलग हो गया. ये हरकत देखकर लश्कर में तेहलका मच गया. सबने मिलकर हाकिम को दफन कर दिया. तमाम कस्बे में ये बातका शोर मच गया और हझरतने फरमाया के अल्लाह के हुक्म से जो हुवा वो बराबर हुवा. उस्तादने हझरतका हाथ पकळकर आपके वालिद साहब के पास ले गअे और कहा के ये गौसे खल्क हय और उनको सबक देने की मुझ में ताकत नहीं हे. ये उस्ताद की शिकायत सुनकर आप के वालिद साहबने फरमाया के अैसे खफा होनेका सबब क्या हय ? तब उस्तादने फरमाया, अय गौसे दीदार ! आपके साहबझादा और सब पळ्ह रहे थे और हाकिम का ईस तरफ से गुझर हुवा. उस वक्त आपने उसके हक में बददुआ की तो हाकिम का तन से सर निकल गया. उस वक्त मैंने हझरतको अेक दो तमाचे मारे और मैं बहोत डरता हुं के शायद मेरे हकमें बददुआ फरमा दें तो मेरा क्या हाल हो?. मेरे कुसुर को माफ कर दिजीये. और मैं उनकी उस्तादी के लायक नहीं हुं ये केहकर उस्ताद मद्रसे की तरफ रवाना हो गये तब से हझरत को आपके वालिद साहबने ईल्म पळ्हाया, तमाम उलुमे झाहिरी बातिनी से नवाझे......

फकीर को रोटी का सुखा टुकडा दे...

हिकायत : फकीरी के नझद खुद पारस मी दास्त ब
महेबुबुल्लाह ईझहार करदा गरेखता बुद

अेक रोझ अेक फकीर आपके दरवाजे पर हाजिर होकर खाना मांग रहा था, जब हझरतने उसकी आवाझ सुनी तो खादिम से फरमाया के उसे रोटी का सुखा टुकडा दे. शायद ये भूखा होगा. तो खादिमने फरमान के मुताबीक रोटीका सुखा टुकडा हाजिर किया, वो साईल देखते ही गझबनाक होकर केहने लगा, आप विलायत के शाहेजहां हैं मगर मकान में तो फाकाकशी है और दिल में केहने लगा के इनसे बहेतर मेरी फकीरी हैं क्युं के मेरे पास संगे पारस (पारसमनी) हय. और वो

खादिम से केहने लगा के तू अेक लोहेका पुराना बरतन ला दे. तब खादिमने अेक लोहेकी पुरानी कळ्हाई लाकर उस फकीर को दी तो फकीरने कळ्हाई पर वो पथ्थर (पारसमनी) घसी तो कळ्हाई सोनेकी हो गई, उस वक्त वो फकीर वहां से भागा के शायद ये पथ्थर मुजसे हझरत छीन न लें, ईस फिक्र में भागा तो खादिमने हझरत को ये फकीर की तमाम बात केह सुनाई तो आपने खादिम को कहा के जा और उस गुस्ताख फकीर को पकळ ला, उसी वक्त खादिम दोळा और फकीर को पकळ लाकर आपकी खिदमतमें हाझिर किया तो वो कांपता और डरता हुवा दस्त बदस्त खळा रहा. तब हझरतने उसे तसल्ली दी और कहा के त क्युं भागा था? तो उसने जवाब दिया के आप कळ्हाई और पथ्थर (पारसमनी) मुजसे छीन लेंगे ईस डरसे मैं भागा था. तब आपने आपके खादिम जीवाको फरमाया के तू जा और सात ईंटें लाकर हाजिर कर. तब खाजिम हुक्म के मुताबिक सात ईंटें लाकर हाझिर कीं तब हझरतने जीवाको कहा के ईस ईंटों पर पेशाब कर तो खादिम ने आपके हुक्म के मुताबिक उन ईंटों पर पेशाब किया तो खुदा के हुकम से वो ईंटें सोनेकी हो गईं, तब आपने उस फकीर को कहा के अय अहमके! मुजे तो मौलाने ईस्मेआझम अता किया हय, मुजे तेरे पारस की दरकार नहीं और ये सब चीझें मुरदार हैं. उसे उठा ले जा और तौबा कर, वो शरमिंदा हो कर हझरत से फैझवर होकर रवाना हो गया.

हैदराबाद-दककन के मुरादखान के गुमशुदा बेटे को बाप से मिला देना...

अेक शख्स का अेक पिसर गुम हुवा था. हैदराबाद का रहेनेवाला मुरादखान नामका पठाण था. उसका बाराह साल से लळ्का गुम हो गया था. और वो पठान उसके लळ्के के फिराक में ईधर उधर उसकी तलाश में भागा करता था. और लळ्के के गम में दिवानाझार फिर रहा था. के उसका अेक दोस्त उसको मिला और उसके हाले तबाहका हाल पूछा तो उसने अपने लळ्के के गुम हो जाने का वाकेआ कहा तो उसके दोस्तने तसल्ली देकर कहा के तू बीरपुर जा, वहां हझरत ख्वाझा सैयद महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह रेहते हैं और वो गुमशुदा की खबर लेते हें, छुपी बातोंको वो कश्फ व करामात से बताते हैं और आरझुमंद की तमन्ना आप पूरी फरमाते हैं

और जो बीमार आता हे तो वो भी आपकी दुआसे शिफा पाता है. आपके दर पर कोई भी दाना हो या नादान और किसी भी मझहब का हो सबके साथ में आपका नेक बरताव होता है. आपके वहां न कोई गैर है न यार है. बल्के सभी ईन्सान अल्लाह तआलाकी मखलुक हैं ईसी तरहा आप सब पर महेरबान हैं. ये सुनकर मुरादखान को खुशी पेदा हुई और आपकी खिदमतमें हाझिर हुवा. उस वक्त आप जिक्रे ईलाही में अेसे मशगुल थे के आप मस्ती में झुम रहे थे. आप जिक्रे अझकार से फारिग हुवे और मुरादखानकी तरफ देखा तो उसने आपकी कदम बोसी की और अपनी तमाम रुदाद बयान की (अर्झ की) के मेरा पिसर गुम हुवा है. उसे बाराह साल गुझर चूके हैं. ईसकी फिक्र में आपकी खिदमत में आया हुं तो आप मेरा लळ्का मुझे मिला दो मैं उसको देखलुं, तब आपने तमाम मुल्क की झमीन को मुराकबा से देखा मगर कहीं पता न पाया तो आपने कहा के मैंने बहोतेरा ढुंढा मगर कोई पता चला नहीं. ये सुनते ही मुरादखान झारझार रोने लगा और शोरोगुल मचाने लगा. आपने फरमाया के गम मत कर, तेरा फरझन्द कामरु देश में है और अेक औरत उस पर आशिक होकर उसको ले गई है. और जादु से घेटा बना रखखा हे और उस्से मोहब्बत रखती है. ये सुनते ही मुरादखान और गमगीन हुवा और आहें भरने लगा. तब आपने फरमाया, गभराव नहीं, ये केहकर उस लळ्के को कामरू देश से छुडा कर यहां हाजिर किया. उसके बापको मिलाया, उसे पास में बिठाया मगर वो घेटे की शक्ल में ही था तो आपने उससे कहा के उकदा रिश्तेका खोल और जादु को खोल तो उस उकदा जादु का खोला तो वो असली ईन्सानी शक्ल में हो गया बाप और लळ्का बगलगीर हुवे और आपने नमाजे शुक्राना अदा करके उनको वतन जाने की ईजाझत दे दी. वो खुशी खुशी वतन को रवाना हुवे.

शहेर पट्टन गुजरात को खबीस शैतान की शरारतसे छुडाना

शहेर पटन में अेक खबीस रहेता था. वो खुबसुरत औरतों को हेरान करता था. शहेर पटन में शहीदों के मझार हंय और शहेर में अेक खबीस रहेता था. और कइ ईन्सानों के सर फोडता और औरतों को सताता था. ईस सबब खल्के खुदा हेरान परेशान थी और शबोरोझ दुआअें मांगती के परवरदिगार ईस शयतान की शरारत

से हमको बचा ले. जब दुआ उनकी मकबुलियत पर पहोंची तो परवरदिगारने अपने हबीबे पाक के झरीअे जो अेक शहीद हें उनको हुक्म दिया के तमाम शहेर के शहीदों को इकट्ठा करो और खबीस को पकळकर कैद करो. ये फरमान सरवरे काअेनात सल्लाहो अलयहे वसल्लम का सुनकर तमाम शहीदों को बुलाकर अपने आका व मौला का फरमान सुनाया तो सबने खुशीबखुशी कुबुल फरमाया, सब ईकट्ठा होकर चले. ये बात का पता उस खबीस को चला तो वो कांपने लगा और केहने लगा के अब कहां जाउं ? मुझे वो अब कहीं भी भागने नहीं देंगे. ये सोचता था के शहीदों का लश्कर आ गया. उन शहीदों में से अेक ने घोडे से उतर कर उस खबीस को लात मारी तो वो मानिन्द गधे के आवाझ करने लगा और फौज के रोब से डरने लगा तो आपने उसको कब्झ करके अपना गुलाम बनाया. तो आप जो हुक्म देते वो बजा लाता. उसका नाम मुखबझ थाप उसको साथ लेकर अेक रोझ आप हझरत ख्वाझा महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयहके पास मुलाकात को तशरीफ लाअे. उस वक्त वो खबीस आपके साथ गुलामी में हाजिर था और आप बावली नदी पर तशरीफ लाअे. वहां आपने अपनी सवारी का घोडा था वो उस खबीस मुखबझ को सोंप कर हझरत की मुलाकात के लिये तशरीफ लाअे. आपने उनको सीने से लगाया और जो उनके साथ में थे, जब हझरतने शहीद मर्द से कहा के तुम्हारे जिस्म में मुरदार (खराब) बू आती हय तो उस वक्त हझरत शाह दावल रहमतुल्लाह अलयहने मुखबझ खबीस की तमाम हकीकत कहे सुनाई और कहा के वो खबीस बावली नदी पर घोडा थामे हुवे हे. यहां नफर (गुलाम) बना कर लाअे हैं, वो आपके पास आने से डरता हय येह सुनकर आप खफा हो गअे और बहोत रंजीदा हुवे जिस सबब आपकी आंखों से आंसु बेहने लगे. तब हातिफे गैब से निदा आई के आपको मंझुर होतो उसके गुनाह बख्श दुं. और उसकी शरारत दुर कर दुं. तो आपने दुआ दी और कहा, बारी तआला ! तू बळा कुदरत वाला हे. तेरे लुत्फो करम से उस पर महेरबानी कर. ये दुआ करके खादिम को कहा के बावली नदी पर जो खबीस खडा हे. उसे मेरे पास बुलाला. तब वो खबीस नहाकर आपके सामने हाजिर होकर कुरनीस बजा लाया तब उसको देखकर आपने दरगाहे बारी में इल्तिजा की के खुदावंदा ! ईसकी खबासत दुर कर. ये फरमातेही उसकी सब नजासत दुर हो गई

और उसे विलायत मिली. आपकी नझरे तासीर किमीया थी और आपकी तकरीर अजब फैझयाब थी. ईस मझमुन पर ह. लतीफ साहबने चंद मिसरे लिखे हैं वो ये हंय.

नझम

नझर थी कीमिया तासीर उनकी
अजब बा फैझ थी तकरीर उनकी
सुखनका दुर्र जिसे करते ईनायत
दो आलमकी उसे मिल जाती दौलत
लतीफ अपना तू रख साबित अकीदा
किया कर उनके औसाफे हमीदा
न कुछ उनकी करामत बीच शक है
करामत उनकी बाकी हश्र तक है
असर है फिर करामत का
है मुन्कर मुनतझ बझाका
वहां ये कोम का क्या होगा हाल
बे कहे मुंहसे ना मसरुअ अकवाल
बुतों की शान में नाजिल है आयत
उसे देते हैं निस्बत औलिया साथ
न समजते हैं वो मकसूद उसका
न हासिल उनको है कुछ सूद उसका
मुझे या रब ! ये मझहब से अमां दे
इताअत मुझको शाहे इन्सो जां दे
ये कफसे तनसे जब निकले मेरी जां
मेरे ईमान का होना निगहेबां
तेरा पळहतेही पळहते इस्मे आझम
ब आसानी निकल जावे मेरा दम
तुफैले आल और अस्हाबो अहेबाब
दुआ ये कर कबूल अय रब्बे अरबाब !

ख्वाजा दरियाइ का श्रीनाथ द्वारा हिन्दुओके साथ जाना

मियां मनसुर बिन चांद मुहंमद तेहरीर करते हैं के अहमदआबाद शहर से अेक काफला श्रीनाथजी जानेको रवाना हुवा और कंई दिनमें बिरपुर में आकर जब गुझारा किया. फझर के वक्त वो काफलेवाले नाथद्वार के लिये रवाना हुअे उस वक्त हझरत शाह महमूद(रहमतुल्लाह अलयह) खेल रहे थे. और काफलेवालों का नझारा देख रहे थे. उस काफलेका अेक सरदार नेक किरदार था वो बोला के हम सब मिलकर अपने नाथ के द्वारे जाते हैं उस वक्त आपने उससे कहा के जो तेरेसे हो सके तो हम भी तेरे साथमें आअें तब उसने दिलमें सोचा के ये मुसलमान हे मगर ये मर्दे खुदा है और गौसुलवरा हय. ये सोचकर उसने कहा के तुम शेर शाह हो और मेरे हमराह चलो ये केहकर अदब तसलीम अदा कर के आपको महाफेमें बिठाकर कंई दिन राह तय करके नाथद्वारा जा उतरे वहां वो सब काफलेवाले मुकाम करके खाने पकानेमें मसरुफ होकर खाने पीने लगे मगर हझरत मियां महमूद रहमतुल्लाह अलयह उनसे अलग होकर तमाशा देख रहे थे. और आपने ईरादा किया के मैं भी श्रीनाथ को देखुं और आप मनदिरके करीब तशरीफ लाअे तब उन हुनुदोंने अर्झ की के आप मुसलमान हो ईस लिये यहां से चले जावो. तब आपने फरमाया के जब तब तुमारे न देख आवें तब तक यहांसे हम न जाअेंगे. तो उन बेचारोंने सोचा के ये झबरदस्त मस्त है ये सोचकर हेरान हो गये. बुतखानेको बंद करने ताला लगा दिया तब आपको उनकी बात्त पर गुस्सा आया और आपने कलाम कहा उनकी झबानमें कलाम कहा

कलाम

माजा पुर बेलाबन क्या महेबा पर भोवे करम वैसा

जानुं नह बेपड को वाहीबा, करमे क्युं ले गाई ओ बधी

जीवहत्या करी अधरम कडवी रहे हे, के में बेलळी बोहतो हतो

लोधी अर्थ लोभ थका अलय बोलीया, केमें रस्ते सवारे पर

नाथ कहे धी, केदम बलागन ओगन करमानीला, केमे केरा नहीं

कनता झान ली हुं आधीला सामी सन ग्राह मोकीला केमे

पर मारे पर दरसर देधी, बहनत महमूद ये पाप पुराना थये

थी कान ओरसने जोर देधी

आप उस गांव के करीब अेक तालाब था वहां जाके बैठे. उस रात को काफलेवालों को बशारत हुई के खुदा के नेक बंदोंसे जुदाई अच्छी नहीं और तुम उन्से माफी मांगो. वरना तुमको बहोत बडा नुकसान उठाना पडेगा. उस वक्त सभी मिलकर आपकी खिदमतमें हाजिर हुवे और माफी मांगकर आपकी खातिर तवाजोह की.

उक्दह

गवारों क्युं देव पूजा जाय, क्युं भूले सीधी राहे आव सहेलीया पूतला थंका, करवत चीरे देह हाथ पांव वली जुदा जुदा घडीया मुखतरी बनवाला तेरा तब कौन कौन पातेरीनी गहत छीदायो बहोत है तुमको हान खोटा धंधा देख आपस में पूतला खडीया जान, आग सूरजको नमता छोडो, राह तुलो जिस तरी मुखसे पडो कल्मा नबीका, चिश्ती होवे बेहिस्ती बंदा महमूद महमूद खास नबीका मानो हिन्दु बोल गले जनोई तोडकर आवो, दीन में दिलका मन्का खोल.

आपने उन हुनुंदोंसे ईकरार लिया के यहां कोई मुसलमान आअे उसे हरगिझ मना मत करना और औलिया अल्लाहके मजारों पर जाना उन्से कभी बुराई न करना. ये नसीहत करके आपने उनको माफ किया.

पथ्थर को मिस्री (शककर) बना देना...

ईस्लामखान नामी अेक मुदर्रिस हझरत काझी महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह के रोझे मुबारक में जा कर बच्चों को पढ़ाते थे और अेक रोझ उनके दिलमें खयाल आया के मेरे मत्कब खानेमें हझरत मुतलक आते नहीं, ये मेरे दिलमें उनका तसव्वुर था के ईतने में हझरत तशरीफ लाये तो मैंने उनको ताअझीम से बिठाअे. ईस मेहफिल में हझरत जलवा अफरोझ हुवे थे और उस वकत अेक हाफिझ भी सबक पढ़ रहे थे. उस वक्त हझरतके पोता हझरत प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह हाजिर थे, सबक हाफिझ का सुन रहे थे. मुजे सदआफरीं फरमाकर कहा, अय ईस्लामखान ! शयतान के बारे में तेरा क्या कोल हे? तब कहा के ईबलीस आतिश से बना हे. फिर आपने कहा हक है. मगर ईबलीस मिस्ल समंदर हे. और

उसको झरर नहीं लागु हुवे अगर ये बात जब सुनी और ये बात शरीअत और हकीकत के मुताबिक पाई तो खुश हुवे और मुजको मरहबा कहा. उस मजलिस में अेक और शार्गिद थे और उनने अर्झ की के मुज पर ईस्तहाका दस्त रस हे और मुजे मिसरी खानेकी हवस हे. ये बात जब हझरतने सुनी तो वहां अेक पथ्थर पडा था वो पथ्थर उसको दिया के ले ये मिसरी हे. तो पथ्थर मिसरी बन गया. ये देख कर सब दंग हो गये और वो वझन में दश शेर के बराबर था.

हजरत ख्वाजा महमूद महेबूबुल्लाह दरियाइ के दामाद हजरत अब्दुलगनी रहमतुल्लाह अलयहे की वफात

मलिक दाउद से नकल है के हझरत महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह के दामाद हझरत अब्दुलगनी थे और आपका विसाल चांपानेर करीब आया और सकरातका वक्त था. उस वक्त आपने वसीयत की के मुजे उत्तर जानिब के दरवाजे पास दफन करना. आपकी वसीअत के मुताबिक जब आपका विसाल हो गया तो आपको गुसल देकर कफन पहेनाकर आपका जनाजा लेकर दरगाह शरीफ के करीब पहोंचे. उस वक्त हझरत महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयहे आपके साथीयों को लेकर वहां तशरीफ लाअे और हझरत अब्दुलगनी साहब के खादिम भाई जी से कहा के आपके ताबुत (लाश) पर से कपळा हटाव और कफन के बंधखोल दे. ताके में मुंह देख लुं और आखेरी अलवीदा कर के मुसाफा करके चहेरा देख लुं. तब खादिमने आप के हुक्म की तामील की तो आपने हझरत अब्दुलगनी रहमतुल्लाह अलयह से फरमाया, उठो मैं तुमसे मिलने का मुशताक हुं. ये आवाझ सुनते ही आपने आंख खोली और उठ बैठे हुवे. ये हाल मबलुक देखकर गभरा गअे और कुछ दुर गअे और बेहोश हो गअे तो उनकी आंखों पर हाथ रखकर आंखें बंधकर दीं. अैसेमें हझरत महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह के भाई हझरत मौलाना शाह अहेमद रहमतुल्लाह अलयह वहां तशरीफ लाअे. आप हझरत दरियाई रहमतुल्लाह अलयहने हझरत अब्दुलगनी रहमतुल्लाह अलयह को फरमाया के मेरे भाई आपको मिलने के लिअे तशरीफ लाअे हंय तो आपने करवट बदलकर हझरत मौलाना

अहेमद रहमतुल्लाह अलयहकी तरफ आंख खोल कर देखा और फिर आंखें बंधकर ली. फिर बाद हझरतने फरमाया, आपको जो खाने की झरुरत की चीझें पेश करता था वो बनीया रामा आप से मिलने को आया हे ये सुनते ही अपनी आंखें खोलकर बनीये की तरफ देखा तो बनीया ये हालत देखकर गश खाकर झमीन पर गिरा. ये हाल देखकर हझरत मौलाना अहेमद रहमतुल्लाह अलयहने फरमाया, हझरत ! आप ईजाझत दो तो ईस मैयत को दफन कर दें, अगर आप ईनको जिन्दा कर दो तो तमाम खलकत आपके पास मुर्दे लेकर हाजिर होंगे और आप ईस काम में लगे रहोगे और आप जिक्रे हक न कर सकोगे. फिर आपने फरमाया, ठेहरो तो मैं शिजरा और कलमा देकर उनको जन्नत की तरफ रवाना करुं. फिर आपने कुछ कलमा पढ़े और हझरत अब्दुलगनी साहब के सर पर टोपी रखखी और फरमाया के शजरा अपने हाथों में लो तो आपने दोनों हाथ लंबे किये तो हझरतने आपको शजरा शरीफ हाथो में दिया वो आपने ले लिया. बाद में आपका जनाझा उठाकर आपकी वसीयत के मुताबीक दफन कर दिया.

बारीश की दुआ के लिये सैयदजादे नजमुद्दीन और सैयद अब्दुल मुस्तफाका दरियाइ दुल्हाकी बारगाहमें आना

गुजरातमें अेक साल केहत साली हुई उस अरसे में मियां हम्माद नूरी आपकी खिदमत में हाझिर हुवे तो आपने उनसे पूछा के तुम्हारी खेतीका क्या हाल हे? मियां हम्माद बोले के बगेर पानी के खेती सुख रही हे आप दुआ फरमावो ताके बाराने रेहमत नाझील होवे. आपने कहा चलीये खेतमें जाअें. और सैर कर के वापस आअें. तो मियां हम्माद बोले, खेत मेरा दुर हे और ईस वक्त गरमी बहोत हे. तब आपने फरमाया, आंखे सें बंद करो, और कुछ देर के बाद कहा, आंखें खोल दो, जब आंखें खोल के देखा तो अपने को खेत में पाया. फीर हझरतने फरमाया, अेक रस्सी लाव और मेरे हाथ पैर ईस रस्सी से बांधो और मुजे उंधा लटका दो. तब मियां हम्माद ने अर्झ की के हझरत ! अेसी गुस्ताखी हमसे हरगीझ न होगी. तब आपने मियां हम्माद के खेडूत से कहा के में अपने हाथ से बांधपाडं और तु ईस दरख्त की डाल से मुजे लटका दे. तो उस किसानने हझरत को लटका दिये. तो आपने फरमाया, ये

रस्सी है उससे चंद बार मुझे मार, तो उसने रस्सी से अेक दो हाथ मारा था के अब्र धिर आया और पानी बरसने लगा और नदीयों में झबरदस्त पुर आया. खुदावंद करीम ईस तरह महेरबान हुवा के खेती खलकत की आबाद हो गई.

बयान दीगर बारान बंद सुदा बुद

हिकायत के रावी बंदा महंमद हें वो इस तरह बयान करते हैं के ईस कस्बे के रेहनेवाले सैयदझादे अेक महमूद नजमुद्दीन और दुसरे सैयद अब्दुल मुस्तफा और तीसरे जान मोहंमद ये तीनों भाईयों से रिवायत हे के अेक साल बारिस की मोसम में कई हफतों तक बारीस नहीं हुई और खेती सुखने लगी. ईस गम से खलकत अेकदम रोने लगी और हझरत की खिदमत में हाजिर होकर अरझ करने लगे के हमने कर्झ लेकर खेती किया है मगर बारिश आती नहीं ईस लिये हम सब गमगीन हैं और बगेर पानी के खेती सुखती है आप हमारी मदद फरमाअें. क्युं के आप अल्लाह के महेबूब हैं. तब हझरतने सब पर महेरबान होकर दुआ की और अेक साअत गुझरी मगर बारिश हुई नहीं तो फिर हाझरीन ने आपका दामन पकडकर आजीझी की तो आपने फिर उन्के हक्मे दुआ की मगर कोई आसार बारिश के दिखाई नहीं दिये तो सब हाजिरे महेफिल हेरान रहे के जो हझरत फरमादें वो उसी वक्त हो जाता है मगर अब की बार क्या वजह है ? फिर आपने आसमान की तरफ नझर कर के देखा तो लौहे महेफूझ पर लिख्खा पाया के ईस साल केहत साली हे तो आपने अर्झ की के मोलाअे काअेनात ! तू आलम का मौला है ये केहकर आपने अपनी कसम दी और ये आयत पळही यम ओवल्लाहो मंय यशाओ व यबसेतो व इन्दहु उमरा ले किताब.

जब ये आयत आपने पळही तो आपकी आंखों से खून के आंसु रवां हुवे और आपका पयरहन खूनवाला हो गया, उसी वक्त बारिस बरसने लगी और आसमान गरजने लगा, फिर तो ईस तरहा की बारिश हुई के आपने दुगाना अदा किया और अेक जिगरी (मल्हार) बनाई और आप जब मल्हार (जिगरी) पळहने लगे तो आपकी आंखों से खून के आंसु बहेने लगे...

जिगरी

जारे पपैया पीयु पर छाओ
दीगर लोबे न मित जगाओ....
मास असाढे पीयु सधाया
सावन मास संवरने आया....
भादर भर भर लेवुं निसासा....
आसापुर के सांई आसा....
चौवदस नदी नाले भाई....
मोर टहुके शब्द सुनाओ....
बारा मेख सवर यु आवे....
रसीये माते अंग नमावे....
पंथी सबही सवर कर आई....
पंखी सारी माले पाई....
घर घर का मन बीर फुटी....
नैयनो पावस बरसे मोती....
महमूदसांई सदन तओरथ माने....
तौमत ओतना जीवा जाने....
लाईन बंधाई श्रीजन करीओ....
सोने चोंच मढाउं तेरी....

चित्तोड के किले की फतह के लिये - बादशाह बहादुरशाह का हजरत ख्वाजा दरियाइ दुल्हा की बारगाहमें आना...

गुजरात का सुलतान बहादुर शाह बडा झीहोश और जंग जवां बहादुर था. उसके दिल में ख्याल पयदा हुवा के चीतोड पर चढाई कर के फतेहयाबी हांसिल करुं ताके मेरी शोहरत दुनिया में होवे. ईस गरझ से चितोड जाने के लिये बीरपुर हझरत महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह की खिदमत में हाझिर होकर आप से दुआ की दरखास्त की के आप दुआ फरमाईये और आप चितोड मेरे साथ में तशरीफ ले

चलें क्युं के आप मेरे पीर हैं और आपकी दुआओं से मैं आज तक फुला फला हुं और कामयाबी का बाईस आप की दुआ हे. जब बादशाहने बहोत दरखास्त की तो आप बादशाह के हमराह चितोड तशरीफ ले गअे, वहां राणा सींगराज राज करता था. चितोड को फतेह करके बादशाह ने मालवा के शाह को शिकस्त दी और वहां से दख्खन के जानिब रवाना हुवा और मांडुगढ का किला फतेह करके वहां सुबा मुकर्रर करके वहां से दौलताबाद और अहेमदनगर पर काबिझ हुवा तो उनसे सुलहा कर के उनसे खिराज (खंडणी) मुकर्रर कर ली. फिर तो बादशाह के दिल में गुरुर पयदा हुवा के मेरा सानी हिन्दुस्तान में कोई बहादुर नहीं क्युं के मेरे पास 200000 (दो लाख) का झीहोश लश्कर हे और तमाम दख्खन के मुल्क के शाहों पर मेरी हकुमत है. ये उस सुलतान की फख्र की बातें सुनकर उमराओं और वझीरोंने मिलकर हझरत से कहीं जिस से आप नाराझ हो गअे और ताअज्जुब करके बैअत (शेअर) कहे.

बहादुरशाहकी बदतमीजी और हजरत महमूद महबूबुल्लाह दरियाइ का नाराज होना

शेअर

चु शेर आं न मानद दर मुरगेझार....
कुनद रुबाह लंग आं जा शिकार
खुखाई के बाला व पस्त आ फरीद
झबर दस्तो दहर झेरे दस्ता आ फरीद

ये हझरतने कहा तो उस वक्त महेफिल में अेक चुगलखोर भी था उसने बहादुरशाह से जाकर कहा के हझरतने आपकी शान में उपरका शेर कहा हे तो बादशाह बहादुरशाह को तो फख्र हो गया था और उसके दिल में हझरत की तरफ से कुछ बुराई पयदा हुई और उसने हझरत को केहला भेजा के आप अब हमारे मुल्क को छोडकर शेर दिलावर या हुमायुं के मुल्क में या दिगर मुल्क में तशरीफ ले जाईअे क्युं के अब आपका यहां रेहना मुनासिब नहीं. तब आपने उस जा ये बैत पव्हीं के अल मराओ मआ और आपने फरमाया के ये फरमान हे रब्बे आला के

माला माली फकराओ अयाली याने मुल्क हक हे मुल्क फुकरा और मिला शाहों को फुकरा से, फकीरों की झबां में ये ताकत हे जिसे चाहें बिठाअें और जिसे चाहें उठाअें और हमारे हाथों में ताकत हे और जिसे चाहें शहेर दें या तबाही और तू अब ईन्तेजार कर के अब तेरे सामने शेर आता हे वो तुजे बलामें डालेगा और तू आराम भी नहीं पायेगा, तुने मेरे सोजे जिगर को जलाया है. ईस लिये तुजे भगाने को शेर आया हे. और उसके डरसे भागा जावे और मौत के लिअे गोता मारे, हमने दुआओं से तुजे पाला था ईस लिये तू अब कांटे की तरह देखता हे तो देख, अब ईस दरख्तकी जळ उखाड कर उसे दरिया के बीचमें डालता हुं. अल गरझ ईस शान के साथ आप अपने मकान की तरफ रवाना हुअे.

गुजरातकी हुकुमत हुमायु और मुगलोके नाम करना

लिख्खा है कि थोडी मुद्दत के बाद जब मुकाम मंदशोर के करीब पळा था वहां लश्कर के साथ में पळा था. उस वक्त हुमायु बादशाह वहां आया तो बहादुरशाह वहां से भागकर अहेमदआबाद आया तो फिर हुमायु वहां आकर तख्त पर बेठा और नव महिना और पंदरा रोझ तख्त पर बेठा रहा. फिर अकबराबाद के लिये रवाना हो गया. फिर बहादुरशाह गुजरात में छुपता फिरता रहा. आखिर थक कर दीव बंदर पर जाकर कश्ती पे सवार होकर फिरंगीयों के हाथ दरिया में मार गया.

दख्खन (साउथ इन्डिया) के दो ब्रह्मन को औलादके लिये लुकमा देना...

हझरत चांद महंमद रहमतुल्लाह अलयह फरमाते हैं के दख्खन शहेर की रहेनेवाली दो झईफा बरहेमनझादियां हझरत के औसाफ सुनकर बीरपुर हझरत की खिदमत में हाजिर हो कर अर्झ करने लगीं के हम दोनों बे औलाद हैं और हमको ख्वैश और गैर ताना देते हैं और बांझ कहेकर हेरान करते हैं तो हम आपके नाम की शोहरत सुनकर आपकी दुआ लेने के लिअे आई हैं. उस वक्त आप अपने मुंह में कोई चीझ डालकर चबा रहे थे. उस में से आपने ईन दोनों औरतों को अेक अेक लुकमा बनाकर दिया.

उनमें से अेकने तो फौरन लुकमा खा लिया मगर दूसरीने खाने में शक ला कर खाया नहीं और दूसरी से केहने लगी के तू बराहमन झादी होकर हझरत का दिया हुवा लुकमा खाई है और उसने जो लुकमा उसे दिया था वो लुकमा अेक जगह पर झमीन में दफन कर दिया और वो दोनों अपने वतन को रवाना हो गईं. जो अकीदतमंद थी और उसने लुकमा खाया था तो उसे हमल रहा और नव महिने पूरे हुवे तो उसको लळ्का पयदा हुवा और लळ्का अेक साल का हुवा तो वो आपकी खिदमत में हाजिर हुई और नझर जो लाई थी आपके सामने हाजिर की और दूसरी वोह औरत जिसने लुकमा नहीं खाया था वो भी साथ में हाजिर हुई थी. उस वक्त वहां हझरतने उसको कहा, क्या तेरे लिये मैंने दुआ नहीं की थी या तूने उस लुकमे को नहीं खाया और कहीं फेंक दिया था? तो उसने आपको जवाब दिया, हझरत ! मेरी गलती हुई और मेरे दिल में शक पयदा होनेसे वो लुकमा छुपाकर गुझरगाह में दफना दिया था, तो आपने फरमाया, तुने जहां वो लुकमा दफन किया था वहां तलाश करके यहां लाज तो वो उस जगाह दोळी जहां लुकमा दफनाया था. वहां जाकर जमीन खोदी तो उसने चीडीयासा लडका पाया मगर वो बे-जान था ईन्सान की शक्ल में तो वो वहां से उठा लाई और हझरत के आगे रखखा. तब आपने फरमाया, के ये लुकमा है उसे खा ले तो छे महिने में तुझे लडका पयदा होगा. खुदा की महेरबानी से मेरी दुआओं से लडका पेदा होगा मगर तेरे लिये बहेतर येही हे के तेरी रुस्वाई दुनिया में ना हो. फिर वो अपने वतन दख्खन की तरफ रवाना हुई और छे महिने बाद उसे लडका पैदा हुवा.

पानीका फटा हुवा मट्टी का मटका दुबारा बना देना

हझरत वजीहुद्दीन अलर शाह नकल करते हैं के चांपानेर पहाड के नीचे अेक कूवा है वहां आपकी मुरीदा रहेती थी. वो गरीब महेनत मझदुरी करती और अपना गुझारा करती थी. वोह अेक झईफा के वहां पानी लाकर उसको देती थी. अेक रोझ का मोका हुवा के वो बेचारी कुवे पर पानी भरने को गई और पानी भरकर वापस हुई तो कूवे के करीब पानी ढुलता था ईस लिये वहां कीचळ हुवा था और वो पानी का मटका लेकर वहां से गुझरी तो उसका पाँड फिसला तो उसके सर पर पानी का

भरा हुवा मटका था वो गिरकर फूट गया तो वो बेचारी उस बुढी मालकन के डर से रोने लगी. ईस बात की खबर हझरत दरियाई दुल्हा महमूदमहेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह को हुई तो आपने उस पर महेरबानी फरमाकर खादिम को भेजकर उसको पैसा भेजे के ईन पेसों से नया मटका खरीदकर पानी भरकर लेजा. मगर उस गरीब बाईने ईनकार किया के अगर मैं नये बरतनमें पानी भरकर जाऊँगी तो वो मुझ पर बोहतान बांधेगी और भला बुरा केहकर मुजे परेशान करेगी. अेसा केहकर वो झारझार रोने लगी और केहने लगी के मेरा टुटा हुवा घळा दुरस्त करवा दो तो आपकी बडी महेरबानी होगी. ये सुनकर खादिम हझरत की खिदमत में हाजिर हुवा और पूरा वाकेआ बयान किया तो आपने फरमाया, वो रंजीदा औरत से केह दे के वो घळा (मटका) के टुकळे लेकर चली आये. तब खादिमने उस औरतसे कहा तो वो सब के सब टुकळे ईकठ्ठा करके हझरत की खिदमत में हाजिर हुई तो आपने उन टुटे हुवे बरतन के टुकडों पर हाथ रखकर कुलनकसा और कुल यवमा फीशान पळ्हे और वो बरतन दुरुस्त कर दिया और कहा के खुशीसे लेकर जा. ये रिवायत वजीहुद्दीन बयान करते हैं के ये करामत मैंने अपनी आंखोंसे देखी हे. उस वक्त ईमामुद्दीन भी हाजिर थे.

ख्वाजा महमूद महेबूबुल्लाह दरियाइ का अपने दामाद अब्दुलरझझाक को सुपारी का टुकडा देना...

हझरत अब्दुलरझ्झाक रहमतुल्लाह अलयह बयान करते हैं के रमझानुल मुबारक की छब्बीसमी तारीख थी और असर का वक्त था उस वक्त मंय हझरत की खिदमत में गया और रोझा ईफतार करने के बाद आप मुझे सुपारी देने लगे और कंई बार आपने आपके मुंहमें डालकर सुपारी मुझे दी और मैंने उसे खाई तो आपने फरमाया के ये जिगरी तुम खुश्ईलहानी से सुनाओ ताके मैं सुनुं खुशहाली से.

जिगरी गुफ्त महमूद महेबूबुल्लाह (रहमतुल्लाह अलयह)
मीत सलुना में पाया, जिसका था मुझे हावा
सखी समानी बचे हुं, रानी मलमल करूं बधावा

पर थी सारी जिसको हांडी, कहीं खोज न पाया
अवमत मेरी मनचत नाहीं, सो घर बैठे आया
प्यार किया मुझ महुत चढाई, तेयह लागा ईत मीठा
हाथ मुंह देकर सबको सहीया, जब ओ मीठा दीठा
शेह मेरा तब पास न छोरी, तल तल हंस कंठा लावे
महमूद मन में भी राखे, सहाग अनंग नमावे.

हझरतने असर की नमाझ पळही और जब आपने दाऐं तरफ सलाम फेरा तो आप फरमाते हैं के मैंने तखते नबुव्वत देखा और जब बांऐ तरफ सलाम फेरा तो मैंने सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमको देखा और मगरिब की नमाझ हुझूर सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम के साथ में पळही तो फरमाया ये घर हमारा बेशुबाह शक रहे तुम्हारी ये मुबारक रात शबे कद्र है. और निहायत पुर सुरुर मकबूल है. और हझरत अब्दुलरझ्झाक रहमतुल्लाह अलयह केहने लगे, आपके केहने से मैं अपने मकान पर नहीं गया और दूसरे रोझ आपने मुझे मकानपे जाने की ईजाझत दी और मैं अपने मकान पर गया और रात को बाद नमाज तरावीह और ईशा पळहकर फारिग होकर कुछ वझाईफ पळहकर फारिग होकर सोया तो ख्वाबमैं अेक रुहे मुजस्सम रास्तेमें जाते हुअे देखा और उनमेंसे किसीने कहा के ये शफीउल मुझनबीं सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमकी रुहे तैयेबा ताहेरा हय, मैं खैरुलवरा की नझदीक गया और खिदमते आलीमें जा कर अर्झ की के ये खबर आपसे हैं या कोई गैर से हैं ? हयाती लकुम रहमते व ममाती लकुम रहेमतुम.

हझरतने फरमाया के ये गलत नहीं, ये मेरा फरमान है. जब मैं बेदार हुवा तो ये पळह लिया, या अलतो या अलसतो. मैंने जाकर मुखबिरों से ये पूछा और ईस्लामखान को भी ख्वाब में सरकारे मदीना का दीदार हुवा तो उनसे पूछा के ये बात सच है ? तुमने आज ख्वाबमें क्या देखा हे तो वो बोले के मेरे ख्वाबमें खैरुल वराको देखा हे और मैंने गुफतेगु की और आपके फरमानसे मैंने कुरआन शरीफ का दूसरा पारा पळहा तो आपने फरमाया, ईसे बार बार पळहीयेगा और जब तक मुरशिदसे न देखें वहां तक दूर तालिब की न हो और पीरसे कुछ तलाश करे ताके यकीन आ जाअे.

हिन्दुस्तान के मशहरो मारुफ वली-अे कामील हजरत सैयद शाह मीरां सैयदअली दातार के पीरो मुर्शीद हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा से शहादत अता करना और मान्डु (मघ्यप्रदेश) का किला फतेह होना....

न-क-लस्त के चूं सुलतान मुजफफर रहमतुल्लाहे अलैहे वालीअे मुल्के गुजरात बराअे फत्हो हिशारे शादियाबाद उर्फ मांडूगढ अजम नमूद व दर महमूदनगर उर्फ बीरपूर व खिदमते फैजे दरजत पीरे खीद हजरत महबूबुल्लाह आमदह कदमबोस शुद । दर आं लश्करे जफर-पैकर मुजफफरशाह जनाब सैयदुस्सादात शाह सैयद डोसनमियां साहब बाशिन्दअे नहरवाला उर्फ पट्टन, खलीफ-अे हजरत महबूबुल्लाह सूबा पानसद सवारां बुदन्द, खल्फे अशरफे इशां मस्उदे अजली व मकबूले लम-य-ज-ली ब-उम्रे दवाजदेह साले हमराहे खिदर बुदन्द, दर खानअे खुद ब पट्टन बुदन्द, फौजे सुलतानी ब बिस्यार जां-फशानी जंगी दन्द, अम्मा किल्अहअे मांडू मफतुह न गर्दीद । बर्दीमुजब सुल्तान मुनजजेमां रा पुरसिद के, चे सबब अस्त के किल्अह फत्ह नमी गर्दद ? हमा रम्माल व रह्हाल ब किताबे रमले खुद तलाश नमूदा, गुफतन्द के, शख्से नेक रविशे मुसम्मा ब सैयदअली कोदके वली हस्त, अगर उ रा ब तल्बीदह के फत्हे इं हेशार ब नामे आं सआदत अेसास्त । फिलफौर, सुल्ताने आलीशान शख्से मुय्तबरे रा अज मुलाजेमान बराअे तलबे सैयदअली साहब ब फरस्ताद । आं हजरत ब हुकमे रब्बुल इजजत आमदाहब सुलतान मुलाकी शुदन्द, वकती के अज पट्टन राही शुदन्द । दर अस्नाअे राह ब करिया उन्हावा मकाम नमूदा, आं जा रा पसंद फर्मूदा व कब्रे खुद कंदायीन्दह पुर अज गल्लअे गन्दुम कुनायीन्दाह बुदन्द । ब मुजर्रद दर आमदने अज खाना बरोज पंजशब्मा, ब वकते जोहर ब खिदमते महबूबुल्लाह (ख्वाजा मियां महमूद दरियाइ) हाजिर शुदन्द व आं हजरत आं ममां आबदस्त मीफर मुदन्द, पिदरे इशां जनाब सैयद डोसनसाहब अर्जन मुदन्द, या पीर दस्तगीर ! दरबारे इं कोदके सगीर चीजे दुआ कुनैद । ब कोदक फर्मूदन्द, अय जानेमन ! आं चे मतलब तू बाशद ब तलब । अर्झ नमूद, या पीर ! मोरा शहादत बायद । फर्मूदन्द,इं म ख्वाह के तूहनूज कोदक हस्ती । अर्झ कर्द, या पीर ! दिलम रागिबे शहादत अस्त । फर्मूदन्द, खैर, तोरा फर्दा शहादत ख्वाहद शुद । इं फर्मूदा, सेह कत्रअे आबे वुजू ब ऊ दादन्द, ब नौशानी दन्द व फर्मूदन्द के, मा तोरा मर्तबअे शहादत दादैम व हर जा के लाशअे तू रफता काइ मशवद, आं जा मजारे तू ख्वाहद शुद । अल-किस्सा, अलस्सबाह बरोजे आदीना किल्अह मफतुह गर्दीद व मीरां

सैयदअलीसाहब शहीदे अकबर शुदन्द, पस सुल्ताने आलीशान लाशा मुबारके सैयदजादा रा ब अेजाजे तमाम व अेहतेरामे ताम्मा, ब उन्हावा फरस्ताद व दुख्तरे नेक अख्तर सैयदी के नाम-जद ब सैयदजादा बूद दर अैन वकते शहादते शौहरे खुद जान ब-हकके तस्लीम नमूद। हर दू रा ब कर्याअे मजकूरा (उनावा) मदफुन साख्तन्द व आं सैयदजादा रा दर मजारे के खुद कन्दायीन्दा पुर अज गन्दुम कुन्दायीन्दा बुदन्द ब-गार निहादन्द। इं चुनी तसर्रुफ महबूबुल्लाह ता कियामे कियामत जारी अस्त। (ब-हवाला : तोहफतुल कारी कलमी पेज-204-205)

रिवायत लीखते है की जब गुजरात के बादशाह सुलतान मुजफ्फरशाह हलीम रहमतुल्ला अलयहे ने शादीवाबाद उर्फ मांडुगढ का किल्ला जीतनेका इरादा किया तब उन्होने महमूदनगर उर्फ बीरपुरमें अपने पीरो मुर्शद, फैझे करम के दरिया हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे की खिदमत में हाजीर हुअे और कदम बोसी की। फिर बादशाह मुजफ्फरशाह के सिपेसालार हजरत सैयद शाह डोसन (डोसुमीयां) साहब नहरवाला उर्फ पट्टन के बासींदे थे वो हजरत सैयद मीरा सैयद अली दातार के वालिद थे और हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे के खलीफा थे वह 500 घोडेसवारो के सिपेसालार थे। उन्के नेक शेहजादे सैयदअली जीन्की उम्र तकरीबन 12 साल की थी वह अपने वालिदे गिरामी के साथ नहीं थे बल्की वह अपने घर पट्टन में ही थे। सुल्तान का लश्कर बडी बहादुरी से जंग खेली मगर मांडुगढ का किल्ला फतह नहीं हुवा। सुल्तान मुजफ्फरशाहने नजूमीओने पूछा किल्ला फतह न होने की वजह कया है तब उन्होने सारी किताबे देखने के बाद बताया की एक नेक इन्सान जीनका नाम सैयदअली है उन्की उम्र बहोत कम है लेकीन वह पैदाइशी वली है और यह किल्ला फतह होना उन्ही के नाम लीखा हुवा है। तब सुलताननें फौरन सैयद मीरां सैयदअली दातार रहमतुल्लाह अलयहे को बाइजजत बुलाअे और अल्लाह के हुकमसे मीरा दातार रहमतुल्लाह अलयहे घरसे रवाना हुअे और पट्टन की और निकले रास्तेमें उनावा गांव आया वहीं कयाम किया और वह जगह आपने बहुत पसंद आइ और वही जगह पर अपनी कब्र अनवर खुदवाइ और उसमें गेहूंसे भर दी। आप घरसे निकलने के बाद अपने पीरो मुर्शद ख्वाजा दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे की खिदमतमें जुमेरात को जोहरके वकतमें हाजीर हुअे तब आप वजू फरमा रहे थे। हजरत सैयद मीरा सैयद अली दातार के वालिदे गीरामी जनाब सैयद डोसन साहबने अर्ज की हे पीर दस्तगीर ! यह मेरे छोटे बच्चे के लीये दुआ फरमा दो। तब सरकार ख्वाजा दरियाइ दुल्हा

रहमतुल्लाह अलयहेने फरमाया के हे अजीज फरजंद जो चाहो वो मांगो। तब सैयद मीरा दातार रहमतुल्लाह अलयहेने कहा, या पीरो मुर्शद मुजे आपकी दुआसे शहादत चाहिये। यह सुनकर हजरत ख्वाजा दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे ने फरमाया के बेटा सैयद मीरा अभी तुम बहोत छोटे हो और तुम्हारी उम्र अभी शहादतकी नहीं है तो तुम अैसी चिज मत मांगो। लेकीन उस वकत हजरत सैयद अली दातारने कहा गुजारीश की, या हुजूर मेरा दिल तो सिर्फ शहादत ही चाहता है। तब हजरत सरकार दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे ने फरमाया के ठीक है तो तुम्हे कल यानी जुम्आ के रोज तुम्हे शहादत नसीब होगी। और जीस जगह तुम्हारा जनाजा रुक जाअे उसी जगह आपका मजारे अनवर बनेगा। तो कहनेका मतलब यह की जुम्आके रोज मांडुगढ का किला फतह हुआ और हजरत सैयद मीरा सैयदअली रहमतुल्लाह अलयहे शहिदे अकबर हुअे। इस्लामी जंगमें शहादत और वह भी जुम्आ के रोज मीली इसी वजहसे शहीदे अकबर कहे गये। शाह मुजफफरशाहने हजरत सैयद मीरा सैयदअली रहमतुल्लाह अलयहेकी जनाजा को पुरा अदबो अयाल और ताजीम के साथ उनावा गांव भेजी। तो उस वकत आपकी मंगेतर यानी जीसके साथ आपकी शादी होने वाली थी वह पाकीजा सैयदा तैयबा ताहेरा भी अल्लाहके हुकमसे इस दुन्यासे कुच फरमा गये और इन दोनो को गांव उनावा में ही दफन कीये गये और जीस कब्रमें हजरत मीरा सैयदअली रहमतुल्लाह अलयहेने गेहूं भरे थे उसी कब्र मुबारकमें उन्हे सूपूर्दे खार्क किये गये।

हजरत महबूबुल्लाह ख्वाजा महमूदशाह दरियाइ दुल्हा अलयहिर्रहमा का तसव्वुर, इख्तियार, फैजान, करामात और मकबूलियत आज भी जारी है और कयामत तक जारी रहेगा इन्शाअल्लाह सुब्हानल्लाह!

हजरत सैयद मीरां अली दातार रहमतुल्लाह अलयहे के दादा गुजरात के दरमियानी दोरमें आये थे। 830 हि.स. 1426 इ.स. में आये। अहमदआबादमें सुलतान अहमदशाह बादशाह इ.स.1411 से 1442 में दरबारमें आकर गुजरातमें रहेनेकी परवानगी मांगी थी। अहमदशा बादशाहने आपको इजजतसे बुलाया और लश्करमें सिपेसालार बनाया। अहमदशा बादशाहने सैयद इल्मुद्दीनसे कहा घोडे सवारो को लेकर लीलापुर गांव जाव। पट्टन नगर के भील और डाकुओके केर त्राससे अवामको (लोगोको) बचाओ। हिजरी सन 880 इ.स.1475 में इल्मुद्दीनने राजा मेवास के साथ जंग की भीलो और डाकुओके जुल्ममें अवाम (प्रजा) को बचाया। हजरत सैयद अलीके वालिदका नाम दोस्त मोहम्मद (डोसुमीयां) था। वालिदाका नाम आयेशाबीबी था। आपका खानदान सनुसीडोल में रहेता था वहां से कडा मानेकपुर जुनेमें आये वहां से गुजरात आये

। आपकी सैयद अली दातार रहमतुल्लाह अलयहे की पैदाइश 29 रमजान 876 ही.स. और इ.स.1474 जुमेरात के दिन वफात मु.चांद 29 मोहर्रम हि.स.898 इ.स.1492 मु.मान्डु (मध्य प्रदेश) में शहीद हुवे दफन मु.उनावा, ता.जी.महेसाणा । ख्वाजा दरियाइ की पेदाइश के तीन साल बाद पेदा हुअे 22 सालकी उम्र पाइ थी । उस वकत ख्वाजा महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे की 25 सालकी उम्र थी ।

ख्वाजा महमूद महेबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा और जोगी बालनाथ जादुगर की मुलाकात...

हझरते अब्दुलरझ्झाक रहमतुल्लह अलयहे जो हझरत के दामाद थे वो हिकायत बयान करते हैं के अेक राहिब बालनाथ जादुगर था उसके पास चारसो चेले थे और वो भी जादुगरी के फन में हुशयार थे उस जोगी की उम्र चारसो साल की थी और वो हझरत महमूदमहेबूबुल्लह रहमतुल्लह अलयह की खिदमत में हाझिर हुवा और अेक हिन्दी दोहरा आपको सुनाया वो ये हे.

दोहरा

जब हम तुमसे बिछडे, दुखी हुवे मन माह....
हम तो तुमको सवरते, तुम जानते के नाह...

जवाब दोहरा

जब तुम हमको सवरते, हम होते तुम पास....
कुनजी केरी बीजहबी...मन में करो ब मास...

आपने कहा के तुजे ये भी याद हे के हमने तुजे गम से आझाद किया और हम तुजे लंका में मिले थे और कंई दिन तक हम साथ में रहे थे. तु अेक औरत पे आशिक था और उसके खावींदने तुजको कतल करने का ईरादा किया था उस वक्त हमने तुजे बचाया था ? ये सुनकर वो गभरा गया और अर्झ की आपको आप पानी के किनारे चलें तो मैं आपको जादु बताउं याने उस पानी पे चलें तो हम आपको दिखाअें. तो आप उसकी बात पर पानी के किनारे चले वहां अेक पीपल का दरख्त था वहां आप और जोगी साअेमें बेठे, जोगी फख्र से पानी पे चला तो उसके टखनों तक पानी आया. साथ में हझरत निझामुद्दीन थे, उनको कहा, आप पानी पर चलीये, आप उस

पानी पे तीन बार चलकर पार उतरे, ये देखकर वो शरमाया, दिल में परेशान हुवा, फिक्र करने लगा और जब जेब से अेक रुमाल निकाला और केहने लगा के ईसमें अैसी खूबी हे के ईस में कोई चीझ रख दुं तो वो दस मन वझन की बन जाये, ये चीझ आप गरीबों को खिलाना, आपके पास हो तो उसे झाहिर करो, ये सुनकर आपने उसे महोब्बतसे जवाब दिया के ये बकवास बेकार दर्दे सर की हे, ये अकसीर बेसुद हे. मगर अकसीर अेसी पेदा कर के झबान से निकलते ही पथ्थर और मिट्टी भी सोना बन जाये और कहा कल्मा पळह के तेरा दिलो दिमाग दुरस्त हो जाये, ये केहकर आपने पीपल के दरख्त को कहा अय दरख्त ! सोनेका बन जा, ये आपके फरमाते ही पीपलका दरख्त सोनेका हो गया और फिर आपने फरमाया के अब तू असली शक्ल का हो जा तो वो फोरन असली सुरत में हो गया. ये देखकर जोगी परेशान हो गया. उस वक्त हझरतने वो अकसीर का रुमाल पानी में डाल दिया, ये देखकर जोगी गझबनाक और लाचार होकर कहेने लगा के आप महेबूबे रब हो और कलंदर हो, आप शजर को और खाक को सोना बना देते हो मगर मैंने तो बळी महेनत से रुमाल (अकसीर) कमाया था वो आपने पानीमें डूबो दिया, मेरी बहोत साल की महेनत खो गई और जो अल्लाह के वली हैं वोह गरीबों को और मोहताजों को झरर नहीं पहोंचाते. ये सुनकर हझरत खुश हुवे और आपके कदमों के नीचे की खाक उठाकर उसको महेरबान होकर दी और फरमाया के ये मेरे पेरों के नीचे की खाक को तेरा जी चाहे वहां आझमा, ये तेरी अकसीर से भी बहोत बहेतर है तू उसे आझमा, कुछ पैसों को लाकर गरम करके गलाकर ईस खाक को उसमें जोगीने डाला तो वो तला (सोना) हो गया. ये करामत देखी तो वो अपने कुफ्र से बेझार हुवा और वो ईमान लाया. झबान से कल्मा पळहकर दिल से ईमान लाया और कहेने लगा, हक तआला मौजुद है और मोहंमद सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम बरहक नबी हैं. फिर हझरतने उसे मुरीद बनाया और प्रेमगली (कोहेअलत) रहेने की ईजाझत दी और उसकी उम्र दराझी के लिये दुआ दी, करामत से उसे नवाझा और कहेते हैं के जोगी बालनाथ अब तक जिंदा हैं. कुरआन मजीद में ये आयत है के खुदा जिसको चाहे हिदायत दे और जिसे चाहे उसे गुमराह करे, आयते कुरआनी फला मुदिल्लल व मंय युद-लिल-हो. फला हादिया लह.

असर हजरत शाहेआलम व हजरत महमूद महेबुबूल्लाह दरियाइ दुल्हा की दुआ का असर जो कामीयाब है

गुजरात के बादशाह मुझफ्फर के दो फरझंद थे. सिकंदरशा की वालेदा भूज के राजा की लडकी थी. और वो हझरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहकी मुरीदा थी. और चितोड के राजा की लडकी से बहादुरशाह पयदा हुवा था. उसकी मां हझरत खवाजा महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह की मुरीदा थी और उससे आप राझी थे. आपने अेक रोझ फरमाया, हमने बहादुर शाह हो गुजरात की हुकुमत दी और हझरत शाहेआलम रहमतुल्लाह अलयहने सिकंदर की अम्मा को फरमाया, हमने गुजरात की हुकुमत सिकंदर शाह को दी हय. अमरे ईलाही से मुझफ्फर शाह का ईन्तेकाल हो गया. खुदा उस पर रहेमतें नाजिल करे, आमीन.

मुजफफरशाह के इन्तेकाल के बाद

मुझफ्फरशाह के ईन्तेकाल के बाद सब वझीर ईकठ्ठा हुवे और मश्वरा किया के बहादुरशाह को मार डालें और सिकंदर शाह को तख्तनशीन करें. ये खबर सुनकर बहादुरशाह भागकर उस के मामुं के घर चितोड के राना को जाकर सब हकीकत सुनाई. खादिमों से कहा के अगर खवाजा सैयदना महमूद रहमतुल्लाह अलयह आयें तो मुजे खबर देना क्युं के आपसे मिलने की मेरी तमन्ना हे. जब हझरत का अेक रोझ बराअे फातेहा वहां पर आना हुवा. आपके आनेकी खबर राना को हुई और आपसे मिलकर राना की आंखें बहेने लगी तो आपने फरमाया, आंसु न बहा, जो खुदा को मंझुर होता हे वही होता हे. तब रानाने जवाब दिया के मुझफ्फर के मरनेका गम नहीं मगर शाहजादे की जुदाई का मुजे गम हे. उसको देखने की आरझु हे तो हझरतने फरमाया, आंखें बंद कर, शाहझादे को देख ले. जब रानाने आंखें बंद कर के खोली, तो अपने आपको चितोड में अपने बापके बगीचे में शाहझादे को देखा वो आईने के सामने खडा था. उस वक्त कहा, अय शहेझादअे जहांगीर! और झरा पीछे नझर की तो वालेदा को देखकर हेरान हुवा. अलगरझ मादर से मिलाकर महेबूबे खुदा से मुशर्रफ हुवे और शुक्र बजा लाअे, उस वक्त हझरतने कहा के तेरा मुकद्दर बुलंद हे. तू गुजरात का हाकिम होगा और राना से फरमाया, आंख खोल दे तो देखा

के वहां न चितोड हे न बगीचा और न कूवा तो ताअज्जुब करके रझा लेकर राना घरकी तरफ रवाना हुवा तो कनीझों ने राना से कहा, क्युं ईतनी ताकीद है? और हजरत खवाजा दरियाई सरकारसे क्युं अपना मतलब ब्यान नहीं किया, तो वो बोला के फकीरों से क्या हो सकता हे ? ये कहेकर मकान में आराम के लिये गया बहादुरशाह के भाग जाने के अव्वल लश्कर लेकर अहेमदनगर से लश्करे जर्रार लेकर मुसलमानों को हेरान करके वहां से मुसलमान की लळकीयों को गिरफतार करके उनको नाचगाने सीखानेकी तालीम दी. और जब नाचने गानेमें होंशियार हो गईं तो राजा के सामने दरबार में लाई गई और नाच गाना शुरु हुवा. उस वक्त बहादुरशाह दरबार में हाजिर था और राजा का छोटा लळका भी वहां हाजिर था, अचानक उसके मुंहसे अेसा सुखन निकला....

शेर

मुसलमानों की क्या औरतां हैं खुब
बजाने नाचने गाने में मशहुर
अजब यक तोर से बतलावे भावे...
दिलों को नाच नखरा से लुभावे....

बहादुरशाह को इब्रत हुई

ये सुनकर बहादुरशाह को ईबरत हुई और तलवार को मियान से निकालकर उस मगरुर के सर पर अैसा वार मारा के उसका सर गरदन से अलग हो गया. उस वक्त उसकी मां भी वहां हाजिर थी, सोचकर केहने लगी के शेर बहादुरने गझबका बदला लिया. अगर ईस वक्त मैं कुछ कहुं तो मेरा खाविंद भी कत्ल हो जाओगा. ये सोचकर रानीने सिपाहीयोंसे मुखातिब होकर कहा के तुम बहादुर से जंग न करना, लळका तो मेरा मरा हे, और ये भी तो मेरा फरझंद हे. कुंवरने गुस्ताखी की उसकी सझा उसको मिल गई और रानीने बहादुर शाहसे कहा, अगर तुमको गुजरात की हुकुमत मिल गई तो मुजे क्या ईनाम दोगे? तो वो बोले के अव्वल तो चितोड को जीतकर राना को हराकर यहां की हुकुमत तुम्हारे हवाले करुंगा. ये गुफतगु हो रही थी के गुजरात के वझीर का खत लेकर कासिद हाजिर हुवा, उस में लिखा था के तुमको

गुजरातका बादशाह बनाया जाता हे क्युं के गुजरात में सिकंदर शाह को कंई सरदारोंने मिल कर कत्ल कर दिया था, ईस बात पर बहादुरशाह को भी ये गुमान हुवा और वो हझरत महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह की खिदमत में हाजिर हुवा और अर्झ की के आप मेरी मदद करो. और आपके साहबझादा हझरत जमाल मुहंमद साहब को मेरी मदद के लिये भेजो ताके मैं चितोड पर सवारी करुं. तो हझरतने रजा दी और बहादुर शाहने चितोड पर हल्ला पुकार दिया. और जंग हुई मगर फतेहयाबी हुई नहीं. तब हझरत जमाल मुहंमद साहबने दोहरा लिखकर वालिद साहबकी खिदमत में रवाना किया.

दोहरा

मान सरोवर वरसे के पुर साजन वरसे नीर
वे कोरुं कायर बहा सो कायर पानी मांह...

ये दोहरा पळ्हकर हझरत खवाजा महमूद रहमतुल्लाह अलयहने जवाब दिया

जवाबे दोहरा

पानी पहेलां मोजळा ते कायर केरा काम
के लळने से भागे हारने हीश हाम
लडाई सुन चितोड की सो सोरुं बचा जाउ....
कायर कंपे ने थर थरे अलसु उठे ना पाय....

रानी को उदेपुर की गादी सोंपना

जब हझरत जमाल मोहंमद साहबने आपके वालिद साहब की तरफ से दोहरेका जवाब सुना तो आपने फिर आपके बळे भाई हझरते लाडमोहंमद रहमतुल्लाह अलयह को अेक खत लिखकर हवा में डाल दिया तो वो खत बीरपुर आया और आपकी वालेदा साहेबा ने फरमाया के मेरे लख्ते जिगर जमाल मोहंमद की खुश्बु आ रही हे. ईतने में वो खत हवा में से गिरा, वो खत लाड मोहंमद साहबने पळ्हा तो आप उसी वक्त तैयार होकर चितोड रवाना हुवे. और उसी रोझ चितोड फतेह हुवा और रानाको पकळ्कर केद करके रानी को उदेपुर की गादी सोंपी और अपना वादा पूरा करके बहादुरशाह अहमदआबाद वापस आया.

प्रेमगली (कोहे अलत) पहाड की गुफा की गारमें अल्लाह तआलाको याद करना व कइ सालके रोजे रखना

अेक रोझ हझरत खवाजा महमूद रहमतुल्लाह अलयह अपने चाहनेवाले मोतकिदों की महेफिल में बेठ कर झिक्रे ईलाही कर रहे थे और आपने जनाबे बारी में अर्झ की के परवरदिगार ! मुजे कोई तनहाई में रेहकर तेरी ईबादत का मौका अता फरमा, मैं तने तनहा तेरी ईबादत में मशगुल होकर तेरी ईबादत करता रहुं, उसी वक्त आपने ये जीगरी कही.

कलामे जिगरी

तू क्या जाने प्रेम कहानी, तुज तन लोहु हो टेळा पानी
ते जीव अपना आल गंवाया, धोकर हाथ न उस मन लाया
ना तुझे बात प्रेम की बीते, नाते प्रीत सवरकर लीती
बिरहा आई ना तन डहीया, करवत घावन तें सर सैया
अेक तल नेयनुं नीधन खोअे, ओगुन अपने सवरने रोअे
झाहन ना तेरे को दवन लागा, जो जल डुंगर कडकने भागा
आंचने तेरे को बन सुखा, तुजे तन मास न जलकर भागा
काझी महंमद तन अल्लाह प्यारा, बीनो महमूदखास तिहारा
गुन हो लु भाने अनवर, कुछ बुजीह प्रेम कहानी

महबूबुल्लाह खिताब - अल्लाह तआलाकी जानिबसे हजरत महमूद दरियाइ दुल्हा को महबूबुल्लाह का खिताब मिलना

ये जिगरी केहकर आप हझरत महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह पहाड के अंदर जाकर मौलाकी ईबादत करने लगे. और महिने के बाद रोझा इफ्तार फरमाते, उस वक्त आप अेक खजूर खा लेते थे. रोझ हररोझ अेक कतरा पानी से रोझा ईफतार करते थे. ईस तरह सात माह पूरे किये मगर आपके दिल को फिर भी करार न आया तो आपने छे महिने का चिल्लाह किया तो आप हररोज अेक कतरा पानी से रोझा ईफतार करते और हर छे माह को अेक खजूर से रोझा ईफतार करते फिर भी आपके

दिल को करार न हुवा तो आपने अेक सालका चिल्ला किया, अेक वक्त अेसा आया के आपने नफस ने पानी मांगा, आपने फरमाया के तू मेरे जिस्म से बाहर आजा ताके मैं तुजे पानी पीलाउं, जब नफस आपके जिस्म से बाहर आया तो उसे पानी पिलाया और पानी पीके सयराब हुवा, फिर नफस ने कहा के मुजे आप जिस्म में आने की ईजाझत दो और गिझा खाने की रझा दो मगर आपने नफस को जिस्म में आने की रझा नहीं दी और फरमाया, तेरे ही खातिर मुजमें और मौलामें जुदाई हे, ये सुनकर नफसने बहोत आहो झारी की मगर आपने नफसको जिस्म में नहीं लिया, उस वक्त हातिफ से आई के क्या फरिश्तों के बराबर का दरजा चाहते हो या उससे झियादा क्युं के फरिश्तों में नफस नहीं, ये सुनकर हझरत गभराये और नफस को अपने हाथ से जिस्म के अंदर लिया, गरझ ईसके बाद खिताब मौलाकी जानिब से आया के आपको महेबूबुल्लाह का खिताब मौलाकी तरफ से मिला. ये सुनते ही आपने कहा, अय मौलाअे वाहिद! तेरे सिवा ईस गुफतार का कौन शाहिद हे? तो उस वक्त ईर्शादे बारी हुवा के ईस गवाही के लिये शफीउल खल्क सरकारे दोआलम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमको आपके खुलफा के साथ में भेजे, उस वक्त आपके हमराह सब खानदानों के मशायख साथ में थे, उस वक्त हझरतने अमामा और कमीझ (पेहरन) खुदने अता फरमाया और विलायत, गौसीयत और कुत्बीयत की अता और हझरत खवाजा मुईनुद्दी अजमेरी और बदीउद्दीन मकनपुरी और जनाब हझरत मोहियुद्दीन गौषे आजम बगदादी रहमतुल्लाह अलयह गौसुल बराने अपनी तरफ से खिलाफत अता की और फिर आसमान और झमीन से भी निदा आई, महेबूबुल्लाह, उस वक्त आपने अेक जिगरी लिखी.

नात शरीफ - कलाम दर शाने
हझरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम

साजन आया गली हमारे, खिली मेरी दयहारे

नयन भरी भरी शरमाकर सो, पाउं तले की खिसयारे

लोग सभाया देखने आया, उगा पुनम चंदा रे

जिसने देखा उन शीश नमाया, होकर रहीयो बंदा रे

मिल सैयां रंग रेलीयां गाउ, जब शेह मंहदी लाओे रे

धुल धुल रंग सो मुज तन बेठा, देती सांई बळ्हा रे

जंग भाग महमूद के, सो नबी नबी महमूद पाओेरे

जिसके रंगीन पे जगा रात, सो मुझ अल्लाहने मिलाया रे

कलामे दिगरदर शाने रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम

नात शरीफ

हुई सोहागन सैयू मैं शहे जां पाया...

बळीयां कुरबानी रे जिस गलीयां आया...

चोया चंदन बासकर फिर तख्त संवारुं....

नौशाह आया चाउं कर लुं उतारुं....

नैन खोलन रैन मान शहेदी जगाउं.....

खोले घूंघट प्यासु हम प्रेम चखाउं....

नौशाह खडा उतावला तीस न लाउं तोरे....

लोग तमाशा मिल रहा तिल पास न छोडे....

महमूद ईंछा न पोगीयां रंग सांई ने दीता....

काझी महमूद तन पीयुं मे लहीया चाहेलधा मिता

गारे प्रेमगली से बहार आना...

जब सरकारे दो-आलम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम और हझरत खुल्फाओे राशेदीन रिदवानुल्लाहे तआला अलयहिम अजमईन और हझरत गौसुल आझम दस्तगीर और हझरत मोईनुद्दीन चिश्ती और बदीउद्दीन कुतबुल मदार रहमतुल्लाह अलयहे अजमईन तशरीफ गार से ले गओे, उस वक्त हझरत महमूदमहेबूबुलल्लाह रहमतुल्लाह अलयह गार से बाहर तशरीफ लाओे, उस वक्त आपके फरझनदान और ख्वेशे अकरबा सबको आपने अपने पास बिठाया.

नाइ का हजामत करने आना और वसवसा होना...

उस वक्त अेक हज्जाम आईना लेकर आपकी खिदमत में हाझिर हुवा. उस वक्त आपने फरमाया, अय हज्जाम (नाई)! मेरी हजामत कर, जब नाईने हजामत बनाना शुरु किया, उस वक्त उसके दिलमें ख्याल आया के हझरत सालभर के रोझे रखते हैं मगर आपका चहेरा मुबारक तो झाफरानी खुश्नुमा मालुम होता है !! आपको ईस बातका ईल्म हुवा के हज्जाम को वसवसा पैदा हुवा है, उस वक्त जब आपकी गरदन मुबारक की हजामत कर रहा था तो आपने अपनी गरदन हिला दी जिससे आपको कान पर झख्म लगा मगर उसमें से खून का अेक कतरा भी नहीं निकला, फक्त पानी का कतरा निकला जिस सबब हज्जाम थरथराने लगा तो आपने उसे तसल्ली दी और आपने दोहरा कहा

दोहरा गुफ्त महेबूबुल्लाह

रती रगत ना नीसरे जो तन चीरे कोई
जे तन राता रब सो उस तन रगत ना होय....
उक्दा दर परदा तोरे गुफ्ता महेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह
जे बुजे ये लोकबानी को जीना नहीं
क्या क्या वाने सरभी तो मिल्या सांई....
उभरी सांई सेवतीं मे जनम गुळीयां....
नैना लोहु रोय रोय तो मीत में पाया....
आं तजामें नीरसु तन मास न रहीया....
सेज काटुं सोये सोये यु मीत मे लीता.....
में जीवन अपना साईल को तील सुखना लहीया....
को क्या बुजे लोकडा मुझ माह जो बीता....
छोड सवारथ अपनी क्या पीयुका कीता....
महमूदअपना पीर पाया चाहेलधा मीता....

बुखारा के हाजीयोंका हजरतकी मुलाकात को आना

हझरत शाह मन्सुर रहमतुल्लाह अलयह यूं रिवायत फरमाते हैं के बुखारी शहेर के सात बाशिन्दे थे. वो हज्जे बयतुल्लाह जानेसे पहेले गुजरात में आअे और उन्होंने हझरत मियां महमूद रहमतुल्लाह अलयह के औसाफ सुने तो वो जैसा उन्होने सुना था वैसा ही बीरपुर आनेके बाद पाया और हझरत के साथ में वो पीरमगली पहाड पर हाजिर हुवे वो वहां रातको ठेहरकर शब गुझारी की और जब वक्त सुब्हा हुई तो ईरादा हज्जे बयतुल्लाह का था तो चलने का ईरादा किया और आपसे रुखसत होकर चलने लगे तो उनमेंसे अेकने हझरतकी खिदमत में रहेने को कहा, तब उन छे ईन्सानोंने उसे कहा के हम साथ में आअे हैं, तु यहां हमारा साथ छोळकर ठहर जाये ये मुनासिब नहीं हे और हम तुजे छोळ सकते नहीं. मगर उसने माना नहीं तो मजबुरन वो उसे छोळकर यहां से हझरत की ईजाझत लेकर रवाना हुवे और वो सफर करते हुवे काफी अरसे के बाद का'बा शरीफमें पहोंच कर खानअे का'बाका तवाफ कर रहे थे. उस वक्त यहां बीरपुर में जो बुखारे का रहेनेवाला हझरत की खिदमत में ठेहरा हुवा था उसे हझरतने पूछा, क्या तुझे हज करने की आरझु हे? तो उस वक्त उसके दिलमें हज करने की तमन्ना हुई तो आपने उसे करीब बुलाकर कहा के तू भी हज्जे बयतुल्लाह को ईन्शाअल्लाह जाअेगा और उसका हाथ पकडकर दुआ फरमाई और आंख बंधकरने के लिये कहा तो उसने आंख बंधकी तो आपने दोबारा ईरशाद फरमाया के आंखें खोल दे. जब उसने आंखें खोलीं तो उस वक्त अपने छे साथी खाने काबा का तवाफ कर रहे थे उनके साथ वो भी तवाफ में शामिल हो गया, उस वक्त उन साथीयों ने पूछा के हम तुजे परमगली के पहाड पर हझरत के पास छोळकर आअे थे, तू किस तरह यहां आ पहोंचा हैं? तो उसने कहा के ये बात हरगिझ मत पूछो मगर उन लोगोंने बहोत तकाझा किया तो आखिर मजबुर होकर कहा के मैं पहाड पर बेठा हुवा था तो उस वक्त हझरतने मुजे बुलाकर फरमाया, वो जगा पर खुशनुमा बाग था, मैं हेरान हुवा, उस बाग में कई तरहा के परिन्दे खुश ईल्हानी से चेहचहाते थे और तरहा तरहा के ईन्सान वहां मौजूद थे, और सब के सब यादे ईलाही में मस्रूफ थे, वहां अेक महेल खुशनुमा था, वहां झुला बंधा हुवा था. उसपे हझरत तशरीफ फरमा थे, वहां विर्दे ईलाही ईस तरहां से हो रहा था, लाहलाहा ईल्लल्लाह हसबी रब्बी

जल्लल्लाह मा फी कल्बी गैरुल्लाह, वो गौसुल खल्क उस पर कलमा बार थे, वे करते हम्द हक और नाअते सालार.

लाहलाहा ईल्लल्लाह मोहम्मदुर रसूलुल्लाह

जब वो हज से फारिग हुवा. तो उसने पुरा वाकेआ गुझरा हुवा सुनाता था मगर वाकेआ पुरा होने नहीं पाया था के वो गुंगा हो गया तो उसके साथी उसे हमराह लेकर हज से फारिग होने के बाद बीरपुर हाजिर हुवे और आपके मझारे अकदस पर से पानी जाम उतारके उस गुंगे को पिलाते थे, कुछ दिनों में उसका गुंगापन दुर हुवा और वो सातों ईन्सान अपने वतन की जानिब रवाना हुवे.

खवाजा महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के चंद अश्आर

तुम्हारी फैज बख्शी से जहां आबाद या महमूद
तुम्हारी ओन लुत्फी से जहां बस शाहया महमूद
तुम्हारी जातशे हुं तालबे इमदाद या महमूद
के तुम्हो कुदवतुल अबरार ओर कुल अवताद या महमूद
तुम्हारी मदहे कीये अय मीयां जो मुजसे बन आई
हुवा आफाक में झाहीर तुम्हारा नाम दरियाई

मेरी अेक आरझु अब तुमसे हे दीलवाइ यो साहब
तमामी हश्र के आफात से छुडवाइ यो साहब
शराबे होझ कवशर पर मुझे पीलवाइ यो साहब
मुझ आशी के उपर अपनी महेर फरमाइ यो साहब
के तुमने कंइ हझारुं पर तलतफ नाम फरमाइ
हुवा आफाकमें झाहीर तुम्हारा नाम दरियाई

कुरआनकी आयतोंको आस्मानमें बताना

अेक रिवायतमें आपके तालिब इल्मी झमानेके हालात यूं लिख्खे पाअे जाते हैं के हझरते महमूद आपके उस्तादे गिरामी शेख अहमद रदियल्लाहो अन्होके पास मद्रसेमें तअलीम हासिल करनेके लिये जाते थे. कभी कभी रुहानी जझबातमें आकर उस्तादको कुरआनकी आयतें आस्मानमें दिखाते. उस्ताद ये रुहानी ताकत देखकर गभराये और आपके वालिदे गेरामी के हवाले करके फरमाने लगे, सरकार ! आपके साहबझादेको पढानेकी ताकत मुजमें नहीं, ये तो कुरआन की आयतें मुझे आस्मानमें दिखाते हैं ये पढे लिख्खे हैं. हझरते हमीदुद्दीनने फरमाया के ठीक है अब हमारे फरझंदको हम पढाअेंगे. इन वाकेआतके बाद हझरते हमीदुद्दीनने आपको हर तरहका इल्म सीखा कर आलिमे रब्बानी बनाया.

कुरआन के पैगाम को शेअरो शाअेरी में पेश करने की अजब लियाकत

हझरत महमूद दरियाई दूल्हा बीरपुरी रहमतुल्लाहे अलयह अल्लाह के वली, गौष, कुतुब होनेके साथ अेक अच्छे हाफिझे कुरआन भी थे. आपमें कुरआनेपाक पढने, समजने और समजाने की अजीबो, गरीब, लियाकत थी. कुरआन की आयतों के हुकमोंको अपनी महबूब झबान हिन्दीमें शेअरो शाअेरी के रुपमें अवामके सामने पेश करते थे. जिसके नमूने कुछ तोहफतुल कारी किताबमें पाअे जाते है. बतौर नमूना पेश करते है. कुरआने पाकके पेहले पारेके पेहले रुकूअकी शुरुकी ये आयते करीमा अलिफ, लाम, मिम, झालेकल किताबो ला-रय-ब फी हे-होदल्लील मुत्तकीनल्लझी-न युअ-मेनून बिल गैबे व युकीमुनस्सलात ईस आयतका तरजुमा है. (अलिफ लाम मिम) ये वोह किताब है जिसमें कोई शक नहीं, हिदायत है उन परहेझगारोंके लिये जो ईमान लाअे गैबकी बातों पर और नमाझ कायम किये. इस आयतका पैगाम हझरते महमूद दरियाई अेक शेअरमें यूं पेश करते हैं,

1. सबा उठ लेजन अपने इलाह का नाउन
   पांचों वक्त नमाझ गुझारो, दाईम पढो कुरआन

तरजुमा : सुब्हमें उठ कर अपने मअबूदका नाम लो. पांचों वक्त की नमाझ पढो

और तिलावते कुरआन हमेशा करो, और आगेकी आयत है व मिम्मा रझकनाहुम युन्फेकुन, वल्लझी-न युअ-मेनून बेमाउन्झे ल ईलय-क इस आयतका तरजुमा है, और वोह जो हमारी दी हुई रोझीमें से खर्च करें और ईमान लाऒं, उस पर जो महबूब पर कुरआन नाझिल किया. इस आयतका पैगाम शेअरमे यूं पेश करते हैं,

2. खाओ हलाल, मुख साचा राखो दुरुस्त ईमान
छोडो जंजाल जूठे सब, माया राखो, जो मन होवे ज्ञान

तरजुमा : हलाल रोझी खाओ, मुंहसे सच बोलो और ईमानको दुरुस्त रख्खो, दुनियाकी जूठी जंझाल छोडो, महोब्बत रख्खो अगर तुम्हारे मन में ज्ञान होवे.

हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहेको गैबसे काझीका लकब और मुबारकबादी

हझरत महमूद दरियाई बीरपुरी अलयहिर्रहमाह के लकबोंमें अेक लकब काझी भी है. आपको काझी लकब कैसे मिला ? इसको जाननेसे पेहले ये जानना जरूरी है के काझी कोई बिरादरी और झातका नाम नहीं है, या अटक नहीं है. बलके काझी अरबी लफ्झ है. जिसका मअना न्यायाधीश होता है ये अेक दरजा है जो न्याय करनेवालोंको मिलता है. अब हम ये जानें के हझरते महमूदको काझीका लकब कहांसे मिला अैर कब मिला ?

रिवायत है के अहमदआबाद के दो दोस्त दक्कन शहेरमें तेजारत करने के लिये साथ गये. (6) साल के कारोबारमें नफा पाअे तो इन दोनोंमें से अेकने घर आनेका इरादा किया. दूसरा अपने दोस्तको छोडनेके लिये कुछ दूर तक सफरमें आया, इस सफर के दरम्यान अेक शहीद के मझार के पास ठेहरे जहां लीमका झाड और कुंवा था. वहां ठेहरकर साथमें लाई हुई रोटी और मछली खाई. मछली के कांटोंको कुवेमे डाला और खानेसे फारिग होकर छोडने के लिये आनेवाले साथीने वापस जानेकी इजाझत चाही और कहा के भाई ! मैं वापस जाता हुं तुम जब घर पहोंचो तो ये (6) हजार रुपिये मेरे घर दे देना और मेरी खेरीयतकी खबर देना. किस्सा मुख्तसर ये के ये केहकर ये शख्स दक्कन वापस हुआ और घरवाला अहमदआबाद अपने घर पहोंच गया. जब ये घर पहुंचा तो उस दोस्त की औरत अपने शोहरकी खेरीयत मालूम

करने के लिये आई और पूछने लगी, आपके भाईकी कया खबर है? वो कहां है? इसने जवाब दिया के मैं नहीं जानता, वोह बहोत झमानेसे मुझसे जुदा हो गये हैं. ये बुरी खबर सुनकर वोह बहोत गमगीन हुई और घर वापस आकर सब्र करते हुअे खुदाकी बारगाहमें शोहरकी खैरीयतकी दुआ करने लगी. लाचार और मजबूरीकी हालतमें खाने पीने के लिये अपना घर अेक सोदागरको बेच दिया. उस नेक सीरत सौदागरने उसी घर के अेक कमरे में रेहनेकी इजाझत दी. औरतने उस कमरेमें (6) सालका झमाना गुझार दिया (6) सालके बाद इसका शोहर दक्कनसे अपने घरमें आया, जैसे घरमें दाखिल हुआ तो घरकी बदली हुई सूरत देखकर तअज्जुबमें पड गया. शोहरने घर के अंदर जाकर घरके हालात देखना चाहा, घरमें गया तो सोदागर नझर आया. सोदागरने पेहचान लिया के यही घर मालिक है. सोदागरने उसकी बीबीको बुलाया और खबर दी के तुम्हारा शोहर आया है, औरतने अपने शोहरकी मुलाकात की और अपने कमरेमें लेकर रेहने लगी. शोहरने अपने भेजे हुवे (6) हजार रुपियोंके बारेमें औरतसे पूछताछ की. औरतने गुस्सेमें आकर जवाब दिया के (12) सालके बाद घर आअे हो और (6) हजार रुपियोंका इल्झाम लगाते हो आपको शर्म नहीं आती? ये सुनकर शोहर तअज्जुबसे कहेने लगा के मैंने मेरे फलां साथी के साथ (6) हजार रुपिये भेजे हैं और तुम केहती हो हमको नहीं मिले? यूं औरतके साथ लडकर घरसे उठा और अपने हमसफर दोस्त के घर पहोंचा और उससे मुलाकात करके केहने लगा, तुमने खूब किया. मेरे (6) हजार रुपिये मेरी औरतको अब तक नहीं दिये? उस दोस्तने इसको बुरी बुरी गालीयां दी, हंगामा मचाया और चिल्लाकर कहेने लगा, भाईयो मेरी मदद करो, ये शख्स मुझ पर (6) हजार रुपियोंका इल्जाम लगाता है, खुदाके वास्ते मेरी मदद करो. झगडा इस हद तक पहोंचा के मामला अहमदआबाद के काझी और हाकिमों तक पहोंचा. काझी और और हाकिमने गवाह तलब किये पर गवाह कहांसे लाते? शरमिन्दह होकर वापस आअे. आखिरकार लोगोंने मश्वरा दिया के बीरपुरमें अेक काझी है. जिनका नाम महमूद बिन हमीदुद्दीन चाहेलदह हैं, ये काझी बे देखे और बगैर गवाही के हर केसका फैसला कर देते हैं. ये सुनकर ये लोग अहमदआबादसे बीरपुर गये. बीरपुरमें खेलते हुअे बच्चोंसे पूछा के मियां महमूद कहां है? हझरते महमूद खुद खडे

थे. ये सुनकर कहने लगे, अगर मियां महमूदको तलाश करते हो तो वोह कहीं और होंगे और अगर गरीब महमूदकी तलाश हो तो ये खडा हुआ है जो पूछना चाहो पूछो. वो शख्स पूछनेसे घभराने लगा, हझरतने फरमाया, अहमदआबादसे पूछने के लिये यहां आये हो और हैरान क्युं हो ? उस शख्सने कहा, हझरत ! आप बच्चे हो, आपको मैं क्या पूछुं ? आपको पूछनेसे क्या जवाब मिलेगा ? हझरतने तीन बार फरमाया, जो कुछ पूछना चाहते हो पूछो, बारबार केहने पर उस शख्सने अपना गुझरा किस्सा सुनाया. हझरतने सुनकर फरमाया, कोई गवाह है ? हझरतके इस सवाल पर वोह शख्स दिल ही दिलमें गमगीन होकर सोचने लगा के अफसोस ! अगर मेरी रकमका फेसला यहां न मिलेगा तो कहां जाउंगा ? हझरतने फिर सवाल किया, कोई गवाह है ? उस शख्सने अर्झ किया के हझरत ! अगर गवाह होता तो आप तक आनेकी क्या जरुरत होती ? किसी भी काझीसे फेसला करवा लेता, हुझूर गवाही नहीं है कहांसे लाउं, हझरते महमूद ये सुनकर फरमाने लगे, अय शख्स ! जिस जगह तूने ये रुपिये दिये हैं वोह जगह याद है ? उसने कहा, हां उस जगह अेक लीमका झाड है, झाडके करीब अेक शहीदका मझार है मझारके करीब अेक कुवां भी है, वहीं पर हमने मछली खाकर उसके कांटे भी कूवेमें डाले थे. हझरतने तसल्ली देते हुवे जवाब दिया के शरीअत में दो मोअतबर गवाह चाहिये मगर तुम तो चार गवाह रखते हो कोई, फिक्र करनेकी जरुरत नहीं आपने हुक्म फरमाया, अपनी आंखोंको बंधकर दो, सबने आंखें बंधकर दी. जब खोली तो उसी जगह पहोंच गये जहां शहीदका मझार है. ये माजरा देखकर वोह खुश होकर कहेने लगा, सरकार ! यही मझारे शहीद है. आपने कब्रे शहीदकी तरफ चेहरा फरमाकर फरमाया, (कुम बेइझ- निल्लाह) अय अल्लाह के बंदे ! अल्लाह के हुकमसे खडे हो जाव और गवाही दो. कब्रवाले बुझुर्ग कब्रसे निकले और जवाब दिया अय महबूबुल्लाह ! इस शख्सने इसे यहां बेठकर (6) हजार रुपिये दिये थे. मैं इस बातकी गवाही देता हूं. लीमके झाडको अल्लाहने बोलनेकी ताकत दी और वोह बोल उठा मेरे सायेके नीचे बेठकर इस शख्सने (6) हजार रुपिये दिये है, मैं इस बातका गवाह हूं. फिर कूवेने गवाही दी और कुवेमें जो मछलीयोंके कांटे डाले थे उससे मछली झिंदा हुई और उन्होंने भी इस बातकी गवाही दी. फिर हझरत महमूदने फरमाया इस शख्सने तुम्हारा रुपिया अपने घरके फलां

कोनेमें दफन किया है. इसे मालिकके हवाले करो, नहीं तो तुम्हें केद करके पहाडोंमें फेंकवा दूंगा. ये सुनने के बाद रुपियों को हडप करनेवाला डरा और कुबूल किया. हझरते महमूदने फिर आंखें बंधकरनेका हुकम दिया और अेक घडीमें सारा काफला दक्कनसे अहमदआबाद पहोंचा और रकमवालेको रकम हवाले की. हझरते महमूद ये फेसला फरमाकर बच्चोंके साथ खेलने लगे. उसी वक्त हझरते हमीदुद्दीनके कानमें गैबसे अेक आवाझ आई. अय हमीदुद्दीन ! आपके साहबझादे महमूदको मैंने खुद आपका नायब बना दिया है. जब खेलकर वापस आअे कोझात (यअनी) फेसलेकी झिम्मेदारी और काझी (न्यायिक) की पोस्ट अता कर देना और मुबारकबाद देना, हझरते महमूद दरियाई जब खेलकर वापस आये तो आपसे वालिदे गेरामीने फरमाया के अय महमूद ! तुमको हातिफे गैबीने काझीका दरजा अता फरमाया है और मुबारकबाद भी दी है. हझरते महमूद उसी झमानेसे काझी महमूदके लकबसे झियादह मशहूर हुअे.

ई सआदत बझोरे बाजु निस्त
ता न बख्शद खुदाअे बखशिंदा

बीरपुरकी पीरमगली में हाफिझ का लकब गैबी आवाझ से पाना

तोहफतुल कारीमें रिवायत बयान की है के हझरत महमूद दरियाई बचपन ही से रातों में इबादत गुझार और हमेशा के रोझदार थे जैसा के आपके बारेमें आपके वालिदने दूधपीने के झमानेमें फरमाया वैसे ही वोह इबादत गुझार बने. आपका तरीकअे इबादत ये था के वोह अपने कमरेमें लोहे की कीलों का बिस्तर बिछा रखते. और उसी पर बैठकर अल्लाह की इबादतमें मशगूल होते. कभी कभी इबादत के जझबात का ये आलम हुवा के डेढ साल तक न सोये और डेढ साल के बाद जब नींदका गलबा आया तो कीलों के बिस्तर पर लेट गये. लोहे की कीलों पर सोनेकी वजहसे आप के बदनमें दर्द पैदा हुआ. और नींद न आई तो उठ खडे हुअे और खडे खडे नफल नमाझ शुरु कर दिये. आपकी उम्रशरीफ जब 8 सालकी हुई तो अेक बार इसी तरह इश्के इलाही के जझबातमें आकर अपना घर छोडकर पीरमगली

पहाळ पर आये और खादिमों को पहाळ के उपर छोडकर तन्हाई (अेकांत) के लिये पीरमगली के अंदर तन्हा दाखिल होने लगे तो अचानक गैबसे आवाझ आई. या हाफिझो, या हाफिझो, या हाफिझो. अचानक ये गैबी आवाझ आना इस बात की दलील है के आपकी इबादत और रियाझत खुदा की बारगाह में मकबूल हैं.

दरियाई दुल्हा का लकब कैसा हुवा ?

तोहफतुल कारी किताबके लेखक अेक रिवायतमें यूं लिखते हैं के रुम के बादशाह की अेक बेटी थी. जिसका नाम मलेका सुल्ताना था. ये बेटी हझरत दरियाई दूल्हा अलयहिर्रहमा की मुरीदा थी. मलेका सुल्तानाने अेक दिन अपने वझीर से फरमाया के दरिया के टापु में अेक आलीशान मकान बनाने की तमन्ना है वझीरने साहबझादी सुल्ताना की तमन्ना पूरी करते हुअे अेक आलीशान मकान तैयार कर दिया. और उस जगह का नाम सुल्तान बंदर रखा. बंदर बनाने की वजहसे बस्ती आबाद हो गई. उसी बस्तीमें अेक बडा ताजीर शेख अहमद नामसे रेहता था. अेक रोझ अपने बाल-बच्चों के साथ दरियाई सफर के लिये निकला. कश्ती दरिया के भंवर में फंसी और डूब गई. शेख अहमद और उसका खानदान मालसामान के साथ डूब गया. शेख अहमद बेपारीयों और सोदागरोका सरदार था और उसीके दमसे दूसरे सोदागरोंका कारोबार चलता था. शेख अहमदके इन्तेकालसे दूसरे सोदागरोंका कारोबार बंध हो गया. और दुसरे शेहरकी तरफ लोग चलने लगे और शेहर वीरान होने लगा. ये हालत देखकर मलेका सुल्तानाको बहोत झियादह गम हुआ. इसी गममें दरियाके किनारे आकर अपने सरको सजदेमें रखकर खुदाकी बारगाहमें अपने पीरो मुरशदका वसीला तलब करते हुअे दुआ करने लगी और अपने पीरो मुरशद हझरत दरियाई दूल्हाको मददके लिये पुकारने लगी. रब तआलाने उसकी दुआ कुबूल की. जब साहबझादीने सजदेसे सर उठाया तो क्या देखती है के हझरत दरियाई दूल्हा बीरपुरसे मुल्के रुममें सुल्तान बंदर पर उसके पास आकर खडे हैं. आपको देखते ही सर कदमोंमें रखकर अर्झ करने लगी, या पीर ! मेरी मदद फरमाईये. अगर इस वक्त आपने मदद न फरमाई तो मैं मर जाउंगी. गमख्वारोंके आका हझरत दरियाई दूल्हाने फरमाया, कहो क्या कहेना चाहती हो ?

इस वक्त जो कहोगी वोह काम पूरा किया जाओगा. मलेका सुल्तानाने बंदरगाह बसानेका और शेहर आबाद करनेका और शेख अहमदकी कश्ती डूबनेका सारा वाकेआ बयान किया. और अर्झ किया, या पीर ! शेख अहमदके इन्तेकालसे सोदागर भागे जा रहे हैं शेहर वीरान होता चला जा रहा है. अब तमन्ना ये है के शेख अहमदको दरियासे वापस निकाले. हझरते महमूदने अपनी झबानेपाकसे दुआ के कुछ अल्फाझ निकाले और गैबसे जवाब मिला कबील्तो यअनी कुबुल किया मैंने मगर साहझादीको इत्मीनान न हुवा और कदम पकडकर रोने लगी. तो हझरतने फिर दुआ फरमाते हुअे फरमाया अय शेख अहमद ! झिंदा होकर दरियासे बहार आईये. ये कहेकर हझरत महमूद दरियाई थोडी देर खामोश रहे. मगर उसी तरह आवाझ आई, कबील्तो कुबूल किया मैंने. मगर शेख अहमद नझर न आये, तो तीसरी बार आवाझ दी तो शेख अहमद अपने बाल बच्चों और सामान के साथ सही सलामत झिंदा बाहर आये. ये देखकर सुल्ताना खुश हो गई और अपने घर ले जाने लगी तो हझरते महमूद ये केहकर गायब हुवे के अय सुल्ताना ! याद रखना, अेक झमानेके बाद मेरा अेक नबीरा (पोता) मोहंमदशरीफ यहां आयेगा, उसे अेक मकान बना देना. गायब होते ही सुल्तान बंदरसे बीरपुर मिनटोंमें आ गये. कुछ मुद्दत गुझरने के बाद आपके पोते शेख मोहंमद शरीफ सुल्तान बंदर तशरीफ ले गये. सुल्ताने रुमके साहबझादोंने आपको दुरवेश सिफत देखकर पूछा, हझरत ! आप कहांसे तशरीफ ला रहे हैं ? हझरत मोहंमद शरीफने फरमाया, मैं बिरपुर उर्फे नुरपुर गुजरातसे आ रहा हूं और हझरत महबूबुल्लाह महमूद दरियाई दूल्हा का पोता हुं, ये सुनकर यकीन न करते हुअे कहा के हझरत अगर आप उन्के खानदानके हैं तो हम जो चाहते हैं वोह पूरा कर दिजीये. हझरत मोहंमदशरीफने फरमाया, वोह क्या बात है ? लोगोंने कहा, शेख अहमदका अेक बेटा पैदाइशी नाबीना है, उसे आप बीना (देखता) कर दीजीये. हझरतने अपना हाथ नाबीनाकी आंखों पर फिराया. वोह बीना हो गया (सुब्हानल्लाह) ये करामत देखकर बस्ती के लोग आपके मुरीद व मोअतकिद बन गये. उसी बस्तीमें अेक सैयदझादे थे उनकी बेटीसे आपका निकाह हुआ और दो बेटे हुअे. सैयदना मोहंमद शरीफ और उनके साहबझादे वहीं रहने लगे और आपका इन्तेकाल भी वहीं हुआ. तीनों बुझुर्गों की कब्रें आज भी सुल्तान बंदर पर ही है. (पाना नं.157)

मियांसाहबकी कश्ती तुफाने दरियासे बचाकर किनारे निकाला

तोहफतुल कारीके लेखकअेक और रिवायत बयान करते हैं के सोदागरोंमें से अेक सोदागर मियां साहब नामी था. वोह अपना सामान कश्तीमें भरकर हरमुझ (ईरान बंदरगाह) तरफ जाता था. अचानक दरियामें हवाका तुफान आया. करीब था के कश्ती दरियामें डूब जाती के मियांसाहबने हझरत महमूद दरियाई दूल्हा को इमदादके लिये पकारा के या पीर ! मदद किजीये. आपको याद करना था के आप बीरपुरसे ईरानकी बंदरगाह तरफ पहोंच गये और कश्तीको तुफानसे बचाकर किनारे पर पहुंचाया. उस मदद करनेके वक्त आपका पैराहन मुबारक कांधेसे फट गया. जब आप उसी हालतमें बीरपुर फोरन तशरीफ लाअे तो मजलिसमें बेठे हुअे लोगोंने अर्झ की, हुझूर ! आपका (जुब्बा) कैसे फट गया ? आपने जवाब दिया के मेरे अेक चाहनेवाले मियांसाहब खोमारीकी कश्ती दरियाके तुफानमें डूबनेवाली थी, उसने मुजे याद किया और मैं वहां पहोंच गया और उसकी कश्तीको हुरमुझकी बंदरगाह तक पहोंचा दिया ये जुब्बा उसीमें फटा है. मजलिसमें बेठनेवालोंने उस दिन और तारीखको लिख लिया. मियां सोदागर खोमारी जब ईरानके सफरसे बीरपुर वापस आया तो उससे लोगोंने पूछा, क्या इस तारीखमें ये बनाव हुआ था ? उसने इकरार किया और आपका कदम चुमने लगा.

आने दो या डूबो दो अब तो तुम्हारी जानिब
कश्ती तुम्हीं पे छोडी लंगर उठा दिये हैं

सोदागर अझीझुल्लाह कश्ती तुफाने दरियासे बचाई

तोहफतुल कारीकी अेक रिवायत दूसरी इसी तरह है के सुरत बंदरगाहसे अझीझुल्लाह नामी सोदागर तिजारतका मालो, सामान कश्तीमें भरकर समंदरी रास्तेसे हुरमुझ (ईरान) की तरफ रवाना हुवा. जब उसकी कश्ती सिकंदरी टापुके पास आकर भंवरमें फंसी और डूबनेका खतरा पैदा हुआ तो सभी मुसाफिरोंने तौबा इस्तिगफार करते हुवे नजाते तुफान की दुआ की. मगर दुआकी मकबूलीयतकी कोई तासीर नझर न आई और जानो दिलको मौतके मुंहमें लुकमा बनाकर रख

दिया. उसी वक्त अझीझुल्लाह सोदागरको ये बात याद आई के गुजरातके कस्बअे बीरपूरमें अेक बुझुर्ग हझरत महमूद दरियाई रहेते है और उनके बारेमें ये सुना है के वोह बेसहारा लोगोंकी फरियाद सुनते हैं और मुश्किल दूर फरमाते हैं. ये सोचकर दिलमें ईरादा किया के अगर हझरत हमारी मदद फरमाअेंगे तो मैं ईस कश्तीके मालका दसवां हिस्सा आपकी खिदमतमें कुरबान कर दूंगा. ये निय्यत करके सोदागरने जैसे ही आपकी मदद मांगी हझरत महमूद दरियाई मुशकिलकुशा बनकर बीरपुरसे मिन्टोंमें ईरानी समंदरकी मौजों पर जाकर खडे हो गये और कश्तीको सहारा देकर किनारे लगाया और ये केहकर गायब हुअे के मालका दसवां हिस्सा बीरपुरमें पहोंचा देना. सोदागर अझीझुल्लाह जब सफरसे वापस आया वअदेके मुताबिक मालका दसवां हिस्सा लेकर बीरपूरमें हझरतकी खिदमतमें हाझिर हुआ. हझरतने ये माल लेकर गरीबोंको तकसीम कर दिया (पे. 165)

नोट : हझरत महमूद दरियाई दूल्हा अलयहिर्रिहमाकी उपर झिक्र की हुई दरियाई करामतें पढनेके बाद दिल यकीनके साथ बोल उठता है के आपकी हुक्मरानी दरियाके तुफानोंमें चलती थी. और डूबती कश्तीको तिराने या बचानेकी करामतें आपसे बारबार झाहिर हुई थीं इस लिये अवाममें आप दरियाई दूल्हा के लकबसे मश्हूर हुअे और आज तक मश्हूर हैं.

हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रह्मह के खुल्फाअे किराम

हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमहकी झातेपाक बाकरामत बा अख्लाक फकीरी मिजाझ और बंदानवाझ होनेकी वजहसे खासोआममें मकबुल थी. गदा और अमीर, अपना पराया, बादशाह और फकीर सभी आपके दरके दीवाने थे. यही वजह थी के आपके दस्ते हक पर लाखों लोगोंने बयअत की और सेंकडोंने इस्लाम कुबूल किया. बहोतसे गुमराहोंको राहे हक मिली, आपही के रुहानी फैझका ये नतीजा है के हिन्दुस्तान और परदेशों और खास करके गुजरातके शेहरोंमें आपके खुल्फाकी तअदाद झियादह नझर आती है. आपके खुल्फाकी फेहरिस्त और उन्के हालात लिखने के लिये दूसरी अैसी किताब लिखें तब भी

नाकाफी है. हम यहां आपके मशहूर खुल्फाके नाम आपकी खिदमतमें पेश करते हैं.

1. खलीफअे अव्वल, साहबझादये कलां, तोहफअे रसूल, शैखुल इस्लाम हझरत सैयदना शाह लअल मोहंमद उर्फे लाड मोहंमद बीरपुरी है जो हझरत दरियाइ दूल्हाके बडे बेटे हैं आपका मझारेपाक बीरपुरमें दरगाह शरीफमें है.
2. खलीफअे महबूबुल्लाह हझरत सैयदना शाह जमालुलल्लाह अलयहिर्रहमह, आप हझरतके सबसे छोटे बेटे हैं, आप अपने झमानेके गौष थे, आपका मझारेपाक भी बीरपुर दरगाह शरीफमें हैं.
3. हझरत सैयदना प्यारुल्लाह खलीफअे महबूबुल्लाह, आप हझरत दरियाइ दूल्हाके पोते और हझरत लअल मोहंमदके बेटे हैं. आपका मझारेपाक बीरपुर दरगाह शरीफमें हैं.
4. हझरत सैयदना चांद मोहंमद अलयहिर्रहमह हैं, आप हझरत दरियाइ दूल्हाके भाइ हैं. आपका मझारेपाक बीरपुर दरगाहशरीफमें है.
5. हझरत अल्लामह मौलाना सैयद अब्दुल कवी इब्ने चांद मोहंमद अलयहिर्रहमह हैं आप दरियाइ दूल्हा के भतीजे हैं. आपका मझारेपाक मु.भालेज जी. आणंद में है.
6. हझरत सैयदना शाहपीर शरफुद्दीन अलयहिर्रहमह आप हझरत दरियाइ दूल्हाके भाइ और खलीफा हैं आपका मझारेपाक बीरपुर दरगाह शरीफमें हैं.
7. हझरत सैयदना पीर जहांगीर रहमतुल्लाहे अलयह, आपका मझारे पाक मु.मेघरेझ जी. अरवल्ली गुजरातमें है.
8. हझरत सैयदना अब्दुर्रझ्झाक जअफरी रहमतुल्लाहे अलयह, आप हझरत महमूद दरियाइ दूल्हाके दामाद हैं. आपका मझारेपाक बालासिनोर तालाबके करीब है.
9. हझरत सैयदना जमाल कादरी रहमतुल्लाहे अलयहे, मु. चांपानेर पावागढके रहेनेवाले थे.
10. हझरत शेख ताजन रदियल्लाहो अन्हो, आप मजझुब थे. हझरत दरियाइ दूल्हाके बयानात हिन्दी भाषामें शेअरो शाअेरीमें लिख्ते थे.
11. हझरत पीर मलेक दौलत रेहमतुल्लाहे अलयह, हझरत दरियाइ दूल्हाने आपको

मु. मालवा मध्यप्रदेशमें मकान और जमीन जागीर अता की और दीनी खिदमतोंके लिये झिम्मेदारी दी.

12. हझरत पीर मलिक ताइब रदियल्लाहो अन्हो, आप अपने वक्तके बडे काझी थे.
13. हझरत पीरे तरीकत रुकनुद्दीन रहमतुल्लाहे अलयह.
14. हझरत पीर बाजन रहमतुल्लाहे अलयह
15. हझरत पीर मूसा रदियल्लाहो अन्हो
16. हझरत पीर सैयद मुस्तफा रदियल्लाहो अन्हो
17. हझरत इमादुल मुल्क वझीरे गुजरात रहमतुल्लाहे अलयहे, आपका मझार बीरपीर शरीफमें है.
18. हझरत शाह पीर अली मोहंमद रहमतुल्लाहे अलयहे, आपका मझार मु.पांडळवाडा ता. खानपुर, जी.महीसागर में हैं.
19. हझरत सैयदना दोस्त मोहंमद उर्फे डोसुमियां, मु.उनावामें आपका मझार है. आप सैयदना सैयद अली मीरां दातारके वालिद साहब हैं.

विर्दे अस्माओ महमूदी

तोहफतुल कारी पेज 3 में रिसालओ फवाइदे महमूदीयहके हवाले हल्ल मुश्केलातका अमल लिखकर बताया है के अगर कोइ मोहब्बते इलाहीकी तलबके लिये या न पूरी होनेवाली मुरादोंको पानेके लिये हझरते महमूद दरियाइ दूल्हाके वसीलेसे हररोझ हर नमाझके बाद सात बार कामिल अकीदे और परहेझगारीके साथ पढेगा इन्शाअल्लाह अपनी मुरादको पहोंचेगा. हझरतके अस्माओ गिरामी ये हैं,

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अल्लाहुम्म सल्ले अला मोहंमदिन नबीय्येका व आलेहिल करीम

1. इलाही बहुरमते हझरत मियां महमूद रहमतुल्लाह अलयह
2. इलाही बहुरमते हझरत काझी महमूद रहमतुल्लाह अलयह
3. इलाही बहुरमते हझरत शैख महमूद रहमतुल्लाह अलयह
4. इलाही बहुरमते हझरत शाहिदुल्लाह महमूद रहमतुल्लाह अलयह
5. इलाही बहुरमते हझरत मशहूदुल्लाह महमूद रहमतुल्लाह अलयह

6. इलाही बहुरमते हझरत अशिकुल्लाह महमूद रहमतुल्लाह अलयह
7. इलाही बहुरमते मअशूकुल्लाह महमुद रहमतुल्लाह अलयह

इब्ने शैखुल मशाहेख हमीदुद्दीन उर्फे चाइलधा अलमुखातिब बे हाझेहिल खिताब मिन रसूले रब्बिल आलमीन अल अब्बासी मुज्जन शाही हाजाते मन बेचारा रा बरआवुर्दह गरदानी बहुरमते इलाही आखिरुझ्झमानी (सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम) आमीन...आमीन...आमीन...(ये विर्द दुरुदे महमूदीके नामसे भी मशहूर है)

खौफे खुदासे डरना और पीरमगलीमें जाकर रोना

तोह-फतुल कारी के लेखक बयान करते हैं के अेक मरतबा जुम्मा के दिन बिरपुरकी जामेअ मस्जिदमें हझरत शाह अब्दुल गफुर कुद्दसिर्रहुलअझीझ वाअझ बयान कर रहे थे, हझरत शाह अब्दुल गफुर वाअझमें बयान करने लगे के शयतानने आदम अलयहिस्सलामको सजदा न किया तो रब तआलाने उससे पूछा के तुने सजदा क्युं न किया ? शैतानने जवाब दिया उसको तुने मिट्टीसे पैदा किया और मुझे आगसे. लेहाझा मैं उसे सजदा क्युं करुं ? रब तआलाने फरमाया, मरदूद जा तुज पर कयामत तक मेरी लअनत. हझरत दरियाइ दूल्हा इत्ना सुनकर ये सोचके रो पडे के मैं भी खुदाका गुनेहगार बंदा हुं कहीं खुदा मुझसे नाराझ न हो जाअे. दूसरी बार शाह अब्दुल गफुर अलयहिर्रहमने जब वाअझ फरमाया तो आपने बयान किया के उम्मते मोहंमदीयहमें कयामत तक 73 फिरके होंगे जिसमेसे अेक जन्नती बाकी जहन्नमी होगे. हझरत महमूदने इत्ना सुना और मस्जिदसे रोते रोते कोहे अलत (पीरमगली)की तरफ निकल पडे. खौफे इलाहीमें शेअर पढते जाते और अपने जिस्मके उपर कोडे मारते जाते. कोडे मारते मारते आप बेहोश हो गये, हझरते इस्राफील और इझराइल जैसे फरिश्तोंने इल्हामके झरीअे आपको होशमें लाकर तसल्ली दी मगर खामोश न हुवे. बल्के अपनी मगफेरत के लिये हिन्दी झबानमें मुनाजात बारगाहे इलाहीमें पढते रहे और रोते रहे. आखिरकार हुकमे रब्बीसे सरकारे मदीना राहते कल्बो सीना सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम ब जल्वअे रुहानी आपके पास तशरीफ लाअे और दरियाइ दूल्हाको अपने सिनये पाकसे लगाया, अपना थुक मुबारक आपके मुंहमें डाला तो होशमें आये. सरकारे दो आलम

सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमने मअलुम किया, बेटा महमूद! इस कदर रोनेकी वजह क्या है ? हझरते महमूदने अर्झ किय, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम मैंने वाअझमें सुना है के उम्मते मोहंमदीयहमें (73) फिरके होंगे, उन्मेंसे अेक जन्नती होगा बाकी सब जहन्नमी होंगे. ये सुनकर मैं इस फिक्रमें रो रहा हुं के न जाने मैं कौनसे फिरकेमें कयामतके दिन उठाया जाउंगा ? हुझूर सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमने तसल्ली देकर फरमाया, अय महमूद कुरआनने फरमाया है, अला इन-न अवलिया अल्लाहे ला खौफुन अलयहिम वलाहुम यह झनून. बेशक! अल्लाहके वलीयोंको कोइ खौफ और गम नहीं है, और हुझूरने हदीषेपाक भी बयान की के बेशक अल्लाहके वली मरते नहीं बल्के वोह अेक घरसे दूसरे घर जाते हैं, और अय महमूद! तुम्हारा मुकाम तो अर्श पर इत्ना बुलंद और आला होगा के अेहले मेहशर देखते ही रह जाअेंगे. हझरते महमूदने सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमकी झबाने पाकसे जब ये खुशखबरी सुनी तो खुश हुवे और शुक्र बजा लाअे.

हझरत शाहेआलम का कब्रसे निकलकर हझरत महमूदको तबर्रुक देना

तोह-फतुल कारी के लेखक रिवायत बयान करते हैं के हझरत शाहेआलम सैयद मोहंमद बुखारी अहमदआबादी रदियल्लाहो अन्हो के इन्तेकालकी खबर हझरते महमूदको रोशन झमीरीसे हुइ तो आपकी झियारत के लिये अहमदआबाद गये. हझरत शाहेआलम बुखारी अलयहिर्रहमह बुखारीने अपने इन्तेकाल से पेहले अपने सज्जादह नशीनको वसीयत की थी के मेरी ये पघडी और जुब्बा मियां महमूद बीरपुरीको दे देना. हझरते महमूद दरियाइ जब अहमदआबाद पहोंचकर झियारतकी मजलिसमें हाझिर हुअे, बाद झियारत के ओल्मा, अवलिया हझरते शाहेआलम बुखारीकी तअरीफ और खूबीयां बयान कर रहे थे. बातचीत के दरमियान जब हझरत सैयद मोहंमद बुखारी का नाम लेनेकी जरुरत पडती तो आपके गादीनशीन आपका नाम न लेते बल्के आपके शाही लकब शाहेआलम से याद करते मगर उसी मेहफिलमें हझरते महमूद दरियाइ दूल्हा हझरत शाहेआलमका झिक्र करते, तो शाह मुज्जन केहकर याद करते और खूबियां बयान करते आपको

जब शाहे आलमको शाह मुज्जन केहकर बार बार याद किया तो आपके गादीनशीन हझरते महमूद! बीरपुरी पर गुस्से हो गये और फरमाया मियां महमूद बहोत बेअदबी करते हो बोलने के आदाब नहीं. शाहेआलमको शाह मुज्जन कहेते हो मियां महमूद उठ जावो और दूसरे मकान में चले जावो, तुम जैसे बे अदबों को हझरत की पघडी और जुब्बा देना जाइझ नहीं. हझरते महमूदने फरमाया, मुझे मअलूम है के हझरत शाहेआलमको शाह मुज्जन के लफ्झसे जो मैंने याद किया वोह तुम सबको बुरा लगा है मगर ये बंदा हझरत शाहेआलमको खुश करनेके लिये शाह मुज्जन कहकर याद करता है, बे अदबी करने के लिये नहीं कहेता. और ये जुब्बा, ये पघडी आप लोग रखखो हझरत मुज्जन यही नाम सुनकर मुझसे मिलेंगे, पघडी और जुब्बा देंगे उन्के राझसे आप लोग वाकिफ नहीं हो, अगर देखना है हमारे साथ चलो ये केहकर हझरत महमूदने गादीनशीन का हाथ पकडा और ओलमा, अवलिया और आम मुसलमानोंकी बडी जमाअत लेकर हझरते शाहेआलम अलयहिर्रहमह की कब्रे अन्वर पर हाझिर हुअे. बाद सलाम फातेहा ख्वानीसे जब फुरसत पाअे तो हझरते महमूद हझरते शाहेआलमकी कब्र शरीफके सिरहाने तरफ गये और हझरत शाहेआलमकी तअरीफमें कुछ ये शेअर पढने लगे.

मार पडोशी लोग बर आना

पड्या फुल चोसर गुथयाणा

तरजुमा : हमारा पडोशी कब्रस्तान गया और लोग बाहर आअे उन्की कब्रकी चारों तरफ फुलकी चादर गुंथा गइ.

कुत्बे आलमकी शानमें ये कहने लगे

कुत्बे आलम तने जो हुं पाउं

चुन चुन कलीयां आज बीछाउ

तरजुमा : अय कुत्बे आलममैं जो मैं आपको पाउ कलीयां चुन चुनकर आपके कदमोंमें बिछाउं.

आज मीठा मुज्जनशाह पाउं

पाउं लागी उसे मनाउं

तरजुमा : आज जो मुज्जनशाह यअनी शाहेआलमको पाउंतो उन्को पाउंपडकर मैं मनालुं

ये आखरी शेअर आपकी झबानेपाकसे तडपके साथ निकलना था के अचानक कब्रे अनवर फटी और चौदहवींके चांदकी तरह नूरानी चेहरेके साथ हझरत शाहेआलम कब्र अन्वरसे सिनेके बराबर बाहर नझर आये. और अपने अेक हाथसे पघडी और जुब्बा मुबारक और दूसरे हाथमें गरम हल्वा और (20) रोटी गरम गरम लेकर फरमाने लगे, अस्सलामो अलयकुम महबूबुल्लाह! आइअे और ये तबर्रुक लीजीये. हझरत महबूबुल्लाह दरियाइ दूल्हाने व अलयकोमुस्सलाम केहकर आजीझी के साथ आपका तबर्रुक यअनी पघडी और जुब्बा वगैरह लेकर सर पर रखा और बोसा दिया और रोटी और हल्वा हाझिर रहेनेवाले लोगोंमें तकसीम कर दिया. उस वक्त हझरत शाहेआलम मुस्कुराये और फरमाने लगे, अय महमूद दरियाइ दूल्हा! तुमने मुझे मख्लुके खुदाके सामने बुलाकर शरमिंदा किया. हझरते महमूदने फरमाया, या हझरत! ये शरमिंदा होनेकी बात नहीं बल्के मख्लूके खुदाको यकीनके साथ ये बात झाहिर हुइ के हझरते शाहेआलम दुन्यवी झिंदगीकी तरह अपनी कब्रमें भी झिंदा हैं, ये सुनकर हझरत शाहेआलम अपनी कब्रशरीफमें तशरीफ ले गये और कब्र बंद हो गइ. जब इस किस्सेकी खबर गुजरातके शेहर शेहर और गांव गांवमें फैली तो लोग तअज्जुबमें पड गअे.

आलम के ये दूल्हा हैं मेहफिल ये उन्हींकी हैं
है उन्हीं के दमसे सब ये अंजुमन आराइ

वलीका तमाचा भी शाइर बनाता है

तोह-फतुल कारीमें रिवायत बयान की गइ है के अेक बार हझरत महबूबुल्लाह दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमह बयतुल्लाह शरीफके सफरके इरादेसे बेठे थे. उसी वक्त मियां शेख सामी जीयोकी वालेदा अपने बेटेको लेकर मिन्नत, समाजत और आजीझी के साथ हझरत महमूद दरियाइ दूल्हाकी बारगाहमें हाझिर हुइ. लडका हझरतके पास चूप हो कर बाअदब खडा हो गया. हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमहने फरमाया, जो आरझु हो मांगो, इत्ना केहना था के शेख सामीकी वालेदा बोल उठी, या पीर! मैं उममीदवार हुं के इस लडके के लिये कुछ अच्छी दुआ किजीये. हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमहने उस लडकेको अपने करीब

बुलाया और उसको गाल पर अेक तमाचा झोरसे मारा. बच्चेने रो दिया, बच्चेके रोनेकी वजहसे उसकी मांको बहोत रंज हुआ और फिक्रमंद होकर वोह भी अफसोस करने लगी. हझरत महबूबुल्लाह दरियाइ दूल्हाने इसका रोना देखकर फरमाया के, तुम्हारे बच्चेके बारेमें मैंने ये चाहा था के अवलियाकी जमाअतमें दाखिल कर दुं लेकिन खुदाकी मरझी ये है के वोह खुदाकी मअरेफतके बारेमें हिन्दी झबानमें शेअरो शाअेरी करेगा अच्छे कलाम लिखेगा, उसी झमानेसे शेख शामी हिन्दीके मशहूर शाइर बन गये.

जुतीयां सर पर रखनेसे बायड गांवके शहीद और ताजदार

रिवायत है के हझरते महमूद दरियाइ दूल्हा मोडासामें हाझिर थे, वहां आपकी खिदमतमें दो दोस्त हाझिर हुअे, अेक का नाम महमूद और उसके खादिमका नाम सींधी था, दोनों आकर आपके कदम चूमने लगे. उन दोनोंमेंसे जो शख्स सिंधी नामका गुलाम था वोह हझरतकी बारगाहमें बार बार सलामी करता और आपकी जुतीयां मुबारकको सर पर रखता था. हझरते महमूदको इसका ये काम बहोत अच्छा लगा और फरमाया अय सिधी तुझको हम शहादतका दरजा देते हैं. और महमूदको बायड गांवकी विलायत और हुकूमत अता करते हैं, और दुआ करते हैं के तुम दोनोंसे इस शेहरमें बहोत करामतें झाहिर होंगी. ये दोनों, हझरतसे इजाझत लेकर बायड आये. रातमें बायड शेहरमें कयाम किया, उसी रातमें सुब्ह होनेके करीब वक्तमें डाकुओंकी जमाअतने गांव पर हम्ला कर दिया. गांवके लोग और बायडका राजा भी उन्के मुकाबिल मुकाबलेके लिये खडे हो गये और उन्का पीछा किया, उसी लडाइमें डाकुओंके हाथसे सिंधी शाह शहीद हुअे, जैसा के हझरते महमूदने फरमाया था वैसा ही हुआ. आपका मझार आज भी बायड ता. मोडासामें करामतों और फैझका दरिया है.

रखनेको अगर मिल जाअे नअलैने पाके महमूद
फिर तो हम भी कहेंगे के ताजदार हम भी हैं

हझरते महमूदके झिक्रसे भालेजकी मछलीयों पर आग बे असर

रिवायत है के अेक मरतबा हझरत महमूदके साहबझादे हझरत जमालशाह अलयहिर्रहमह अपने चचेरे भाइ हझरत मौलाना अब्दुल कवी रहमतुल्लाहे अलयहकी मुलाकातके लिये भालेज तशरीफ लाये. कुछ बातचीतके दरम्यान हझरत जमालशाह अलयहिर्रहमहने फरमाया के भाइ! आज अगर मछली पकाइ जाये तो जी भरकर खाउंगा, मौलाना अब्दुल कवीने फरमाया, भाइ! इस जगह मछली कम मिलती है, अगर मिलेगी तो उस मछलीको पकाना मुशकिल होता है. हझरत जमालशाहने पूछा, अैसा कयुं ? मौलाना अब्दुल कवी साहबने जवाब दिया, यहांकी नदीके किनारे हझरत महमूद दरियाइ अलयहिर्रहमहने ला इलाहा इल्लल्लाहो का झिक्र किया है, इबादत और रियाझत की है. उस झिक्रकी आवाझ मछलीयोंने जबसे सुनी है उसकी बरकतसे उनको आग असर नहीं करती. हझरत जमालशाहने फरमाया के, मछली उमदा खोराक है, उसके खानेमें लइझत है और यहां के लोग इस लइझतसे महरुम रेहते हैं. बेहतर ये है के हझरते महमूदकी बारगाहमें जाकर इस महरुमीको इस गांवसे दुर करनेकी दरख्वास्त की जाअे मौलाना अब्दुल कवी अलयहिर्रमहने फरमाया हझरत आप कहीये वोह आपके वालिद है आपकी बात कुबुल करेंगे. हझरते जमालशाहने ये दरख्वाश्त कुछ अशआर पढ कर हझरत महमूद दरियाइ दूल्हाकी बारगाहमें अर्झ की, तो गैबसे मौलाना अब्दुल कवी रहमतुल्लाहे अलयहके कानमें आवाझ आइ, अय भतीजे! मछली पकावो. ये हुकम पाकर हझरत मौलाना अब्दुल कवीने हझरत जमालशाहके लिये मछली पकाइ गई. आपने खाकर खुदाका शुक्र किया. उसी झमानेसे भालेजमें मछली पकने लगी.

सालों साल पुरानी कब्रसे मुरदहको झिंदा किया

तोह-फतुल कारीमें रिवायत है के अेक मरतबा हझरत महमूद दरियाइ दूल्हाकी तअरीफ सुनकर मिस्रसे सात इसाइ आपकी बारगाहमें आये और अर्झ करने लगे, या पीर! हमारे पयगम्बर हझरत इसा अलयहिस्सलामका मोअजिझह था के (400) साल या (500) सालके मुरदोंको खुदाके हुकमसे झिंदा करते थे, आपके

पयगम्बरमें कया खूबी है ? हझरत महमूद दरियाइ दूल्हाने फरमाया हमारे साथ कब्रस्तानमें आए ताके हमारे पयगम्बर सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम का मोअजिझह कया है दिखाउं. अेक पुरानी कब्र के सिरहाने के पास जाकर खडे हो गये और फरमाया, कुम बेइझनिल्लाह, अल्लाह के नामसे खडा हो जा. मुरदह कब्रसे खडा हो गया और केहने लगा, या पीर! सकरातकी कडवी तकलीफका घूंट अभी तक हमारे मुंहमें बाकी है, इस गरीबके लिये दुआ फरमाइये, जैसे पेहले मैं आरामसे था वैसा हो जाउं. हझरत महमूद दरियाइ दूल्हाकी दुआसे फिर वैसेही हो गया और कब्रमें चला गया. हझरत महमूद दरियाइने इसाइयोंसे कहा अय इसाइयों! देखा ये मोहंमद पर इमान लानेवालोंकी खूबी है. और हमारे पयगम्बरकी खुबीयां तो इत्नी हैं के हमारे इल्ममें नहीं समा सकतीं. ये देखनेके बाद ये सातों इसाइ हझरते महमूदके हाथ पर इमान और इस्लाम लाये और मुसलमान हो गये (पे-71)

खुदाके सब बंदे हें पर खुदा मिलता नहीं उन्हे
खुदा मिल्ता है उन्को जो बने बंदे मोहंमद के

जरगाल गांवके गवय्येकी औरतसे जादुको दुर किया

तोह-फतुल कारीमें रिवायत बयान की गइ है के हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमह जरगाल गांव ता. बालासिनोरमें तशरीफ लाअे थे वहां अेक गवय्या रहता था उसने आपकी खिदमतमें आकर अर्झ किया, या पीर! मेरी बीवी हामेला है, 13 महिना हो चुका है मगर अभी तक बच्चा नहीं जनी है. इस वजहसे खाना पीना भी बंद हो गया है. और बहोत बीमार हो गइ है. अगर वोह मर गइ तो बहोत बुरा होगा. या पीर! आपसे उम्मीद रखता हुं के मेरी मुराद पुरी करेंगे. हझरते महमूद अलयहिर्रहमहने फरमाया के अय गवय्ये! तेरी औरत जादुमें फसी हुइ है बहोत मुश्किल से छूटकारा होगा. गवय्येने अर्झ किया या पीर! मेरा कोइ जानी दुश्मन तो नहीं है. मगर कमनसीबी और बदबख्ती से इस मुसीबतमें फसा हुं. हझरते महमूदने फरमाया, तु यकीन नहीं करता मगर उसकी हकीकत हमसे सुनो के इससे पेहले तेरी औरत दुसरे गवय्ये के साथ गलत ताल्लुक रखती थी और बदफेअली करवाती थी उसी वक्तसे इस औरत पर उस गवय्येने जादु कर दिया है और वोह मान्डवा गांवमें

रेहता है. अगर तु कहे उसे बुलवाकर ये बात कुबूल करवाउं या तु खुद अपनी बीबीसे पूछकर बता के ये बात सच है या नहीं! येह गवय्या सलाम करके अपने घर गया और अपनी बीबीसे सारा मुआम्ला पूछा, औरतने कहा, हझरते महमूद दरियाइ दूल्हाने जो कुछ फरमाया है बिलकुल सच है, आपके फरमानमें कोइ शक की बात नहीं है. गवय्येने आपकी खिदमतमें आकर अर्झ किया के औरत इ रार करती है, अब अल्लाह के वास्ते दरयादिली के साथ महेरबानी फरमाकर करम किजीये. हझरतने फरमाया, तेरी बीबी को मादये मेडक (देडके की मादा)को जलाकर जादु किया है इस लीये ठीक होना बहोत मुश्किल है, खुदा के नझदीक आसान है ये केहकर हझरत महमूदने आग को जल्वाया जब आग खूब तेझ हुइ हझरते महमूदने फरमाया, अय दोस्त, मेडक (देडका) वापस कर जो मेडक फलां गवय्येने जादु के लिये तुझे दिया था, अभी आग जल रही थी के अचानक उस आग से मेडक झिंदा होकर बाहर निकला हझरते महमूदने उस मेडकको कोइ चीझ पीलाकर फरमाया, अय जादु, मेडकके बदनसे बाहर निकल, आपका हुक्म पाते ही जादु मेडकसे निकलकर जादु करनेवाले मांडवा गांवके गवय्येके बदनमें लोट गया. और इस गवय्येकी औरतको हमलसे लडका हुवा और मरनेसे दोनों बच गअे. (पेज-86)

उन्के हाथ के जव के दाने भी सोना होता है

तोह-फतुल कारीमें रिवायत बयान की गइ है के अेक गाय कोहेअलत (पीरमगली पहाड) के उपर बीरपुरकी गायों के टोलेके साथ आती थी. (12) सालका झमाना गुझर गया मगर इस गायके मालिक का पता न चला. अेक रोझ गोवालेने दिलमें सोचा आज इस गायके पीछे पीछे जाउंगा और देखुंगा के ये गाय कहां जाती है ? और इसके मालिकका पता लगाकर उससे गाय चरानेकी मझदुरी लुंगा. वोह गाय चरकर जब पीरमगलीकी तरफ वापस हुइ तो गोवाला उसके पीछे पीछे चल दिया. गाय पीरमगलीकी गुफामें दाखिल हुइ, गोवाला भी उसकी दूम पकडकर पीछे पीछे चला. गाय झोर और ताकत लगाकर पहाडके अंदर चली जा रही थी और पहाड भी उसको जगह देता चला जा रहा था और उंचा भी हो जाता था. गाय जब झोर लगाकर पहाडमें जाती थी. उस वक्त गायके सिंग पथ्थरमें लगते थे. उस सिंगके निशान आज तक पीरगलीके दरवाझे के करीब मौजूद हैं. हझरतकी

बारगाहमें आनेवाले मुसाफिर उसे तअज्जुबसे देखते हैं. किस्सा मुख्तसर ये हुवा वोह गाय गुफाके अंदर चली गइ जहां जर सकतनामी औरत उस गायका दूधदोहने के लिये बेठ गइ. हझरत महमूद दरियाइ दूल्हाने फरमाया, अय जहांजर मैंने तुमको कहा था के इस गाय के चरानेकी मझदुरी उसके गलेमें बांधकार रवाना करो मगर तुम्हारे समजमें नहीं आता ? आखिरकार आपने फरमाया के जाव इस गायके चरानेवाले गोवालेको ये जव दे दो. जहांजर जव लेकर आइ और कहा के अपनी कंबलको फेलावो. गोवालेने अपनी कंबल फेलाइ. गोवाला वोह जव के दाने लेकर दिलही दिलमें कहा के, अफसोस अफसोस! हझरत महमूद दरियाइ दूल्हाने (12) साल गाय चरानेकी मझदुरीमें जव के दाने दिये हैं. ये अफसोस झाहिर करते हुअे कंबलमें बांधे हुअे जवके दानोंको झमीन पर डाल दिये. मगर कुछ जवके दाने कंबलमें लगे हुअे थे वोह दाने लेकर जब घरमें आया तो वो दाने सोना बन गअे. सुब्हके वक्त जवके दाने लेकर सोनारकी दुकान पर आया और बेचा, उस सुनारने गोवालेका सारा वाकेआ बापुखान नामी हाकिमके सामने बयान किया. बापुखान हाकिमने गोवालेको बुलाया और पूछा के ये जव कहांसे लाया तु? गोवालेने कहा के मैं नहीं बताउंगा अगर बताउंगा मर जाउंगा. मगर हाकिमने जब बहोत डांट फटकार कर पूछा तो गोवालेने सारा किस्सा बता दिया, अभी ये बात पूरी होना ही था के गोवाला फोरन मर गया, क्युं के हझरत महमूद दरियाइ दूल्हाने फरमाया था के अगर हमारे राझकी बातें किसीको कहेगा तो मर जाअेगा.

अहमदनगर के सात झालिमोंको बीरपुरमें बेठे बेठे तबाह कर दिया

तोह-फतुल कारी की रिवायत है क अेक शख्स शेख फाझिल नामका अहमदनगरसे हझरते महमूदकी बारगाहमें बीरपुर आया और फरियाद की, या पीर! अहमद नगरमें कुछ लोग मेरे हासिद हो गये हैं और मुझे परेशान करते हैं. इन्की तकलीफसे परेशान होकर वतन छोडकर आपकी बारगाहमें आया हुं उम्मीद रखता हुं के आप मेरी मदद फरमाअेंगे और मेरी तकलीफ दूर फरमाअेंगे. हझरते महमूद अलयहिर्रहमहने पूछा के तुम्हारे दुश्मन कितने हैं ? शेख फाझिलने कहा के वोह सात

शख्स है. हझरते महमूदने अपने हाथसे सात मुठ्ठी मिट्टी उठाइ और उसके सात लड्डु बनाअे. लड्डु बनाकर तोड दिये और फरमाया अय शेख फाझिल! जावो तुम्हारे दुश्मनोंको मैंने तबाह कर दिया, तुम दिली शांतिके साथ अपने वतन जाओ. शेख फाझिल हझरते महमूदकी इजाझत लेकर अपने वतन अहमदनगरकी तरफ वापस लौटा. दरम्याने सफरमें उसने सुना के फलां फलां शख्स अेक दिन अेक गुंबदके उपर बेठे थे. अचानक वोह गुंबद गिरा और उस पर बेठनेवाले कझाअे इलाहीसे मर गये. (ये सात शख्स वही थे जो शख्स फाझिलके उपर नाहक झुल्म करते थे) शेख फाझिल ये सुनकर बहोत खुश हुआ और अपने वतन आया

परीन्दों के गमख्वार ख्वाजा महमूद पिया

तोह-फतुल कारीमें रिवायत है के हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमह अेक बार पीरमगली की तरफ घुमने के लिये गअे हुअे थे. अचानक क्या देखते हैं के दो कबूतर जिस्में अेक मादह और दूसरा नर है, उडते उडते आये और चरने लगे. मन्झुरे इलाही उन दोनोंमेंसे अेक मर गया और दूसरा उसके सिरहाने बेठकर रोने लगा. हझरते महमूद दरियाइ दूल्हा उसके करीब आकर उसका हाल पूछने लगे. कबूतरने अपनी झबानमें अर्झ किया, या पीर! मेरा जोडा था. हझरते महमूदने फरमाया, कहांसे आ रहे हो और कहां जा रहे थे ? कबूतरने अर्झ किया, या पीर! हम पुरब देशके रेहनेवाले हैं हमारे देशमें दुष्काळ पडा है, ये साल सुखा होनेकी वजहसे हम मुल्के गुजरातकी खुबीयां सुनकर यहां खाने-पीने आये थे. मन्झुरे इलाही ये हुआ के मेरा साथी मर गया, या पीर! बगैर इसके अब मेरा झिंदा रेहना भी मुश्किल है. हझरते महमूद कबूतरकी अर्झ सुनकर महेरबान हुअे और सरको सजदेमें रखकर खुदाकी बारगाहमें रो रो कर कबूतर और दुष्काळ न होनेकी दुआ की के अय खुदावंद जब तक ये महमूद इस दुनियामें बा हयात है इस दुनियामें कभी दुष्काळ न भेजना. हझरते महमूदकी दुआ बारगाहे इलाहीमें कुबूल हुइ और मुरदह कबूतर भी झिंदा होकर अपनी मादहके साथ मुल्कमें रवाना हो गया. और हझरते महमूद जब तक इस दुनियामें बाहयात रहे रबतआलाने आपकी झिंदगीमें किसी देशमें दुष्काळ नहीं भेजा (पेज-81)

अहमदआबाद के खलीफा के घरमें झबह किये हुअे परींदोंको झिंदा करना

तोह-फतुल कारीमें रिवायत बयान की गइ है के अेक मरतबा हझरते महमूद दरियाइ दूल्हा अहमदआबाद जा रहे थे. दरम्याने सफरमें आपके अेक खलीफाने आपके आनेकी खुशीमें मुरघे और परींदे झब्ह करके बाल और खाल साफ करके दअवत करनेके लिये रखखा. आप जब तशरीफ लाअे तो खलीफा साहबने हझरते महमूदको खुशी ब खुशी अपने घरमें बिठाअे, अचानक हझरते महमूदकी नझर उस झबह किये हुअे परींदों और मुरघों पर पडी. आपने उसे देखकर फरमाया, ये परींदों और मुरघोंको क्युं झबह किया है ? खलीफा साहबने अर्झ किया, हुझूर आपकी दअवतके लिये ये झबह किया है. हझरत महमूदने फरमाया, मे इसे न खाउंगा. हझरतके खलीफाने अर्झ किया, हुझूर! ये मुरघे आपकी दअवतके लिये खरीदकर लाया हुं. आपने फरमाया, मैं नहीं खाउंगा खलीफा साहबने अर्झ किया, हझरत! अगर आपको खाना मंझूर नहीं है तो इसे झिंदा कर दिजीये ताके ये परीन्दे उडकर चले जाअें. हझरते महमूदने फरमाया, उसे टोकरीके नीचे छुपाकर आप दूर बैठ जावो. खलीफा साहबने झबह किये हुअे परीन्दों के उपर टोकरी ढांक दी. हझरते महमूद टोकरी के करीब जाकर कुछ शेअर हिन्दीमें पढने लगे जब अशआर पढना बंद किये, आपने खलीफाको हुक्म फरमाया, भाइ! टोकरी उठावो, जब टोकरी उठाइ गइ तो झबह किये हुवे सब मुरघे और परीन्दे झिंदा होकर उड गअे.

खंभात के खलीफा की दअवतमें भी बकरे को झिंदा किया

तोह-फतुल कारीमें नकल है के हझरते महमूद दरियाइ दूल्हाका मअमूल था के पांचों वक्त की नमाझ अदा करनेके लिये सरकारे मदीना राहते कल्बो सीना मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमकी बारगाहमे (मदीना शरीफ) पहोंचते. आपके खलीफा खंभातमें रहेते थे. आपने सुना के हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा पांचों वकत हमेशा नमाझ के लये सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लमकी बारगाह में तशरीफ ले जाते है. उन्होंने अफसोस करते हुअे कहा के, अफसोस! आनेजाने की मैं खबर नहीं रखता ? अेक बार खलीफा साहब आने

जानेकी राह पकडकर बेठ गये. आपकी मुलाकात की फिक्रमें थे के अचानक मुश्क, अंबर और संदलकी खुश्बू आने लगी. मगर जब कोइ नझर न आया तो खलीफा साहबने अल्लाहकी कसमें दी, बहोत रोये और झाहिर होनेकी इल्तेजा की तो हझरते महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमहको देखा और अपने घर ले गये और तख्त पर बिठा कर महोब्बत झाहिर करते हुओ अेक बकरा जबह किया. समोसे, कोफते, नान पुलाव वगैरह बनाकर दस्तरखान बिछाया और हर तरह के रंगबेरंगी खाने रख्खे. हझरते महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमाको और आपके साथीयोंको दस्तरख्वान पर बिठाया. आपके आसपास हवा डालनेवालोंको खडा किया. हझरते महमूदने फरमाया इस कदर क्युं तकलीफ की? खलीफा साहबने अर्झ किया आप हुझूर के खातिर हझरते महमूदने फरमाया गरीब के उपर इतना बोझ करना जाइझ नहीं है. फिर फरमाया ये जो कुछ बनाया है .सका गोश्त, खाल, रगें, हड्डीयां और खून वगैरह जमा करने हमारे पास लावो, नहीं तो मैं खाना न खाउंगा. मजबूरन हुक्म पर अमल करते हुओ बकरेकी ये तमाम चीझोंको आपकी बारगाहमें हाझिर किया गया. आपने फरमाया इन तमाम चीझोंको टोकरीके नीचे छुपादो. खलीफा साहबने उसे छुपा दिया. उसके बाद हझरते महमूद दरियाइ दूल्हाने अपनी जीगरी शाओरी पढना शुरु किया. थोडी देरके बाद वोह बकरा फिर वैसाही झिंदा हो गया.

अफझलखां अफघानी को इस्मे आझम न सीखानेमें हिक्मत

तोह-फतुल कारीमें रिवायत नकल है के अफघानी कौममें से अेक अफघान अफझलखां हझरत महमूदकी बारगाहमें इस्मे आझम शिखने के लिये आया, अफझलखां (12) साल आपकी खिदमतमें रहा मगर आपने इस्मे आझम न सीखाया. आखिरकार अेक दिन अफझलखाने हझरते महमूदकी बारगाहमें अर्झ किया के हुझूर में बंदा आपकी खिदमतमें इस्मे आझम शिखनेकी आरझुसे (12) सालसे हुं मगर अब तक मुरादको नहीं पहुंचाइ आखिर न सिखानेमें क्या सबब और हिकमत है ? हझरते महमूदने फरमाया, खानसाहब! अभी तुम इस्मे आझम सिखनेके लायक नहीं बने हो. खानसाहबको ये बात सुनकर तअज्जुब और रंज भी

हुआ. हझरते महमूद उसको अपने साथ अेक जंगलमें ले गअे और अेक झाडके सायेमें बिठा दिया. उस झाडके नीचे अेक शख्स दुसरा गरीबकी शक्लमें बेठा हुआ था के अचानक अेक घोडेसवार वहां आ पहोंचा. घोडे सवार अपने साथ सामानकी गठडी भी लाया था. उस गठडीको उठाने के लिये उस बेठे हुअे गरीबको हुक्म किया के, अय शख्स! ये मेरी गठडी उठाकर मेरी मंझिल तक पहोंचा दे. वोह शख्स हां और ना केहकर बहाने करता था. घोडे सवारने उस गरीबको अेक चाबुक मारा, वोह बेचारा मजबूर होकर के उसकी गठडीको घर पहोंचा दिया और कुछ नहीं बोला. बल्के खुशी ब खुशी उस झाडके नीचे आकर बेठ गया. अफझलखान साहब उसकी ये आदत देखकर आग बगोला हो गये और हझरते महमूद दरियाइ दूल्हासे केहने लगे, या पीर, अगर इस वक्त मुझे इस्मे आझम मअलूम होता तो मैं ये घोडे सवारको मार डालता. हझरते महमूदने फरमाया के, सब्र और बरदास्तकी ताकत तुझमैं न होनेकी वजहसे मैंने तुझको नहीं सिखाया. अफझलखान देखो, इस शख्सको मैंने इस्मे आझम सिखाया है. किल्ली तकलीफ उठाकर सब्र करके चाबुक का मार खाया और अेक लफ्ज बददुआ का झबानसे न निकाला. इस्मे आझमके आमिलको अैसा सब्र होना चाहिये, आखिर कार खानसाहबने अपने गुस्से से तौबा की और अपने मकसदको पाकर जो कुछ देखा अपने दोस्तोंको घर जाकर बताये.

महमूदपुरा के हाजी को अरब के जंगल में खाना खिलाकर मक्का शरीफमें पहोंचा दिया

तोह-फतुल कारीमें रिवायत नकल है के अेक शख्स हसन मोहम्मद जो महमूदपुरा का रेहनेवाला था वोह हज्जे बयतुल्लाह शरीफ के लिये अरब मुल्कका सफर राहे दरियासे किया. दरिया पार करनेके बाद जंगलमें रास्ता भुल गया. भुख और प्यास से बेचेन हुआ, अचानक होशमें आकर हझरते महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमको बहोत रोरोकर पुकारा और मदद चाही, उस वक्त हझरते महमूद बीरपुर शरीफमें मजलिसमें हाझेरीन के साथ खाना खा रहे थे, जब उस हाजी मुसाफिर के हालसे वाकिफ हुअे तो रोटीयां और पानी का कुंजा हाथमें लेकर फरमाने लगे के हाजी हसन मोहंमद महमूदपुरी अरब के जंगलमें भूखा, प्यासा है.

और वोह मुझे याद करता है मैं अभी जाता हुं हाजी हसन मोहंमदको खाना, पानी खीलाउंगा और मक्का शरीफ की झियारत कराउंगा, ये कहेकर गायब हुअे और मिन्टोमें अरब के जंगलमें खाना और पानी लेकर पहोंच गअे. मजलिसमें बेठनेवालोने उस दिन और तारीखको लिख लिया, हाजी हसन मोहंमदने जब हझरते महमूदको जंगलमें देखा, दौडकर कदमबोसी की. हझरत उसे खाना खिलाकर मक्का शरीफमें छोडकर वापस आ गये. हाजी हसन मोहंमदने भी इस तारीख और दिनको लिख लिया, जब अपने वतन वापस आया हझरतके कदम चुमकर मजलिसवालोंसे सारा हाल झाहिर किया (पेज-83)

वुजू से बचे हुवे पानीसे बरसों सुखा झाड फिर ताझा

तोह-फतुल कारीकी अेक रिवायतमें बयान है के हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमह अेक बार मेहफिले सिमाअमें कव्वाली सुनने में मशगूल थे और आपके खादिम अेक झाड को काट रहे थे. हझरते महमूदने फरमाया, इस झाडको न काटो, खादिमोंने अर्झ किया, हुझूर! ये झाड बहोत झमानेसे सुखा पडा है, इस सुखे को रखने का कया मकसद? हझरतने फरमाया के जीसने इस झाडको सुखा किया है वही ताजा भी करेगा. ये फरमाकर खादिमोंको पानी लानेका हुक्म फरमाया, जब पानी लाये आपने उस पानीसे वुझू फरमाया. और वुझूका बचा हुआ पानी झाडके चारों तरफ डाल कर कुछ शेअर (जीगरी) पढते रहे. हुक्मे रब्बी से वोह झाड फिर हरा भरा हो गया (पे-105)

अलीणा के मलिक फददु की बाअदब और बेअदब लडकियों का अंजाम

तोह-फतुल कारीमें रिवायत हैं के अलीणा जी. खेडामें अेक मलिक फददु नामी था, उसकी दो लडकीयां थीं. अेक बडी, दुसरी छोटी बडी लडकी का हमेशा ये मअलुम था के हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा जब अलीणा आकर अपने कमरेमें रेहते, जब जब वुझू की जरुरत पेश आती ये बडी लडकी आपके वुझुके लीये टंकी पानी भरकर रखती और दुसरी छोटी लडकी भी हझरत के हुक्म को बजा लाती

मगर बडी लडकी के कामसे आप बहोत खुश रहेते, उसके लिये अेक रोझ खुशीमें आपने दुआ फरमाइ के अय बेटी! तु सात बेटों की मां होगी और अपने ताबेअदारोंमें तु मशहुर होगी. रब तआला की महेरबानी से अैसाही हुआ के वोह लडकी सात बच्चों की मां बनी और उसका खानदान वहां फैला और दुसरी छोटी बेटी जो हुक्म की फरमा बरदार तो थी मगर कमनसीबी से अैसे ना पसंद काम करती और ना मुनासिब बातें केहती जो हझरते महमूदको अच्छी न लगती. अेक रोझ हझरते महमूदने उसकी आदत देखकर सरसरी झबानसे फरमाया के अजब बख्त सोझ वचनी नसीबेकी जली है. आपकी झबानसे इत्ना निकलना था के रब तआलाने वैसाही कर दिया यअनी कुछ ही दिन के बाद उसका शोहर इन्तेकाल कर गया और वोह भी अपने शोहर के गम ओर सोगमें मर गइ और उसकी अवलादभी झिंदा न रही, सुब्हानल्लाह! आपकी बोली भी क्या मुकाम रखती थी के आप सरसरी तौर पर भी कुछ फरमा देते, रब तआला उसे कुबुल फरमा कर वैसाही कर देता.

गुफतअे उगुफतअे अल्लाह बुवद
गरचे अझ हुलकुमे अब्दुल्लाह बुवद
वस्फे आ शाहांने शाह-हझरते शाहे महमूद दीं पनाह
सरसरी हरफे ब फरमुदी अगर-झूद मकबुलश ब फरमुदी इलाह

हझरत महमूद दरियाइ दूल्हाकी दुआसे शेहर लुणावाडा आबाद हुआ

तोह-फतुल कारीमें रिवायत है के दोहलपुरके राजा वाघजी जिस्को इडर के राजाने कत्ल किया था उस राजा की राणी अपने बेटे नवबीर को लेकर हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमहकी खिदमतमें आकर अर्झ करने लगी, या पीर! रेहनेके लिये कोइ ठिकाना नहीं हैं के वतन बनाउं या पीर! पटणसे जबसे आइ हुं अबतक परेशान हाल हुं हमारे राजपाट की अस्ल बुनियाद आपके दादा हझरत अलीसरमस्त से है, और आपके बुझुर्गोंसे बोहत गेहरा तअल्लुक है. अब महेरबानी फरमाकर इस बच्चे (नवबीर) के लिये दुआ फरमाइये और हमारे लिये कोइ जगह अता किजीये के वहां जाकर हम रहें जब राणीने बहोत रोरोकर अर्झ किया, हझरते

महमूद दरियाइ दूल्हा अलयहिर्रहमहने फरमाया, जा तुझको लुणीया देवकी जगह देता हुं, तुम खुद उस जगह कुत्तों और ससलेके शिकार के बहाने पहुंच जावो और जिस जगह खरगोश अपना रेहनेका ठीकाना बनाये हुअे हो और कुत्ते अपने रुआबसे खरगोशों को भगाते हों, उस जगह अपनी इमारत के खंभे खडे कर दो और लुणीयादेव के सामने खुद पहुंच जावो. और उसके केहने के मुताबिक काम करो. उसकी आदत ये है के जो शख्स उसके सामने जाता है वोह अपनी आंखों की पल्कों को उलट करके देखता है. ये शक्ल देखनेवाला शख्स दोबारा उसके पास नहीं गुझरता. अय राणी! तु देखकर सिर्फ इतना केहना के मुझको हझरते महमूद दरियाइ दूल्हाने भेजा है. और जो कुछ वोह कहे वही करना, खुलासा ये के रानी हझरत महमूद दरियाइ दूल्हा की बारगाह से इजाझत लेकर अर्झ करने लगी के या पीर! जो कुछ आपने फरमाया बेहतर होगा. हझरतने फरमाया के, मेरे बेटे शाह जमाल मोहंमद को अपने साथ उस जगह ले जा. जहां सिद्धा लुणीया दव रेहता है. वहां जाकर रानी और कुंवर नवबीर सामने खडे हो गये. लुणीया देवने अपनी आंखोंकी पल्कों को उठाकर जैसे देखा, कुंवर बोल उठा के अय लुणीया! हमको हझरते महमूद दरियाइ दूल्हाने भेजा है. सिद्धा लुणीया देव ये सुनकर तअज्जुबमें पड गया और केहने लगा, अय कुंवर नवबीर मैं अपनी जगह तुमको देता हुं. लेकीन शरत ये है के मेरा नाम बाकी रहे. और मेरी जगह में अेक मंदिर बनाये तुं. ये केहकर लुणीयादेव पहाळों में चला गया और कुंवर खरगोश का शिकार करने में मशगुल हो गया और कुंवरने वोह जगह पाइ, जहां खरगोश रेहते थे और कुत्ते उसे भगाते थे, उस जगह हझरत जमाल मोहंमद अलयहिर्रहमहने अपने हाथसे इमारतकी बुनियाद डाली और उस जगहका नाम आपने लुणावाडा रखखा, कुछ रोझा वहां कयाम कर के अपने घर वापस लोटे. हझरत महमूदकी दुआसे वोह आबादी दिनबदिन झियादह होती चली गइ यहां तक के आज तालुका व महीसागर जीले का वडामथक है.

आप का सफर

हजरत पीर सैयद ख्वाजा गौषे-आजम सानी सैयद ख्वाजामीयां महमूद महेबुबे इलाही दरियाइ रहमतुल्लाहे अलयहे कौन से शहेर या गांव में कितने समय रहे।

साल	माह	दीन	शहेर या गांव
1	2	25	भालेज, ता.जी.आणंद, गुजरात - भारत
5	-	-	जरगाल, ता.ठासरा, जी.खेडा, गुजरात- भारत
4	-	17	ओड, जी.आणंद, गुजरात-भारत
12	1	5	अलीणा, ता.महुधा, जी.खेडा, गुजरात-भारत
-	7	-	गोधरा, जी.पंचमहाल, गुजरात-भारत
1	-	12	वटवा-रसुलाबाद, अहमदआबाद, गुजरात-भारत
2	-	11	सारंगपुर, अहमदाबाद, गुजरात-भारत
7	-	-	मोडासा, जी.साबरकांठा, गुजरात-भारत
16	-	-	बीरपुर मुकद्दसा जी.खेडा, गुजरात-भारत
12	-	-	इमादुल मुल्क रहमतुल्लाह अलयहे को अपनी जींदगी के बक्षीश दीये म.दफन मु.बीरपुर शरीफ

ब-हवाला : असल फारसी मल्फुजात महमूद ख्वानी का तरजुमा 28-3-2004 इतवार मु.चांद 6 सफर 1425 हि.स.।

पीर ख्वाजा महमूद दरियाइ सरकारने ओक पलभरमें अपने दामाद की मदद की

हझरत सैयद शाह अब्दुलरझझाक इब्ने अब्दुलगफुर इब्ने अब्दुलगनी जाफरी जैनबी गौषूषकलैन ख्वाजा महमूद दरियाइ सहाब के दामाथ थे। आपने मकका मुकर्रमा में 14 साल दीने इस्लामका इल्म हांसिल कीया। अेकबार आपके पास खर्च करनेके लिये मकका शरीफमें रकम (पैसे) नहीं थे। आपने सोचा के मेरे पास जो किंमती चादर है उसे बेचकर रकम हांसिल कर लुं आप बजारमें गये। वो वकत मुर्शिदे बरहक ख्वाजा पीर दस्तगीर सय्यिद शाह महमूद दरियाइ बीरपुर शरीफमें महेफीले शमा में मजलीस में बैठे हुवे थे। आपको आपके दामाद का हाल अल्लाह तआलाने इल्हाम से आगह कर दीया। ख्वाजा दरियाइने मजलीसे समाअ के समाइनसे फरमाया की मकका शरीफ में शाह सय्यिद अब्दुलरझझाक तंगदस्तीके हाल में है और वो बजार में चादर बेचने जा रहे है। लीहाजा

कीसी के पास कोइ रकम हो तो मुझे दो में उनकी मदद कर दुं (मकका शरीफ) पहोंचा दुं। मजलीस में से अेक शख्स उठा उसने पांच अदद महमूदी (वो वकत के सिकके) हझरत को दिये देनेके बाद उसने ताखिर दिन लिख लीया।

अल्लाह तआला के करम से आप वो रकम अेकपल में बीरपुर शरीफ से मकका शरीफ में जाकर अपने दामाद ख्वाजा सय्यिद अब्दुलरझझाक को देने गये आपको सामने देखकर अब्दुलरझझाक ताअजजुमें पड गये की में कहीं ख्वाब तो नहीं देख रहो आप मीना बजारमें थे। ख्वाजा दरियाइ आपके पास आहिस्ता, आहिस्ता आये। अब्दुलरझझाक (अलहिर्रिमाह) को शरम महेसुस हुइ। दरियाइ सहाब आपके पीछे से गये और फरमाया, अय रिदाफरोश अय जादर बेचनेवाले, ये सुनकर ख्वाजा अबदुल रझझाकने हाथ लंबा किया। आपने उनके हाथमें वो पांच अदद सिकके उनके हाथमें रख दीये। और आप दरियाइ सरकार गायब दुसरे लम्हे हो गये। वोही महेफीले शमा की मजलिसमें हाजर हो गये। आप ख्वाजा अब्दुलरझझाक जब बीरपुर शरीफ आये तब ये वाकया बयान किया। तब वो लोग जो महेफीले शमामें शरीक थे सबने कहा ये वाकीया वकत बीलकुल सच है।

आपकी शादी ख्वाजा दरियाइ दुल्हा की सहाबझादी सय्यिदा मख्दुमा बीबी साहेब जमाल साथ हुइ थी। आपको गुजरातके बादशाह मुजफफरशाह हलीम की जानिब से इस्लाम खानका लकब मीला था। आप जय्यद आलीमे दीन, उस्तादुल उल्मा अे जैयद, उस्ताझुष्षक लैन, मुखफफरुल उलमा व फुझला वगेरा अल्काबो से नवाझा गया है। आपका मझार मु. बालासिनोर तलाब के किनारे है आपका उर्स बडी शानो से मनाया जाता है। आप दरियाइ सरकार के मुरीद व खलीफा है। वकत के बळे कामील वली है आपने दरियाइ सरकार की फारसी में मलफुझात लिख्खी जीसका नाम फवाइदे महमूदीया है।

हझरत सय्यिदशाह महमूद दरियाइ सहाब की अेक नझरसे हाडपींजर से....

अेक रोज का वाकीय्याह है की हझरत ख्वाजा शाह महमूद दरियाइ सरकार और उनके दोस्त गुजरातके सल्तनत के वझीरे खजाना और बादशाह कोहे अलत (प्रेमगली पहाड) मुकाम बीरपुर शरीफ के पहाडो की शेर करते करते पहाड पर की बुलंदी पर जाते जाते रास्तेमें कीसी जानवर के हाडपींजर पर वजीरशाह इमदादुल मुल्क नझर गीरी। ये देखकर हझरत शाह महमूद दरियाइसे फरमाया की हुझूर सरकार पीरोमुर्शीद अगले जमानेमें पयगंबरो औलीयाने कइ मरे हुवे जानवरो-परिन्दो को जीन्दा कीया है।

अल्लाह तआलाने हुझूर आपको महबूबुल्लाह के दरजे पर रख्खा है कया आप ये काम ये हाडपींजर से ये जानवर जींन्दा कर शकते हो ? आप गौष व कुतूबका मरतबा रखते हो। हुझूर मेरे लीये मेरी ये तमन्ना पूरी करो और कबुल कर लो।

हझरत ख्वाजा महमूद दरियाइ सरकारने मुस्कुराकर जवाब दिया के ये हाडपींजर

शेर का है । अल्लाह तआलाके हुकमसे ये जीन्दां हो शकता है और आप को नुकशान पहोंचा शकता है । ये काम करना मुनासीब नहीं मगर शाह इमादुल मुल्कने हझरत को दो बारा अर्ज की आप हजरत मेरे साथ है फीर मुझे कीस चीझ का डर खौफ है । हझरत शाह सय्यिद महमूद दरियाइ दुल्हाने वुझू कीया बाद में दो रकात नफल अदा की बारगाहे रब्बे कदीर में दुआ आझीझाना की । बादमें आपने अेक नझर हाडपींजर पर डाली व कुरआने करीम की ये आयत पळही । कुम बे इझनिल्लाह (अल्लाह तआलाके हुकम उठ जा) इस हांडपीजर से शेर खडा होगा । हझरत ख्वाजा महमूद दरियाइ जहां बेठे थे वहां आकर ये शेर गरदन झुकाकर सलाके अंदाजमें सर झुका दिया और खडा रहा । ये मंजर देखकर शाह मलीक इमदादुल मुल्क व बादशाहे-वजीर गुजरात खुश हो गये और पीरो मुर्शीद ख्वाजा दरियाइने अपने रबकी हुझूर दुवा की अल्लाह तआलाने आपकी दुआओ जरीये शेर को कयामत तक की जींदगी नसीब हुइ ये शेर की गुफा हझरत की गुफाकी बगलमें आज भी मौजुद है । शेर को देखनेवाले लोग आजतक मौजुद है ।

बीरपुर के देसाइयोको केदसे रिहाइ दीलाने के लिये दरियाई दुल्हा का फरमान

बयान किया गया है की बीरपुर और गोधरा-कस्बा के देसाइओको (हिन्दु) गुजरात के मशहुर बादशाह सुलतान महमूद मूछलाने कैद कर लीया था और हुकम कर दीया की उनकी गरदन मार दी जाये ।

ये हुकम हुवा उस वकत हजरत सुल्तानुल अवलिया उस्तादुदारैन सुल्तानुल आरेफीन गौषे जमाना पीर दस्तगीर हजरत शाह सय्यिद ख्वाजा हमीदुद्दीन (चाहेलदाह) रहमतुल्लाहे अलयह (ख्वाजा दरियाइ के वालिद) का उर्स नझदीक आ रहा था । उस दरमियान ये देसाइ (बनीये) की औरते व बच्चे ख्वाजा दरियाइ सरकार के पास आकर गीरीया जारी । शोरो गुल रोना व धोना, व फरीयाद की हजरत दरियाइ सरकार हकीकतसे आगह हुवे और आपने अपने रहमतका पहेलुं खोलकर अेक खत लिख्खा । और उस खतमें लिख्खाकी पीरो मुर्शीद शाह हमीदुद्दीन चाहेलदाह का उर्स आ रहा है उस लिये आप ये बीरपुर और गोधरा के देसाइयो को केद से रिहा कर दो और बीरपुर उन्हे रवाना कर दो । ये काम आप करोगे तब ही आपकी ये खिदमत उर्स की बादशाह कबुल की जायेगी । आपने ये खत हवामें उडा दीया था उस वकत इशां की नमाज का वकत था । ये खत हवामें अल्लाह तआलाके हुकमसे उडता उडता मु.चांपानेर (पावागढ) सुल्तान महमूदशाह मुछाला के महलमें तख्त के पास जाकर गीरा । सुलतानने वजीरो-चोकीदारो को कहा के खतमें कया है ? और उसमें कया लीख्खा है ? पढनेवालो को बुलालो खत पळहनेवालेने पळहा फीर उन्ही से कहा ये खत शाह महमूद दरियाइ सरकार के जानीबसे गेबी तौर पर आया है । आपने बीरपुर व गोधरा के देसाइयो को छोड देनो को लीख्खा है । सुलतान ने आपके हुकम को

कबुल कर लिया इन देसाइयोके लिये नये कुरते, अचकन, कमपट्टा, अमामे (पाघडी) लेकर केदखाने में आये। केदखाने के सिपाइयोको कहा बीरपुर गोधरा के देसाइओको मेरे पास ले आओ। सिपाइ जब उनके पास गये तब ये देसाइओको गलत फेहमी हुइ की अब हमारा आखरी वकत है। और ये लोगोने नजासत कर दी। कयुं के बादशाहने हमें भाइ कहेके बुलाया है अब मोत नककी है। कैदसे बहार लाकर सिपाइओने हाथ पगसे सांकल जंजीरे बेडीयें खोल दी। नये कपडे वगेरा उन्हे देकर अच्छे नस्लके घोडे देकर बीरपुर शरीफ हजरत शाह आरीफबिल्लाह ख्वाजा हमीदुद्दीन चाहेलदाह रहमतो रिदवान के उर्स की खिदमतमें हाजर कर दीये गये।(हवाला : मफातीहुल कुलूब : फारसी कलमी पेज-55-56)

ये देसाइ हर साल उर्स के मौके पर रासन की दुकाने वगेरा करते आते थे। ये सिलसिला करीब 450 साल तक जारी रहा था आज भी बीरपुर शरीफ के तमाम हिन्दु, मुसलमान मिलकर उर्स मना रहे है।

हजरत ख्वाजा महमूद महबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे ने खिलाफते व जागीरि तकसीम करना

हझरते अब्दुररझ्झाक जाफरी रहमतुल्लह अलयह का बयान है के अेक रिसाला करीमी है उसमेंसे आपके दामादने झबाने फारसी से झबाने उर्दू और (हिन्दी) में तरजुमा किया है. फरमाते हैं के शाह ईमादुल मुल्क गुजरात के सुलतान के वझीर मशहुर थे. वो हझरत के खास खलीफा थे. वो फिदाअे जाने महेबूबुल्लह रहमतुल्लह अलयह थे, वो हझरत के बहोत ही प्यारे थे और हझरत फरमाते के मुजे जो फैझ बाबा से मिला है और मुजे मेरे रेहबर ने बताया हे और झाती मुशक्कत से जो कुछ पेदा किया हे वो सब कुछ मैंने ईमादुल मुल्क को दिया है. और मेरे सब खलीफाओंमेंसे आला खलीफा हैं. मुल्क चांपानेर में बीमार हुवे और मर्झ हद से झियादा बळ्ह चूका था. उनको सत्ताईस (27) फाके हुवे मगर मर्झ में कोई ईफाका न हुवा, तबीब और हकीम भी दवा करते हुवे आजिझ हो गअे तो वहां से अेक खत हझरत पर लिखा के मलक पर मर्झे शदीद है. ये खत कासिद ने हझरत के पास आकर दिया, वो खत पळ्हकर हझरतने कासिद से फरमाया, ना उम्मीदी है, ये खबर कासिदने ईमादुल मुल्क को दी तो फिर दुसरा खत लिखा और उसमें लिखा हुवा था के मलक की कुछ मदद किजीये और दुआअे शिफा दीजीये. वो खत पळ्हकर आप गमगीन हुवे और रहे जैसे आईना खामोश. फिर ईमादुल मुल्क ने तीसरा खत लिखा उसमें लिखा के

बीमार पुर्सी जरूरी है और आप यहां आकर बंदानवाझी फरमाएं तो उसमें मेरी सरफराझी है, ये खत लिख कर कासिद को दिया. वो लेकर बडी तेझी से रवाना होकर हझरत की खिदमत में हाजिर हुवा. वो खत पढ़ते ही आपने चांपानेर का अझम किया और आपने सब अकरबा को और मुरीदों को और फरझन्दों को बुलाया वो बस हाजिरे खिदमत हुवे और सब के सब तसलीम कर के अदब से दस्त बस्ता बेठे. उस वक्त आपने आपके बडे फरझंद हझरत शाह लाडमोहंमद शैखुल ईस्लाम रहमतुल्लाह अलयहको नझदीक बिठाकर उनको ईनआम बख्शा और हझरत जमाल मोहंमद रहमतुल्लाह अलयह जो छोटे थे उनको फैझे हक से कंई ईनामे कामिल अता करके खिलाफत अता फरमाई और अपने खुलफा में शामिल फरमाया और हझरत प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह जो आपके पोते थे उनको फैझे खुदा बख्शा और हझरत मुहंमद चांद रहमतुल्लाह अलयह और हझरत शरफुद्दीन रहमतुल्लाह अलयह आपके भाई थे उनको भी रहेनुमा बनाया और आपके हकीकी भाई हझरत शाह मौलाना अहेमद रहमतुल्लाह अलयह थे उनको भी नेअमतोंसे सरफराझ फरमाया और जो खासुल खास खुलफाओ अेझाम मलक दोलत वल्द काझी मलक और सैयद मूसा और सैयद मुस्तुफा और मियां ताजन शाह शेख और मियां बाजन को और कुल खादिमों को हर अेक को गैब के राझदां किये. फिर आपने तदबीर करके जागीर तकसीम की. मोडासा और जरगाल की जागीर हझरत शाह लाडमोहंमद रहमतुल्लाह अलयह को दी. दीगर जागीर अहमदआबाद की सारंगपुर खास हझरत जमाल महंमद रहमतुल्लाह अलयह को दी और कस्बा अलीणां की जागीर हझरत अब्दुलकवी रहमतुल्लाह अलयह को दी और मलक दोलत और खुलफा को कहा, जाओ मालवा और दख्खन को क्युं के तुम्हारे हकमें हुकमे ईलाही हे वहां जाओ. तुम्हारे लिये बहेतर हे, तुम्हारे किस्मत में हैं मकानात, खुदा की तुम्हारे उपर महेरबानी हे और खलफे महमूदअशरफ शहे महमूद हझरत अमजद हझरत शाह अबु महंमद रहमतुल्लाह अलयह वझीरे शाह थे. वो अेहले तोकीर हवेली परगना था. उनकी जागीर के लिये सबको वसीयत करके आखिरी सलाम कर के, फरमाया के जो कुछ बाकी उम्र हे वो ईमादुल मुल्क के हिस्से की हे, अब मैं जाकर मलक को बख्श दुंगा, उस वक्त वहां जो हाजिर रफीके हमदम उन सबने अर्झ

की के हुझूर! हम अपने हर अेक की अेक अेक साल की उम्र बख्शें. ये केहकर झारझार रोने लगे के आप जैसा तबीब कहां से पाअेंगे.

रिवायत दूसरी में कोल महमूद रहमतुल्लह अलयह के आपने लळकों को तसल्ली दी और ये आयत विर्दे झबान कर के लन्तना लुल बिर्र हत्ता ये पळहकर लळकों को तसल्ली के लिये फरमाया के कर्ज जाईझ हे जब तक गुरु पास हो. ये सुनकर खादिम परेशान हुवे और आप अशरफखान और ईस्लामखान और दूसरे दो होशियार कव्वाल और आपके दामाद और लळके को लेकर चांपानेर की जानिब रवाना हुवे और अपने बीबी फतेहमलक के हक में दुआ सब्र की तलकीन की और उस वक्त बीबी फतेहमलकने आपकी कनीझ से कहा के जब हझरत तशरीफ ले जाने के लिअे रवाना हों तो तू उनसे अर्झ करना के आप दाहनी तरफ नझर फरमाअें. जब आप कस्द करके रवाना हुवे तो कनीझ ने अर्झ की ! हझरत, झरा दाहनी तरफ नझर फरमाईये. तब आप उस वक्त घोडे पे सवार हो चुके थे. आपने नझर दाहनी तरफ की तो वहां बीबी फतेहमलक खळी हुई थी और आपके सर पर उस वक्त सफेद दुपट्टा (ओळनी चादर)था. ये देखकर हझरत मुस्कुराअे और फरमाया के तुम घर में जाओ, गभराव नहीं. ये सुनकर तमाम हाझराने मजलिस गमगीन हुवे और बीबी सफेद चादर सर पे ओळे हुवे मकान में तशरीफ ले गईं. उस वक्त हझरतने जिगरी फरमाई,

जिगरी

देख सलुनी बांसरी मन मेरे सांई....
मांग सवारुं पडतां सेह तेरे सांई....
चोटी गुंथाउ मोहे बंधबेहलार लाउं.....
कान कर नगल गोसीया दर गोसी पाउ.....
गुल ताईद और बाझु बंधसो नाम ताहरे....
दूसरी जीव ना लाउं सुन मिल हमारे....
हा तू बीच गजरीया दस्तीया पहेरा राता चुळा....
पहेनो बाली अंगूठीयां बांधे बांधजोळा.....

गारे गलुबंद बांगरी मोती सराअे के दाना....

गले सहावे संगरी और हार हमेला

पायल पंनजन बाजतीं फिर पीयुदी खावां.....

उन बीछोवी घूंघरू दो पाउं लाउं....

महमूद मीठरा पाया तन मन कुरबानी....

ताज हमुं सरसाईयां तेरे जहां अरझानी....

★★★★★

ख्वाजा महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के चंद अश्आर

के मुझको हे भरोसा आपका ओर आपका में हुं
मददमें आपसे चाहता हुं महझुं जब के होता हुं
में अब अेक अरझ बासद इजझ ये खीदमत में करता हुं
तवजेहसे करो अब फेझ वस्ये तुमसे मंगता हुं
जोये नेअमत मीली मुझको तो गोया इद घर आइ
हुवा आफाकमें झाहीर तुम्हारा नाम दरियाइ

गुलामी में मुझे हे अपनी शहा हरदम बदम रखीयो
इनायत करके मुझ उपर सदा जेरे कदम रखीयो
महेर पीदरी न मुझसे तोडीयो मत लुफो करम रखीयो
गुलाबुद्दीन पर हर वकत आपना बस करम रखीयो
के बख्सीस आपकी सब जीन्नो इनसां मेहे फेलाइ
हुवा आफाकमें झाहीर तुम्हारा नाम दरियाइ

शैखुल इस्लाम बारगाहे वालीदे माजीद में

और बावली नदी से हझरत पार हुवे. उस वक्त आपके बळे साहबझादे हझरत सैयद शाह शैखुल ईस्लाम लाडमहंमद रहमतुल्लह अलयह ने आपके पिदरे बुझुर्गवार की जुदाई में ये जिगरी फरमाई.

कलामे गुफ्त शैखुल ईस्लाम दर शाने हजरत महेबूबुल्लह रहमतुल्लाह अलयह

कोई कहीयो रे वाहेला वाले सुनो, सोनिमलना होवे कब लगा

जब तुम कीती चलन की बातों, घळी दोहेली गई मुझ रातां

बहोत निसासे हो फिर यहां तो, जब तुम साथी पीठ फिराओ

बीराह अंगेठी चुन दस लाओ, ये भेदन किस अछुं जाओ

मियां महमूद को जो हुं पाउं, चुन चुन कलियां सेज बिछाउ

हुओ बालासिनोर अंदर वो दाखिल, कहे वोह मरतबोंसे रबके वीसल

कहे कव्वाल से ये गाओ जिगरीया, सुनुं ता मैं बसोझे कल्ल्ब बिरया

जिगरी गुफ्त महमूद महेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह

अपने बालम से हिल मिल रहीये...

बुरा न कहे कोई....

हेर फेर अपना मनवा चाहे....

घट बिरागन न होवे...

नहीं तो अपने सरीजन सींते जबर माने जियूं...

जुन जुन सीते पीक अपाकर कोने कहीये मुख पीयुं...

श्रीजन सीना को केरी रे दरजन था न कोओ....

चलो रे साजन तैं देशमां जहां मान सवर्ग होवे....

महमूद दाता अेक का मात दुजा चुनत नांही....

पहाड तास ना र कानजीन जीन जीरे लोभाये....

खवाजा महमूद महेबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा का शहरे चांपानेर मोहंमदाबाद पावागढ में दाखिल होना

और जब हझरत चांपानेर पहोंचे और ईमादुल मलिकको देखा उस पर दर्द सख्त है. आप वहां कुछ देर ठेहरे और मलक के कान में हझरत ने कुछ कहा के मैंने कोशिष कर के मेरी उम्र के बारा साल तुमको बख्श दियें उस वक्त मलक होश में आया, और फिर अपने बिस्तरसे होंशीयार होकर उठा. वहां जो हाजिर थे वो ये देखकर बहोत खुश हुअे और मलक ने देखा के खुद पीर यहां तशरीफ लाअे हंय तो आपके कदम बोस हुआ और उसकी तमाम बीमारी से शिफा पाई और उसने ईल्तीजा की, आपकी महेरबानी से मुझे शिफाअे कुल्ली अता हुई और जो उसकी सकरात का गम था, मुफस्सल हाल से मलक ने मर्झ से शिफा पाई वो रबीउल आखिर की ग्यारहवीं तारीख थी और सन हिजरी 941 पीर का रोझ था. उस वक्त आपकी तबीयत में कुछ खराबी पैदा हुई. वहां आपके सामने कव्वाल कुछ गाते थे वो हझरत सुन रहे थे. वहां अगर और फूल लाअे गये थे. वो सब में गुलाब छिडका जाता था और आप हझरत फूल अपने हाथ से अपने सर पे डालते थे. ये हरकत देखकर वहां के लोग हैरान हुअे के ये आप की आदत के खिलाफ काम हय. उस वक्त आपने अपने दामाद से कहा के मेरे सरसे जो फूल झमीन पर गिरे उस पर निगाह रखना और ये मेरी यादगार हे उसे संभाल के रखना. उस वक्त आपने फरमाया के मैंने तारीख आठ को अेक ख्वाब देखा के रोझे महेशर कायम हुआ हय और वहां जिन्नो ईन्सान नफसी नफसी पुकारते हंय और तमाम आलम गम से लबरेझ हे और औलिया और सालेहीन मुसररत में डूबे हुअे हैं और मैं भी अपने मुरीदों के साथ सफ बांधकर अेक तरफ खळा हुआ हुं और मुझे प्यास की शिद्दत हुई और मेंने नझर उठाई तो मकाम नझर आया वहां पानी मोजूद था वो मकाम आरास्ता और खुशतर था और सब जन्नत की निशानीयां थीं उस जगह पर दो फरिश्ते मौजूद थे मैंने वहां जाके पानी का कूंजा लिया तो उन्मेंसे अेक फरिश्ता बोला के ये पानी उन्के वास्ते भरा है जो खुदा के नाम पर पानी पीलाये, जब पानी निकालने का ईरादा किया लेकिन कुंझेका मुंह बंधहो गया और पानी मेरे हाथ में न आया. मगर जो दुसरा फरिश्ता था उसने उस फरिश्ते से कहा, चूप रहे, ये पानी सालेहीन के लीये हय उस वक्त मैंने कुंझे का सरेपोश उठाया और

वो शीरीं पानी मैंने पीया और खुदाका शुक्र अदा किया और सजदअे शुक्र बजा लाया. मैंने अल्लाह तबारक व तआलासे दुआ की के ये रोझे जझा खल्क पर है और जो मेरे मुरीद गुनेहगार हैं उनको तु बख्शना क्युं के तू सत्तारो गफ्फार हय. उस वक्त जनाबे बारीसे आवाझ आई के तुम केह दो अपने मुरीदोंसे के पांचों वक्त की नमाजें पढें और जमाअतके साथ पढ़ें मुंह न मोडें ईसमें कोई खिलाफ नहीं चूंके येह खुदाका हुक्म है. ये बशारत सुनकर आपने मुरीदों से फरमाया के मुज को खुदाका हुकम हय के तुम पांचों वक्तमें से अेक भी नमाझ को छोडोगे तो जहन्नम में जाओगे उसमें कोई शक नहीं और कयामत के रोझ खुदा खुद राझी होगा. और वो राझी न हुवा तो हमारे लीये बळी सझाअें होंगी उस वक्त सब खादिमोंने आपको परेशान हाल देखा, उस वक्त तमाम मुरीदोंने और हाजिरे महेफिलने आपका फरमान (कोल) दिल से सबने कबूल किया और आप उस वक्त वासिले हक हुअे. कालु ईन्ना लिल्लाहे वईन्ना ईलयहे राजेउन. ईस्लामखानका केहना हय के मल्श के महल में जो कोई भी हाजिर थे वो सब हैरानो परेशान हुअे और मैं भी उस जगह पर खडा हो गया. हझरत जमाल महंमद रहमतुल्लाह अलयह हर साल उर्सकी महेफिल किया करते और मैं भी हझरत के पास तमाम मशाईखके साथ में बेठा हुआ था और गुफतेगु हो रही थी. मैंने हझरत से अर्झ की, मैं खिलाफत चाहता हुं हझरत की ताके सब शक दुर हों ईसके लिअे कुछ विर्द बताअें. तब आपने कहा, ये ईस्म पळहो. या बदीउल अजाईबे बिल खैर. बारासो मरतबा पळहो ताके तुम्हारी मुराद पुरी हो. मैंने जब ये विर्द शुरु किया वो रात 11 (ग्यारवीं) की थी और पळह के फारिग हुवा और मुजे नींद का झोंका आया तो मेने ख्वाब में कुत्बे झमां हझरत शाह मोहियुद्दीन गौसे दो जहां को देखा. आपने मेरे सर पे उल्फत से टोपी रख्खी, खिरकाओ खिलाफत आपके हाथ से पेहना दिया .आपने फरमाया के मेरा खलक जमालुद्दीन को कहां हे के वो तुमको खिरका दे. मैं सुब्ह उठकर आपकी खिदमत में हाजिर हुवा दूसरी रिवायत में हय, के अेक मजलिस पुर नुर झमीं हय वहां तख्त बिछा हय. मुजे खिरका खिलाफत का पेहना कर गोया उस तख्त पर बाईझझत बिठाया. वहां बहोत से ईन्सान मौजूद हैं ईतने में हझरत शाह जमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह टोपी और शजरा लेकर तशरीफ लाये के ईतने में हझरत खवाजा महमूद दरियाई रहमतुल्लाह

अलयह तशरीफ लाये, वो कुलाह और शजरा हझरत से लेकर मेरे सर पर रख्खा, ईतने में मेरी आंख खुल गई तब सुब्ह को ये ख्वाब का हाल हझरत शाह जमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहसे बयान किया. तब आपने फरमाया के तेरा यकीन पीर पर बहोत हैं और हझरत खवाजा महमूद रहमतुल्लाह अलयह ब मिस्ले गौस रहमतुल्लाह अलयह मशहुर हय अने खिरका मोहब्बत से ईनायत किया उस वक्त अेहमदशाह जो ईस्लामखान के मामुं पीर से खबर लाये तो मैं हझरत शाह जमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलयह के पास गया के आप मुजे बवास्ता मेहबूबे ईलाही रहमतुल्लाह अलयह के तबर्रुक मुजे दो तो में उनको पहोंचा दुं. तब हझरत सुनकर उठे, वो अेक कलम और अेक संदुक लाये और मुजे अता की. तबर्रुक लेकर में रुख्सत हुआ और अपने पीर के पास गया. आपके पांव चुमे वोह बारवीं शब थी. में मलक के सहन के अंदर जाकर खळा हुवा वहां मख्लुक की भीड थी. मैं पीर थे वहां जाकर खळा रहा. मुजसे पीरने तबर्रुक बडे ईझझतसे लिया. गुफतगु करने लगे के वहां गौसुल आझम के पास मेरी रुह हाजिर थी. ये नेकोंका काम हय और ये दौरे अव्वल से आखिरी झमाने तक चलता रहेगा. ये बात हझरत अब्दुलकादर जीलानी रहमतुल्लाह अलयहने मुजे ख्वाब में कही है और फरमाया हय के मलक के मकान में अच्छी गिझा गुर्दा वगेराह पकाकर सुब्हा चुफरा बिछाकर तमाम हाजिरीने मजलिस खुशीसे खाते उस वक्त खुद हझरत महेबूबे ईलाही रहमतुल्लाह अलयहने कहा, खाना पकाओ और यहां अगियारोंका खतरा हय और उनका मकर हय, ये खाने दें या न दें मगर तुम उनसे खबरदार रेहना. अल गरझ हझरत के केहने से वो खाना वहां दस्तर ख्वान पर रखखा तो आपने नमक चखकर हाथ में रोटी पकळी और उसमें से दो टुकळे खाये. हझरत अब्दुलरझ्झाक रहमतुल्लाह अलयह फरमाते हंय के में और हझरत शाह अबु मोहम्मद रहमतुल्लाह अलयह को बुलाये और आपकी जगाह पर बीठाये और युं फरमाया के तुम ईन लोगों के साथ खाना खाना. ये फरमा कर आप वहां से उठे. ये देखकर हझरत शाह अब्दुलरझ्झाक रहमतुल्लाह अलयहने अर्झ की के हझरत! कम खाने का क्या सबब है? आपने फरमाया, मेरे सीनेमें दर्द है और में झरा लेटुं, ये अशरफखान तुम्हारे साथ खाये, फरमाकर आप तख्त पर लेटे और खाने से जब लोग फुरसद पाये, आपने कहा, मेरे सीने में बेहद दर्द हय, उसे झरा तुम सेक दो, येह सुनकर आपके फरझंद और दामाद निमकसे सेकाई की मगर कुछ दर्द कम न हुवा तो उस

वक्त ईमादुल मुल्क बोले के अगर हुक्म हो तो हकीम को बुलावें और नब्झ हझरत की दिखाऔं. तो आपने फरमाया के तुमको दाना समझा था मगर तुम दिवाने नझर आये. फरमाया के ये वक्त दवा का नहीं, वक्त आखरी हय. ये सुनकर तमाम मेहफिलवाले दिलगीर हुवे. आपने फरमाया के अब कितनी रात गुझरी हय? तो अर्झ की पांचवीं घडी गुझर रही हय. हझरत तख्त से उतरे और आपके लळके को बुलवाया, दुआ पळहकर दम की, काबे की तरफ बिठाया और अमामा उसके सर पर रखकर आपने फरमाया के आज से तुम मेरे जानशीन हो और मुबारक खादिमे कौमोमिल्लत हो. तुम भतीजो-भाईयों से मोहब्बत रखना, अपने सीने को साफ रखना, तदबीर और सिलह रहेमी से काम करना ये मेरी वसीयत हय, मेरा जी तुम से जियादा खुश हय, परवरदिगारे आलम तुम्हारी तमाम मुरादें बर लाये, आप हाझरीन की तरफ तवज्जो करके बोले के गाओ तुम राग मारुं. फिर खादिमोंसे कहा के वुझू का पानी लावो. आपने वुझू फरमाया और किब्लारु बेठकर यासीन शरीफ ब दिलो जान बुलंद आवाझ से पळही. दो रकअत नमाझ खयर की पळही और ये बयान कल्मा आमेझ पळहे. बयअत फारसी दरस्ता ईमादुल मुल्क कुशादा बाद बदौलत हे शओ ईदरगा ब हक्के अश्हदो अन लाईलाहा ईल्लल्लाह कहा जिगरी जामे बर नकल अब्दे, वो गाओ मुतरब्बो बासोझ कल्बे.

कलामे गुफ्त मेहबूबुल्लाह रह्मतुल्लाह अलयह दर वक्ते विसाल

आई मझे कहीं मुजह को तल दोहुं न मास

हुं जुहरुं तुज कार ने रोऐ रोऐ लेउं न सांस

तदके बिगळे तुझे तई साथी तई तलाओ न पहोंचे

नेहा तेरी मैं पळकर रहुं युं न कुंचे

हुं तळयुं तुझ कारने तुझे दयगा न आवे

अपनी प्रीत अपाये कर क्या अब छल पावे

बाचात न पाली अपने जीव क्युं पतयगारे

तेरे चरनों की रळे महमूद वार ने जावे

कलामे विसाल महेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह गुफ्त अस्त

अेळा पाया पीयुं का सीयो सावरे जानान

प्रीत चुतन न लाईओ पीछे पछतानान

पीरे केरे पांच दिन सब कैसे भावे

उठ रे तेरा क्या चले जब लैने आवे

पीर के परिवार में रग रजाते होते

ओछत ओळान पीयुं का सेजवाले सोते

सब सहेलियां मिलकर मेरा चुला से ओ

कुछ सेवा कुछ सेया मेरे अंग लगाओ

मियां महमूद की पालखी पानुं फुलु छाओ

हम चले घर अपने तुम भवरोंवे भावे

कलामे विसाल महेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह दर वक्ते विसाल

भवरी तेरेने सुं करीअ बाअे मारु पडछे काचु

भरे जोबन मन थाउतो तारुं तेरे साचुं

नहानेछुं नादान छुं मारे मरछी गीले

अै मतरे हुं मिले दुं तो तू मने तीस्जी दिले

काचु करस ढालेने ते कीम पर थासे

अणो महमूदने आवयुं जनवर वजीयुं लेजासे

अबर न केरुं सावतक नैन भर कजरा सारुं

मान सखे तो मान जी माने थारुं

कलामे आखिर विसाल महेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह गुफ्त

जीवळा तुं भवर न आवे फेर वले

जब आप चाले खम डोले क्या मेली कारमे

हंसराज हसे हसे आप सीधारे भवर हाथ ओ फिर वले

जब आओे जनोरा गळजु बहेला कोनसो जुह जन जोह जीया

सद छुटे ने तरो छुटे काया नगर गळा बहेलीयां

जब सात सीगत मिल भगत कीना हाथी कीन गिन बांधीया
जन वशरे रण जीत चालीया पाळताले नाचीया
जब पाल फुटे जीयु छुटे तीर कपारुं बे चाल
हेय हेय कारन लोग जो मिलीया कहोने जीवरा कहां गया
महमूद रोअे रोअे जल जो भरयां नीर वहीयो परतालरे
खालिक लेखुं पूछसे तो होसे कोन हवाल रे

ख्वाजा महमूद महेबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा के विसाल के वकत - गुस्ल करवाते वकत की करामत

हझरत ने दो तीन गरगरेह करके कहा ''या अल्लाह'' अपनी जां को जांबहक़ कर दी और उकबा की तरफ राही हुअे. उस वक्त ईमादुल मुल्क और अशरफखान तजहीजो तकफीन का सामान तैयार करके आपको तख्त के उपर सुलाये, जामा जिस्म अतहर से उतारा और जब ईझारबंध (नाळा) खोलने लगे तो हझरतने आपके हाथ से पकळ लिया. उस वक्त हझरत शाह अबूमोहंमद रहमतुल्लाह अलयहने अर्झ की के बाबा! यहां कोई नामोहरम नहीं. ये सुनकर हझरतने आपके दस्त मुबारक को उठाया तो हातिफ से निदा आई के 'अला ईन्ना औलिया अल्लाहे ला युमुतुना ला किन्ना बैयनत अलुना मिन दारिन अला झारे' याने औलिया अल्लाह मरते नहीं लेकिन अेक मकान से दूसरे मकान का सफर करते हैं.

हझरत को गुस्ल देकर आपके लाश अे मुबारक को संदुक में रखकर चांपानेर से तमाम हाजिराने मजलिस संदुक को सबके सब दोश ब दोश लेकर चले और बीरपुर में अेक नीम के दरख्त के नीचे जनाझा रखखा जहां आपके वालिद साहब हझरत शाह हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहका मझार शरीफ है वहां मझार के करीब रखखा. उस वक्त वहां अेक शख्स सोया हुवा था. खुद हझरतने फरमाया के सोनेवाले उठ जा क्युं के ये जगह कब्रे महमूद की है. जब वो उठा और जनाझा देखकर हेरान रहे गया और उठते ही विलायत नसीब हो गई. ये आपकी करामत उस वक्त झाहिर की.

हझरत शाह शैखुल ईस्लाम लाडमहंमद रहमतुल्लह अलयह आपके मकान पर हाजिर थे और आपको खबर मिलते ही हाजिर हुवे और आपने ये जिगरी कही.

उकदा दर परदा बिला दिल गुफ्त हझरत शाह लाडमहंमद रहमतुल्लह अलयह उर्फ शयखुल ईस्लाम रहमतुल्लह अलयह

वा हलाहल मीला हो मुजको, तुम्हूं तुंज लगे सांई
हाय रे तेरी नस सुबहाई, नींद गवा अे मन ता
दहन आअे भोले ईस बरहन, सताअे करुं दास की चिता
मन मेरे तो बसीया रे, प्यारे जहु पेके
हीळे बीच राखे पीयु, हम सोना पर खेले जीये
सेज सोने मुझ तन ओता, या बराह न छोर पास
किस परीन हुं दिल बहेलावुं, थळे बरस छे मास
तुझी मांगु तुझी मनावुं, समरुं तेरा नाउं
लाळ मिली महमूद पीयासु, मुख देखे बल जाउं

ये जिगरी सुनकर हझरतने दस्त मुबारक लम्बा करके मुसाफा किया. उस वक्त हझरत जमालमहंमद रहमतुल्लह अलयह आबदीदा हुवे और आपने भी जिगरी कही.

उकदह - शाह सैयद जमाल मुहंमद रहमतुल्लाह अलयहे का वालिद की वफात पर बिला दिल गुफतगु

अब मुझ आअे बताले मेरा बालमीया....
तुज बिन धन न सहावे...
साथी तई क्या किया रे....
वाहेला तें क्या किया रे...
बहोत करुं क्या जान पीयु नजीओ हाथ नमीरा....
मुझ दुखया के पूछे कअे करुं ना फेरा...
नयनुं नींद न आवे सांधर मन माहा....
किस दिन मिले तुं मझे गुल देवा बाहा.....
शाह अलदाह तन पीयु सने महमूदमीता....
कहे जमाल फिर मुझ क्युं रहीया नचीता....

जीगरी गुफत हजरत चांद मोहंमद बीन हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयह

जब जिगरी पूरी हुई तो हझरत जमाल महंमद रहमतुल्लाह अलयह से सीना बसीना मिले. उस वक्त हझरत महंमद चांद रहमतुल्लाह अलयह आओ और आपने भी जिगरी कहे सुनाई.

जिगरी गुफ्त हझरत महंमद चांद रहमतुल्लाह अलयह

बेरन मिलो ने बां नह पसार, अेरे मुज धो जग माही और हार

तुम बिन मुझ को सब जग सुना, किस दहरा कहुं राव

मीठे बचनुं बोलुं साथी, क्युं नही केहते आव

दो जग बहेतर तुम नहीं बेरन, मान लहा भो भानत

अगन बीरोगे लागे मुझको बंद, हो जाते दांत हो बेरन,

शाह चालेदा बाबन अपना, उन हुं रचाया राज

अेसे साद करी तुम मेरे, बंद हो चगी काज

शाह चालेदा तन बेरन, महमूद मेरा मान वधाओ

वंश अवसर तुझ कर तेरे, चांद के सपने आओ

ख्वाजा महमूद महेबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा का विसाल के बाद भी बनीये को कर्ज लौटाना

जब ये गमनाक जिगरी पुरी हुई तो आप के भाईसाहब से हझरत मिले और आहिस्ता से भाई के साथ बात की और उस वक्त आपके लब हिले. उस वक्त बाझ लोगोंने कहा के आपसे क्या फरमाया के आपके लब हिले? आपने कहा जो भेद हक और हझरत के दरम्यान हे, ये केहना मुझे मना फरमाया है, अगर ये कहुं तो शरीअत में नुकसान हे, ईस लिये में केह नहीं सकता. महमूदपुरा और बीरपुर के सब मुसलमान और आपके ख्वैशो अकरबा हाजिर हुअे और शाह के गम में आंसु बहाने लगे और अेक बनीया जिसका नाम रामा था, वो भी आया और वो भी हझरत के गममें आंसु बहाने लगा. आपने रामा नामी बनीये को देखकर फरमाया के ये बनीये का मैं करझदार हुं, उसे अठारा (रुपया) ला दो करझ के बंधसे मुझको छुळा दो.

ये सुनकर हझरत शाह लाडमहंमद रहमतुल्लह अलयहने कहा मैं ईस कर्झेको अदा करता हुं. उस वक्त आप उकबा की तरफ चले और मझारे अकदस में बेहोश हुवे.

जब आपका उर्स शरीफ आता है उस वक्त कव्वाल तंबुरा लेकर कलाम गाते हैं उस वक्त मारु राग गाते हैं तो उसी वक्त कब्रे अनवर पर पसीना आता है तो झाअेरीन रुमाल अपने तर करते हैं और तबर्रूक लेकर रवाना होते हैं.

ख्वाजा महमूद महेबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे के रोझा मुबारक बनाने का बयान

मलिक ने तीन लाख रुपिये निकालकर भाई अब्दारुल मुल्क और लळ्का ईखत्यार मुल्क से कहा, तुम जाओ और वहां से पथ्थर लाकर हझरत का रोझअे मुबारक बनाओ, भाई और लळ्का रुपिये लेकर खंभात जाकर कश्ती में बेठे और वहां से हर रंगके पथ्थर खरीदकर जहाजों में लाने लगे मगर पथ्थर दरियामें डूब गये. हझरत की दुआ से ईन्सान बच गअे. भाई और पिसर दोबारा डेळ लाख रुपिये लेकर गअे और पथ्थर खरीदकर आने लगे तो वो पथ्थर भी दरिया में डूब गअे. तीसरी बार मलिकने पचास हझार रुपिये लेकर सीपयों के साथ में भेजकर पथ्थर मंगवाअे मगर वो भी दरिया में डूब गअे. मलिक बहोत ही रंजीदा हुवा और उसके अकीदे में कुछ फरक नहीं आया और बोला के ये मेरा नुकसान हुवा है वो मैंने पीर पर कुरबान कर दिया. जब रात को मलिक सोया तो हझरतने ख्वाबमें फरमाया के मलिक! तेरे सर पे ये बोज मत उठा के मुजे तो आसमान का साया बस हे और ये पथ्थर के गुंबद की मुजको हवस नहीं. मलिक ये सुनकर बहोत परेशान हुवा और झारझार रोने लगा और केहने लगा के हझरत को ये मेरी खिदमत और हदीया मंझूर नहीं. फिर मलिक अपने भाई और लळ्के को साथ लेकर आपके मजारे अकदस पर हाजिर होकर झारझार रोने लगे और बहोत ही आझुर्दा हुवे तो हझरत की कुछ महेरबानी हुई और बशारत दी के अगर हवस हे तो सबर कर, मत गभरा और जो कलेसरी देवी हे उसको मैं हुक्म देता हुं ताके वो पथ्थर उठा लाकर यहां मेदान में लाकर दरगाह के लिये ढेर करे, तु खातिर जमा रख. रौझे और गुंबद की फिक्र न

कर. अल गरझ रात में कलेसरी देवी आनकी आनमें पथ्थर लाकर मेदानमें रख गई. जब फजर को मलिक उठा तो क्या देखता हे के पथ्थरोंका ढेर लगा हुवा हे. देखकर वो बहोत खुश हुवा और शुक्रे हक बजा लाया और मलिकने संगतरासों को बुलाया. वो संग तरास अेक सो बहत्तर थे. उनका सरदार रामा नामी था. वो सब पथ्थरों को काटकर सफाईदार बनाने के काम में लग गअे.

मलीक इमादुल मुल्क व दिगर का विसाल

ईमादुल मुल्क के भाई अयनुल मुल्कका विसाल हो गया उसी रोझ मोहर्रम का पहेला चांद था और लळका अखत्यारुल मुल्क भी मोहर्रम की नव तारीख को वासिले बहक हुआ और ईमादुल मुल्क के हकीकी भाई अबदारुल मुल्क भी मुहर्रम की पंदरवीं तारीख को वासिले जन्नत हुअे हैं. ये तीनों का मझार मस्जिद की दख्खन की जानिब हे अलगरझ चंद साल के बाद हझरतका रोझा तैयार हुवा. उस वक्त हझरतने मलिक से फरमाया, अब बस कर और जियादती मत कर, तो मलिक ने अर्झ की, अगर हुक्म हो तो कुशादगी के लिअे अेसी दुसरी ईमारत बनाउं. ये अर्झ करते ही रोझे में दरिया पडा. फिर तो ईसकी फिक्र में कुछ घडी गुझरी और सुब्हो शाम आजीझी की. जब दुसरे तबके की खुशी हझरत की तरफ से हुई. ईसी रौझे के तैयार करने में बारा बरस गुझरे और माहे रबीउल आखिर की अग्यारवीं तारीख को वो भी वासिले जन्नत हुवे. और उनको रोझे के सामने मगरिब की तरफ मदफन किये. अगर साल की झरुरत हो तो सन हि. 953

ये अहेवाल को मुख्तसर करके हझरत के तीन साहबजादों का सुनाता हुं के आप बचपन में ईल्मे दीन सीखते थे उस वक्त से वो विलायत से नवाझे हुअे थे. उनमें बळे हझरत शाह लाडमहंमद शैखुल ईस्लाम तोहफअे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम थे. वो कुतुबल वराअे गौसुल अनाम थे. जब आप पैदा हुअे उस वक्त आपके वालिद साहबने जिगरी कही, उस वक्त सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम तशरीफ फरमा थे. बाद मुबारक बाद आप तशरीफ ले गअे.

हजरत ख्वाजा महमूद महेबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे के फरजंदो के हालात व वाकियात

अरे बावले तू बरही नेकी धार....

हूं छलयुं रंग अपने बनी सब दुःख बसार...

अतल केरी अंगीया सोहे देसुंलाल मोती....

आज प्रितम घर आवेंगे ही बीर भूटी...

जग काजल कर कंगन जो बाहर तल बोल हस्या....

कसुंब चळा पालु या देखत मोहे रसिया....

प्रीत पियारी परम रस भरया नबी मुहम्मद पाया....

सुख सुहागन दिन मुझ दिता लाड मुहम्मद घर आया.....

कलामे गुफ्त महेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह

आज करया कीने सांईया, देःखूं हर अेक से अच्छी बधाया

पहेनुं अबरन शेहमन भावे, पांच भोजन चांउ सहावे

ईन चाउं पिया घर आवे, शहे आओ घर मान बधाया

भो आवन तलक बतपाईयां, दो जग मान अबु सराया

अखी महमूद गयानी सुनेहलो, पियु कहे मुबारक अब धो

दोहरा गुफ्त दादापीर शाह शाहे आलममियां मंझन रहमतुल्लाह अलयह मानदोहे जरवसता

अबु महंमद अर्श से तोहफा आया आओ...

मीप मुबारक मुझ दिया जग सांभलतीन शाद....

खान कहीया में प्यारसु लेहीया अवमा मीनत....

वेगी अशरफखांनके सांई की ते चुनत....

उस वक्त सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे मओ वसल्लम व खुलफाकी रुहो के साथ मुबारक बाद के लिये तशरीफ फरमा थे. जब जिगरी तमाम हुई तो सरकार मुबारक बाद फरमाकर तशरीफ ले गअे और हझरत के छोटे साहबझादे शाह जमाल महंमद रहमतुल्लाह अलयह पैदा हुवे, उस वक्त हझरतने जिगरी कही.

उक्दह दर परदा शबाबे बवक्त तवल्लुद शाह जमाल महंमद रहमतुल्लाह अलयह

आज सांई हम पर तोठा, मेरे दो दिन मेहा सो दोडा
जब जाया जमालु माओे, तब अमरत घूंटी पिलाओे
जग मिलकर करो बधाई, सब सपना गवत मिलाउं
मन सारुं का समझाउं, सात आलम जमालु बहेनाउ
मन संगुकी रे भाया, रंग खालिक ने अपने मिलाया
बने चंगा बेळा पाया, आज जाचक सारी बलाउ
रंग रैय की साहेली गवाउं, भर मोतीयों थाल बधाउ
येह सो हदिया जा चक गाउं, महमूदजीको सुख सुनाउ
महमूद युं गोद भराउ, कहो रे भाईओ आमीन.

दोहरा

ईस कल कोरे आओ, क करीरे ना दरद यान दाव
कल जग केरी पाउं न लाओ, पीर अपने के पसाउं
पाक मुशाहेदा सांई केरा, मन मेरे में आया
रुनरुन होबेआ सुख, सपुरन बरहा मारन साया
नीरमल हेला अपना कीजो, मेल सुबहाया धोया
जिया मान महमूद के हो हीळा, वेसा सब कस धोयो.

हजरत ख्वाजा महमूद दरियाई दुल्हा के फरजंदो के वाकियात शैखुल इस्लाम हजरत शाह सय्यिद लाड मोहंमद तोहफाओे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम

रावीका बयान हे के हझरत शाह लाडमहंमद रहमतुल्लाह अलयह बचपन में अपनी गली में कुछ बच्चों के साथ खेल रहे थे के वहां अेक दुरवेश जुझाम का मरीझ था वो आपके नझदीक आया तो आप उस दुरवेश पर थुके. ईस हरकत से वो रोने लगा और आहो झारी करता हुवा हझरत मियां महमूद रहमतुल्लाह अलयह की खिदमत में हाजिर हुवा. हझरत के आगे फरियाद की के आपके साहबझादओे बा

कमाल गौसुल अबरार का दरज्जा रखते हैं. मगर मेरी ईस बीमारी को देखकर मुझ पर थुके. ये औलिया अल्लाहकी शान के खिलाफ है. तब हझरतने आपको बुलाकर और कुछ सख्त झबान से दो सुखन कहे तो हझरत शाह लाडमहंमद रहमतुल्लाह अलयहने अर्झ की, आप क्युं खफा होते हो. अगर आपका हुक्म हो तो में ईस कोळी के जिस्म पर अपना हाथ फिराउं, फकीर गदा क्युं मुज पर शक लाता है, अगर आप फरमाओं तो में इस्का जिस्म अपनी झबानसे चाटुं और कभी दोबारा ईसका नाम न लुं. ये सुनकर दुरवेश बोला के अय शेहझादा साहब! आप करम फरमाकर मेरे जिस्म पर हाथ फेर दो. ये सुनकर शाहझादा साहबने उसके जिस्म पर हाथ फेरा, तब आपके मुबारक हाथ के लगने से उस कोळीने शिफा पाई और उसका जिस्म खुशनुमा बन गया मगर हझरत शाहझादा साहब आपके वालिद साहब के अलफाझ से नाराज हुओे. उस वक्त हझरत महमूदमहेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह के पुश्त मुबारक से दर्द पेदा हुवा जिस सबब आपका चेहरा मुबारक झर्द (पीला) जाता रहा. उस रोझ रात को ख्वाबमें हझरत सरकारे दोआलम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम तशरीफ लाओ और ईर्शाद फरमाया के, अय महमूदमहेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह! मेरा तोहफा जो शाह लाडमोहंमद शैखुल ईस्लाम हैं. उनसे पानी दम करवा के पी लो ताके आपका दर्द और रंज दूर हो जाये. ये फरमाकर आप तशरीफ ले गओ. हझरतका तमाम जिस्म मोअत्तर हो गया. आपने शाहझादा साहबको बुलाकर पानी दम करवा के नोश फरमाया (पिया) आपने शिफा पाई. ये रिवायत हझरत शाह अब्दुलकादिर जो हझरत शाह मियां बाबु के जिगर पारा आपके लळकेने बयान की है.

हझरत शैखुल ईस्लाम उर्फ हझरत लाडमहंमद रहमतुल्लाह अलयह.

हझरत शाह लाडमहंमद रहमतुल्लाह अलयह जब मोडासा में तशरीफ फरमा थे, उस कस्बे में अेक राहिब (नजुम का देखनेवाला) था. वोह नजुम के इल्म का पुरा माहिर था, उसने कहा के कल को अेक पास (घळी) के बाद सूरज गेहन मगरिब की तरफ गायब हुवा हे तो लोगोंने कहा के ये नेक है या बद! तो वो बोला के आईन्दा

साल बद होगा. अेसा केहत (दुकाल) जहान में पडेगा के आसमान पर अबर (बादल) बिलकुल न आयेगा और अेक कतरा भी पानीका न बरसे और लोग हेरान परेशान हों. ये सुनकर सब लोग जमा होकर हझरत शाह लाडमहंमद रहमतुल्लाह अलयह के पास हाजिर होकर अर्झ की और राहिब का तमाम बयान आपको सुनाया. ये सुनकर आपने फरमाया के कल को हरगिझ सूरज गेहन नहीं होगा, तुम मत गभराओ और खुदा की झात पर भरोसा रख्खो ताके तुम्हारे सर से केहत दुर होगा और तुम्हारी सब बलाअें दूर होगीं. उस वक्त दो तीन रईस ईन्सान मौजुद थे उनसे कहा, तुम अपनी आंखें बंधकरो और जब आंखे बंधकरके खोलीं तो लोहे मेहफुझ पर देखा के आईन्दा साल बारिश नहीं बरसेगा. ये देखकर अफसोस करने लगे के अब तो सब की खराबी होगी. ये लोगोंकी झबानी सुनकर हझरतने कहा के राहिब का कहेना सच हैं उसने अपने नजुम को देखकर कहा था और तुमने आंख से देखा हैं के परवरदिगार खल्लाक पर कहहार है, मगर तुम गम मत करो ईन्शाअल्लाह खालेकुल खल्क रहमवाला है, केहत तो क्या चीझ है मगर अल्लाह के लुत्फ से खुशहाली होगी. ये केहकर आपने दुआ फरमाई तो लोहे महेफुझ पर केहत के बदले में उस जगा लिख्खा देखा पानी ही पानी और वो साल और सालों से बहेतर होगा और फरमाया, तुम्हारे दिल के मुवाफिक खालिकने ये साल करम किया हझरत शाह लाडमहंमद शैखुल ईस्लाम के तुफेल केहत साली दूर हुई. ये रिवायत हझरत शाह अब्दुललतीफने बयान की है जो आपके पोता हैं.

हजरत शाह लाडमुहंमद रहमतुल्लाह अलयहे का शहरे मोडासा में केहत दुर करना...

हझरत मुहंमद चांद रहमतुल्लाह अलयह जो हझरत खवाजा सैयद शाह महमूद महेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयहके भाई हैं और हझरत शाह लाडमुहंमद साहब के चाचा होते हैं वो दोनों रिश्ते में चचा भतीजा और साळुं होते हैं सैयद हझरत शाह आहसन रहमतुल्लाह अलयह जो हझरत शाह सैयद समीउद्दीन उर्फ शाह साधन रहमतुल्लाह अलयह के लळके होते हैं उनकी बळी लळकी हझरत शाह चांद महंमद

रहमतुल्लह अलयह के साथ में और दूसरी छोटी लळ्की (साहबझादी) हझरत शाह लाडमुहंमद रहमतुल्लह अलैह के निकाह में थी. ये बीबीका नाम गुलफाम है. मोडासा के मुसलमानोंने आपको अपने वहां बुलाअे. वहां आपने मुकाम किया और आपने आपके चचाको महेमानी के लिये बुलाअे. बाझे वक्त खानेके मुसलमान केहने लगे के अगर ईस वक्त कच्वी केरी (आम) होती तो क्या खूब होता. उस वक्त हझरत ने चचा से कहा के महेमान कच्वी केरीयां मांगते हैं तो उनको देना चाहिये जिस से वो खुश हो जायें. उस वक्त चचाने फरमाया के अय नूरेचश्म! ये मोसम शरदी का है और माह कारतक है ईस वक्त केरी (आम) की मोसम नहीं है उस वक्त हझरत शाह लाडमहंमद रहमतुल्लह अलयह खेमे के पास खळे थे और आपने खेमे की चोब हिलाई तो बारीस की बूंन्दों के मान्निंद केरियां सदहा हझार गिरी तो उनको काटकर कीमा बनाया वो सब महेमानोंने खाया. जिस वक्त खेमे की चोब हिलाई उसी वक्त आपने दोहरा कहा.

दोहरा गुफ्त हझरत शाह लाडमुहंमद रहमतुल्लह अलयह
केरी मांगे लोकळावयु साथी मना
काज सवारु हरखसुं करु लाडकी चीनत...
मनाकिब लाड साहब के दिलाराम....
बहोत हैं कर सकुं क्या उनको अरकाम

हजरत शाह अबू मोहंमद रहमतुल्लाह अलयहे का अबु तुराब को मुरीद बनाना...

हझरत शाह अबुमहंमद रहमतुल्लह अलयह बवक्ते विसाल हझरत मियां महमूदमहेबूबुल्लह रहमतुल्लह अलयहने आपके मजले साहबझादेका लकब कुत्बेझमाँ रहमतुल्लह अलयह और आपका नामे पाक शाह अबूमहंमद रहमतुल्लह अलयह रखा ,उनको आपके वालिदे बुझुर्गवारने खिर्कए खिलाफत अता फरमाया क्युं के आप पेशवाई के लायक थे. खल्के खुदाकी रहेनुमाई किया करते थे. आपके पास अेक जवान अबुतालिब नेक सालेहने कहा के यहां साहबे जाह कौन हैं ? तो कहा गया के हझरत शाह अबुमहंमद रहमतुल्लह अलयह हैं. ये सुनकर आपकी

खिदमत में हाजिर हुवा और अपने ख्वाब का हाल केह सुनाया के मैंने आज अैसा ख्वाब देखा है कि मुझे जमाले कुतबुल अकताब नझर आये के गोया आपके बाबाकी सूरत और मुझे यूं नझर आया के मुझे अपना मुरीद बनाया है. जब उस नव जवान अबुतालिब की गुफ्तगु सुनी तो आप रौझाये मुनव्वर के अंदर तशरीफ ले गअे और दरवाझा बंद कर दिया और कब्रे अनवर के करीब जाकर अर्झ की के आप मुझे अपना दीदार कराअें. बाबा हझरत आपके फरझंद की बात सुनकर कब्र शरीफ से उठे और सीने तक बाहर आये. उस वक्त वो नवजवान अबूतालिब साथ में थे और अबूतालिब को अपने दस्ते मुबारक पर बैअत कराके आप गुलशने तुरबत में तशरीफ ले गए. अबूतालिबने अपने दिल की मुराद पाई और उसकी मुश्किल कुशाई हुई.

कुत्बे झमाँ हजरत शाह अबू मोहंमद रहमतुल्लाह अलयहे का अेक शराबी को मुरीद बनाना...

अेक रोझ अेक शराब पीनेवालेने हझरत शाह अबू मोहंमद रहमतुल्लाह अलयह की खिदमत में हाजिर होकर अर्झ की, आप मुझे अपना मुरीद बनाओ और खुदाकी राह दिखाओ. तो आपने उसको जवाब दिया के तू शराबी है. ईस लिये मैं तुझे मुरीद नहीं बनाऊंगा क्युं के मेरे सरकार नबीअे करीम सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम का कौल है कि शराब नापाक है और अैसी हालतमें तू आया है. ईस लिये तेरा हाथ पकळना अच्छा नहीं. तो वो बोला के ईन्सान का मरतबा बळा है. ईसमें शराबी या ना शराबी सब यकसां ईन्सान हैं और उनके मरतबेमें फरक नहीं. आपने फरमाया के शराबी के लिये जहन्नम है और उसके लिये दर्दनाक अझाब है. शराबी बोला के दोझख और जन्नत कहां है. और किसने देखी है? हझरतने फिर उस मुन्कर से कहा के तू अपनी दोनों आंखें बंधकर दे. जब उसने आंखें बंद कीं तो उसने दाअें तरफ जन्नत के बीच सूफी और स्वालेहीन को देखा. वो आराम से बेहतरीन तख्त पर आराम फरमा रहे हैं. और फरिश्ते कवसर के पानी के प्याले भरकर खळे हैं पिलाने के लिये. उनके लिये मझेदार रंगबेरंग के खानों के दस्तरखान हाजीर हैं. जब बाअें तरफ देखा तो दोझख भळक रही है, उसके अंदर शराबियों की खराबी और दोझखका अझाब हो रहा है.

ये देखकर वो डरा और सिदके दिल से तौबा की. आपने भी उसको शराब से तौबा कराकर उसे मुरीद बना लिया और उसे स्वालेहीन का मर्तबा अता फरमा दिया और वोह नवजवान वासिले बहक हो गया.

कुत्बे झर्मा हजरत शाह अबू मोहंमद रहमतुल्लाह अलयहे का विसाल व आपकी औलाद

हझरत शाह अबू मुहंमद रहमतुल्लाह अलयह खुदाके प्यारे थे और यादे ईलाहीसे आपका अेक सांस भी खाली नहीं था. आपकी बहोतसी करामतें मशहूर हैं. आप हझरत के मन्झले साहबझादे हैं. आपका विसाल सन हिजरी ९५६ के रमझानुल मुबारक की तारीख २७ को हुवा है. ये वाकेआ हझरत शाह अब्दुललतीफ रहमतुल्लाह अलयह बयान करते हैं. हझरत शाह अबूमुहंमद रहमतुल्लाह अलयह के तीन साहबझादे थे. अव्वल हझरत मुहंमद शाह शरीफ रहमतुल्लाह अलयह. दोयम हझरत मन्सूर रहमतुल्लाह अलयह. सोयम हझरत अब्दुललतीफ रहमतुल्लाह अलयह थे.

जो हझरत मियां महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह के पोते थे. अेक रोझ का वाकेआ हय के हझरत महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह अपने आंगन में जल्वा अफरोझ थे. उस वक्त हझरत शाह मन्सूर रहमतुल्लाह अलयह 11 (ग्यारह) माह के थे. वहां आंगन में मिट्टी पडी हुई थी उससे आप खेल रहे थे. उस वक्त हझरतने फरमाया, ये आसी हैं आसी और कहा उसको खलासी खलासी. उस वक्त हझरत के साथ हझरत शाह लाडमुहंमद रहमतुल्लाह अलयह के लळके हझरत शाह प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह हाजिर थे और आपने अर्झ किया. जद्दी ! ये तो हझरत अबूमुहंमद रहमतुल्लाह अलयह के दिलबंद साहबझादे हैं और आप उनको क्युं अैसा केहते हो? ये सुनकर आपने दोबारा फरमाया, न ये आसी हैं बल्के ये होगा आशकारा. ये सुनकर वो बहोत खुश हुवे. जब वो उम्र रसीदा हुअे, आपने महमूद ख्वानी मलफुझ लिखी. हझरत मुहंमदशरीफ रहमतुल्लाह अलैह दादा के हुक्म से आप सुलतान बंदर तशरीफ ले गये. शहेर की अेक मस्जिदमें आप शाह महंमद शरीफ रहमतुल्लाह अलयह ठहेरे. वहां लोग आकर केहने लगे के आप कौन हो

और कहां से आओ हो? आपने फरमाया, मैं शहे महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह का पोता हुं मगर किसीने आपका केहना माना नहीं. और आपको गलत समझा. आपस में मशवेरा किया के उन्हें आझमाया जाओ. वहां ओक शेख अहेमद का लळका मादरजाद नाबीना था उसे लाये और आपसे केहने लगे के अगर आप हझरत महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह के पोते हो तो आप दुआ फरमाईये ताके ये नाबीना बीना (देखता) हो जाये. आपने फरमाया बहोत खूब, ये केहकर आपने उस अंधेकी आंखों पर हाथ रखकर दुआ फरमाई के या रब! तूं काझीउल हाजात है तू अपने महेबूब के वसीलेसे नाबीना की आंख रोशन कर दे. ये दुआ का निकलना था के अंधे की आंखों में रोशनी आ गई उनके तुफयल से नाबीना बीना हो गया. वहां जो हाजिर थे वो सब के सब आपसे बयअत हुवे. आपने वहां मुकाम किया. वहां ओक सैयद झादी से आपने शादी की. वहां आपके तीन फरझंद हुवे. वहां आपके फैझानसे तमाम फैझयाब हुओ. आप वहां ही रेहलत फरमा गओ. आपका मझारे अकदस वहीं है. आपका रौझा नूरानी है. उसमें झीनत के लिये बेहतरीन चीझें ईस्तेमाल करके रोझा बनाया गया है. जब सूरज निकलता है और उसकी किरनें रोझे मुबारक पर गिरती है. तो उस वक्त ईन्सान की नझर रोझे पर ठेहर नहीं सकती. उस रोझे के जो खादिम हैं वो बादशाह से तीन लाख मुब्लिग हर साल को पाते हैं. ये रोझा आपका रुम मे हय (तुकिस्तान को रुम कहते थे)

मोहंमद शरीफ बीन अबुमोहंमद सुलतान बंदर जाना

हझरत के साहबझादा हझरत अबू मोहंमद रहमतुल्लाह अलयह के साहबझादा हझरत महमूदवल्द अबूमोहंमद रहमतुल्लाह अलयह दादा की पेशीनगोई के मुताबिक तैयार होकर सुलतान बंदर तशरीफ ले गओ और वहां ओक मस्जिद के बीच उतरे. वो हवा में उडकर तशरीफ ले गओ थे. मस्जिदमें वहां के लोग आपकी खिदमत में हाजिर होकर अर्झ करने लगे के आप किस सरझमीन से यहां तशरीफ लाओ हो? तो आपने फरमाया के मैं बीरपुर का बाशिन्दा हुं और महमूद मियां रहमतुल्लाह अलयह के लळके का लळका हुं. तब उन लोगोंने कहा, अगर आप लडके महमूद दरिया के हैं तो जो कुछ हम कहें वो हमारा मुददुआ पुरा करो. आपने फरमाया, कहो तुम्हारा क्या

मददुआ है ? उसका बर लानेवाला खुदा है. उस वक्त सबने मशवरा किया के शेख अेहमद का लळ्का आंखों से माझुर हे. अगर वो बीना हो जाये तो हमको यकीन आ जाअे ये सुनकर हझरतने लळ्के को बुलाया और आपने अपने दस्ते मुबारकको उसकी आँखों पर फिराया और अर्झ की के अय परवरदिगार! अझ तुफेले शाह महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयह के, ईस लळ्के को बीना कर दे. उस वक्त वो लडके को बीनाई आ गई. ये देखकर वहां सुलतान बंदर के रहेनेवाले आपके मोअतकिद हो गये और आपने वहां मुकाम किया और वहां अेक सैयद की साहबझादीसे निकाह किया, उनसे दो फरझंद तवल्लुद हुवे. और लोग आपसे फैझयाब हुवे. आपका वहां पर ही विसाल हुवा. आपका वहां झीशान रौझा बनाया गया. उस रौझे में तीन कब्रें हैं यगाने अेक तो आपकी और दो आपके दोनों फरझंदों की हैं. आपके रोझे मुबारक बनाने में तीन लाख रुपिये का खर्च हुवा है. वो रोझा खुशनुमा सूरज के मानींद चमकता है.

हजरत सैयदना शाह जमालुल्लाह गौसुल आलम रहमतुल्लाह अलयहे के तीन महल...

हझरत शाह जमाल मुहंमद साहब रहमतुल्लाह अलयह अपने वालिद साहब के तुफैल साहिबे करामत बाकमाल वलीये कामिल थे. आपकी नझर से झमीन के सातों तबक मख्फी नहीं थे. अेक रोज का वाकेआ हय के दुनिया तेराह साल की उम्र बनाकर आपकी खिदमत में हाजिर हुई और आप से कहा के मुझे आप अपने निकाह में लो तो मैं आपको झरो झवाहिर से नवाझ दुंगी. तब आपने फरमाया के अभी तू जा, मैं तुझे कल जवाब दुंगा. ये सुनकर दुनिया वापस हो गई और आपने ये हकीकत आपके वालिद साहबको पेश की तो आपने ईर्शाद फरमाया के दुनिया फना होनेवाली है, उससे उल्फत करना अच्छा नहीं हैं. क्युं के ये मक्कार और बेवफा है. जब तक अेशो ईशरत का सामान मुहैया है तो वोह आये और जब उसमें कमी पाई तो वो भाग जाये मगर तुमसे ईकरार करके जिन्दगीभर तुम्हारी हुक्म बरदारी में रहे तो अगर तुम्हारा जी चाहे तो रख्खो ये मेरा हुक्म हे. अलगरझ दुसरे रोझ दुनिया

झरोझवाहर और पोशाक पेहनकर हाजिर हुई और अर्झ करने लगी के आपने वादा किया था वो पुरा करो. आपने दुनिया से फरमाया के तू मक्कार है. और बेवफा भी है. तुझसे ईन्सान का दिल रंजीदा है और फुकरा ईस लिये तुझसे बेझार हैं. ये सुनकर वो बोली, खुदा के कोल से में हरगिझ आपके सरासे जाऊँगी नहीं और जब तक आप बा-हयात हैंइ. वहां तक मैं खुश होकर रहुंगी. मैं आपसे बेवफाई नहीं करुंगी और आप मेरी मुश्किल कुशाई करें, तो आपने फरमाया के मैं तेरी ख्वाहिश नहीं रखता मगर जब दिल से आती है तो आ. अलगरझ जब वो हझरत के मकान में आई तो आपने बहोतसी दोलत पाई और वो साकिन हुई. शहेरे गुजरात अहमदआबाद सारंगपुरमें आपके तीन महेल थे (1) लखा महेल (2) लाल महेल (3) आईना महेल और अेक महेल जमालपुर के अंदर है जिसको देखने से सब गम दूर हो जाता है और उसमें 120 खादिमा मानिंद हुरों के थीं और सात शेर ईत्रसे पोशाक को तर करते और जुमा को ईखट्टा करके होझ भरते, वो ईत्रको होझ में डालते उसमें सब खादिमा को नहानेको हुक्म देते. वो नहाधोकर अपने मकान में आतीं तब हझरत हुक्म फरमाते के होझ की नाली खोल दो. जब नाली खुल जाती तो वो तमाम ईत्र बहे जाता. उस वक्त गरीब लोग अपने लिबास को तर करते और कुछ साथ ले जाकर उसका गरीब ईन्सान बेपार करते थे.

सुल्तान बहादुरशाह का लडका शाह महमूद हजरत शाह सैयद जमालुद्दीन को मिलने आना...

हझरत शाह जमालमुहंमद साहब रहमतुल्लाह अलयहका दिलेरी व सखावत का हाल सुनकर बहादुरशाह का लडका आकेबत महमूद अपने खादिमों के साथ हझरत की मुलाकात के लीये आया. अपने जासूस को आपकी खिदमतमें भेजकर कहेलाया के आपकी मुलाकात के लीये सुलतान आया है तो उस वक्त आपने खादिम के साथ कहेला भेजा के मैं जुमे के रोझ सुलतान से मुलाकात करुंगा. आप सुलतान की मुलाकात के लीये बाहर नहीं आओ तो सुलतान ना उम्मीद होकर वापस अपने मकान पर गुस्सा करके गया. उस वक्त महमूद के वझीरने महमूद से कहा के मियां बडे गुस्ताख हैं क्युं के वो दोलत से पुर हैं और वो अैसा समजते हैं के गोया

गुजरात उनका घर है ईस लिये बादशाह की तरफ उनकी नझर नहीं. हमने आपको पहेले से ही कहा था मगर आपने हमारा कहेना न माना और आपने आंखों से देख लिया. अलगरझ हझरत जुमा के रोज अपने मुरीदों के साथ मस्जिदमें तशरीफ लाअे तो उस रोझ बादशाह मस्जिद में नहीं आया बल्के अपने महेल में बेठा रहा मगर जुम्मा की नमाझ से फारिग होकर बादशाह की मुलाकात के लिअे उसके महेल में तशरीफ ले गअे और जहां सुलतान बेठा था वहां आप तशरीफ ले जाकर सुलतान से मुसाफा किया मगर सुलतान अपने तख्त से आपके ईस्तिकबाल के लिये उठा नहीं तो हझरतने उसका हाथ पकडकर उठाया और फरमाया के बदझन! तुझको हक तआला माझूर कर देगा और तू खबरदार रहेना क्युं के अेक रोझ तुजे गेबी मार पडेगी. युं ही बददुआ देकर अपनी दौलत सरामें तशरीफ ले आअे और सुलतान के सरमें दर्द उठा मगर वो दर्द अेसा था के वो करीबुल मर्ग हो गया तो खादिम और उसके अझीज मिलकर उसे बुझुर्गोंसे पानी दम कराकर पिलाया मगर दर्दे सर दुर नहीं हुवा. मगर ईस शहेर में अेक शहेनशाह रहेते थे, वो तीस साल से अपना बिस्तर छोडकर बाहर नहीं निकले थे. उनके पास सुलतान के खादिम गअे और अर्झ की, सुलतान दर्दे सर से परेशान है, ईलाज बहोत किये मगर कुछ फरक नहीं होता. उस वक्त आपने मुराकबा करके देखा तो कहा के ये तो हझरत मियां महमूद की मार है, सुलतान के दर्द को मिटाने की किसी में ताकत नहीं मगर हझरत के खानदान का कोई हो और वो दुआ करे तो सुलतान का दर्द जाए अलगरझ सुलतानने पछ्ताकर हझरत शाह जमालुद्दीन को बुलवाया तो आप वहां तशरीफ ले गये और सुलतान के सर पर लकडी का ईशारा किया. बहाने से सुलतान के सर पर रुमाल फिराया उसी वक्त दर्दे सर जाता रहा. सुलतानने शिफा पाई. उस वक्त भी उसके उमराने सुलतानको कहा के शहेनशाह कुछ तो गौर कर, के पय दर पय हझरतने बहाना कर के सर पर लकडी मार सरको झख्मी कर दिया. ये सुनकर सुलतान गुस्से में आ गया और कहेलाया, यहां से चले जाओ, यहां रहेना तुम्हारा अच्छा नहीं. ये खबर सुन के आपके कबीलेवाले बहोत नाराझ हुवे तो आपने अपनी झबान से फरमा दिया के

हम यहां से जायेंगे नहीं क्युं के यहां से जाने के लिये हमारे रबकी तरफ से हुक्म नहीं. मगर सुलतान तुझको ईस जहानसे निकलना पळेगा. आपने सुलतान के हुक्म को रद कर दिया और आपने उसके हकमें बददुआ फरमाई. जब किसी की कझा आनी है तब उसके दिल की आंखें बंद हो जाती हैं. और सुलतानने दोबारा हझरत को खबर भिजवाई मगर वो आप तक जाने न पाई. हझरत की बहन के साहबझादा हझरत मियां अब्दुलवहूद रहमतुल्लह अलयह उस पैगाम से आगाह हुवे तो सुबह के वक्त आपके मामुके पास तशरीफ लाओ उस वक्त और हझरतको हकीकत से आगाह किया तो आपने फरमाया के जो पानी तुम देखते हो वो खून नझर आता हो आप हुजरामें तशरीफ ले गओ और मुसल्ला उठाकर कहा के देखो ये सर सुलतानका पडा है. ये देखकर हझरत अब्दुल वहूद रहमतुल्लह अलयह आपकी मामी साहबा के पास गओ और कहा, ये राझे निहां है और हझरतने सुलतान का सर काटकर मुसल्ले के नीचे रखा है. ये बात सुनकर महेल के सब लोग खामोश हो गओ

गुजरात की हुकुमत अकबर के नाम कर देना

और हझरतने कहा, गुजरातकी सल्तनत फना करके अकबर के हाथ दी, अलगरझ उसी रात को बुरहानुद्दीन नेमक ने तलवार से महमूद का सर काटा और खुद तख्त पर बेठा तो दूसरे रोझ सब शहेर में गोंगा उठा घर घरमें के बुरहानुद्दीन जो पैसे से खरीदा था वो आज तख्त पर बेठा है, शाह को मार करके, फिर तो जासूसोंने जलालुद्दीन अकबर को खबर दी के गुजरात की हुकुमत आपको हझरतने दी है. और आपको ईस बात से आगाह करते हैं. तो तुम जल्दी से अहमदाबाद आओ क्युं के आपने फरमाया है के सुलतान को फना करके गुजरात की बादशाहत देहलीके जलालुद्दीन अकबर को दी है, ये सुनते ही जलालुद्दीन अहमदआबाद आओ.

अकबर जलालुद्दीन का हमला करना

सुलतान मुझफ्फर सुलतान बुरहानुद्दीनसे डर कर भागा और सरखेझ में जाकर दम लिया. उसके पास कुछ सवार और प्यादे भी थे. उस वक्त मुझफ्फर का लश्कर बहोतसा तबाह हुवा. मुझफ्फर के कई उमराव भी मारे गअे तो वहां से मुझफ्फर भाग के अपने मामु के वहां पहोंचा और छुप गया. ये खबर जलालुद्दीन को मिली तो वो भी लश्कर लेकर उसके पीछे पहोंच गया. राजा जलालुद्दीनने कहेला भेजा के मुझफ्फर को मेरे हवाले कर दो वरना आपने मुल्क की आस छोड दे. ये बात सुनकर राजा डर गया और अपने वझीरों को मशवरे के लिये हाजिर किया तब वझीरोंने कहा के सुलतान को पकडा दो. तब राजाने अपने भानजे को पकडकर हाजिर किया तो मुझफ्फरने हीरे को चुस लिया और उसी वक्त अपनी जान दे दी और दूसरी रिवायत ये है के खुद अपने हाथ से अपने पेट में खंजर मारकर जान दे दी, ये जो अल्लाह का हुकम था वोह हुवा उस पर किसी शायर ने दोहरा कहा है,

दोहरा दर शान राजा मोर वे

भळवा भारा कुछ का...कल खोटे मत है....

सभी मोरवे कारने....दी मुख मुझफ्फर दिन...

मुझफ्फर शाह की दो साहबझादियां थीं, उन पर जलालुद्दीन अकबर आशिक हुआ और उनको अपनी बीबी बनाने का ईरादा किया. ये सुनकर दोनों साहबझादियोंने हीरा झहरीला चुसकर अपनी जानें दे दीं सुन लो ये सच है, कोल बुझुर्गो का कभी टलता नहीं, क्युं के हझरत की बददुआ से मुझफ्फरका कोई ईस जहां में नामो निशान न रहा.

बयान आना अकबर का दहेली से और तख्त नशीन होना गुजरात पर

जब सुलतान तख्त पर बैठा तो तमाम जागीरदारों पर सख्त हुआ. वझाईफदारों की जागीरें जप्त कर लीं मगर उनमें से शहाबुद्दीन अेहमद नामी खान था वो सुलतान का प्यारा था, उसने मौका पाकर सुलतान से कहा के वझाईफदार और मशाईख और सादात अकसर हैं मगर उन सब की जागीरें जप्त में आ गई हैं ईस लिये सब

दिलगीर हैं उनके हकमें आपका क्या हुक्म हैं? आप फरमाओं वैसा करुं. तब सुलतानने कहा, जो हकदार हैं उनको बुलवाओ ताके उनको देखकर फरमान दिया जाये. उस वक्त खानने शहेर में अेलान करवा दिया के जो भी वझाईफदार आये वो अपने साथ में फरमान लेकर दरबार में हाजिर हो जाये. तीन रोझ के बाद सारंगपुर में शहाबुद्दीन अहेमदके खातिर हम सबको बुलवाअे है. ये हकीकत हझरत शाह जमालुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह के पास आकर जागीरदारोंने की. आप भी साथ चलो ताके हमारी मुशकिल कुशाई हो जाये. तब हझरत जमालुल्लाहने फरमाया, मुजे अकबर से कोई सरोकार नहीं और तुमको मतलब हो तो तुम जाओ. ये सुनकर तमाम जागीरदारों ने मश्वरा किया के हझरत शाह जमालुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह तो गनी हैं और हरगिझ नहीं आअेंगे. फिर हम सब मिलकर चलें सब के सब जमा होकर शहाबुद्दीन नवाब के पास हाजिर हुवे तो नवाब सुलतान के पास जाकर कहने लगा के सब जागीरदार आये हैं तो सुलतान ने फरमाया सबको मुझसे मिलाओ.

अकबर बादशाह का हजरत सैयद जमालुल्लाह दरियाइ को मीलने आना...

उस वक्त महावतको हुक्म दिया के हाथी को दीवाना करके लाओ. जब दीवाने हाथी को उन जागीरदारों की तरफ छोड दिया तो उससे कहा के अपने पेरों से कुचल डाले. फिर सुलताननने कहा के अैसा कोई वली है के हम उनसे नेक रास्ता हांसल करें? तो वझीरोंने कहा, हां सुलतान हैं हझरत शाह जमालुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयह) और वो बडे साहबे करामत हैं और वो नूरे नझर हझरत शाह खवाजा सैयद महमूद महेबूबुल्लाह उर्फे दरियाई दुल्हा (रहमतुल्लाह अलयह)के फरझंदे दिलबंद हैं और अेक ने कहा, वो मगरुर हैं और दुनिया की दौलत से भरपुर हैं और कहने लगा के उनकी खादिमा अेक सो बीस (120) हैं और हर अेक खादिमा का हुजरा अलग अलग हैई ये सुनकर सुलतान बोला के यहां कोई दाना झीहोश और आकिल है? उस वक्त नवाब शाहबुदीन हाजिर थाइ, वो अपने को दाना समझता था, ईसने सुलतान से कहा के ईस बंदे को अगर हुक्म हो तो ईस पीर का जासूस बनूं. तब सुलतानने कहा, तू फकीरों की तरह अपना भेस बना और लिबास पहेनकर

दुरवेशकी सुरत बना और झोली हाथ में लेकर हझरत के घर जा और वहां गदाई करके तुजे टुकडा खाने का देवे, मगर तू हरगिझ उसे खाना नहीं और पूछे तो कहेना के मै अंजाना हुं क्युं के आपका खाना कराहत, नारवा और शुबाहदार हैं क्युं के आपने अेक सो बीस खादिमा रखी हैं, कैद करके अपने घर में आप पर उनका नानो नफका वाजिब हैं, अगर पहोंचता हो तो बहेतर हे वरना आपके घर का खाना शरीयतमें दुरस्त नहीं अलगरझ वो सब बातें सुलतानने बताई सबके सब याद रखकर हझरत के दरवाझे पर हाजिर हो गया. उस वक्त हझरत मस्जिद में वाअझ फरमा रहे थे और गदा को आपने आपके पास बुलाकर नजदीक बिठाकर खाना मंगवाया और दुरवेश से कहा के खा तो वो बोला के मैं नहीं खाउगा ईस खाने को रवा कर दो तो खाउं तब हझरतने कहा, किस तरह ये खाना ना रवा है? तो वो बोला के आपके कबजे में अेकसो बीस खादिमा हैं. उनका नानो नफका आप. पुरा करते हैं? ये सुनकर हझरतने फरमाया के तू हर हुजरे में गदाई कर, जिस हुजरे मैं हाजिर ना हुं वो औरत और मिलकियतका तु वारस बने, फिर वो मस्जिद के दरवाझे से निकलकर हुजरा दर हुजरा फिरा मगर कोई हुजरा अैसा न पाया के हझरत वहां हाजिर न हों. ये देखकर फिर मस्जिद की जानिब गया तो वहां भी हझरत वाअझ फरमा रहे थे. ये देखकर वापस सुलतान के पास गया और तमाम सरगुझता वाकेआत उससे बयान किये तो सुलतान को अकीदतमंदी हुई और आपकी मुलाकात के लिये दिवानावार फिरता हुवा सैर करता हुवा आपके आईना महेल के करीब आया तो दरयाफ्त किया, ये महेल किसका नझर आ रहा हे के ईसका सानी शहेर में कोई और महेल नहीं, उस वक्त सबने कहा के ये महेल हझरत का हे जो हझरत ख्वाजा सैयद दरियाई महमूद रहमतुल्लाह अलयहके फरझंद हझरत शाह जमालुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह का हय. फिर सुलतान ने कहा जिसने सल्तनत गुजरात की फना कर दी? तब वझीरों ने कहा हां बादशाह! ये वोही अल्लाह के प्यारे हंय, उस वक्त मशायख साथ आये थे तो वझीरों ने कहा के मशायख के साथ में आप वझीफा कर रहे हैं तो सुलतान वहां सवारी से उतरकर आपके दिवानखानेमें जा बैठा और हझरत को खबर पहोंचाई के सुलतान अकबर दीदार का तलबगार है. और आप कदम रंझा फरमाअें और बाहर तशरीफ ले आअें. तब हझरतने जवाब

दिया के हम झोहर के वक्त बाहर आअेंगे अगर सुलतान को मिलना है तो बेठे वरना उनको अखतीयार हे. ये सुनकर सुलतान आझुर्दा हुवा और वहां से उठकर अपने मकाम पर गया और पचास सवार और सो प्यादे छोड गया और केह गया के आपको महाफे में बिठाकर मेरे महेल में ले आना, जब झोहर के वक्त हझरत बाहिर तशरीफ ले आओे तो उस वक्त बादशाह के खादिमोंने कुरनिस बजा लाकर अर्झ की के हझरत! अकबर शाह यहां चंद साअत बेठकर अपने महेल में गया है और हमको आपको साथ में ले जाने के लिये यहां छोड गया है तो आप करम फरमाकर महाफे में बेठकर तशरीफ ले चलें. उस वक्त आपके पास आपका खादिम झीहोश मौजूद था तो आपने उससे मशवरा लिया के मुझे सुलतान अकबर ने बुलवाया हे ईसमें तेरी क्या राय हे? तो उसने अर्झ की, हझरत! वहां झुरुर जाना चाहिये क्युं के सुलतान आपकी मुलाकात को यहां तक आया था और उसकी तमन्ना आपसे मिलनेकी है तब आप महाफे में बेठकर रवाना हुअे. आपके साथ में सरखील को लिया था. आप जब सुलतान के महेल के करीब पहोंचे तो बादशाह ने वहां दरवाजे पर हाथी खडा रखखा था. महावत भी हाजिरे खिदमत था. जब हझरत का महाफा करीब आया तो सुलतान ने फिलबान से फरमाया के हाथी मजनुं को पीरकी तरफ रवाना कर. ईस हरकत से बेल डरे और भळकने लगे तो हझरतने हाथ में रस्सी पकडकर उस पर फिराई और बेलों से कहा, अय दिलावर! मत भागो और होंशियार रहो भागने से तुम को शरम आनी चाहिये क्युं के तुम बेल हो? महेबूबे रब के और अेक हाथी से क्युं दबते हो? ये सुनकर बेल दुम उठाकर हाथी के जानिब सर हिलाकर चले तो हाथी अपनी जगाह पर थम गया और महावत उस पर गुस्सा करने लगा और बहोत अंकुश मारे मगर उसमें चलने की कोई ताकत नहीं थी. हाथीने अपना सर झुकाकर हझरत को सलाम किया और हझरतके रोब से हाथी वहां लरझता था. ये सुलतान झरुखे में बेठा हुवा देख रहा था और उसने फिलबान से कहा के तु हझरत से बे अदब क्युं हुवा? उस वक्त हझरत शाह के करीब पहोंच गये तो सुलतान वहां से उठकर सात कदम चल कर आपके ईस्तकबाल को गया और आपको मस्नद पर बिठाकर खुद खडा रहा मगर वक्ते मुसाफा के सुलतान के हाथ को हझरतने दबाया और आपकी आसतीं से दो शेर निकले ये देखकर सुलतानने शोरो गुल किया और डरते हुवे

हझरतको तख्त पर बिठाया. उस वक्त अहेमद शाहबुद्दीन और अमीर और हुकमरां को बुलाकर सुलतानने कहा, हझरतकी आस्तीनोंमें दो शेर हैं, अगर उनको छोड दें तो नाहक हमको वो मार डालें. ईसलीये बहेतर हे के उनको अेकसो बीस गाउं हैं वो उनको नझर कर दो ताके वो यहां से अपने मकान पर तशरीफ ले जाअें. तब अहेमद शाहबुद्दीन खान आपके पास हाजिर हुवा और अर्झ की के हझरत! आपको आफरीन है के अेक बदझन को आपने अकीदतमंद कर दिया और सुलतान की अर्झ हे के अगर आप यहां ठेहरना चाहें तो मकान आप ही का है वरना आप अपने मकान पर तशरीफ ले जाअें और आप चलें तो में आपके साथ चलुं, तब हझरत ने फरमाया के सुलतान की ईताअत कर, मगर जो वझाईफदार आअे थे उनको हाथीने सताअे और नाहक मारे हैं, अगर उनके वझीफे वापस देवे तो हम भी वझीफा लें , फिर नवाब अहेमदखान सुलतान के पास गया और हकीकत से आगाह किया तो सुलतान ने हुक्म दिया के उन सबकी जागीर वापस दे दो. और वझीफादारों को जागीर हझरतने वापस दिला दी और आप मकान पर तशरीफ ले आअे.

विसाल जनाब हझरत जमालुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह

हझरत शाह जमालुल्लाह रहमतुल्लाह अलयहने अेक ईमारत आपकी ईबादत गाह बनाई थी और उसमें आप ईबादत किया करते थे. और हर अेक के लिये हाजत बर लाने की दुआअें करते थे. मगर लोगोंका झुल्म और रंग देखकर आप आहोझारी करते. अेक रात आपने जनाबे बारीमें मुनाजात की के अब दुनियाका गम मुजसे सहा नहीं जाता. ईस लिये तू मुझे अपनी तरफ बुलाले. ईसी दोरमें तीन दिन गुझरे तब आपने ख्वाबमें देखा के आप अर्झ करते हैं के दुनिया से मुजे मोहब्बत नहीं हैं. उस वक्त आपके वालिद साहब से ख्वाब में अर्झ की के बाबा. मुजे आपकी आगोशमें ले लो. उस वक्त आपके वालिद साहब हझरत खवाजा महमूद दरियाई रहमतुल्लाह अलयहने फरमाया के सुलतान अकबर दिलोजान से मोहब्बत करेगा. फिर आपने अर्झ की मसाकीन और गुरबा का दुख बरदास्त नहीं होता आप दुआ फरमाईअे ताके मेरी उम्र कोता होवे फिर वालिद साहब ने फरमाया के अभी आपकी उम्र के

बारा साल बाकी हे. तब आपने अर्झ की ये मुजे नहीं चाहिये तब वालिद साहबने फरमाया के अब बाकी बारा रात और दिन हंय और ये गुझर जाओंगे तो तुम मोत का जाम पीयोगे. ये गुफतार बाबा की सुनकर अपनी आल औलाद को बीरपुर की तरफ भेजे और आपने अेक दोहरा लिख भेजा.

दोहरा गुफ्त जमालुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह

सुख के दिन सोना भी बासे बसे सो दुख

प्यारा तुझे मालुम हैं सेवा करब सुख

कलाम फरह अन्जाम गुफ्त जमालुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह

बल हां हां हान मुरख, चीतरे मन मान हांन

कोन सो कंबल काया तेरी, हीळा नैन और दांत

हेरी अमुलख अंखीयां तेरी मलजा से किस भांत

हाथी घोडे जीन घर जाके, झूलते दिन और रात

सोकस काजन आओ आंगन, प्यादा गये उस बार

देख तमाशा दुनिया केरा, जिया सपना रात

केह पछतावे जाग जमालु, मतरे मिले मिले हात

कलाम दोहरा वो जब के आओ, जवाब इसका हुवा उपर अबाओ

जवाब दोहरा लिखूंमैं अयामे, करोपड गोरतुम उसके बयां मे

जवाब दोहरा

जान जमालु बात अटल से उंची गई

बाझी गई नघात बाझीगर मनडे नहीं.

हझरत शाह जमालुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह अहमदआबाद शहरकी खल्कत की झियारत कर के बीरपुर तशरीफ ले आओ और आपकी वफात हो गई. ये खबर सुनकर सुलतान जलालुद्दीन अकबर बहोत ही अफसोस करने लगा और केहने लगा के मुजे मालुम न था और में मुलाकात से मेहरुम रहा. हझरत को आपके वालिद साहब के रोझे में सब ख्वैशो अकारबने मिलकर मदफन किये.

शाह प्यारुल्लाह नूरुल्लाह वल्द शैखुल ईस्लाम हझरत शाह लाडमुहंमद रहमतुल्लाह अलयह

हझरत ख्वाजा सैयद शाह प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह हझरत शाह लाडमुहंमद शैखुल ईस्लाम रहमतुल्लाह अलयहके साहबझादे और हझरत काझी मियां महमूद महेबूबुल्लाह उर्फे दरियाई दुल्हा के पोते हैं. आपके औसाफे गिरामी लातादाद हैं. आपने कभी दुनिया की दौलत की तमन्ना नहीं की मगर आपके मुरीदेन रोज बरोझ आपकी खिदमत में नझरो नियाझ लेकर हाजिर होते थे, साथमें नगद याने रुपिओ हदीया में लाते और आपके हुजरे मुबारक में जमा रखते. जब जुमाकी रात आती तो आप हझरत हुजरे में जाते, वहां दुनिया की नेअमत बेहद होती तो उसे देखकर आप फरमाते के किस लिये ये सब जमा किया गया है? उस वक्त खुदाम अर्झ करते के अय हझरत गौसुलवरा मुरशिद व पीर! ईसमें हमारी कोई तकसीर नहीं क्युं के ये तो तुलबा और मुरीदां सिदक दिलसे नझराना लाओ हैं. ये सुनकर हझरत खामोश रहे और जुमा के रोझ तुलबा और मिस्कीनोको जमा कर के बांट देते यहां तक के आपके हुजरे में मिट्टी का बरतन भी नहीं रेहने देते थे और जब मकान खाली देखते तो ये कुछ दोहरा खुश होकर कहते थे. हझरत प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह की ये आदत थी के हर जुमा को जो कुछ हाजिर होता वो सब तकसीम कर देते. आपके मुरीद अेसे यकीनवाले थे के ईसी तोर हर हफता हुजरा खाली होता तो वो भर देते थे और आप बांटते रेहते, अेसे आप तवक्कलवाले थे. और दुनिया के झरो दीनार से बेझार थे. आपके पास जो भी माल दोलत आता उसे आप बांट देते थे.

हझरत ख्वाजा सैयद प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह

हझरत शाह प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह पहाळों में हमेशा ईबादत व जिक्रो ईफ्कार के लिये जाया करते थे. और वो दुनिया को कोई तकलीफ नहीं देते थे. आपका अेक वाकेआ ईस तरह से रावी ने बयान किया है के अेक रोज आप पहाळ पर चिल्लाकशी के लिये तशरीफ ले गओ. उस वक्त आपके पास दस खजूरें थी ईसी पर आपने चिल्ला पुरा किया. और बाद फारिग होने के बीरपुर में अपने मकान पर तशरीफ लाये और आपने मुसल्ले को खोला. अेक चूंटी (कीडी) उसमें से निकल

आई. उस वक्त हझरतने कहा के ये तरीकओ उलफत हे प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह क्युं के तुमने ईस चूंटी को बेवतन किया हे और उसको रंझ में डाला के ईस लिये तुम्हारी ईबादत मकबुले दरगाह नहीं, ये अफसोस की बात हे. ये केहकर आपने अपने दिल में सोचकर पहाड की तरफ वो चूंटी को लेकर तशरीफ ले गओ और उसे उसके मुकाम पर पहोंचाकर आप मकान पर वापस तशरीफ लाओ और चूंटी का दिल दुखाया नहींई ईस नकल के मुताबिक ओक गझल हे उसे बयान करता हुं.

गझल सुफी अझ हझरत अब्दुललतीफ रहमतुल्लाह अलयह
वलागर तुजको हे ख्वाहिश, लिकाओ हझरते बारी
खयाले माशीया अल्लाह से, तो अपने दिल को कर आरी
अगर कुछ होश हे तुजको, दिल आसाई का पशा कर
यहां हरगिझ रवां मत रख, जहां की तूं दिल आझारी
रफीक अगरझ तुझको हो तौफीक, आहसन हसन, कारी गर
के जुझ अफआल खुश गोई, करे ता हश्र में यारी
हदीसे सरवरे दीं हे, के दुनिया कशत उकबा हे
यहां पर कुश्त गारीश्तिजस वजहे की बारवी बारी
भरोसा क्या हे दमका, वो आवे या के ना आवे
तूं हो बेदार वक्ते नीम शब कर जुर्म से झारी
अनीसे गम झदा हो और जलीसे खासगान हो
हमीमे महेरबां हो बे-कसों की कर मददगारी
ईलाही वास्ते मकबुल, हक शाह प्यारुल्लाह
लतीफे कमतरी को, दे नबीकी हुक्म बरदारी

हजरत शाह प्यारुल्लाह नुरुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह का चारपाई उचकना

हझरत शाह प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह मोडासा शहर में मुकीम थे. वहां ओक नया हाकिम आया और उसने हर मकान से ओक ओक चारपाई लाने को सिपाही भेजे, मजदुर के हाथ से जब वो चारपाई हमालों ने लाकर ईखट्ठा की और कस्बे की तरफ

रवाना हुवे, उस वक्त हझरत शाह प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह देहेलीझ पर खडे हुवे थे. उस वक्त आपकी तरफ अेक आदमी दोळा और हझरत को पकड लाया और हझरत के सरपे अेक खाट उठवाई, आप पर कुछ रहेम न खाया. जब किले के दरवाझे पे आप पहोंचे, उस वक्त हाकिमने आपको देखा और गोरसे देखा तो चारपाई सरसे उपर है तो उस वक्त हाकिम ने कहा सिपाहीयों से के ये कौन ईन्सान हे? ये कोई गौस अेहले करामत या कुतुबे जमां हे?! अलगरझ उस वक्त अेहले मजलिस देखने लगे गौरसे और केहने लगे के ये तो हझरत महेबूबे सुब्हान हबीबुल्लाह हझरत शाह प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह नूरुल्लाह हैं, ये सुनकर हाकिम हझरत के कदमबोस हुवा और अपने गुनाहों की मुआफी मांगी. उस वक्त हझरत हाफिझ का मिसराअ पढे.

हझरत शाह प्यारुल्लाह नूरुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह जब वो हाकिम जिसने आपके सरपे चारपाई रखवाई थी, वहां से आप अपने मकान की तरफ वापस लोटे और उस मगरुर हाकिम के हकमें बददुआ की तो हाकिम अपने ओहदे से माअझुल कर दिया गया. आपके औसाफ बहोत हैं मगर फिलहाल यहां लिखने की गुंजाईश नहीं, ईस लिये यहां से अब आपके साहबझादा हझरत दलीलुल उलमा शाह सालम रहमतुल्लाह अलयह के कुछ वाकेआत यहां तेहरीर करता हुं.

हझरत दलीलुल उलमा शाह सालम बिन शाह प्यारुल्लाह की दुआओंसे बोरसद की हिन्दु औरतको लडका होना...

हझरत शाह सालम रहमतुल्लाह अलयह अेक रोझ कस्द करके मुसाफिर होकर बोरसद तशरीफ ले गओ. वहां पर अेक हरजी नामका हिन्दु कोम का आशिक रहेता था और उसने सुना के हझरत शाह मियां महमूद महेबूबुल्लाह उर्फे दरियाई दुल्हा के पोते बीरपुर से ईस कस्बे बोरसद में तशरीफ लाये हैं, ये सुनकर वोह उसकी औरत को साथ लेकर आपकी खिदमत में हाजिर हुवा और अदबसे मर्दोझन दोनों ने आपकी कदम बोसी की और अपना मकसद बयान किया के या हझरत! आप दुआ करो ताके हम हमारा मकसद पाएं. आपने फरमाया के ये तेरी औरत बेऔलाद है, ईससे तेरा घर आबाद होगा. मेरे अजदाद की बरकत से परवरदिगार दो लळके देगा.

अलगरझ हमल पर दस माह गुझरे तो उसके वहां उसी औरत के पेट से लडका पयदा हुवा और उसके बाद दूसरा भी लडका पयदा हुवा. ईसी तरहा अब तक बोरसद में उनकी औलाद है.

हझरत अब्दे मुन्ईम ईब्ने शाह लाड महंमद रहमतुल्लाह अलयह

हझरत शाह लाडमहंमद रहमतुल्लाह अलयह के हझरत शाह प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह के सिवा तीन और फरझंद थे, वोह हझरत अब्दे मुनइम रहमतुल्लाह अलयह हझरत शाह महंमद सालेह रहमतुल्लाह अलयह और हझरत शाह वली अल्लाह रहमतुल्लाह अलयह हैं ये सब आपके साहबझादे थे. उनमें हझरत शाह वलीअल्लाह रहमतुल्लाह अलयह शैखुल वक्त थे और हझरत शाह अब्दे मुन्ईम रहमतुल्लाह अलयह बहोत बळे अल्लामा थे, उस वक्त के जैयद उलमा हझरत शाह उमर शाह रहमतुल्लाह अलयह थे. उनसे जो मस्अला हल न हो सकता तो हझरत शाह वलीअल्लाह से हल कराते थे. आपको परवरदिगारे आलमने इल्मे लदुन्नीसे नवाझा था और आप हमेशा झिक्रो फिक्र में तमाम वक्त गुझारते थे.

हझरत शाह अब्दे मुन्ईन रहमतुल्लह अलयह

हझरत शाह प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह रमझान के महीने में तरावीह पळ्हाते थे, उस वक्त आपके मुकतदीयों में हझरत शाह वलीअल्लाह रहमतुल्लाह अलयह और हझरत शाह अब्दे मुन्ईम रहमतुल्लाह अलयह और हझरत शाह महंमद सालेह रहमतुल्लाह अलयह और चोथे हझरत शाह उमर पीर आलिमे जय्यद रहमतुल्लाह अलयह और उनके सिवा और भी ईन्सान मौजूद थे, जब किराअत हझरत प्यारुल्लाह रहमतुल्लाह अलयह पळ्ह रहे थे. उस वक्त हझरत शाह उमर रहमतुल्लाह अलयहने लुकमा दिया तो उस वक्त हझरत शाह अब्दे मुन्ईम रहमतुल्लाह अलयह खफा हुवे और केहने लगे के चचा अब्बा को क्युं तुमने लुकमा दिया और उनसे तुमने गुस्ताखी की क्युं के अभी तुम बच्चा हो और ईतनी जुरअत तुम में कहां! खबरदार? अब कभी अेसी गुस्ताखी नहीं करना. बुझुर्ग का अदब और ताअझीम करना, उस वक्त हझरत शाह प्यारुल्लाह नूरुल्लाह रहमतुल्लाह अलयहने फरमाया के उनको कुछ मत कहो ये

बराबर (सही) हे क्युं के मेंने लोहे महेफुझ पर लिख्खा हुवा देखा हे के उमर गलती को दुरस्त करनेवाले हैं. फिर हझरतने तरावीह की निय्यत की और भतीजे को ईझझत दी.

हझरत शाह उमर बिन शाह अब्दे मुन्ईम रहमतुल्लाह अलयह व राफझी

हझरत शाह उमर बिन शाह अब्दे मुन्ईम रहमतुल्लाह अलयह के झमाने में मिरझा अेलम कली बेग नामी मुगल बीरपुर में हाकिम था और वो हर साल झमींनदारो को और मशाईखों को अनाज की चीठ्ठी देता था ये दस्तुर हझरत शाह हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयह के झमाने से चला आता था मगर ईस कमीने मुगलने हकदारोंको चीठ्ठी देना बंधकर दिया तो उस वक्त हझरत के पास तमाम मशाईख और झमीनदार आकर अर्झ करने लगे के हझरत! ईस मुगल राफझीने हमारी अनाजकी चीठ्ठी बंद कर दी हे और ये सिलसिला हझरत शाह हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयह से चला आ रहा है तो आप और हम सब मिलकर उसके पास चलें और आपके झरीये से हमारा सबका काम बन जाओे, उस वक्त आपने फरमाया के मुजे ईस वक्त ईस काम से दुर रहेने दो, तुम सब मिलकर जाओ, सबने ईसरार किया मगर आप तो अपने विर्द वझाईफ में हर वक्त रहा करते थे और कभी दुनियादार हाकिमसे मिलते नहीं थे ईस बात से ये मुगल पूरा वाकेफ था और जब दीगर मशाईखोंने उसकी खिदमत में हाझिर होकर चीठ्ठी का कहा तो उसने बहाना किया के हझरत शाह उमर रहमतुल्लाह अलयह यहां तशरीफ लाअें तो में चीठ्ठी दुंगा. ये बात उसकी सुनकर तमाम झमीनदार आप हझरत की खिदमतमे हाझिर हुवे और अर्ज की के हझरत! मुगल ने आपके वहां आने पर चीठ्ठी देने का वादा किया हे तो आप करम फरमाकर हमारे साथ तशरीफ ले चलो तो बहेतर होगा. तब आपने फरमाया के ये मुगल राफझी बळा झुठा और झबानदराज है. और बहोत बडा फितनाअंगेझ है, ईस लिये फसादखोर जानी दुश्मन हमारा है, ये सब बातें जो उसने कहीं वो सब फितना से खाली नहीं और वो गल्लाकी चीठ्ठी हरगिज नहीं देगा. मगर सब झमीनदार आपको लाचार करके साथ ले गअे. जब आप उस हाकिम नाबकार के मकान पर तशरीफ ले गअे, उस वक्त उस कमींने ने आपकी तरफ हिकारत से देखा और शेखी

करके मुस्कुराया और आपके साथ में बदी से पेश आया. आप दिलगीर होकर वापस आपके दौलतखाने पर तशरीफ ले आओ और दिलगीर होकर दरगाहे जददी के मझार पर हाझिर हुवे और मझारे अकदस पर जो गिलाफ था, उस गिलाफ में अपना सर डालकर अर्झ की या जददी! मुजे मीरझां ने दुनिया में खजल (शरमीन्दा) किया है. ईस तरहा आहोझारी गिलाफ के अंदर मुंह रखकर करते रहे और अपना मुंह बाहर न निकाला, जब तक उनको झाहिर न हुवा. आपका जवाब मिल गया तो आप मकान पर तशरीफ ले आओ तो उस वक्त आपको शिददत की बुखारने झोर किया, ये आपकी बुखार की खबर कसबे में घर बघर फेल गई और तमाम के तमाम आपकी खिदमत में हाझिर हुवे और हकीम और तबीबों को हाझिर किये, जब उन्होंने आपकी नब्झ देखी तो सब रोने लगे उस वक्त आपने अेक मिसरा फारसी का पळ्हा.

फर्द फारसी

तबझदाओ इश्क रा न बझ म गीर अय हकीम

रंजे तू बे फायदा अस्त मर्झे मन ला दवा अस्त

सब हाजिराने मजलिस के दिल चक हो गओ और कहेने लगे के अब हझरत को वासिले हक होनेका ईमकान हे मगर हमको ये मिरझां बरबाद कर देगा, उस वक्त आपने फरमाया के कुछ गम मत करो, खुदावंदे करीम कादिरे मुतलक हे और ईस मिरझां को जहन्नम में दाखिल कराके मैं मौला के नाम पर जान हाजिर कर दुंगा. आपका ये केहना था के हाकिम मिरझां के जिस्म में अैसा दर्द पेदा हुवा के उसको पालकी में सुलाकर हझरत की खिदमत में हाजिर हुवे और शोरो गुल करने लगे और केहने लगे के आप दुआ फरमाओ ताके उसे शिफा मिले, अब आपसे हरगिज सरकशी न करेगा और आपके कहेने के मुताबिक करेगा. आप रहेम फरमाओ तब आपने फरमाया के उसके जिगर को हझरत मियां महमूद महेबूबुल्लाह उर्फे दरियाई दुल्हा रहमतुल्लाह अलयह के तीरने छेद दिया है ईस लिये ये झख्म अच्छा नहीं होगा और फिर वो वापस फिरकर मिरझां के मकान में दाखिल हुवे और वहां जाकर देखा तो मिरझां मरा हुवा था. और उसका जनाझा अहमदआबाद पहोंचाया और उसको ईसके दादा के कब्रस्तानमें दफनाया.

हझरत शाह उमर बिन अब्दुल मुन्इम रहमतुल्लाह अलयह दूसरे रोझ सूअे उकबा तशरीफ ले गअे, उनकी हिकायत यहां खत्म करके उनके भाईयोंका बयान सुनो, बीबी रझीया नुस्रतके शिकमे पाकसे पांच फरझंद तवल्लुद हुअे.

प्यारुल्लाह नुरुल्लाह रहमतुल्लाह अलयहे के फरजंदो के हालात

हझरत बीबी रझीया नुस्रत हझरत शाह अबू मोहंमद रहमतुल्लाह अलयह की साहबझादी थी. आपके अव्वल फरझंद शाह सालम मुसम्मा रहमतुल्लाह अलयह और दूसरे साहबझादा हझरत शाह सादुल्ला रहमतुल्लाह अलयह हैं. उनका मझारे मुबारक प्रांतिज में तालाब की बोख में है, वहां आपके मझारे अकदस पर वहां के रहेनेवाले आपके शैदाई वहां जाकर नझरो न्याझ मझारे अकदस पर हाजिर होकर करते हैं और तीसरे साहबझादा हझरत शाह मारुफ रहमतुल्लाह अलयह हैं. उनका मझारे अकदस परगना मोन्था (ता. कपडवंज) में है और चोथे साहबझादा शाह तैफुर रहमतुल्लाह अलयह हैं. और उनका मझार अलीणा में है. और पांचवें साहबझादा हझरत शाह मनसुर रहमतुल्लाह अलयह हैं. उनका मझार सोरठ काठीयावाड के नवानगर में है. ये सब हझरत के प्यारे नबीरे थे. और वालिद साहब के हुक्म से मुसाफिर हुवे थे और घर से निकलकर जा-ब-जा आलम में सैयाही करते थे, उनमें से हझरत शाह मनसुर रहमतुल्लाह अलयह झबरदस्त मस्त थे और वो बरहना रहेते थे.

जामनगर-नवानगर में हजरत पीर सैयद शाह मनसुर बीन शाह प्यारुल्लाह का शुके कुवेको हराभरा कर देना.

हझरत शाह मनसुर रहमतुल्लाह अलयह अेक वक्त आपके साथ में दो दुरवेशों को लेकर नवानगर में उतरे. उस वक्त वहां का राजा जाम नामी था. और उसको कहा के तू तेरी लळकी दे वरना अपने मुलक से हाथ उठाले, अगर तुने लळकी नहीं दी तो मैं तेरे राज को ताराज कर दुंगा. आखिर तु फकीरों की तरह मोहताज हो जायेगा. ये सुनकर राजाने वझीरों को बुलाकर मशवरा किया और राजा ने कहा, तुम सब वझीर मिलकर कोई तदबीर करो ताके हझरत यहां से चले जा. दिलगीर हो कर उस

वक्त सबने मिलकर मशवराह करके हझरत से कहा अगर आपको राजा की लळकी की ख्वाहिश है और आप शाहे महमूद रहमतुल्लाह अलयह के पोता हो तो हम कहे वो काम करो, तब आपने उनसे कहा के केह दो जो कुछ तुम्हारे दिल का मकसद हे क्यों के हक तआला बडा कारसाझ है और मुश्किल को आसान करनेवाला है. तब वझीरोंने हझरत से कहा के राजा का बाग है उसमें अेक कूवा है वो कदीमी सुखा है. उसमें पानी का कतरा भी नहीं और बाग में सब पौदे भी खुश्क हैं अगर बाग हराभरा हो जावे और कूआ पानी से लबरेझ हो जाये तो आपको लळकी दे दें उस वक्त आपने फरमाया ईन्शाअल्लाह हम कल जाअेंगे और वोह बाग सुखा है उसको देख आएगे. आप फजर को उठकर तशरीफ बागमें ले गअे और उस कुअेमें आपने लोआबे दहन डाला तो उसी वक्त कुआ जोश में आया, पानीसे लबरेझ हो गया और बाग भी हराभरा हो गया तो फिर बागबांने राजा को जाकर खबर दी के हझरतने गुलशन कर दिया है, आप चलीये वहां, और नझर से देखा के कुआ लबरेझ है, अलगरझ राजा वझीरों को लेकर बाग में गया. और देखकर हेरान हो गया, जब वहां उसने दरख्तों की तरफ देखा तो बहोत सोच में पड गया और उसकी अकीदतमंदी ईतनी बढ गई के वो हझरत पे दिलोजान से फरेफता हो गया. राजा कचेरी में आया और हझरत शाह मनसुर रहमतुल्लाह अलयह को बुलवाअे और राजाने लळकी को संवार के मजलिस में लाकर बिठाई और राजाने हझरत को कहा के, ये लडकी आपको नझर की, आप चाहें तो उसे निकाह में ले सकते हैं. ये सुनकर हझरत ने कहा, ये लळकी मुझे मंजूर है और आपने लळकी के सरपे हाथ रखखा तो उसी वक्त वो भी हझरत की तरह मस्त बन गई और उसी वक्त उसकी झबान से कल्मा जारी हुवा. हझरत के तुफेल वो भी मकबुले रब हो गई.

हजरत महंमद चांद बिरादर हझरत ख्वाजा महमूद महेबूबुल्लाह रहमतुल्लाह अलयहे को चुराया हुआ अनार आपको खाने देना...

हझरत शाह महंमद चांद रहमतुल्लाह अलयह बडे साहिबे करामत और वली उल्लाह थे. और हर वक्त ईबादत रियाझत में मशगुल रहा करते थे. आपकी झबान से

कभी भी गलत या फहेश अलफाझ नहीं निकले हैं और आपने कभी मकरुह या मशकुक गिझा नहीं खाई. अेक वक्तका वाकेआ हय के अेक शख्स किसी बागमें से अनार चुराकर लाया और उस वक्त आप हझरत के मलफुझात में से महमूदखानी पळह रहे थे के वो अनार काटकर खादिम ने अेक तबक में उसके दाने रखकर आपके सामने लाकर रखखा. तब आपने उस वक्त दानों की तरफ ईशारा कर के कहा के अय दाने जा यहां से! ये सुखनके सुनते ही अनार के दाने तबक में से कीळों की तरह चलकर रवाना हो गअे तो सब हाजिराने मजलिस ये देखकर ताअज्जुब में हुवे. तब हझरतने फरमाया के ये ममनुअ (नाजाईझ चोरीका) था. ईस अनार के दाने कीळों की तरह चले गये. आपने अनार के लानेवाले से कहा के नाजाईझ गिझा दुरवेश को नहीं खिलाना. वो अनार को लानेवाला बहोत पछताया और अपने गुनाह की माफी मांगी और सिदक दिलसे तौबा की और वो हझरत का तालिब हुवा.

हिकायत हझरत महंमद चांद साहब बिन हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयह का शेरसे बात करना...

हझरत शाह महंमद चांद रहमतुल्लाह अलयह अेक रोझ पीरमगली पहाळ पर ईबादत के लिये तशरीफ ले जा रहे थे के वहां अेक शेर रास्ते में मिला और बीच रास्ते के खळा हो गया. आपने उस शेर से फरमाया के तू किस लिये रास्ते में खळा है? तो उसने अर्झ किया, हझरत, मुजे अेक अझदहेने परेशान कर रखखा है, वो मेरे मकान में घूस गया है. बाहर नहीं आता, मुजे परेशान कर रखखा है. आप उस झालिम अझदहा से मेरा मकान वापस दिलाओ. ईन्साफ करके मेरी मुश्किल हल कर दो, ये अर्झ कर के शेर अपने मकान की तरफ गया तो वो अझदहा नींद से जागा और दुम हिलाकर उसके मुंह से अेसे शोले निकले के जैसे कहेर की बिजली चमकती हो और वहां जो सब्झ घास उगी हुई थी, वो भी जलकर खाक हो गई. उस वक्त हझरत ने ईस्मे आझम पळह कर आपने फरमाया अझदहा! अगर शेखी करता है तो तेरी शेखी सब मिट जायेगी. त मिसल मेडक के हो जायेगा. ये सुनते ही अझदहा डरा. कांपने लगा, शेर के मकान को छोडकर भाग गया. शेर खुश होकर अपने मकान में गया. हझरत

महंमद चांद रहमतुल्लाह अलयहके मनाकिब बहोत हैं मगर यहां फिलहाल गुन्जाईश नहीं है. ईस लिये उनके साहबझादा हझरत मौलाना अब्दुल कवी रहमतुल्लाह अलयह के कुछ मुनाकीब लीखता हुं.

हझरत शाह अब्दुल कवी बिन हझरत शाह चांद महंमद रहमतुल्लाह अलयह का गांव भालेजमें आगको बुझाना

हझरत अब्दुल कवी रहमतुल्लाह अलयह भालेज गाउं में मुकीम थे. आपने वहां अेक हुजरे में कियाम किया था. उस वक्त भालेज में आग लगी जिससे मकान जलकर खाक हो गये. क्युं के उस वक्त हवा चल रही थी. ईस गमसे वहां के लोग तिल्मिला रहे थे. और चारों तरफ से लोग ईखट्टा होकर हझरत की खिदमत में हाजिर होकर अर्झ करने लगे के, हझरत! तशरीफ ले चलो. आगमें हमारी बस्ती के मकान बरबाद हुअे जाते हैं. उस वक्त आप हुजरे से उठे और जहां आग जल रही थी वहां तशरीफ ले गअे. आपने अेक पानी का भरा हुवा बरतन लेकर उस पर आयाते कुरआनी पळह कर आगकी तरफ छिळका. उसी वक्त वो आतिश (आग) सर्द हो गई. हझरत के तुफेल उनका माल सामान सब बच गया. आपके मनाकिब बहोत से हैं मगर यहां गुंजाईश नहीं, ईस लिये उनके साहबझादगान का झिक्र लिखता हुं.

हझरत शाह अब्दुल कवी रहमतुल्लाह अलयह के साहबझादे शाह हामिद और उनके खलफ (लळका) हझरत शाह महंमद मीर आरिफ रहमतुल्लाह अलयह हुवे. और वो बहोत बडे मुत्तकी थे. उनके साहबझादा हझरत शाह महंमद चांद सानी रहमतुल्लाह अलयह हुवे और वो बडे झीवकार और अेहले मआनी थे और उनके पांच खलफ (शाहझादे) थे. उनमें से दो झिन्दा रहे वो थे हझरत शाह हामिद कवी और दीगर हझरत शाह अब्दुन्नबी.

उम्मुल ओलीया हझरत बीबी हदीया अलयहीर्रहमा की दुआओसे बलाओे दुर होना...

अर्द महमूद का बनसराखें कलके अेख

ईझत दो हो जगमें सो बीबी हदीया देख

दुआ करे तीना वालिद हर हरीन बे दुआ ना घर कहुं

जगत करामत जानीअे सो साल हिन्द सवह

बीबी हदीया अलीणे में जाकर मुकीम हुई वहां हुजरे में रही, अलीणे की सब बलाअें आपकी दुआ से खो गई और वहां आपकी करामात बहोत सी जाहिर हुई और आपकी दुआ से सबकी मुराद बर आई आपके वाकेआत बहोत हैं.

हजरत शाह अली रजा साहब बीन हजरत शेख सैयद हाजी मोहम्मद याकुब (कुद्दस सिर्रहु) का बयान

हजरत शाह अली रजा साहब हजरत काजी महमूद दरियाइ साहब के खानदान में पेढीनामे में है। आपको दिल्ही से मोगल शहेनशाह शाह आलम सानी ने बीरपुर परगने की 1000 बीघा जमीन का फरमान हि.स.1127 में दीया था। आपको इस फरमान में हजरत कुतुब महमूद साहब (क.सी.) का सजजादा-नशीन लीख्खा गया है। आपका मजार मुबारक बीरपुरमें हजरत काजीखान (कुद्दस सिर्रहु) के मकबरे और चांदमीया के चोरा के दरमियान में है। हजरत शाह अली रजा सहाब के वालीदे बुजुर्गवार शेख हाजी मोहंमद याकुब को हीजरी सन 1112 में बीरपुर परगने के गांव का फरमान मोगल शहेनशाह शाह आलम ने दील्ही से दीया था। इस फरमान में आपको दरियाइ साहब का सजजादा-नशीन तहेरीर कीया है इस फरमान में दरियाइ साहब को शैखुल-कबीर का खीताब लीख्खा गया है। इस फरमान में मोहर (1) शाह अलीरजा बीन हाजी मोहंमद याकुब और (2) हजरत हाजी मोहंमद याकुब की भी है इस फरमान में हजरत हाजी मोहंमद याकुब को बीरपुर परगने के (1) कोळलम (कोयडेम) और (2) खाटा गांव दीअे गये है।

हजरत काजी खान (कुद्दस सिर्रहु) का मकबरा हाकीम अमीर वफादारने तामीर करया है। ये मकबरा शाह आलमके जमाने के कुछ पेहले तामीर हुवा। दरगाह शरीफ के अंदर के मजारो का नकशा शाह सालम बीन प्यारुल्लाह सहाब (कुद्दस सिर्रहु) के हुकम से तीन तालीबे-इल्म (1) अब्दुल

कुद्दुस (2) अब्दुल कय्युम और (3) मौलाना अहेमद ने तैयार कीया है।

फारसी मलफुजु व दस्तावेजो से तरजुमा कीया राकीम । हाजी कमालुद्दीन जैनुद्दीन पीरजादा शुम्बा : ता. 2 फेब्रुआरी 1991, 16 मी रजजब 14 सदी, वकते जवाल मुंबइ।

खानदाने दरियाइ के बुजुर्गो के हालात व वाकीय्यात

हजरत सैयद शाह प्यारुल्लाह नुरुल्लाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाहे अलयह के अव्वल फरजंद शाह सालीम सहाबके बाद शाह सैयद अब्दुल हादी उर्फे शाह अल्हादीया सहाब थे । आप ख्वाजा दरियाइ के सजजादानशीन थे आपको दरगाह शरीफ ख्वाजा दरियाइ की फारसी की सनद अंग्रेज हुकुमतने अंग्रेजीमें देकर मु.नडीआद इस्तेकबाल किया था । आप बडे आलीमे दिन व शाहे बे कस्ब बुझुर्ग थे । आपके अेक ओर भाइ हझरत सैयद शाह मीयां अली थे । आप भी बडे आलीम थे । शाह अल हादीय्या सहाबके दो फरजंद हुअे (1) शाह सहाब उर्फे सैयद शहाबुद्दीन (2) हझरत शाह सैयद बाबु थे।

इनसे और शाखें भी आज बिरपुर शरीफमें मौजुद है । मगर हम आगे याने के हझरत सैयद शाह अलहादीया के फरजंद यानी की हझरत सैयद शाह शहाबुद्दीन उर्फ शाह सहाब से जो साख चली उसपे निगाह करे । शाह सहाब से हझरत ख्वाजा शाह मोहंमद मीठा उर्फे शाह मीठा पैदा हुवे । आप भी अपने जमानेके बडे आली कद्र आलीम व परहेझगार वली-अे कामिल थे । आपके तीन फरजंद हुवे जो तमाम बडे आलीमे दीन मुफक्कीर व इबादत गुजार वलीअे कामिल हुवे । (1) सैयद ख्वाजा हाशम उर्फे हाश्मीमीयां (2) सैयद ख्वाजा सिराजुद्दीन (3) सैयद ख्वाजा इल्मुद्दीन उर्फे शाहेआलम मीयां ये बुझुर्गोंकी शाखे आज तक मौजुद है।

अब उनकी औलादोमें.... हजरत पीर सैयदशाह ख्वाजा अब्दुल जब्बार उर्फ जभुमीयां रहमतुल्लाह अलयहे आलिमे बा अमल थे । आपके वालीद सैयद ख्वाजा इल्मुदीन उर्फ शाह सहाब थे । इनके दो और भाइ थे (1) सैयद ख्वाजा हाशेममीयां (2) सैयद ख्वाजा सिराजुद्दीन इन्ही की और औलादे भी आज बीरपुर शरीफमें मौजुद है । आपने तोहफतुल कारी मलफुज हिजरी सन 3 शाबान 1193 में फारसी में नकल लिख्खी है । जीसे करीब 211 का वकत गुजर चुका है । (इसके अलावा दुसरी दीनी किताबे भी लिख्खी थी जो अरबी व फारसीमें थी) उसकी नकल हजरत पीर सय्यिद अल्हाज कमालुद्दीन बिन मोहद्दिसे गुजरात जैनुद्दीन नाना हुजुर के पास थीं (ये मुंबइ में रहेते थे) इन्होने

एक खत जो मेरे पास मौजुद है इसीमें आपने हजरत अब्दुल जब्बार रहमतुल्लाह अलयहे ने शजरा शरीफ कोर्टमें रजीस्टार कीया था वैसा लिख्खा है उसकी फोटो कोपी से मुजे मुंबइ से ता.20 ओगस्ट 1984 को लीख्खा है। आप अब्दुल जब्बार के चार सहाबजादे थे (1) रहेमुमीयां (2) लीमामीयां (3) बाकिरमीयां (4) कमालुद्दीन हुवे। ये चारों की शाखें बीरपुरमें मौजुद है।

हजरत पीर ख्वाजा सैयद अल्हाज कमालुदीन रहे. बडे इबादत गुजार बाअमल साहिबे कश्फ बुजुर्ग थे आपने गुजरात के बेश्तर इलाके का दौरा कीया था। (हजरत शाह कमालुदीन उर्फ कमुदादा को इ.स.1865 अंग्रेज हुकुमतने मुंबाइ इलाकेके गवर्नर इन काउन्सील की जानिबसे सनद नं.118 अेकर जमीन 119 देकर हजरत ख्वाजा सैयदना शाह महमूद दरियाइ की वहीवट करनेके तौर पर सनद दी थी आपको सजजादानशीन भी लिख्खा है। जो संपादक के पांचवी पुस्त के जद्दे आला है)हदीसे नबवी और कुरआने पाक की तफसीरे वगेरा इल्म अपने घरके आलीमो फाजीलोसे हांसिल कीया था। आपके कुल छह (6) सहाबजादे थे ये तमाम आलीम, फाजील थे अपने 6 बेटो-बेटी दामाद के साथ में यानी 14 बेटे बेटोकी बीबीयों और वो दादा-दादी यानी कुल 16 अफराद एक घरके हजजे बयतुल्लाह गये थे। आप लोग सबके सब बडी उम्र और कसीर औलादवाले कुम्बे के भाइ, भतीजे, नाती नवासेवाले थे। **इस बीना पर आज बीरपुर शरीफ में पहेचान इन घरवालोकी कमुटोला के नामसे होती है।** ये कुम्बे में हर दोरमें बडे बडे नामवर इल्मी तहेजीबी, खुश अख्लाक और दुन्या के मामलात से दुर रह कर इल्मेदीन इस्लामी तब्लीग, मुरीदैन व मोअतकीदीन में हमा वकत सफरमें गुजारते थे। सफरकी बिना पर जाअेदाद - मिलकीयत से दुर रहे कयुंके... अल्लाह तआला ने इस कुम्बे से बडा काम लीया यही छेह-छेह (यांने भाइओने) गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और दककनके दौरे किये। दूर देहातो में जा-जाकर इस्लामकी सच्ची तबलीग अपने बुजुर्गो के नकशे कदम पर चलके की। जीनके नाम कुछ इस तरह है (1) सैयद मौलाना हाजी दोस्त मोहंमद (2) सैयद मौलाना हाजी मुफती जमालुद्दीन (3) सैयद ख्वाजा हाजी मुफती शाहआलम (4) सैयद मौलाना हाजी कासममीयां (5) सैयद हाजी मौलाना अकबरमीयां (6) सैयद ख्वाजा हाजी मुफती आलीमे रब्बानी शाह सहाबमीयां।

हजके मौके पर दादीजान ने अल्लाह तआलके घरमें और मीना मुजदलफा मकामे इब्राहीम, सफा-मरवाह और मदीना शरीफमें दुआ करते के अल्लाह तआला मेरी हर एक नस्लमें तुं हाजी रखना वैसा ही हुवा है। आज वही छट्ठी पुस्तमें नस्ल ब नस्ले अल्हम्दो लिल्लाह हाजी है। ये परहेजगार मां की

सच्ची दुआ हें । फिर इन्ही से जमालुद्दीन बिन कमालुद्दीन बिन अब्दुलजब्बार रहमतुल्लाह अलयहे आप से पांच फरजंद हुओ जीनके नाम हस्बेजैल है (1) साहेबमीयां (शहाबुद्दीन) (2) मोसुमीयां (3) वलीमीयां (4) सैयदमीयां (5) मुरादमीयां हुवे और एक सहाबजादी हुइ थी । हजरत पीर अल्हाज मौलाना शाह जमालुद्दीन की शादी सैयदा साबडीबीबी (साबेराबीबी) से हुइ थी । मलीक रसूलमीयां बिन हुसैनमीयां बिन छाबामीयां बिन मलीक रसुलमीयां से हुइ थी । (इनका खानदान आगे चलके हजरत काजीखान सहाबसे जाकर सिलसिला मीलता है, यह काजीखान सहाब हजरत सैयद शाह हमीदुद्दीन चाहिलदा आरिफ बिल्लाह रहमतुल्लाह अलयहे के दामाद है आपकी शाहबजादी सैयदा अमतुर्रउफ उर्फे बीबी सहाबासे निकाह हुवा था । इन्हे बिरपुर परगना के गाम राजेणा व लीमरवाडा इनामी तौर पर मिले थे । बादशाही दोरमें ये दस्तावेज फारसी में थे । अंग्रेजी हुकुमतने इ.स.1760 में मु.खेडा बुलाकर अंग्रेजी में सनद कर दी थी और ये मलीक खानदानवालो को दीये थें । ता.7-3-1987 6 रजजब हि.स. 1407 पीरजादा हाजी कमालुद्दीन जैनुद्दीन सहाब के खतमें मुजे लिख्खा है) मेरे दादा हजरत सैयद शाह मौलाना शहाबुद्दीन मु.बालासिनोर में तलाव दरवाजा के पास आइ हुइ खजुरी मस्जीद में 40 साल इमामत पर फाइजी रहे । बालासिनोर से बीरपुर नवाब सहाबकी खानगी टपाल आप कभी कभी लाते ले जाते थें । फजर की नमाज के बाद बिरपुर आते जोहरकी नमाज के वकत वापस चले जाते । इस तरहा मुकाम वरघरी ता.लुणावाडा जी.पंचमहाल की मस्जीद की बुनियाद भी आपने डाली थी । वहां भी 15 साल इमामत का फरीजा निभाया था । सबके सब पांचो भाइ दीनदार और आलिमे बा अमल थे । हमारी दादी अम्मा सैयदा अजोबीबी थे आप भी बडी इल्मवाली परहेजगार खातुन थीं । इनमें हजरत शहाबुद्दीन बिन जमालुद्दीन सहाबसे आगे लिख रहा हुं इनके पांच फरजंद थे ।

अे (1) पीरजादा सैयद अब्दुलर्रहेमान बीन शहाबुद्दीन (साहेबमीयां)

आप पोलीस में थे दीन-दुन्यवी इल्म घरके लोगो से व बीरपुरमें हांसील कीया । आपकी शादी कारंटा शरीफ जनाब पीरजादा नुरबीबी के साथ हुइ थी आप बडे अब्बा (संपादक) के थे । भर जवानीमें इन्तेकाल फरमा गये बडी अम्मा कारंटा शरीफ चले गये । यहां अपने वालीदा व भाइओके साथ रहेते थे । आप के एक फरजंद हुवे. जनाब पीर सैयद कमरुद्दीन बाबा के वालीद का इन्तेकाल 14 रजजब 1943 में हुआ मदफन बीरपुरमें हुआ और वालीदा हजीयाणी नुरबीबी का इन्तेकाल ता.28-10-92 को हुवा मदफन कारंटा शरीफ कीये है ।

नाम : पीर सैयद कमरुद्दीन अे. पीरजादा

पैदाइश : 20 **शाबान हि.स.**1363, **इ.स.**4-4-1944 **दिन हुइ थी ।**

11 सालकी उम्रमें यानी 11 शव्वाल जुन महिनेमें इ.स.1955 को अहमदआबाद दारुल उलुम शाहेआलम (जमालपुर) में दाखिल हुअे । फिर हर साल उर्स कारंटा शरीफ में जाते मेरे वालीद पीर सैयद फतेह मुहम्मद बाबा साहब रहमतुल्लाह अलयहे (संपादक) की दुकान के टेन्ट मंडप लगाते । चाचा-भतीजा साथमें रहते थे । उन्हे आलीम की सनद मु.चांद 20 शाबान हि.स.1381 इ.स.1962 को मीली सनद लेकर कारंटा गये । कुछ दिनोके बाद उर्स मख्दूमे कारंटा जानेके बाद वालीद साह सय्यिद फतेहमोहंमद सहाब को मेरे नाना हुजुर सैयद शाह अल्हाज अब्दुलरझझाक रहमतुल्लाह अलयहेने फरमाया के मीया आपका भतीजा आलीम की सनद लेकर आया है । और अभी तक कारंटा से बीरपुर कयुं नहीं आये । आप फौरन उन्हे बिरपुर बुलालो वालीदने बिरपुर बुलाये में कमरुद्दीन बाबा दादा हुजुर पीर अब्दुलरझझाक बावा को मिलने गअे । आपने अमामा, नये कपडे, जुते, शेरवानी, अचकन वगेरह का इन्तेजाम करवा दीया । ये सारा इन्तेजाम फतेहमोहंमद चाचाने करवाया था । एक शानदार जुलुस यह जुलुस बिरपुर घांचीवाड (शेख भाइओकी मस्जीद) अब मस्जीदे अलीफ से निकला इस जुलुसमें बिरपुर के तमाम बडे हजरात अहमदचाचा, यासीनचाचा, गुलाम मुहंमदचाचा, मुराद दादा, शहाबुद्दीन मीयां, नजुमीयां, फजलीमीयां, अहमदमीयां, मलीक इनायत शाह, मलीक अहमद शाह, उमरावमीयां मलीक वगेरे शामील थे । ये जुलुस मेइन बजारसे कस्बामें होता हुवा दरगाह शरीफ पहुंचा । उस वकत बीरपुर शरीफ के तमाम बडे मशाइख आस्तानअे ख्वाजा दरियाइ पर आपके इर्शाद मुबारक पर मेरे लीये हाजर रख्खे थे । दरगाह शरीफमें जानेके बाद दादा हुजुरने कहा मौलाना कमालुद्दीन वायज करो में नया था । लोग जीतने मौजुद थे उस वकत के जय्यद, आलीम, फाजील थे और दादा हुजुर का हुकम था कया करता । अल्लाह तआलाने मुजे हिम्मत दी । ख्वाजा दरियाइ के सामने इन्ना आतयना कल कवसर पर मेने थोडी देर वायज बयान की । फीर दादा हुजुर शाह सय्यिद अल्हाज अब्दुलरझझाकबाबा रहमतुल्लाह अलयहे कहा अच्छा बेठ जाओ । इसी आयत को उन्वान बनाकर बडे अच्छे अन्दाज में वायज किया था ।

खिलाफत १ : **बिल आखिर आपने मुजे दरगाह शरीफके अंदर ही अमामा बांधा और सिलसिलअे दरियाइयाह सुहरवर्दीया वगेरे सिलसिलोकी खिलाफत दी । सब के सब ने दुआ से सरफराज फरमाया था । बादमें बडे बडे पीरजादा गान (सय्यदजादो) ने मुजे दादा हुजुरके कहने पर अमामा पहेनाये सलाम दुआ**

बाद दादा हुजुरने मुजे एक पेन अपनी जेबसे निकालकर दी मौलाना कमालुद्दीन यह रख्खो आपको बहुत काम आयेगी। में छोटा था भला पेन से कया काम करुंगा वोह पेन जो काम कर गइ इससे दुन्या खास कर गुजरात व पुरी दुनिया जानती है के आप तयबाह के सह तंत्री (1) सुन्नी कोण (2) बहारे शरीअत (3) जिक्रे जमील (4) सिरते सैयदुल मुरसलीन दिगर गुजराती में बेशुमार किताबे आपने अनुवाद और संपादक की है। सनद मिलने के बाद आपने मुजे कहा दो-चार दिन बाद रमजान शरीफ आनेवाले है आप साठंबा तरावीह पळहाने जाना में आपको छोळने आउंगा। खैर उसी रमजान में इत्तेफाकसे बिरपुर मस्जीदे चाहेलदाह के इमाम हजरत पीर सैयद अल्हाज अनवरमीयां जुनेदी दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे बिमार हुवे। मुजे दादा हुजुरने कहा अब आप कही नही जाओगे रमजान की तरावीह व नमाजे यहीं अदा करवाओगे। अलहम्दोलिल्लाह मुजे बडा फख्र हुवा। जो मस्जीदमें शाह ख्वाजाओ ख्वाजगान पीर हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे ख्वाजा दरियाइ व मेरे तमाम अजदादने यहां नमाज पळही और पळहाइ वही जगह मुजे नशीब हुइ थी। आप मुजे टींटाइ, बालासिनोर, हलदरवा वगेरह जानेको कहते थे। हजरतने दारुल उलुम शाहे आलम जमालपुर अहमदाबाद मे करीब २५ साल गुजारे थे आज भी आप वहां सरपरस्त है। उन्के अलावा बालासिनोर, टंकारीया, बडौदा दिगर दारुल उलुम सुन्नी मुस्लिम कमीटी गोंडल और दिगर इस्लाम तन्जीमो में आप सरपरस्त है। आपने करीब सात बार हजज की है। आफ्रिका, इंग्लेन्ड, सउदी अरब, पोर्टुगीज, फ्रान्स, केनेडा, अमेरिका दिगर और दुन्या के देशो और काश्मीर-कंडला से किछौछा लखनउं इन्दोर वगेरह हिन्दुस्तान का भी दौरा किया है। आपका पोताभी हाफिज व आलीम की सनद पर फाइज है। आपकी चौथी पुस्त देखनेवाले हमारे खानदानमें नसीब पानेवाले है। आपने अपने वालीदो और अपने दादाऔको नहीं देखा है बल्के आपने तो अपने वालीद को भी नहीं देखा था। अल्लाह तआला आपकी उम्रमें इजाफा करे... आमीन... आपकी वालेदा सैयदा पीरानीमां नूरबीबी व बेटा अब्दुल मुस्तुफामीयां को भी आपने हजज करवाया है आप भी आपके वालीद के जा-नशींन है।

खिलाफत 2 : ता.25-3-86 मु.किछौछा शरीफ, खानकाहे अशरफी में हजरत पीर सैयद मौलाना शाह मुहम्मद मुख्तार अशरफ अशरफी जीलानी कादेरी सहाब रहमतुल्लाह अलयहे सिलसिलाओ अशरफी कादेरी की खिलाफत इझाजत वगेरे 14 खानवादोसे नवाजा था।

खिलाफत 3 : 1999 की सालमें ता.6 ओप्रिल की हज जियारत के बाद बगदाद शरीफ आस्तानाओ हुजरु गौषे पाक रदियल्लाहो तआला अन्हो के सजजादानशीन व नाजीम हजरत पीर सैयद अब्दुलरहेमान उर्फ जहीरुद्दीन कादेरी दामतहु आलीया ने कादरी सिलसिलाकी खिलाफत से नवाजा था।

खिलाफत 4 : 1979 में हजरत पीर मुफतीये आजम (कानपुर) सुलतानुल मुनाजेरीन किब्ला शाह रफाकत हुसैन मुजफफरपुरी रहमतुल्लाहे अलैहेने पीराने पीर कुत्बुल अकताब सैयदना शाह कुतुब महमूद जलाली सुहरवर्दी (खलीफ-अे मख्दुम जलालुद्दीन बुखारी, सुहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे) कारंटा शरीफ की जामेअ मस्जीदमें इशारा शुदा, खिलाफतो-इजाजत से नवाजा वोह खिलाफते ये है, कादेरी, चिश्ती, अशरफी, हामेदी, बरकाती, जियाइ वगेरा खिलाफतो इजाजत से नवाजा अलहम्दो लिल्लाहे अलाजालिक।

शादी : आपकी पहेली शादी अपने मामु सहाबकी बेटी सैयदा कुरैशाबीबी साहेबह के साथ हुइ थी इन्ही से (1) हाजी अबुल मुस्तुफामीयां (2) जमालुद्दीन (3) फातेमाबीबी औलाद हुइ थी।

बी (2) पीरजादा सैयद अहमदमीयां शाहबुद्दीन (साहेबमीयां)

हमारे चाचा जनाब हजरत सैयद अहमदमीयां साहब दीनदार नमाजी और बिरपुर शरीफ की मस्जीद व दरगाह शरीफ दरियाइ सरकारके ट्रस्टी रहे। वह जवानीमें पान व तमाकु की तिजारत करते थें आप गालीबन 85 सालकी उम्रमें ता.6-5-1987 के रोज वफात पाओ।

उनके चार सहाबजादे थे (1) पीरजादा सैयद जमालुद्दीन (2) मुहंमदमीयां (3) हुसैनमीयां (4) जैनुद्दीन (युअेसअे वाले)

(1) जमालुद्दीन अहेमदमीयां साहेब बिरपुर ग्राम पंचायत के मेम्बर भी थे दरगाह शरीफमें भी काफी वकत खिदमत की। उन्की शादी बिरपुर (महेमुदपुरा) में सैयद गुलामनबी बिन मुहंमदमीयां की बेटी सुरोबीबी से हुइ। आप सन 1987 मे जेल में गाजी के हेसीयत से रहे। उनकी वफात ता.21-7-2003 को हुइ मु.चांद 3 जमादील आखर हि.स.1424। सैयद जमालुद्दीन सहाब तिजारत व खेती का काम करते थे उनके दो सहाबजादे (1) पीर सैयद रियाजुद्दीन (2) पीर सैयद अेजाजुद्दीन और एक सहाबजादी सैयदा जहांआराबीबी है जो संपादक की झोजह (पत्नी) है। जनाब रियाजुद्दीन नोकरी और जनाब अेजाजुद्दीन सरकारी टीचर है मु.कहान, ता.जी.भरुच।

(2) पीरजादा सैयद मुहंमदमीयां अहमदमीयां साहब अेसटी में कंडकटर थें और आप मु.धोलका, जी.अहमदाबाद में रहे थें। आपकी शादी मु.धोलका के

रहेवासी शाह सैयद मुर्तुजामीयां अल्वीयुल हुसैनी साहब की शहाबजादी सैयदा नसीमबानु से हुइ थी। आप दीनी काममें हाथ हीस्सा लेते थे। आपके एक सहाबजादा और तीन सहाबजादीयां है। 1) पीर सैयद हमीदुद्दीन उर्फ प्यारे साहब और सहाबजादीओमें 1) सैयदा सफीयुन्नीशां 2) सैयदा फरजुन्नीशां 3) सैयदा साहिस्ताबीबी है। आपका सहाबजादा सैयद हमीदुद्दीन धोलका में ही रहेते है और पेशे से वकालत कर रहे है। अभी आप सरकार दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे दरगाह शरीफ ट्रस्टमें ट्रस्टी भी है (पीरजादा मुहंमदमीयां आपका विशाल चांद 11 जुमेरात रमजान ही.स.1427 इ.स.5-10-2006 में हुआ)

(3) पीरजादा मौलाना सैयद हुसैनमीयां अहमदमीयां साहेब दारुल उलुम शाहे आलम में पढे और गुजरात के कइ गामोमें इमामत की, फिलहाल घर पर ही है। आपकी शादी अपने चाचा पीर सैयद यासीनमीयां सहाबकी सहाबजादी सैयदा मकसुदा बीबी से हुइ। आपके तीन सहाबजादे और एक सहाबजादी है। 1) सैयद हफीजुद्दीन 2) सैयद मौलाना कारी मोहंमद हाशेमीमीयां 3) सैयद सद्दाम हुसैन 4) सहाबजादी सैयेदा शबानाबीबी।

(4) जनाब पीरजादा जैनुद्दीन अहमदमीयां साहब आप पेशे में टीचर थे और आपकी शादी अपने मामु के यहां यानी मलेक खानदानमें हुइ। मकसुदाबीबी इब्ने अहमद हुसैनमीयां से हुइ आप भी टीचर थे। आप बिरपुर दरगाह शरीफके ट्रस्टी भी रहे बादमें आप अपनी बीबी और बच्चे के साथ अमेरीका जाकर बसे। आपकी वफात चांद 21 बुधवार जिल्हज 1430 ता.9-12-2009 को हुइ। आप के दो सहाबजादे 1) सैयद खुरशीद अहमद 2) सैयद सीराजुद्दीन व सहाबजादीयां 3) सैयदा अतीयाबानु 4) सैयदा नाजनीनबानु है जो सभी आज भी अमेरीकामें बसे हुवे है।

सी (3) पीरजादा सैयद सुफी गुलाम मुहंमद शहाबुद्दीन (साहेबमीयां) हमारे चाचा जनाब हजरत सैयद गुलाममहंमद सहाब जवानी में कपडे की तिजारत करते थे। फिर बीरपुर जामे दरियाइ मस्जीदमें इमामत पर फाइज रहे खिदमत देते रहे। आपकी शादी सैयदा जोहराबीबी इब्ने सैयद उस्मानमीयां इमाममीयां बुखारीकी बेटी से हुइ थी। आपके एक सहाबजादा सैयद इखत्यार अहेमद और एक शहाबजादी सैयद महेमुदाबीबी है। सैयद इखत्यार अहेमदने अपनी वालेदा के साथ सन 2010 में हज किया था। आपकी शादी आपके चाचा के यहां हुई। सैयदा खैरुन्निशां (फातमाबीबी) से हुई आपके तीन फरजंद है।

डी (4) पीरजादा सैयद यासीनमीयां सहाबुद्दीन (साहेबमीयां) सैयद यासीनमीयां सहाब मेरे (संपादक) के चोथे नंबर के चाचा थे। आप जवानीमें डेसर, वरछेसर,

सावली वगेरह गांवमें रहेकर दीन का काम अंजाम देते थे। फिर बीरपुर ग्राम पंचायतमें (कारकुन) रहे। जीन बलाअे आपसे जल्दी दुर हो जाती थी। **आपने गुजरातीमें खजान-अे-दरियाइ नामकी किताब लीख्खी थी**। मेरे वालीद के गुजरनेके बाद आपने दिली मोहब्बत के साथ हमारी देख-भाल रख्खी थी। आपकी वफात उर्स ख्वाजा दरियाइ के मु.चांद 5 रबीउल आखर को इन्तेकाल हुवा था। आप सहाबके तीन सहाबजादे और सात सहाबजादीया है सहाबजादोमें 1) सैयद निजामुद्दीन 2) सैयद नइमुद्दीन 3) सैयद मौलाना नशीरुद्दीन है।

इ (5) मेरे वालीद हजरत पीरजादा सैयद फतेमुहंमद साहेबमीयां इल्मे दीन घर के लोग वालीद, चाचओंसे शीखा। तीन-या चार धोरण का गुजराती इल्म शीखा। भाइओंके साथ पान की दुकान दरगाह शरीफके काम व तंबाकु बीडी बनवानेका काम था। बीरपुर शरीफमें आपकी बडी इजजत थी आपने खेती भी की और पौंदे (जाड) भी काभी जमीन में लगाये थे। हमारी एक जमीन में करीब 60 से 70 आम के पेड लगाये थे जो काफी बडे थे। 1973 की बारिश की जयादा रेल (पुर) आनेसे बह गये थे। कुछ बडे पेड थे लेकिन घरेलु हालातने मजबुर करके बील आखिर 1983 में खुद मेने ही उसे कटवा डाले थे। ये मेरी जीन्दगीका सबसे बडा दर्द रखनेवाला काम कीया था। वकत की मजबुरी हालत ने मजबुर कीया था कयुंके कोइ सहारा न था खाना, पीना, स्कुल मद्रसा के लिये दिगर दुन्यवी कामो के लिये रुपिये नही थे। वालेदा अकेली तन्हा थी और कोइ कमाइ का साधन न था लंबी जमीन नहीं थी। कया करते वालिदका विसाल ता.14-11-1976 हि.स.1396 चांद 21 जील्कद सुब्ह 11 बाद रोज हुवा था। नाना हुजुर मुजे और भाइ पीर सैयद अल्हाज शफीयुल्लाह सहाबको ता.14-05-1977, जमादिउल अव्वल चांद 25 हि.स.1397 को बीरपुर शरीफसे अहमदआबाद दारुल उलुम शाहे आलममें दाखिल कराके इल्मे दीन हांसिल करने नानाजान हजरत पीर सैयद अल्हाज अब्बुलरझझाक (रहमतुल्लाह अलयहे) रख गये थे। उस वकत हजरत किब्ला हाजी पीर सैयद मौलाना कमालुद्दीन अे. पीरजादा दारुल उलुम शाहे आलममें मौजुद थे। इन्हे देखभाल और कियादतमें सोपें थे, कुछ वकत के तकाजेने मुजे मजबुर कीया दारुल उलुम की पळहाइ छोडकर बीरपुर आना पडा था। कयुं जब मेरी ही 10 सालकी उम्र थी मेरे बाद पीर युसुफमीयां, कुरेशाबीबी और आइशाबीबी ये तीन भाइ बहन छोटे थे। ये हालत व घरके खानकाह दिगर पोजीशनसे हमे मजबुर कर लीया था। नाना हुजुर की सब मिलकीयत, अम्मा सहाब के हाथो आइ थी। इन्ही मकान, किताबो और सोहबतकी वजहसे दीनदारी इल्म, फजल इजजतो

व दोलत नसीब हुइ थी। अम्मा सहाबने सारे करीब 12 मकान किराये दीये थे ये इन्ही भाडों से हमारा गुजरान होता एक वकत था, अम्मा सहाब के पास करीब 80 तोला सोना और 20 किलो उपर चांदी थी। लेकीन वकत करवट लेते है (इम्तेहान-इल्मी व अमली हर एक पर आता है अैसा दौर हम पर भी गुजरा थां) की सुब्ह चाय भी न मीलती थी, दुसरी तो बात दुरकी थी। खैर मां की दुआ नाना जान वालिद वालेदा की तालीम, तरबीयत और हिम्मत, होंसले ने हमे वापस वहीं मोड पर लाकर रख दीये है। ये सारा मंजर ख्वाजा दरियाइ सरकारकी सच्ची मुहब्बत से नसीब हुवा। हर वकत आपकी सवानेह हयात पढना-दिखाना फैलाने का काम करते रहे, करते रहेंगे इन्शाअल्लाह और दीन-रात हमें कामीयाबी नसीब हो वैसी आप भी दुआ करे आमीन। बडे भाइ पीर शफीयुल्लाह सहाबको कारी की शनद दारुल उलुम शाहे आलमसे मीली थी। उसके बाद 6-10-1985 बरोज इतवार को चांद 10 मोहर्रमुल हराम को हजरत किब्ला हाजी पीर कमालुद्दीन जैनुद्दीन (मुंबाइवाला) की जेरे सदारतमें (1) खिलाफत की सनद हजरत पीर सैयद अल्हाज मुफती अे गुजरात शाह कमरुद्दीन बाबा अे. दरियाइ अशरफी ने सिलसिलाअे आलीय्याह, अशरफीयह, कादरीय्याह, चिश्तीया वगैरा की खिलाफत दी थी।

खिलाफत 2 : बगदाद शरीफसे हजरत शेख सैयद मीरा अब्दुलकादीर जीलानी बगदादी रदीयल्लाहो अन्होके सजजादानशीन की जानिबसे भी को जनाब पीर सैयद जहीरुद्दीन कादरीने खिलाफत अता की है।

खिलाफत 3 : हजरत सैयद शैखुल इस्लाम मोहंमद मदनीबावा किछौछवीसे भी को भी खिलाफतसे नवाजा था। आपने दरियाइ सरकार गुजराती, इंग्लीश, उर्दुमें किताबे लीख्खी व शायेअ की है।

हजरत सैयद शाह शफीयुल्लाह की शादी मु.महेमुदपुरा के पीरजादा सैयद अब्दुलरहीम फिरोजमीयां सहाब की बेटी सैयदा हाजराबीबी के साथ ता.23-5-1992 चांद 20 जील्कद ही.स. 1412 के दीन हुइ। इस दीन (संपादक) का भी निकाह हुवा था याने दोनो (संपादक) भाइओकी शादी एक दिन एक साथ हुइ थी आपकी पांच औलाद है।

1) जकीय्याह बीबी उर्फे तौहाबीबी -धो.10 पास

2) हसन मुसन्ना उर्फ तुफैल अहमद - धो. 10 पास

3) अब्दुल रजजाक - कलास -6 ४) मोहंमद जीलानी - कलास -5

5) सायेमाबीबी कलास-3

आपने केन्या, तांजानिय्या, मलावी, मोजाब्बीक, साउथ आफ्रीका, दुबाइ, कोमोरोस देशो के काफी बार दौरे कीये है। दीन-इस्लामी की बडी

खिदमत करते है आपने मु.भिलोडा, महीसा, बरेणा, बडौदा वगेरे कइ जगह मस्जीद मद्रसोकी बुनियाद रख्खी है । आप न्युज पेपर राजदंड इस्लामी माहनामा फलाहे इस्लाम चला रहे है ।

इस तरह दीनके काम में तीनो भाइ याने पीर शफीयुल्लाह, पीर मो.मदनीमीयां (संपादक), पीर युसुफमीयां ने अपने अपने जीम्मे एक -दुसरे का काम एक जी जां, एक साथ मीलकर (तीन-तार-एक साथ) करते रहे । खानकाहो व दीन दुन्यवी तरक्की करते करते बिल आखीर ता.21-7-2007 को में खुद (संपादक) कुछ मजबुरी बरदास्त न आने की वजह से अपने भाइसे अलग हो गये खैर हर वकत नइ बात सोच दिलाता है । खुद मुख्तार होकर वो चेलेन्ज बील आखीर पा लीया जो जीसके लिये निकाला गया था । अलहम्दो लिल्लाह तीसरे भाइ पीर सैयद मो.युसुफमीयां ने इल्म बीरपुर लुणीशरीफ, जोधपुर, टंकारीया, मद्रसों व दारुल उलुमोंसे लीया । इन्होने भी अपने नाना के मुरीदैन व मोतकीदेन से रिश्ते बनाये रख्खे आज अपनी तरहा दीन का काम अंजाम देते है । इनकी शादी अहमदआबाद के नशरीनबीबी बीन्ते छोटुमीयां कादरी नडीआद के रहेनेवाले है खानदाने कादरीय्या में की है ।

ता.29-05-2006 को निकाह कीया गया इन्के 1 बेटा पीरजादा हामीदअकमल है 1 बेटी का नाम हामेदाबीबी है । बेटा इंग्लीश मीडीयममें लुणावाडा में पढ़ते है, बेटी छोटी है । हजरत पीर सैयद अल्हाज कमरुद्दीन दादा सहाबने ता.17 जुलाइ इ.स.2007 मु.चां 6 हि.स.1429 खिलाफतो व इजाजतो से नवाजा था । मेरी दो बहेने है कुरेशाबीब व आयेशाबीबी है । दोनों का निकाह 30-5-1999 को हुवा था । पहेली बहन के बेटे का नाम शहाबुद्दीन बेटी का नाम मैमुनाबीबी है ... पिरजादा रियाजुद्दीन जमालुद्दीन से हुवा (ये संपादक के बीवी के सगे भाइ है) दुसरी बहनके 2 बेटे - 1) बाकीर अहमद 2) मोहंमद शैलानी और 1 बेटी अशियाबीबी है । इन्होका निकाह पीरजादा शकील अहमद महमुदमीयां से हुवा है । मगर कुछ ना इन्साफी की वजहसे करीब 4 सालसे अहमदआबाद अपने भाइ (संपादक) के अपने बच्चोंके साथ रहेते है अल्लाह तआला अपनी मदद फरमाये (आमीन)

हजरत पीर सैयद मौलाना शाह अल्हाज कुत्बेजमां ख्वाजा अब्दुलरझझाक बिन शाह सहाबमीयां रहमतुल्लाह अलयहे (संपादक) के नाना हुजुर थे । आपकी पेदाइश 5-8-1900 सालमें हुइ थी । इल्मे दीन वालिद, चाचा से और आपके ससुर हजरत पीर सैयद हाफेज व मोहद्दीस अल्लामा अश्शाह वलीओ कामील मोहद्दिसे गुजरात जैनुद्दीन बीन इल्मुद्दीन बिन कमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे से अरबी, फारसी की सनद ली । बादमें मुरीद

व खलीफा भी इन्होंके थे। आपकी बीबी का नाम सैयेदा जैनबबीबी था। आपके 17 औलादे हुइ थी। जीनमें एक बेटे हजरत पीर सैयद मौलाना अब्दुलकादीर (मामुजान संपादक के थे) पैदाइश 3-2-33 सुब्ह 5 बजे मु.चांद 8 सफर हि.स.1352 जुम्आ के रोज पैदा हुवे। जवानी की हालतमें वफात पा गये थे। इल्मे दीन सुरत दारुल उलुम से हांसील कीया था उस वकत सारी पढ़ाइ सुन्नी अकाइद से दी जाती थी बादमें वहाबीयत की तरफ ये मद्रसे हो गये है। उनके बाद मेरी वालेदा माजेदा सय्यिदा, उम्मुलखैर आमेनाबीबी हुवे अकेले जीन्दा रहे। उनका निकाह ता.8-5-1961 में पीरजादा सैयद फतेहमुहंमद बीन शाह सैयद मौलाना शहाबुद्दीन बिन जमालुद्दीन बीन कमालुद्दीन से हुवा था। नाना हुजुर हजरत अब्दुलरजाक रहमतुल्लाह अलयहे ने मेने आगे लिख्खा है उसी तरहा बीरपुर (घांचीवाड) साठंबा, टींटोइ, हलदरवा, मनुबर, शेरपुरा वगेरे इमामत का फरीजा निभाया था। लेकीन आप खुद मुख्तार जीन्दगी पसंद करते थे। बीरपुर शरीफमें आपने चाय की होटल के बाद साबुन का कारखाना भी कीया था। जीसमें मेरे चाचा और दिगर हजरात भी काम करने आते थे। मुंबइ में सात रास्ते की जगह और तारदेव में भेंसो की तबेले व दुध का वेपार भी कीया खेती भी बीरपुर शरीफ करते थे। इसके बावजुद इल्मी खानकाही काम बजा लाते दीनी और दुन्यवी मामलातमें कायदे कानुन में बढचढकर आप हिस्सा लेते इसी लिये दरगाह शरीफ हजरत ख्वाजा महमुद दरियाइ बी-387 ट्रस्ट रजी. ता.29-12-1953 खेडा और मस्जीदे चाहेलदा (कस्बा मस्जीद) बी-333 के बानी-ए ट्रस्टी रहे। आपकी महेनतसे और दुरोदराज का काम करने की वजहसे इनके बाद मेरे पास बीरपुर शरीफके इन तमाम कामो का आपके हाथो किया था। पेपरवर्क का एक बडा दस्तावेजी खजाना मौजुद है। अल्लाह तआला आपकी मगफेरत फरमायें। नाना हुजुर अकेले होनेके बावजुद अपने हर काममें कामीयाबी पाइ उसकी वजह आप नेक सच्चे खानकाह की बका व इजजतो अजमत को बचाने के लिये काम करते रहे लेकिन एक आदमी कब तक गलत लोगो से मुकाबला करता रहे। आप जवानीमें भी अपने वालिद चाचा और ससुर के मुरीदीन मोतकीदैन की मसनद पर सजजादानशीनी पर फाइज थे। आप बीरपुर शरीफमें उस जमानेमें पहेले अैसे पीर थे जो साबरकांठा, बनासकांठा, अहमदआबाद, भरुच, पंचमहाल, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र के गांव में जीन जीन इलाकोमें गये वहां आपही मकबुल हुवे थे। आप कदावर और मजबुत जीस्म के थे लीला अमामाशरीफ और शेरवानी अकसर इस्तेमाल करते बडे महेमान नवाज थे। मुरीदोंको अपने घर के कुवे से पानी खीचकर खुद नहलाते, सांप, बिच्छु वगैर के जहर उतारनेमें बडी महारत हांसील थी। बंदे संपादकने कइ बार देखा है आपने अपने चहीते मुरीद जनाब हाजी अहमद

वली पटेल मु.मोसम, ता.वागरा, जी.भरुच को बडी करामत बताइ उसकी चश्म दीद आज उनकी बीबी हजीयाणी आइशाबीबी हाजी अहमद पटेल करीबन 90 सालकी उम्रमें जीन्दा है। बंदे (संपादक) को दो साल से याद करती थी उस लिये दो माह पहेले रुबरु उनको इन्हीके दामाद का गाव मु.डैरोल, ता.भरुच जाकर मीला था। उन्होने कइ बार मुजे मेरे भाइ, मेरी वालेदा और इन्की औलादो को बताते है की मु.मोसम की जमीन एक गैर मुस्लीम गरासीया की थी वो सारी करीब 800 विघा जमीन हाजी अहमद रखना चाहते थे मगर वो गरासीया के पास जाते लेकीन वो कोइ भी मुस्लिम को देने को तैयार न था और कहेता था की में इस गांव में मुसलमान बसने न दुंगा। ये सुनकर जनाब हाजी अहमद वली पटेल सहाब अपने पीरो मुर्शीद के पास बीरपुर आये आप ने कहा कोइ बात नहीं अल्लाह त्आला अपना फजलो करम करेगा, आप वापस जाओं और इसकी जमीन के कोइ भी हिस्सावाली जमीन से एक मुट्ठी मीट्टी लेकर वापस मेरे पास आ जाओ। वेह मीट्टी लेकर आये आपने 11 दिन रात प्रेमगली पहाड पर आते जाते उस पर कुछ पढकर दम करते थे। 12वें दिन हजरत अहमद पटेल सहाबको कहा, जाओ ये मीट्टी आप जहां से लाये थे वहां जाकर वापस डाल दो अल्लाह त्आला जल्द करम फरमायेगा। कुछ वकत गुजरनेके बाद वही गरासीया जनाब हाजी अहमद वली पटेल सहाब को सारी जमीन देने आ गया था। अलगरज हजरत की पेशनगोइ के मुताबिक आपने इसी गांव में मस्जीद की बुनीयाद रख्खी और जनाब पटेल हाजी अहमद वली की तीन बीबीयोंसे कसीर तादाद में औलाद हुई। जो ये बात की आज भी शहादत देती है ये है अल्लाह वालोंकी अल्लाह त्आलाके दिन की बका अजमत सदाओ इस्लाम बुलंद करनेकी जिन्दा करामत। आपके बेशुमार वाकीयात है आपने 1965 में हज की, इन्ही के साथ (अहमद वली पटेल) और दिगर मुरीदैन के साथ की थी। आप बडे इबादत गुजार नमाज के पाबंद जिक्र हंमेशा अल्लाहुं अल्लाहुं झबां पर रहता था। मेरी परवरीश और मेरा जिम्मा इन्ही के जीम्मे था कयुंके यह घरमें कोइ बच्चा न था। मेरी नानी मां सय्यिदा हजीयाणी, आलीमा जैनब बीबी बिन्ते जैनुद्दीन अलयहीर्रहमा देखभाल करती थी। मेरे ही सामने मेरी नानी मां वालदि और नानाजान का इन्तेकाल हुवा था। हजरत नाना जानकी वफात मु.चांद 26 जिल्कद, हि.स.1397 इ.स.9-11-1977 के रोज हुवा था। कयुंके मेरी नानी मां सय्यिद हजीयाणी झैनबबीबी हाजी अब्दुलरजजाक की इन्तेकाल चांद 25 शाबान ही.1396 अं.ता.8-9-1976 के दिन हुवा था। फकीर वालदि 21 झिलकद हि.स.1396 बरोज इतवार ता.14-11-1976 को, ये तीनों एक सालके अंदर इन्तेकाल फरमा गये थे उस वकत मेरी उम्र करीब 10 सालकी थी।

रेहलतनामा हजरत मौलाना हाफिज सैयद जैनुद्दीन मोहद्दीसे गुजरात वल्द इल्मुद्दीन साहब दरियाइ हन्फीयुल कादरीयुल चिश्तीयुल सहरवर्दी हाश्मी रहमतुल्लाह अलयहे (ये संपादक के वालिदा के सगे नाना हुझूर है)

(1) हम्द के लायक है वो जीसने जहांन पैदा किया और मोहंमद मुस्तुफा सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम को रुतबअे आला दिया।

(2) सौंप के नजम जहाने मेहबुब अपना कर लिया। अल्लाह अल्लाह अे शफीउलमुजनेबीन खैरुलवरा।

(3) हम गरिबो को तुम्हारा हे फकत अब आशरा दिनका सर सबज गुलशन देख लो मुरजा गया।

(4) शाह शमसुल आरेफीन महमूद महेबुबे खुदा खते गुजरातमें मशहुर व मआरुफ अवलिया।

(5) कस्बअ बीरपुर जीन्के नुर से था बा सफा हाये प्रगामे अजल उनके खलफ को आ गया।

(6) यानि जैनुद्दीन भी अब चल बसे दारे बका और फिर सर सबज गुलशन दिन का मुरजा गया।

(7) थे अमीर का बली शाह खुरासान उनके पीर पाक दिल पाकिजा तीनत शाह नैक खुरद शन जमीर।

(8) फैज से थे उनके जैनुद्दीन एक बद्रे मुनीर साहबि उस्ताद व रंगे मा आरिफत मैं बैनजीर।

(9) हाये पैगामे कजाअे उन्को भी युं आ गया दिन का सरसबज गुलशन यक बयक मुरजा गया।

(10) अबरे गम सारे जहान पर युं छा गमा किया कयामत आ गइ किया हसर बरपा हो गया।

(11) जीस तरफ देखो बस एक तुफाने गम सा आ गया असके खुन आंखो में है अल्लाह ये किया हो गया।

(12) मौत का पैगाम जैनुद्दिन को भी आ गया दिन का सरसबज गुलशन ही मगर मुरजा गया।

(13) किया अचानक या इलाही ये मुसीबत आ गइ मौत किसकी जो ये रंजो अलम बरसा गइ।

(14) आफताबे दिन पर बदली सी ये कया छा गइ रुअे अनवर किसका छिपने से शबेगम आ गइ।

(15) मौत का पैगाम जैनुद्दीन को भी आ गया दिन कासरसबज गुलशन यक ब यक मुरजा गया।

(16) खलक रोती है इधर और इस तरफ फरजन्दो जन आप कया जाते है सब को छोड कर असली वतन।

(17) हम से आखिर किस तरह उठेगा ये रंज व महन हाये दुनिया मरकजे आफाते सदर रंज व फतन।

(18) मौत का पैगाम जैनुद्दीन को भी आ गया। मजहब व मिल्लत का गुलशन ही मगर मुरजा गया।

(19) कब मीलोगे और कहां इतना तो फरमा दो जरा चहरे अनवर को फिर लिल्लाह दिखला दो जरा।

(20) फिर दिलो को आतिशे उलफत से गराम दो जरा बे करारो को तसल्ली देके समजा दो जरा।

(21) अल्लाह अल्लाह तमु को पैगामे कजा कयो आ गया, गुलशने मिल्लत शगुफता हो के फिर मुरजा गया।

(22) उमर सब जिकरे इलाही में गुजारी आपने कर दिया एक इल्म का सर चश्मा जारी आपने।

(23) जाहिलो की जींदगी यानी सुधारी आपने कैसे उमदा हाफिज और बनवाये कारी आपने।

(24) अल्ला अल्लाह उनको पैगामे कजा कया कया आ गया, दीन का सर सबज गुलशन ही मगर मुरजा गया।

(25) मुर्शीद आलिमे मोहद्दिस और मुकर्रर आप थे, हाफिजे कुर्आन थे इस पर मुफस्सिर आप थे।

(26) आलिमो और फाजिलो में सबसे बरतर आप थे, फजल और हिकमत की दुनिया मै भी रहबर आप थे।

(27) मौत का पैगाम जैनुदिन को भी आ गया, दिन का सर सबज गुलशन यकब यक मुरजा गया।

(28) एक आलिम किस कदर नामी गिरामी चल बसे, पैशवाओे खलक और मजहब के हामी चल बसे।

(29) औलिया व अंबिया मशहुर व नामे चल बसे, चल बसे हां आरजी भी और दवामी चल बसे।

(30) मौत का पैगाम जैनुद्दीन को भी आ गया। गुलशने मजहब शगुफता हो के फिर मुरजा गया।

(31) जुम्आ का दिन और वो खुत्बा सुनाना आप का, वो रजजब की पहेली और मीम्बर पै जीना आपका ।

(32) सुरे रहेमान से जुम्आ पढाना आपका, अल्लाह अल्लाह पर असर अंदाज रोअना आपका ।

(33) किया कहे मंजर हमारे सामने किया आ गया, गुलशने मिल्लत ही गोया यक बयक मुरजा गया ।

(34) थी रजजब की चौथी और था रोज भी इतवार का, गश जो आया को युं मौत के आसार का ।

(35) हाये वकते असर चल बसना मेरे सरदार का कया गुलाम अहमद ना सीना शक हो मुज नाचार का ।

(36) मौत का पैगाम जैनुद्दिन को भी आ गया । गुलशने मजहब शगुफता होके फिर मुरजा गया ।

ये रहमलतनामा हझरत पीर सैयद मौलाना गुलाम अहमद दरियाइ बीरपुरीने आपके वफात पे लिख्खा था ।

★★★★★
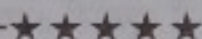
हिजरी साल की इब्तेदा

इस्लाम के आगाझ से पेहले अरबस्तानमें तारीख और साल याद रखने के लिये कोइ खास तरीका अमलमें नहीं था । जब अमीरुल मुअमेनीन हझरत उमर रदियल्लाहो तआला अन्होको हिसाब व खुतूत लिखते वकत खास तारीख केलेन्डर की झरुरत महसूझ हुइ, तब आपने सहाबाओ किराम रिदवानुल्लाहे तआला अलयहिम अजमइन के साथ गुफतगू फरमाइ । इस सिलसिलेमें हझरत अली कर्रमल्लाहो वज-हुल करीमने ये मश्वरा दिया के, पयगम्बरे इस्लाम हुझूर नबीओ करीम सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमने मककाशरीफसे मदीनाशरीफ हिजरत फरमाइ, ये वाकेआ तारीखे इस्लाममें अेक खास अहमियत रखता है और मदनी ताजदार सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमके हिजरत फरमानेके बाद ही झियादा तादादमें लोग इस्लाममें दाखिल होने लगे और इस्लामको सरबुलंदी हांसिल हुइ । इस लिये इस अझीम वाकेआ यानी हिजरतको इस्लामका इब्तेदाइ साल करार दिया जाओ ।

इस तरह हझरत अली कर्रमल्लाहो वज-हहुल करीम के मश्वरेसे और तमाम सहाबाओ किराम रिदवानुल्लाहे तआला अलयहिम अज-मइनकी इत्तेफाकी रायसे इस्लामी सालकी शुरुआत हिजरत के सालसे हुइ ।

मोहर्रम हिजरी सालका पहेला महीना था । इस लिये माहे मोहर्रम से पेहली हिजरीकी शुरुआत हुइ ।

दुआ-अे महमूदी

ताजुल मोहक-केफीन, कुदवतुल-वालेसीन, शम्सुल-आरेफीन, मुरशीदे-इन्शांजो, महेबुबे-इलाही, कुत्बे रब्बानी, सुल्तानुल अवलीया सैयदना शाह ख्वाजा महमूद महेबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाहे अलयहे हर फर्ज नमाझ पढने के बाद रबकी बारगाहमें आझीजानां हकीर, गरीब, लाचार होकर रब्बे करीम की हुझूर ये दुआ-अे महमूदी पळ्हा करते थे । ये दुआ पढनेसे दिल में अजब कैफियत मीलती है । लिहाजा रुहानी इल्म तलाश करनेवालो को अकसर ये दुआ अे महमूदी पळ्हना चाहीये । हर फर्झ नमाझ के बाद अल्लाह त्आला की बारगाहमें ये दुआ कबुल हो । आमीन ।

इलाही तौबाह तौबाह
अल्लाह में तौबा करता हुं मेरी गुनाहो की
इलाही तौबाह तौबाह
अल्लाह में तौबा करता हुं मेरी गुनाहो की
तौफीक नेक बख्श इलाही,
अल्लाह नेक तौफीक दे
बखशीन्दे अे तुंइ खताइ,
गुनाहोंकी बख्शीश करनेवाला तुं ही है
मन मीस्कीन गरीब बन्द अे गदाइ
में तेरा गरीब, लाचार बंन्दा हुं
मन खुदा खुदरा न शना खतम
मैंने अपने आपको ही जाना नहीं
गाहे तुखमे नेकी न काश तम
मेने कभी नेकी का बीजा बोया ही नहीं
अज गेर तुं रोजी अे न धशतम
तेरे अलावा और कोइ भी मुझे रोझी देनेवाला नहीं
गेर शरअे आ अे खुद करदम
शरिअत के खिलाफ ही मेने काम कीया है
मन भी तरसम अझ तु हरदम
तेरे से में हंमेशा डरता हु
मन खुदरा बतो सुपर दम
मैंने अपने आपको तेरे ही हवाले कीया है
अझ हीर सो हवा न रसतम
नफस के अहेसान मेने छोडे नहीं है
दील खुद बादो ने बस्तम

मेरे दिल जो मकरुहात है उसे मैंने देखा है

सर गरदा बतु हसतम

तेरे (अहकामात) के में खिलाफ गया हुं

बकुशा अे दर तुं रहेमानी

तेरा रहमानी दरवाजा मेरे लीये खोल दे...!

बरमाझ मक्र शयतानी

शयतान के मक्र फरेब से मुझे बचा

बर नामे तुं जीन कुरबानी

तेरे नाम पर मेरी जान कुरबान है

नामे इसयान वकते जुवेद

मेरे आमालनामा गुन्हा का कयामत के दीन

कुन करम कून नदअे बश वेद

मेरे उपर (करम, रहम) करनेवाले

बाद अुबा के महमूद बगोयद

करम फरमान की वजह ये है की महमूद दुआ करता है

शज्रअे आलिय्या कादिरिय्या शाहीय्याह दरियाइय्याह

(1) इलाही बहुर्मते रह्मते आलम हज्रत अह्मदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम (12 રબીઉલ અવ્વલ)

(2) इलाही बहुर्मते हुजूर सय्यिदुल अवलिया असदुल्लाह मौलाअे काइनात अली मुर्तजा कर्रमल्लाहु वजहहू (21 રમઝાન)

(3) इलाही बहुर्मते ख्वाजा हसन बसरी रदियल्लाहु अन्हु (17 મુહર્રમ)

(4) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा हबीब अजमी रदियल्लाहु अन्हु (3 રબી. આખર)

(5) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा शैख दाउद ताइ रदियल्लाहु अन्हु (27 રબી આખર)

(6) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा मारुफ करखी रदियल्लाहु अन्हु

(7) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा सिर्री अस्सकती रदियल्लाहु अन्हु

(8) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा अस्सय्यिदुत्ताइफा अबुल कासिम जुनैद बगदादी रदियल्लाहु अन्हु

(9) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा शैख अबू बकर शिब्ली रदियल्लाहु अन्हु

(10) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा अब्दुल वाहिद यमनी रदियल्लाहु अन्हु

(11) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा शैख अबुल हसन अली हंकारी रदियल्लाहु अन्हु

(12) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा अबू सइद मुबारक अली बिन हुसैन मख्जूमी रदियल्लाहु अन्हु

(13) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा शैख अबू मुहम्मद मुहिय्युद्दीन सय्यिद अब्दुल कादिर गौसे आजम जिलानी रदियल्लाहु अन्हु

(14) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा शैख अली हद्दाद रदियल्लाहु अन्हु

(15) इलाही बहुर्मते हज्रत शैख अफलह रदियल्लाहु अन्हु

(16) इलाही बहुर्मते हज्रत शैख कुत्बुल यमीन इलल गैब इब्ने जमील रदियल्लाहु अन्हु

(17) इलाही बहुर्मते हज्रत शैख फाजिल बिन इसा रदियल्लाहु अन्हु

(18) इलाही बहुर्मते हज्रत शैख मुहम्मद उबैद गौसी रदियल्लाहु अन्हु

(19) इलाही बहुर्मते हज्रत शैख जलालुद्दीन हुसैन अल मश्हूर मख्दूम जहांनिया जहां गश्त रदियल्लाहु अन्हु

(20) इलाही बहुर्मते हज्रत शैख सद्रुद्दीन राजू कत्ताल रदियल्लाहु अन्हु

(21) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद बुरहानुद्दीन कुत्बे आलम बुखारी रदियल्लाहु अन्हु

(22) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद सिराजुद्दीन शाहे आलम बुखारी रदियल्लाहु अन्हु

(23) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हमीदुद्दीन चाहेलदाह आरिफ बिल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(24) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह महमूद महबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रदियल्लाहु अन्हु

(25) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद लाड मुहंमद शैखुल इस्लाम रदियल्लाहु अन्हु

(26) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह प्यारुल्लाह नुरुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(27) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाहे आलम वलीयुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(28) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद मर्दहक अलहादीया अलाउद्दीन रदियल्लाहु अन्हु

(29) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह सहाब हबीबुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(30) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह मीठा झुल उला हबीबुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(31) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाहे आलम अलाउद्दीन रदियल्लाहु अन्हु

(32) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद अबुल जब्बार वलीउल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(33) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह कमालुद्दीन नुरल ऐन रदियल्लाहु अन्हु
(34) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी सय्यिदी शमशुद्दीन रदियल्लाहु अन्हु
(35) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी कुत्बेझमाँ अब्दुलरझझाक महेबुबे हक रदियल्लाहु अन्हु
(36) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह कमरुद्दीन नुरुल ओलीया मद्दजील्लहु आली
(37) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह मुहम्मद मदनी गोफरलहुं

शज्रअे आलिय्या सुहरवर्दिय्याह - शाहीय्याह दरियाइय्याह

(1) इलाही बहुर्मते सरवरे काइनात हुजूर अह्मदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम
(2) इलाही बहुर्मते अमीरुल अवलिया सय्यिदुल अस्फिया मौलाअे काइनात अलिय्ये मुर्तजा रदियल्लाहु अन्हु
(3) इलाही बहुर्मते ख्वाजा हसन बसरी रदियल्लाहु अन्हु
(4) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा अब्दुल वाहिद बिन जैद रदियल्लाहु अन्हु
(5) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा फुजैल बिन अयाज रदियल्लाहु अन्हु
(6) इलाही बहुर्मते सुल्तान इब्राहीम इब्ने अद्हम बल्खी रदियल्लाहु अन्हु
(7) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना मारुफ करदखी रदियल्लाहु अन्हु
(8) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना सकती करखी रदियल्लाहु अन्हु
(9) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना अबुल कासिम जुनैद बगदादी रदियल्लाहु अन्हु
(10) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना मुम्शाद अली दीनोरी रदियल्लाहु अन्हु
(11) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना शैख अबू अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु
(12) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना शैख वजहुद्दीन रदियल्लाहु अन्हु
(13) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना जियाउद्दीन अब्दुल काहिर अबुननजीब सुहरवर्दी रदियल्लाहु अन्हु
(14) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना शैखुल शुयूख शहाबुद्दीन मुहम्मद उमर सुहरवर्दी रदियल्लाहु अन्हु
(15) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना बहाउद्दीन जकरिय्या मुल्तानी सुहरवर्दी रदियल्लाहु अन्हु
(16) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना जलालुद्दीन हुसैन हैदर मीर सुर्ख बुखारी रदियल्लाहु अन्हु

(17) इलाही बहुर्मते हज़्रत सय्यिदुना सुल्तान अह्मद अल कबीर बुखारी सुहरवर्दी रदियल्लाहु अन्हु
(18) इलाही बहुर्मते हज़्रत सय्यिदुना जलालुद्दीन हुसैन मख्दूम जहानियां जहां गश्त बुखारी रदियल्लाहु अन्हु
(19) इलाही बहुर्मते हज़्रत सय्यिदुना नासिरुद्दीन मह्मदू नौशा बुखारी रदियल्लाहु अन्हु
(20) इलाही बहुर्मते हज़्रत सय्यिदुना बुरहानुद्दीन अब्दुल्लाह कुत्बे आलम बुखारी रदियल्लाहु अन्हु
(21) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद सिराजुद्दीन शाहे आलम बुखारी रदियल्लाहु अन्हु
(22) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हमीदुद्दीन चाहेलदाह आरिफ बिल्लाह रदियल्लाहु अन्हु
(23) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह महमूद महबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रदियल्लाहु अन्हु
(24) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद लाड मुहंमद शैखुल इस्लाम रदियल्लाहु अन्हु
(25) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह प्यारुल्लाह नुरुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु
(26) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाहे आलम वलीयुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु
(27) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद मर्दहक अलहादीया अलाउद्दीन रदियल्लाहु अन्हु
(28) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह सहाब हबीबुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु
(29) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह मीठा झुल उला हबीबुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु
(30) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाहे आलम अलाउद्दीन रदियल्लाहु अन्हु
(31) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद अबुल जब्बार वलीउल्लाह रदियल्लाहु अन्हु
(32) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह कमालुद्दीन नुरल अैन रदियल्लाहु अन्हु
(33) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी सय्यिदी शमशुद्दीन रदियल्लाहु अन्हु
(34) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी कुत्बेझर्मां अब्दुलरझझाक महेबुबे हक रदियल्लाहु अन्हु
(35) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह कमरुद्दीन नुरुल ओलीया मद्दजील्लहु आली
(36) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह मुहम्मद मदनी गोफरलहुं

शज्रऐ आलिय्याह चिश्तिय्याह शाहीय्याह दरियाइय्याह

(1) इलाही बहुर्मते सरवरे सरवरे आलम नूरे मुजस्सम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम

(2) इलाही बहुर्मते मौलाऐ काइनात हजरत अलिय्ये मुर्तजा रदियल्लाहु अन्हु

(3) इलाही बहुर्मते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी रदियल्लाहु अन्हु

(4) इलाही बहुर्मते सय्यिदुना हबीब अजमी रदियल्लाहु अन्हु

(5) इलाही बहुर्मते सय्यिदुना दाउद ताइ रदियल्लाहु अन्हु

(6) इलाही बहुर्मते सय्यिदुना मारुफ करखी रदियल्लाहु अन्हु

(7) इलाही बहुर्मते सय्यिदुना सिर्री सकती रदियल्लाहु अन्हु

(8) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना अबी अली रुदबारी रदियल्लाहु अन्हु

(9) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा सइदुद्दीन हुजैफा रदियल्लाहु अन्हु

(10) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा अमीनुद्दीन हुबैरतुल बसरी रदियल्लाहु अन्हु

(11) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा अबू इस्हाक शामी रदियल्लाहु अन्हु

(12) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा अबू अह्मद चिश्ती रदियल्लाहु अन्हु

(13) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा अबू मुहम्मद अब्दाल रदियल्लाहु अन्हु

(14) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा अबू नासिरुद्दीन अबू यूसुफ चिश्ती रदियल्लाहु अन्हु

(15) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा कुत्बुद्दीन मौदूद चिश्ती रदियल्लाहु अन्हु

(16) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा हाजी शरीफ जिन्दानी रदियल्लाहु अन्हु

(16-A) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा उस्मान हरवनी रदियल्लाहु अन्हु

(17) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा सुल्तानुल हिन्द मुइनुद्दीन हसन गरीब नवाज चिश्ती रदियल्लाहु अन्हु

(18) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा कुत्बुद्दीन बख्तियार काकी चिश्ती रदियल्लाहु अन्हु

(19) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा शैखुल इस्लाम बाबा गंज शकर रदियल्लाहु अन्हु

(20) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा सय्यिद मुहम्मद निजामुद्दीन अवलिया मह्बूबे इलाही रदियल्लाहु अन्हु

(21) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा मख्दू नसीरुद्दीन रौशन चिराग दहेल्वी चिश्ती रदियल्लाहु अन्हु

(22) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा सय्यिद जलालुद्दीन हुसैन मख्दूम जहांनिया जहांगश्त रदियल्लाहु अन्हु

(23) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिद नासिरुद्दीन नौशा बुखारी रदियल्लाहु अन्हु

(24) इलाही बहुर्मते हज्रत ख्वाजा सय्यिद बुरहानुद्दीन कुत्बे आलम बुखारी रदियल्लाहु अन्हु

(25) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद सिराजुद्दीन शाहे आलम बुखारी रदियल्लाहु अन्हु

(26) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हमीदुद्दीन चाहेलदाह आरिफ बिल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(27) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह महमूद महबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रदियल्लाहु अन्हु

(28) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद लाड मुहंमद शैखुल इस्लाम रदियल्लाहु अन्हु

(29) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह प्यारुल्लाह नुरुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(30) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाहे आलम वलीयुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(31) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद मर्दहक अलहादीया अलाउद्दीन रदियल्लाहु अन्हु

(32) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह सहाब हबीबुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(33) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह मीठा झुल उला हबीबुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(34) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाहे आलम अलाउद्दीन रदियल्लाहु अन्हु

(35) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद अबुल जब्बार वलीउल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(36) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह कमालुद्दीन नुरल अैन रदियल्लाहु अन्हु

(37) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी सय्यिदी शमशुदीन रदियल्लाहु अन्हु

(38) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी कुत्बेझमाँ अब्दुलरझझाक महेबुबे हक रदियल्लाहु अन्हु

(39) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह कमरुद्दीन नुरुल ओलीया मद्दजील्लहु आली

(40) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह मुहम्मद मदनी गोफरलहुं

शज्रअे आलिय्याह मग्रिबिय्याह शाहीय्याह दरियाइय्याह

(1) इलाही बहुर्मते हज्रत सरवरे काइनात हुजूर अह्मदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम

(2) इलाही बहुर्मते हज्रत मौलाअे काइनात हज्रत अलिय्ये मुर्तजा रदियल्लाहु अन्हु

(3) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना हसन बसरी रदियल्लाहु अन्हु

(4) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना हबीब अजमी रदियल्लाहु अन्हु

(5) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना दाउद ताइ रदियल्लाहु अन्हु

(6) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना अबी उस्मान मग्रिबी तराबलसी रदियल्लाहु अन्हु

(7) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना अबुल कासिम गुरगानी रदियल्लाहु अन्हु

(8) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना अबू बकर नस्साज रदियल्लाहु अन्हु

(9) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना इमाम अह्मद गजाली रदियल्लाहु अन्हु

(10) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना अबुल फजल बगदादी रदियल्लाहु अन्हु

(11) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना अबुल बरकात समानी रदियल्लाहु अन्हु

(12) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना अली मस्उद उन्दुलुसी रदियल्लाहु अन्हु

(13) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना शैख अबी मदाइन शुअैब रदियल्लाहु अन्हु

(14) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना अबी मुहम्मद मग्रिबी रदियल्लाहु अन्हु

(15) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना अबुल अब्बास कुरैशी रदियल्लाहु अन्हु

(16) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना मुहम्मद कीमी मग्रिबी रदियल्लाहु अन्हु

(17) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना शैख बाबा इस्हाक खटवी मग्रिबी सुहरवर्दी रदियल्लाहु अन्हु

(18) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना शैखुल इस्लाम सिराजुस्सिद्दीकीन मख्दूम शाह अह्मद गंज बख्श रदियल्लाहु अन्हु मग्रिबी सरखेजी

(19) इलाही बहुर्मते हज्रत सय्यिदुना बुरहानुद्दीन अब्दुल्लाह कुत्बे आलम बुखारी रदियल्लाहु अन्हु

(20) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद सिराजुद्दीन शाहे आलम बुखारी रदियल्लाहु अन्हु

(21) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हमीदुद्दीन चाहेलदाह आरिफ बिल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(22) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह महमूद महबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रदियल्लाहु अन्हु

(23) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद लाड मुहंमद शैखुल इस्लाम रदियल्लाहु अन्हु

(24) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह प्यारुल्लाह नुरुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(25) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाहे आलम वलीयुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(26) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद मर्दहक अलहादीया अलाउद्दीन रदियल्लाहु अन्हु

(27) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह सहाब हबीबुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(28) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाह मीठा झुल उला हबीबुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(29) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद शाहे आलम अलाउद्दीन रदियल्लाहु अन्हु

(30) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद अबुल जब्बार वलीउल्लाह रदियल्लाहु अन्हु

(31) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह कमालुद्दीन नुरल ऐन रदियल्लाहु अन्हु

(32) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी सय्यिदी शमशुद्दीन रदियल्लाहु अन्हु

(33) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी कुत्बेझर्मां अब्दुलरझझाक महेबुबे हक रदियल्लाहु अन्हु

(34) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह कमरुद्दीन नुरुल ओलीया मद्दजील्लहु आली

(35) इलाही बहुर्मते अस्सय्यिद हाजी शाह मुहम्मद मदनी गोफरलहुं

शज्रऐ तैयबा मशाइखे सिल-सिलाअे आलिया कादरिया अशरफिया

बख्श दे या रब ! शफीअे दो-सरा के वास्ते
सरवरो सैयद मोहम्मद मुस्तफा के वास्ते
दीनो दुनियाकी मेरी सब मुश्किलें आसान कर
हझरते मौला अली मुश्किल-कुशा के वास्ते
दूर कर दे मेरे मौला ! मुझसे हर कर्बो बला
सिब्ते अस्गर उस शहीदे करबला के वास्ते
मेरे सजदोंको भी या रब ! कर दे तू झैनुल इबाद
हजरते सजजाद रअसुल अवलिया के वास्ते
इल्म हो बेहरे अमल और हर अमल हो झेरे इल्म
हजरते बाकर इमामो पेशवाके वास्ते
सिद्क हो गुफतारमें और सिद्कही किरदार में
जअ्फरे सादिक शहे सिद्को सफाके वास्ते
सर झुका दूं जब कहीं सुन लूं तेरा प्यारा कलाम
मू-सअे काझिम शहे सब्रो रझाके वास्ते
दे बुलन्दी मुझको भी अपने रझाअे खास की
शाह हमनामे अलीअे मुर्तझा के वास्ते
कर अता हुस्ने अमल के साथ हुस्ने खातमा
शाह हसन बसरी अमीरुल अवलिया के वास्ते
मेरा सीना हो इलाही ! और हो तेरा हबीब
शाह हबीब अजमीकी शाने दिलरुबा के वास्ते
या इलाही ! रंगे दाउदीमें मुझको रंग दे
हजरते दाउद ताइ खुश-नवा के वास्ते
या इलाही ! अम्र बिल मारुफ की तौफीक दे
हजरते मारुफ कर्खी रहनुमा के वास्ते
या इलाही ! मुजपे हर सिर्रे खफी कर दे जली
शाह सिर्री सकतीके कश्के हकनुमा के वास्ते
या इलाही ! हो जुनूदे हकमें मेरा भी शुमार
हजरते शैखे जुनैदे पारसा के वास्ते
या इलाही ! दौलते सिद्को सफा कर दे नसीब
हजरते बू-बक्र शिब्ली बा-सफाके वास्ते

अेक देखूं अेक जानूं अेकका होकर रहूं
अब्दे वाहिद शाह तमीमी की सखाके वास्ते
दीनो दुनियाकी अता कर दीजिये सब फर्हतें
हजरते बुल्फर्ह तर्तूसी बाखुदाके वास्ते
या इलाही ! हुस्ने निय्यत हुस्ने इमां कर अता
बुल्हसन हन्कारिअे पीरे हुदाके वास्ते
आकेबत मेरी मुबारक हो मेरी दुनिया सइद
बू सइदे शाह मुबारक बाखुदाके वास्ते
अल्गियासो अल्गियासो या गियासुल आ-लमीं
गौसे आझम बन्दअे कुदरत-नुमा के वास्ते
झिक्रे हद्दादीकी जल्वारेझियां कर दे अता
शाह अली हद्दाद मेरे पेशवाके वास्ते
बख्श दे या रब ! मुजे दारैन की सारी फलाह
उस अली अफलहके जोहदो इत्तिके वास्ते
मुजपे या रब ! जूमकर बरसे तेरा अब्रे करम
हजरते बुल्गैस उस बेहरे अताके वास्ते
फझल फर्मा और मुर्दा दिलको दे दे झिंदगी
इब्ने इसा फाझिले हक-आशनाके वास्ते
रात-दिन बरसा करे झौके इबादतकी घटा
शाह उबैदे गैसिअे उस बे-रियाके वास्ते
दीनको मेरे जलालत कर अता अय झुल्जलाल !
शाह जलालुद्दीं बुखारी रहनुमा के वास्ते
दोनों आलम की शराफत बख्श दे मौला ! मुझे
अशरफे सिम्नां मेरे गौसुल-वराके वास्ते
आंखमें दे नूर मेरे रिझ्क में दे बरकतें
नूरे अैने अब्दे रझझाक अवलिया के वास्ते
मेरी दुनिया हो हसीं और मेरा उकबा हो हसीं
शाह हसन सरदारे बझमे अतकियाके वास्ते
दिलमें हो इश्के मोहम्मद, लबपे हो हम्दे खुदा
शाह मोहम्मद अशरफे शाहे हुदाके वास्ते
मेरा सर हो और सौदाअे मोहम्मद मुस्तफा
हजरते सैयद मोहम्मद अवलियाके वास्ते
राहे हकमें मुजको जांबाझीका जझबा कर अता

शाह हुसैने सानीके सब्रो रजाके वास्ते
बरकतों से भर दे मेरा का-सओ दिल अय करीम !
हझरते अब्दुर्रसूले पारसाके वास्ते
जिस तरफ देखूं नझर आओ मुझे नूरे खुदा
शाह नूरुल्लाह नूरुल अस्फियाके वास्ते
मेरा सर हो और हो सर-मस्तीअे हुब्बे इलाह
शाह हिदायतुल्लाह मेरे नाखुदाके वास्ते
बस इनायत ही इनायत हो मेरे अल्लाह की
शाह इनायतुल्लाहकी महरो वफाके वास्ते
या इलाही ! रात दिन मुझ पर रहे अशरफ का फझल
नझरे अशरफ सैयदे ओहले सफाके वास्ते
अय खुदा ! तेरी नवाझिश हर घळी मुज पर रहे
शाह नवाझ उस साहबे जूदो सखाके वास्ते
या इलाही ! उम्र भर खाके दरे अशरफ रहूं
शाह सिफत अशरफके जोहदे बे-रियाके वास्ते
मस्त कर दे मस्त रख और अपने मस्तोमें उठा
हजरते सैयद कलन्दरकी विलाके वास्ते
या इलाहल आ-लमीं ! मन्सब मेरा कर दे बुलंद
सैयदे मन्सबअलीकी इर्तिकाके वास्ते
हुस्ने पाकीझा अता कर अशरफी दरबारसे
हजरते अशरफ हुसैने मुकतदाके वास्ते
या इलाही ! हम्दसे तेरी कभी गाफिल न रख
शाह बू अहमद हमारे पेशवाके वास्ते
मुझपे अहमदका हो साया मुझपे अशरफका करम
सैयदी मुख्तार अशरफ बा-सफाके वास्ते
1- ओक अख्तर क्या है सारे सुन्नियोंको बख्श दे
या इलाही ! शा-फओ रोझे जझाके वास्ते
2- या इलाही तु मुझे राहे शरीअत पर चला
आलिमें दीं, शाहे कमर रहनुमा के वास्ते

या इलाही हर दम मदीने की फिझा में रहें
शाहे मदनी गुलामे मदनी "मदनी" के वास्ते
(1-2 की जानीबसे खिलाफत मीली हय)

शजरऐ कादरिय्याह, सुहरवर्दिय्याह, दरियाइय्याह असलोहा, साबेतुंव फर ओहा फिस्समाअ

या इलाही मुस्फा और मुरतुझा के वास्ते
सरवरे शोहदा हुसैने मुकतदा के वास्ते
शाह जैनुल आबेदीं वबाकरेबा जाफर इमाम,
मूसा काझिम अली मूसा रझाके वास्ते
तकीयो नकीयो असकरी महेंदीये आखीर झमां
जाफरो सानी अली, अस्कर उला के वास्ते
शाह अब्दुल्लाह व ओहमदशाह व महंमद शाह
शाह मुहंमद और जाफर पेशवाके वास्ते
शाह अली और शाह जलाल व अहेमद
आरीफ कबीर जलालुद्दीन मखदूमुल वरा के वास्ते
नासीरुद्दीन हजरते महमूद और बुरहानुद्दीन
अलमुकल्लीब कुत्बे आलम पारसा के वास्ते
शाहे शाहाने जहां सैयद मुहंमद नामवर
अलमुखातीब शाहेआलम बासखा के वास्ते
आलमे इसरारे यझदानी उसतादे दोजहां
शाह हमीदुद्दीन इमामे असफीया के वास्ते,
हजरते महमूद शमसुल आरेफीन महेबूबेहक
शैखुल इस्लाम प्यारे बासखा के वास्ते,
शाहे आलम और मियां अलहादीआ मरदे खुदा
शाह साहब और शाह मीका झुल उलाके वास्ते
शाह आलम ओहले दिल और हजरते अब्दुलजबार
और कमालुद्दीन शाहे खुशलेकाके वास्ते
शाह हाजी जमालुद्दीन व शाह मौलाना शहाबुद्दीन के वास्ते
और शमसुद्दीन मुजरिमके गुनाह कर मआफ
अकबरो असगर ये सारे अवलिया के वास्ते
और ये बेकस रझा और आमिलकी दुआ
कर कुबूल शोहदाओ शाहे करबला के वास्ते
या इलाही तु मुझे राहे शरीअत पर चला
हझरते शाहे कमर कमालुद्दीन के वास्ते
या इलाही हर दम तेरी यादमें रख मदनी बनाकर
दीने इस्लाम के गाझीओके वास्ते

अय मुरीदो तुम ये शजरेको पळो शामो सबाह
खुश वसीला है येही यवमे जझाके वास्ते
गुलामी में मुझे अपना शहा हर दम बदम रखीओ
इनायत करके मुझ उपर सदा झेरे, कदम रखीओ
मेहरे पीदरी न मुझसे तोळीओ, मत कम रखीओ
गुलाबुद्दीन पर हर वकत अपना बस करम रखीओ
के बख्शिशसे तुम्हारे मुझको है उम्मीद बस आइ,
हुवा आफाक में झाहिर मुबारक नाम दरियाइ
(रदियल्लाहो तआला अन्हो)

खत्मे ख्वाजगान

खत्मे ख्वाजगान जीसे आम तौर पर लोग ख्वाजा का खतम कहते है। ये खत्म पढनेसे मुसीबतें आफतें और परेशानीयां दुर करने के लिये बीमारीओ से शिफा पाने के लिये हाजतो व मुरादो पुरी करनेके वास्ते मुजर्रब व मकबुल नियत व इरादासे अेक दिल से पळहा जाये तो हर मकसदमें अल्लाह तआला अपना फजल-करम इनायत खत्म पाक की दुआसे हांसिल होता है।

सभी सिलसिलेके बुजुर्ग व अेहलुल्लाह तरीकते, सोहरवर्दिय्याह, कादरीय्याह, चिश्तीय्याह व नकशबंदीय्याह बुजुर्गोका हंमेशा ये रिवाज रहा है ये खत्म सिलसिलेके हर अेक बुर्जुगोने अलग-अलग तरकीबो व तरीकेसे ये खत्म पळहा है।

हजरत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजीरे मककी रहमतुल्लाहे अलयह जीयाउल कुलुब ये है खत्म शरीफ तहेरीर किये है। ये खत्म शरीफ अेक से जयादा इन्शान मीलकर पळह शकते है। गीनती के लिये बदाम या खजुर के बी रख्खे तो जयादा अच्छा है। हर शख्स इसमेंसे थोळे-थोळे दाने लेकर पूरे पढे और इसके बाद जो सिलसिलेके तरीके से पळहा वो सिलसिलेके बुजुर्गोका वास्ता बनाकर दुआ की जायें। दुआमें आजेझी किब्लारुह बेठकर पांचो वकत की नमाज पाबंदीसे पढकर हर नमाज के बाद या हर बळे मौके पे खुदा पाकके पास अपने हर जाइज मकसद के लिये पळहा जाये और दुआ हर वकत करनी चाहीये। हदीसे शरीफ : में है कि अल्लाह तआलासे अपनी हाजतो के लिये दुआ किया करो कयुं के दुआ मोमीन (मुसलमान) को हथियार है।

खत्मे ख्वाजगान

(नकशबंदीयह, तरीके मुताबीक)

सबसे पहले बावुजु बाअदब सब खत्म पळहनेवाले बेझानुं बेठें। फीर हाथ उठाकर इन्नल्लाह व मलाइकतहु युसल्लुना अलननबी... वसल्लीमुं तस्लीम... दुरुद शरीफ पढें।

1. बिस्मिल्लाह के साथमें अलहम्दो की सुरत पुरी	7 मरतबा
2. दरुद शरीफ	100 मरतबा
3. बिस्मिल्लाह के साथमें अलमनशरहकी सुरत पुरी	79 मरतबा
4. बिस्मिल्लाह के साथमें कुलहुवल्लाह की सुरत पुरी	1000 मरतबा
5. बिस्मिल्लाह के साथमें अलहम्दो की सुरत पुरी	7 मरतबा
6. दरुद शरीफ	100 मरतबा
7. या काझीयल हाझात	100 मरतबा
8. या काफीयल मुहीम्मात	100 मरतबा
9. या दाफीअल बलीय्यात	100 मरतबा
10. या हल्लल मुश्कीलात	100 मरतबा
11. या राफीअद दरजात	100 मरतबा
12. या शाफीयल अमराझ	100 मरतबा
13. या मुजीबुद्द अवात	100 मरतबा
14. या अरहमर्राहिमीन	100 मरतबा
15. दुरुद शरीफ	100 मरतबा

हो शके तो या मुफत्तेहल अबवाब और या मुसब्बेबल असबाब ये दो भी 100-100 मरतबा पळहें। ये खत्म शरीफ बाद हक तआलासे जयादा आजीझ होकर अपनी हाझत, आरजुकी दुआ करे, की या अल्लाह हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमके सदके सभी नबी व औलीया गौषे पाक व खास कर नकशबंदी बुजुर्गोके वसीले मेरी ये हाजत व मुराद पुरी फरमा दे। आमीन।

खत्मे ख्वाजगान

(चिश्तियह, तरीके मुताबीक)

सबसे पहले बावुजु बाअदब सब खत्म पळहनेवाले बेझानुं बेठें। फीर हाथ उठाकर इन्नल्लाह व मलाइकतहु युसल्लुना अलननबी... वसल्लीमुं तस्लीम... दुरुद शरीफ पढें।

1. दरुद शरीफ 10 मरतबा
2. ला मलजअ वला मनजअ मीनल्लाहे इल्ला इलैहे 360 मरतबा
3. बिस्मिल्लाह के साथमें अलमनशरहकी सुरत पुरी 360 मरतबा
4. ला मलजअ वला मनजअ मीनल्लाहे इल्ला इलैहे 360 मरतबा
5. दरुद शरीफ 10 मरतबा

अल्लाह तआला से फीर आजेझी के साथ अपनी हाजत व मुराद के लिये दुआ करें की या अल्लाह तआला या अरहमर्राहेमीन अपने फझलोकरम से व हुजुर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम व तमाम नबीयो खुल्फाओ राशेदीन, अहेले बैत, आले पाक के सदके व तुफैल व तमाम औलिया गौषे आजम व खासकर चिश्तियाह बुर्जुगो ओलीयाओके सदके तुफैल या अल्लाह तआला मेरी/हमारी दुआ कुबुल फरमा। खास कर ख्वाजा मोइनुद्दीन गरीब नवाझ रहमतुल्लाह अलयहे के सदके में। आमीन।

खत्मे ख्वाजगान

(कादरियह व सुहरवर्दीयह तरीके मुताबीक)

1. बिस्मिल्लाह के साथमें अलमनशरहकी सुरत पुरी 111 मरतबा
2. सुबहानल्लाह वलहम्दो लिल्लाह वला इलाह इल्ललाह वल्लाहु अकबर वला हवला वला कुव्वता इल्ला बील्ला हील अलीय्यील अझीम 111 मरतबा
3. सूरओ यासीन 1 मरतबा
4. बिस्मिल्लाह के साथमें अलमनशरहकी सुरत पुरी 141 मरतबा
   (खत्म तबील (बडा) पळहना है तो
   अलम नशरह की सुरत अेक हजार बार पळहनी चाहिये)
5. दरुद शरीफ 111 मरतबा

ये खत्म शरीफ पूरा होनेके बाद दुआ मांगे की अल्लाह तआलासे आझेझी व खास सारीसे अपनी हाजत पेश करे के या अल्लाह या रहीम, या करीम अपने खास फजलसे हुझूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के व तमाम अंबिया रसुलों नबीयों के सदके व खास तौर पर गौषे आजम व शेख सहाबुद्दीन शोहरवर्दी, कादरी सोहरवर्दी व तमान बुजुर्गो रहमतुल्लाहे अलैयहीम अजमईन के सदके, तुफैल मेरी हमारी, दुआ कबुल फरमा। हमारी हर मुराद, मकसद, तमन्नाओ व हाजतो को कबुल फरमा आमीन। या रब्बुल आलमीन।

नोट : ये अमल (संपादक) ने अपने साडे चार साल जेल (सलाखों) में बा कायदा हर बडे दिनमें पळहा करते थे इसकी बरकत से हमें रिहाइ नसीब हुई।

खत्मे ख्वाजगान

पहले हाथ उठाकर अेक बार सुरअे फातेहा पळहें फीर सुरअे फातेहा बिस्मिल्लाह मीलाकर सात बार, फीर दरुद शरीफ 100 बार, सुरअे अलम नशरह बिस्मिल्लाह मीलाकर 79 बार, सुरअे इख्लास बिस्मिल्लाह मिलाकर 1001 मरतबा, सुरअे फातिहा बिस्मिल्लाह मिलाकर 7 मरतबा दरुद शरीफ 100 बार पळहें। फातिहा पळहकर खत्म का सवाब वो बुजुर्गों की रुहो को बख्शे जीसकी जानिब खत्नाशरीफ सिलसिलेके बुजुर्गों को वास्ते की निस्बत की थी। फीर अल्लाह तआलासे वो बुजुर्गों का वसीला बनाकर आझीझाना अपने नेक मकसद के लिये दुआ करें। जब तक मकसदमें कामियाबी न मिलें वहां तक ये खत्म पळहते रहें इन्शाअल्लाह मकसद हांसिल होगा। आमीन।

सिलसिल-अे सुहरवर्दिय्या के अश्गाल

सुहरवर्दिय्या सिलसिले के मशाइख और सूफिया अपने तमाम अवकात तकसीम कर के आमाल बजा लाते है।

खिर्का :

मुर्शिद (यानी पीर) अपने मुरीद को खिर्का अता करता है। खिर्के की बयअत की सनद हजरत जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलयह तक मुसल्सल है।

सुब्ह सादिक के अवराद :

सुब्ह सादिक तुलूब हो तो शहादत की तजदीद करे। उसके बाद सुब्ह की दो रकअत सुन्नत अदा करे। पहेली रकअतमें अल हम्दु के बाद कुल या अय्युहल काफिरुन और दूसरी रकअतमें कुल हुवल्लाहु अ-हद पढे। उसके बाद कम अज कम एक सौ बा : सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अझीमि व बिहम्दिही अस्तग्फिरुल्लाह पढे।

फिर जिस कदर मुम्किन हो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्लम पर दुरुद भेजे और सुन्नतो फराइज के दरमियान दुआअे मासूरह पढे।

इसके बाद फर्ज नमाज बा-जमाअत पढे। फर्जों के अपने मामूल के अवरादो वजाइफ पढे। बाद अजां ला इला-ह इल्लल्लाह का जिक्र करे।

सर को नाफ पर जुकाअे। येही तहूरे नफस की जगह है और वहां से ला इला-ह निकाले और दाअें कंधे पर लाअे। अल्लाह तआला की अजमतो किब्रियाइ का अेतिराफ करे और इल्लल्लाह की जर्ब पूरी हिम्मतो कुव्वत से कल्बे सनोबरी पर मारे। ताके आतिशे जिक्र की हरारत दिल को पहोंचे और दिल पर वको चरबी पिघल जाअे। इस चरबी के जलने और पिघलने की एक

मख्सूस बू (गंध) है। इस आग के पीछे एक नूर है। इस नार और नूर का असर गाढे खून पर होता है। जो हयाते हैवानी का सर चश्मा है।

हाजिर करना :

जाकिर को चाहिये के नफस यानी सांस को दिल पर हाजिर करे और इल्लल्लाह का एक दाइरह बनाऐ। जो कल्ब को मुहीत करे। इस में नफी के मुकाबले अस्बात की तरफ जियादह तवजजोह दी जाती है।

मुब्तदी (नया सालिक) ला इला-ह इल्लल्लाह से मुराद ला माबूद इल्लल्लाह की निय्यत करे।

मु-त-वस्सित : ला मत्लूब इल्लल्लाह या ला मकसूद इल्लल्लाह की निय्यत करे।

मख्लूक की महब्बत दूर करने के लिये ला महबूब इल्लल्लाह घ्यानमें रख्खे। कश्फो करामात के इझहार से परहेज करे।

बाज सूफियाअ जिस दम से सांस को दिल पर हाजिर कर के बा काइदह गिन्ती करते हैं येह हिन्दू जोगियों का तरीका है इससे बचना चाहिये।

मजकूरह मुराकिबह :

जब सूरज चढ जाऐ तो सालिक को चाहिये के जिक्र को छोडकर मजकूर (अल्लाह) का मुराकिबह करे और तसव्वुर करे के अल्लाह तआलाकी रहमत मेरी जात के जर्रे जर्रे को घेरे हुऐ हैं। इस तरह सालिक हकक तआला के कुर्ब का इद्राक हांसिल करे।

तिलावते कुर्आने मजीद :

बाद अजां दो रकअत इश्राक पढे। जिक्र करे और दुआ मांग कर कुर्आन मजीद की तिलावत करे। यूं समजे के गोया अल्लाह तआलाके सामने पढ रहा है। या अल्लाह तआला अपना कलाम खुद बोल रहा है। कुर्आन मजीद की तिलावत इन्तिहाइ हुजूरिये कल्ब, सफाऐ बातिन, अदबो ऐहतिराम और खुशूओ खुजूअ नीज इन्किसारी के साथ करे। एक या दो पारे तिलावत करे। इस सिलसिलेमें चिल्ला कशी भी की जाती है। और तमाम नमाजें (तमाम फर्ज नमाजें) नवाफिल, तहजजुद, इश्राक, चाश्त, अव्वाबीन और दीगर नमाजें पढता रहे और जिक्रो अजकार और विर्दो वजाइफ भी करता रहे।

चिल्ला कशी :

सालिक को मस्जिद में बैठ कर जुमला वजाइफ, जिक्र-अजकार, मुराकिबा और तिलावते कुर्आन मजीद का चिल्ला भी इस सिलसिलेमें करवाया जाता है। (सुलूके सूफिया : सफहा नं.112-113, मुसन्निफहू : सुल्तानुल आरिफीन हजरत सुल्तान बाहू रहमतुल्लाह अलयहे)

बझमें ख्वाजा दरियाइ कमीटी

1. बझमे दरियाइ कमीटी
2. झेरे सरपरस्त - पीर सैयद अल्हाज कमरुद्दीनबावा अे. दरियाइ अशरफी
3. झेरे निगरां : पीर सैयद अल्हाज शफीयुल्लाह बावा अेफ. दरियाइ अशरफी

झेरे माहतहेत :

4. पीर सैयद अल्हाज फीरोजमीयां जी. दरियाइ
5. पीर सैयद अल्हाज मोहंमद मदनी बावा अेफ. दरियाइ अशरफी
6. पीर सैयद अल्हाज अब्दुल मुस्तुफामीयां अे. दरियाइ अशरफी
7. पीर सैयद मोहंमद युसुफबाबा अेफ. दरियाइ अशरफी

कमीटी की जानिब से किये गये कामो की फेहरिस्त

1. लंगर खाना - ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे 15 रुमो के साथ 55-60-1 मंझीला (हाजीपीर कमरुद्दीन बावाकी कोशीषोंसे)
2. 300 फूट कोट मलीक कब्रस्तानसे दादी अम्मा दरगाह शरीफ तक 200 ट्रेकटर माटी पूरके पक्का पथ्थर का कोट बनाया व सीडी ताके कब्रस्तान पानीमें बह न जाये
3. दरगाह शरीफ मस्जीदे जाअे-दरियाइ 60-50 नया इबादतखाना
4. पानी की टांकी व मस्जीदसे लेकर दादा अम्मा दरगाह व उपरवाले बुलंद गेट तक करीब 800 फुट पाइप लाइन डाली (पीर कमरुद्दीन बावाने अपने मर्हुमा वालिदा के इसाले सवाब के लीये करवाया था)
5. पूरानी जामे-दरियाइ मस्जीद उपर टाइल्स करीब 70000 रुपिये तक का खर्च
6. जामे-दरियाइ के नये दरवाजे में सलीया व सिमेन्ट करीब 10000 रु. तक का
7. ख्वाजा अबुदादा रहमतुल्लाह अलयहे की दरगाहसे दादा अम्मा की दरगाह शरीफ तक पकका मट्टी डालके रोड बनाया करीब 150000 रु खर्च
8. मस्झीदे जामे-दरियाइ में कारपेट लीले कलर का करीब 70000 रु. जनाब हाजी याकुब सालेह सांसरोदवाला व दिगर हजरात की जानीब से (हस्बे फरमाइश : हजरत पीर सैयद हाजी मोहंमद मदनीबावा)
9. रमजान रोझा व इफतार के लिये सायरान
10. चार सेट टाइम बीग वोच दरगाह व मस्जीद के लिये

11. नमाजकी तकवीम : बराये-इसाले सवाब मर्हुम पीर सैयद फतेहमहंमद साहेबमीयां दरियाइ कादरी रहमतुल्लाह अलयहे (वालीद : संपादक)
12. तकवीम
13. कुरआने पाक की पारा की फ्रेम
14. मस्जीदे जामे दरियाइ दुल्हा की तकतीयें
15. टोइलेट-सखावें पूराने में पाइप लाइन पानी की
16. नये पाखाने 30 के लीये - 170000 से बनाये गये व पाइपलाइन पानी के लिये
17. ख्वाजा दरियाइ दरगाहशरीफमें नइम प्लेट नाना हुजुर हजरत हाजी सैयद पीर, अबदुलरझझाक रहमतुल्लाह अलयहे के इसाले सवाब (रु.7000)
18. दरगाह शरीफमें कलर सालमें लगभग 35000 रु. 1997 की सालमें
19. दरगाहशरीफमां 500+500 ग्राम और 1 किलो चांदीके छत्तर बबलाभाइ बम्बइवालोकी तरफसे (फरमाइश : बझमे दरियाइ कमीटी)
20. दरगाह शरीफ मेइन गुंबद तले अंग्रेजी नेम प्लेट रु.5000
21. लंगरखाना उर्स दरमियान 1993 से चांद 8 से 11 तक
22. पाणी डेमाइवाला परीवार - 1975 से उर्स दरमियान चांद 7 से 13 तक मुफत पाणी पीलाया जाता है
23. मस्जीदके नये होलके लिये पथ्थर आरस के रु.80000 ट्रक भाडे के साथ जनाब सेठ, परमार, उस्मानभाइ गुजरात फ्रीझ अहमदाबाद (हस्बे फरमाइश : हजरत पीर सैयद हाजी मदनीबावा)
24. ख्वाजा सरकार अबुदादा रहमतुल्लाह अलयहे नया मजार शरीफ तामीर 7 लाख रु तक खर्च करके जनाब ताब हजरत हाजी पीर नजुजमीयां हाजी बाबा मु. मुंबइ तरफसे (होटल अल सउदीया मु.माहिम)
25. काजीखान व हजरत शाह अली रजा रहमतुल्लाह अलयहे दरगाह का आगेका काम (जनाब मर्हुम पीर सैयद फतेमहंमद बावा दरियाइ के हाथों 1975 में)
26. 2001 के सालमें पानीसे मुसाफीरखानमें नुकशान होनेसे लंगरखान की जानिबसे रु.30000 का सामान.

इस तरहा खानकाहे दरियाइ की बेपनाह दिलसे बजमें दरियाइ कमीटी की जानिबसे काम किया गया था। अल्लाह तआला ख्वाजा दरियाइकी इस सखावती काम को कबुल करे आमीन।

दरबारे ख्वाजा दरियाइ सरकारमें हाजरी देनेवाले बादशाह - राजा - महाराजा - नवाब - सुलतान - वजीरो, उमरावो, मुख्यमंत्री, एम.पी., एम.एल.ए. वगैरह की जानकारी

1. सुलतान महमूद बेगडा — बादशाह (गुजरात) — 4 मरतबा
2. सुलतान मुजफ्फरशाह हलीम (मुरीद व खलीफा दरियाइ सरकार के) — बादशाह (गुजरात) — 6-7 मरतबा
3. सुलतान बहादुरशाह — बादशाह (गुजरात) — 3 मरतबा
4. वझीरे खजाना सुलतान इमदादुल मुल्क (मुरीद व खलीफा, समधी दरियाइ सरकार) — कई मरतबा
5. हुमायु बीन बाबर मुगल — बादशाह (दिल्ही) — 2 मरतबा
6. अकबर बादशाह मुगल (3 बार शाह जमालुल्लाह दरियाइ से मुलाकात की) — बादशाह (दिल्ही) — 1 मरतबा
7. वीरापगी राजा (पादला)-बीरपुर — कई मरतबा
8. वीरभद्र सिंह सोलंकी (ढबलपुर-लुणावाडा) — कई मरतबा

9. इसके अलावा मुगल सलत्नतके बादशाह उमरा, वझीरो ने कइ बार हाजरी दी है। उनकी सनद और अंग्रेज हुकुमत की औरसे जारी रख्खी गइ जमीनोके सनद से पता चला है कइ बार अंग्रेज हुकुमतके कलेकटर और गर्वनरो ने हाजरी दी है। बालासिनोर, जुनागढ, पालनपुर, वगैरा के नवाबो ने भी हाजरी दी है। बल्की बालासिनोर नवाब सहाबने करीब 60-70 साल तक दरगाह शरीफ का वहीवट भी किया है।

उसके बाद हिन्दुस्तानकी आझादीके बाद यहां के हस्बेझैल नेताओने भी हाजरी दी है।

(1)	हितेन्द्र देसाइ	मुख्यमंत्री गुजरात	1 मरतबा
(2)	शंकरसिंह वाघेला	मुख्यमंत्री गुजरात	2 मरतबा (संपादक की हाजरीमें)
(3)	अहमदभाइ पटेल	एम.पी. गुजरात	1 मरतबा
(4)	सैयद शहाबुद्दीन	एम.पी.	1 मरतबा
(5)	शांतीलाल पटेल	एम.पी. गुजरात	1 मरतबा

दरबारे ख्वाजा दरियाइ सरकारमें हाजरी देनेवाले बादशाह - राजा - महाराजा - नवाब - सुलतान - वजीरो, उमरावो, मुख्यमंत्री, अेम.पी., अेम.अेल.अे. वगैरह की जानकारी

1.	सुलतान महमूद बेगडा	बादशाह (गुजरात)	4 मरतबा
2.	सुलतान मुजफ्फरशाह हलीम (मुरीद व खलीफा दरियाइ सरकार के)	बादशाह (गुजरात)	6-7 मरतबा
3.	सुलतान बहादुरशाह	बादशाह (गुजरात)	3 मरतबा
4.	वझीरे खजाना सुलतान इमदादुल मुल्क (मुरीद व खलीफा, समधी दरियाइ सरकार)		कई मरतबा
5.	हुमायु बीन बाबर मुगल	बादशाह (दिल्ही)	2 मरतबा
6.	अकबर बादशाह मुगल (3 बार शाह जमालुल्लाह दरियाइ से मुलाकात की)	बादशाह (दिल्ही)	1 मरतबा
7.	वीरापगी राजा (पादला)-बीरपुर		कई मरतबा
8.	वीरभद्र सिंह सोलंकी (ढबलपुर-लुणावाडा)		कई मरतबा

9. इसके अलावा मुगल सलत्नतके बादशाह उमरा, वझीरो ने कइ बार हाजरी दी है। उनकी सनद और अंग्रेज हुकुमत की औरसे जारी रख्खी गइ जमीनोके सनद से पता चला है कइ बार अंग्रेज हुकुमतके कलेकटर और गर्वनरो ने हाजरी दी है। बालासिनोर, जुनागढ, पालनपुर, वगैरा के नवाबो ने भी हाजरी दी है। बल्की बालासिनोर नवाब सहाबने करीब 60-70 साल तक दरगाह शरीफ का वहीवट भी किया है।

उसके बाद हिन्दुस्तानकी आझादीके बाद यहां के हस्बेझैल नेताओने भी हाजरी दी है।

(1)	हितेन्द्र देसाइ	मुख्यमंत्री गुजरात	1 मरतबा
(2)	शंकरसिंह वाघेला	मुख्यमंत्री गुजरात	2 मरतबा (संपादक की हाजरीमें)
(3)	अहमदभाइ पटेल	अेम.पी. गुजरात	1 मरतबा
(4)	सैयद शहाबुद्दीन	अेम.पी.	1 मरतबा
(5)	शांतीलाल पटेल	अेम.पी. गुजरात	1 मरतबा

(6)	पीलुं मोदी	अेम.पी. गुजरात	1 मरतबा
(7)	नुरजहां बेगम साहीबा (बाबी)	धारासभ्य व मीनीस्टर	कइ बार
(8)	मानसिंह चौहाण	धारासभ्य व मीनीस्टर	कइ बार
(9)	इकबालभाइ पटेल	(दंडक गुजरात विधानसभा)	1 मरतबा
(10)	मुकेशभाइ शुकल	(खेडा जील्ला पंचायत प्रमुख)	कइ बार
(11)	आयेशा बेगम साहीबा	(धारासभ्य)	2 मरतबा

उपर के कम्र 2-4-6-7-8-9-10-11 की दरगाह शरीफ की जियारतके वकत संपादक ने ताअरुफ व उनके लीये देशकी तरककी के लिये दुआ भी की है

गुजरात सरकार के सचिव, उसके अलावा खेडा जील्ले के कलेकटर, डे.कलेकटर, मामलतदार, अेस.पी., डी.आइ.जी. और सरकार के अलग-अलग डीपार्टमेन्ट के अफसरान हाजरी देने आये है ।

ब मौका अे संदल व उर्स ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे में खिदमत देने वाले सखी हजरात

1. जनाब मलीक उस्मानशाह इनायतशाह सहाब की जानिबसे करीब 494 सालसे मुसलसल दरियाइ सरकारका पहेला सफेद गिलाफ नस्ल-ब-नस्ल आता है । संदल बाद वही पहेला गीलाफ पेश कीया जाता है ये अपने घरसें माथे पर रखे रहेते है । जब तक आपसे मांगा न जाये और संदल की रश्म पूरी ना हो वहां तक ये अपने सरपर ये गीलाफ रख्खे रहते है । इनकी ये खिदमत काबीले तारीफ है । अल्लाह तआला दरियाइ सरकार वली अे कामिल की दुआ से उनके मकसदमें कामीयाबी दे आमीन ।

2. करीब 150 साल से जनाब फतेहमहंमद रहेमुमीयां मुजावर व नगारची शेख मास्टर हाजी गुलामनबी व इनके फेमीली के लोग दरगाह शरीफ ख्वाजा महमूद दरियाइमें सफाइ का काम व नौबत बजानेका काम अंजाम देते है । इन फेमीलीओको भी दरगाह शरीफ की खिदमतके बदले जागीरी की सनदे अलगसे दी गइ है । ये जमीने आज भी इनके पास इस खिदमत के अवेज में मौजुद है ।

3. करीब 200 साल से अहमदआबाद के मोहंमदमीयां नबीमीयां गांधी और उनका फेमीली दरियाइ सरकार का संदल लेकर आता है और खिदमत अंजाम देते है । जीनमें आज जनाब मुस्ताकभाइ पुठेवाले और उनके तमाम भाइ-भतीजे ये खिदमत अंजाम देते है । दरियाइ करम जम के बरसे उनकी आलो औलाद पर आमीन ।

4. बालासिनोर नवाब सहाब की जानिब से करीब 150 सालसे जयादा सफेद व मखमल का गिलाफ मुबारक अपनी शानो शौकत के साथ खिदमतमें पेश करते है। जनाब नवाब सहाब की कोइना कोइ फेमीली के मेम्बर उर्स के दरमियान आकर अपने बुझुर्गोकी रश्म को अदा करते है। अल्लाह तआला उन्हे जझा-अे खैर अता करे आमीन।

5. डेमाइवाला परिवार (दुआ अे फतेह) करीब 40 साल से जनाब (1) मर्हुम हाजी अब्दुलभाइ वहोरा (2) जनाब मर्हुम अब्दुलगफुर वहोरा (3) जनाब आदमभाइ वहोरा (4) हजीयाणी राबेयाबीबी (5) जनाब फीरोजभाइ अेन्ड ब्रधर्स .... ये हजरात उर्स के दौरान सभी लोगो को फ्री में पानी तकसीम करते है। ये लोग 13 दिन रहकर अपना काम धंधा छोडकर अपने पीर के बताये नकसे कदम पर फ्री पानी पिलाने का काम अंजाम देते है (संपादक के वालिदने ये काम करवाया था) अल्लाह तआला ये काम पानी पीलाना में, पीलानेवालोको और पीनेवालोको सब्र, सलात, शुक्र अदा करनेकी तौफीक दे. और दोनो जहांमें बरकते रहमते शहीदे करबला व ख्वाजा महमूद दरियाइ के सदके मीले यही दुआ है आमीन।

6. जनाब बंसीलाल रामचंद्र पटेल मुंबाइवाले (मोटा गांव - राजस्थान)- संपादक व भाइओके मस्वरे से करीब 20 साल से फ्री उर्स ख्वाजा दरियाइ सरकारमें लंगरखाना खिलाते है। हिन्दु-मुस्लिम और तमाम कौम के लोग यहां अेक साथ बेठकर ख्वाजा दरियाइ लंगरखानमें खाते-पीते है। दादा दरियाइ और जयादा उनके काम ले।

7. बीरपुर के भावसार शशीकांतभाइ देवचंद्रकुमार - आखरी 7-8 साल से अेस.टी. बसस्टेन्ड से दरगाह शरीफ तक तमाम कोमके लोगों को लाने ले जाने दरगाह शरीफ तक तीन चार रिक्षा फ्री २ दीन तक रखते है।

8. शेख सलीमभाइ जमालभाइ आखरी 7 साल से दरगाह शरीफ के सामने फ्री पानी पिलाते है। अल्लाह तआला खिदमत कबुल करे आमीन।

9. खेडा जील्ला पंचायत की जानिब से 7 दिन फ्री मेडीकल टीम खिदमत में हाजरी देती है। उसके अलावा अेसटी डेपो बालासिनोर लुणावाडा, बायड, मोडासा बसो अेकस्ट्रा चलाने का भी काम करीब 30 सालसे चालु है। खेडा जील्ला पोलीस को भी दरगाह दर साल खिदमत ली जाता है। उसके अलावा विरपुर के हिन्दु-मुस्लिमो के यहां कोइना कोइ बहाने दरियाइ सरकार के महेमान आते है और तमाम कौमें अेक साथ अेक जुट होकर उर्स ख्वाजा दरियाइ सरकार 495 साल से मनाते आते है। फैझे दरियाइ जींन्दाबाद।

बीरपुर शरीफ एक नजर में
(आज और कल)

इतिहास की भौगोलिक नजर में गुजरात राजय के मध्य इलाकेमें आया हुआ खेडा जिल्ला (अब नया जीले का नाम महीसागर) का आखिर गांव जो मु.तेहसील बीरपुर शरीफ 23.11 उतर अक्षांश 73-29 पुर्व रेखांश पर आया हुवा है । तकरीबन पांच कीलोमीटर के घेराव में फैला हुवा है और इस गांवकी सरहदे पंचमहाल (गोधरा), साबरकांठा (हिंमतनगर), अरावल्ली (मोडासा) की सरहदे म्लिती है । स्टेट हाइवे से बालासिनोर और लीमडीया चोकडी जो स्टेट हाइवे ने.हा.नं.8 सीकस लेन से जुडा हुवा है । यह रोड हजरत सरकार ख्वाजा दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे की हद से गुजरता है । बिरपुर शरीफ दो भागमें बटा हुवा है । कयुंके बावरी नदी उपर से आती हुइ गांव के दो हिस्सोमें बाटती हुइ वापस मील जाती है । उत्तर की जानीब दरगाह तरफ का हिस्सा महमूदपुरा के नाम से बसा हुआ है और दुसरी जानीब यानी दक्षिण वाले हिस्से पे पुराना गांव विरपुर (बिरपुर) बसा हुआ है । एक हिस्सा पुराना और एक हिस्सा नये जमानेका डेवल्प करता हुआ लगता है । बिरपुर गाम-पंचायत से पेहचानी जाती है । तारीख 10-11-2013 इतवार के रेकोर्ड 2011 के मुताबीक बस्ती गीनती के हिसाबसे 10238 कुल बस्ती है । जीसमें पुरुषो की संख्या व स्त्रीओ (औरतो) की संख्या शामील है । गांव में 19 पशु धन की गिनती के हिसाबसे 1,198 है । जीसमें गाय, भेंस, वकरी, बैल वगेराह समावेश होते है । गाम पंचायत के मैम्बरोकी संख्या 19 है और एक सरपंच होते है । उसके 1+19=20 पुरुष-स्त्री होते है । उसमे हिन्दु व मुसलमान भाइ मेम्बर होते है । सरपंच मुस्लीम है । जनाब नइमुद्दीन अेफ. पीरजादा है । डे.सरपंच दीलीपभाइ शुकल है । गांव में कुओ 10 चेकडेम 4 हेन्डपम्प 45 तालाब 6, आंगणवाडी और सरकार मान्य सस्ते अनाज की दुकाने 3 है । गांव में मतदारो की संख्यामें पुरुष 2972 है और स्त्रीओ की संख्या 2884 = 5856 कुल मतदाता है । गांव मे (अ) वोर्ड से (फ) वोर्ड तक के मकान और दुकाने 2787 आइ हुई है । जीसमें हिन्दु और मुसलमान भाइओकी आबादी है । और उसमें 10 से 15 मुसलमानो की होलसेल दुकाने है । और छोटे-बडे केबीन तकरीबन 100 से 150 तक है । गरीबी रेखा के नीचे बीपीअेल कार्ड धारक के 1098 लोग रहेते है । गाम पंचायत 1-4-1961 से 1-8-2013 तक उसके अस्तित्वमें है । ये ग्राम पंचायतमें हिन्दु और मुसलमान सरपंचोने गांव की सेवा की है । अभी बिरपुर

शरीफ में 3 बडी मस्जीदे है। जहां पर जुम्आकी नमाज अदा होती है।और 2 छोटी मस्जीदे है। 4 मस्जीदे शहिदी हालतमें है। 2 बडी मस्जीदो के सुराग मिलते है। बिरपुर के मेन बजार में 50 मीटर के अंदर 2 बडी मस्जीदे है। सबसे पेहली मस्जीदे चाहेलदा है (कस्बा मस्जीद) गांव की मस्जीद की संगे बुनीयाद हजरत दरियाइ साहेब की वालीदे माजीद व पीरो मुर्शीद हजरत हमीदुद्दीन चाहेलदा आरिफ बिल्ला रहमतुल्लाह अलयहे ने बनाइ थी। ये मस्जीद में तकरीबन नस्ल ब नस्ल हमारे खानदान के आलीमो-फाजीलो ने 600 साल से जयादा इमाम व निजामत की है। जीसका ट्रस्ट नंबर बी-333 जील्ला खेडासे गुजरात वकफ बोर्ड में रजीस्टर है। दुसरी जानीब मस्जीद अलीफ (घांचीवाडा) में आइ हुइ है। इस मस्जीदमें मेरे नाना हुजुर हजरत पीर सैयद अल्हाज अब्दुल रजाक दरियाइ, कादरी, सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहेने तकरीबन 30 साल बिगर मावजेके मस्जीदमें इमामत का सरफ अंजाम दिया है। और नइ मस्जीद बनाने में भी आप हजरतने काफी मदद की और कराइ थी। इस मस्जीदे अलीफ की 10 साल पेहले शहीद करके नइ तामिर की उसकी संगे बुनियाद हजरत पीर सैयद अल्हाज कमरुद्दीनबावा अ. दरियाइ, अशरफी, कादरी के हाथो हुइ थी। जीसमें बिरपुर शरीफके तमाम पीरझादा गान हाजीर थे। इसमें मख्सुस तौर पर हजरत पीर सैयद सफीउल्लाहबावा, मदनीबावा, युसुफबावा और दिगर हजरातने भी अपने हाथो संगे बुनियाद में हिस्सा लीया था। अब ये दोनो मस्जीदे काफी बडी और खुबसुरत अंदाजमें बनाइ गइ है। जीसने मिनारे इस्लामकी बुलंदी की गवाही देते है और तीसरी बडी मस्जीद हजरत ख्वाजा मेहमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के आस्ताना के सामने है। इस मस्जीदकी संगे बुनियाद हजरत ख्वाजा महेमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के हाथो से तामीर कराइ थी और इस मस्जीद के लीये हजरत दरियाइ साहबने अपने जागीरीके गांव मुकाम कारंटा शरीफमें आपके अजदाद (परदादा) के मालीकी व जागीरी गांव के जंगलो से लकडा मंगाया जाता था। और लकडा लानेकी जीम्मेदारी हजरत ख्वाजा अबु मोहंमद रहमतुल्लाह अलयहे अंजाम देते थे। जो बेलगाडे और हाथीओ पर लकडे लाते थे। मस्जीद तामीरी के वकत मेन मोभ तकरीबन 3 गज या 3 फुट कम पडा था। ये मामला व मंजर हजरत जद्दे करीम ख्वाजा महेमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे के पास पहोंचा आपने फरमाया, आप सब लकडे के दुसरे छेडे के पास जाओ जो कम जगा है उस तरफ खडा रेहना है। जो मोभ लकडा कम था आपने कहा अल्लाह के हुकम से लम्बा हो जा और वैसा ही हुआ और इसी पे ही मस्जीद की छत बनी सुब्हानल्लाह ! अभी ये मस्जीद हमारी कौशिशो से तकरीबन 60x50 का नया हिस्सा बनाया गया है।

जीसमें हजरत पीर सैयद कमरुद्दीनबावा ने अपने हलके के लोगोंसे मदद व लिल्लाह करवाइ थी। जो तकरीबन 15 लाख के अंदर है और ये तमाम मस्जीदो में दुन्यवी तमाम लेटेस्ट (आधुनीक) फेसेलीटी वगेरा से भरपुर है। दो छोटी मस्जीदे हे जो एक नया बस स्टेन्ड हे उसके पास जमीयत पुरा (मुआडा) की मस्जीद है। दुसरी महमूद पुरा में आइ हुइ है। इस मस्जीदो में हमारे वालीदा-माजीदा सैयदा मख्दुमा उम्मुलखैर आमेनाबीबी अबदुलरजाक अलयहे रहमा जौजा (पत्नी) पीर सैयद फतेह मोहंमद रहमतुल्लाह अलयहे के इसाले सवाब के लीये 5000 रुपीये अदा कीये थे अल्लाह त्आला कबुल फरमाओ। इद की नमाझ पढने के लीये इदगाह लीमरवाडा रोड पर है। और एक मस्जीद दाउदी वोरा फीरके की है यह मस्जीद वाणीयावाड में आयी हुइ है। जो अभी हयात है लेकीन इसका कोट तुट चुका है। मस्जीद की काफी बे हुरमती होती है यह मस्जीद हिन्दु इलाकेमें है यह लोग इस मस्जीद की अदब करते है। सन 2002 के दंगो में भी इन लोगोने इस मस्जीदकी बेहुरमती नहीं की। इससे बडा एकता और भाइचारा की मिसाल कहां मिलेगी। बिरपुर शरीफमें चार दीनी मद्रसे आये हुवे है उसमें सीर्फ नाजरा कलासकी तामील ही मीलती है मगर सद-अफसोस के साथ लीखना पढ रहा है के इन्तीजामीया की जानीबसे कोइ भी मद्रसा तह-दील से इस्लामी उसुलोके तहत हमारे बच्चोके लीये कोइ ठोस दीनी-तालीम के लीये काम नहीं हो रहा। एक वकत था जहां से दिल्ही तक कोइ मशाइल की कमी होती तो यहां से राबता करके उस मशाइल का हल यहां के आलीमो व मुफतीओ और मोहद्दीस से कराया जाता था। अल्लाह त्आला वो दीन वापीस लौटा दे... आमीन। गांव में पंचायत घर, मामलतदार ओफीस, तालुका पंचायत, पोलीस स्टेशन, लायब्रेरी (यह लायब्रेरी के मकान के लीये जमीन खानवाद-ओ-दरियाइ के पीरजादा भाइओ की तरफ से तोहफे में दी हुइ है) जी.इ.बी. 66 केवी, टेलीफोन ओक्षचेन्ज, पोस्ट ओफीस, खानगी दवाखाने, होस्पीटले, सरकारी अस्पताल, सरकारी गेस्ट हाउस व पुराना गेस्ट हाउस तीन बडी हाइस्कुल जीसमें 1 से 12 कलास है। 1 पीटीसी कोलेज, आर्टस कोलेज, बी.ओड. कोलेज, मानव मंदीर, आश्रम शाळा, कन्या शाळा दो, तीन कुमार शाळा और एक उर्दु स्कुल और प्ले नर्सरी स्कुल है। इसके अलावा तीन बडे मंदीर एक जैन देरासर और एक स्वामीनारायण मंदीर है। चार पानी सप्लायकी बडी टंकी भी है। और दो अंडरग्राउन्ड टंकी भी है। और गांवमें अब गटरलाइन बन चुकी है। चार होल भी है जो हीन्दुभाइओके है। एक घांची जमातखाना (शेख जमात) का है और एक लंगरखाना जो दरगाह के करीब है। गांव बडा होनेके साथ, नया बस स्टेन्ड का इलाका नये जमानेका अत्याधुनिक शोभा-

साधनोसे भरी दुकान-बंगले और सोसायटी आइ हुइ है। नये बस स्टेन्ड के पास नइ सोसायटी बन चुकी है। इसमें एक मदनी पार्क नामसे सोसायटीकी संगे बुनियाद हुइ है। जीसकी संगे बुनियाद तकरीबन 1-3-2004 को मुज नाचीज (संपादक) के हाथो से हुइ थी। यहां तमाम प्रकार के व्हीकल बडे पयमाने पर घुमते है जो सोने पे सुहागा करते है। इस गांवमें छोटे-बडे गांव और शहरोसे तकरीबन 125 से जयादा लोकल-व-ओक्षप्रेस बसे आती-जाती है। गांवमें 98% आरसीसी के पकके रोड बने है। और ये तो हुइ एक तरफ की बात जो न लीखनी चाहीये लेकीन तारीख लीखनेवालोने हंमेशा इतिहास को सामने रख्खा है। हमारा मकसद तो ख्वाजा दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे की जात ही के लीये लीखना और समजाना है। मगर मैंने अपने बुजुर्गोंके नकशे कदम चलते हुओ यह लीख्खा है। आपके फारसी कलमी मल्फुजात (जीवन चरित्र) तोहफतुल कारी के संपादक हजरत सैयदना शाह मन्सुर बीन चांद मुहम्मद बीन हमीदुद्दीन चाहेलदा (रहमतुल्लाह अलयहे) की लीखने की पध्धती मेरी लीये गाइड लाइन बनी। आपने तोहफतुल कारी के मुसन्नीफ संपादक है। उन्होने यह किताब लीखनेकी शुरुआत हजरत औरंगझेब मोहयुद्दीन आलमगीर रहमतुल्लाह अलयहे के हुकुमत के दरम्यान लीखना शुरु कीया। और शेहझादा (लडका) शाहआलम बहादुर शाह पहेले के समय दरम्यान हिजरी सन 1119 इ.स. 1708 में यह किताब पुरी की थी। उन्होने अपनी यह किताबे उस जमानेके तमाम पहेलुओको सामील कर लीया था। जैसे के हिंद में कौन-कौन सी जगह राजा राज कर रहा है कीस तरह अनाज बोया जाता है कीस तरह के सिकके चलते है। इसी तरह तमाम विषयोकी आपने इस किताबमें शामील किया था। और इसी किताब को (फारसी) री-प्रिन्ट करने के लीये इन्डीया सरकारने पीर मुहम्मद शाह ट्रस्ट अहमदआबाद को ग्रान्ट दी थी। और इ.स.1996-97 को इस ट्रस्ट के साये तले पांचसो (500) कोपी छपी थी। यह कोपी (किताबे) हमने सो खरीद कर हमारे घरवालो को दी थी। इन लोगो का याने की पीर मोहंमदशाह ट्रस्ट और जनाब प्रो.बोन्बेवाला साहेब व प्रोफेसर महमूद हुसैन अब्बासी सहाब और प्रोफेसर महमूद हुसैन व झेड.ओ.देसाइ वगेरह का में तहे दिलसे शुक्र गुजार हुं के इन्होने हमारा खानदानी काम था जो हमारे लोग न कर शके वो हमे करके दे दीया। कयुंके हमारे खानदानी हजरातो के पास जो कलमी किताबे थी वो ना किसी को बताते थे न तो किसीको देते थे, कया मालुम अैसा करनेमें उन्हे कया लुत्फ मीलता था। में अपने खानदानवालो को इन किताबो को हांसील करनेके लिये देखने के लिये तरसता था, मगर वो न मील शकी। इसी तरह गुजरातके जयादातर खानदानवालोंने बडी-बडी

किताबे जो बुजुर्गोने हमारे लीये छोडी थी वोह अपने घरके अलमारीयों में बंध करदी थी और इसी वजह से एक कदीम इल्मी सरमाया दीमक खा गइ। **इसी लीये मुजे मजबुर होकर लीखना पडा है की पीरजादो को मीट्टी खा गइ, और किताबो को दीमक खा गइ।** अल्लाह सबको नेक तौफीक दे... आमीन। मैने उपर जो गांव का कुछ भौगोलिक जिक्र किया है वह उसीसे तोहफतुल कारीसे लीया था की मेरे पुरे हिंद व गुजरातको छोडकर कमसे कम बिरपुर शरीफका भौगोलिक बयान लीख शकुं। बजार के मेइन रास्ते से बाये हाथ से चलते खडीयात उतर कर ख्वाजा दरियाइ सरकारके वालीद की जीन्दा करामतवाली बावली नदी वाला पुल पर दरगाह शरीफकी हद शरु होती है। इसी नदी पर अब नया पुल बन चुका है पुराना पुल अब नदीमें दफन हो चुका है। यह नदी में एक जमानेमें शुध्ध घी मीलता (बहता) था। उसे लेकर जानेवाले लोग अब भी हयात है। लेकीन हाय रे बदकीस्मती अब पानी भी नहीं मीलता। ब्रीज पार करने के बाद नदी के मेइन दरवाजा 'बाबे ख्वाजा दरियाइ' है। यह चुना और इंटो से बना है। जो एक मंजीला है छत पर पतरे लगे हुओ है। जो लगभग 15 फुट चौडा और 35 फुट उंचाइवाला है। लेकीन अब नदी के अंदर आधा मट्टीमें दफन हो चुका है। यह गेट से उपर जाने के लिये तकरीबन 700 फुट के फासले पर और एक कदीम बुलंद दरवाजा है। इन दरवाजो के बीच तकरीबन 15 फुट चौडा पकका उंचाइ देता हुआ पगथीयोवाला रोड बना हुवा है। इसमें करीब 80 स्टेप (पगथीये) है जो बहुत खुबसुरत लगते है। इन दोनो साइडो पर उर्स ख्वाजा दरियाइ के दौरान दुकाने लगती है और उपर चलते दोनो साइड कब्रस्तान है। अब यह दरवाजा कुछ ना समज लोगोने अपनी मन चाही वहीवट के तहत कदीम इस दरवाजा तारीख में बदल दीया। वहां अभी नया गेट बनाने के लीये कुछ काम छोड दीया है खैर अल्लाह तआला बहेतर जाननेवाला है। अब कुछ उपरके हिस्सेका बयान बताने जा रहा हुं। यहां घन-घोर बडे-बडे पेड ठंडक देते है। जीनमें लीम, खीन्नी के पेड है। और यहां पर 500 साल पुरानी खानकाह दरियाइ सहाब की औलादवालो की है। अब हम मेइन दरगाह शरीफ की शहनमें है। इस शहन की पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की जानीब तीन गेट है। अब हम दरगाह शरीफमें आ चुके है। अब आपने आधुनिक जमानेसे संगे मरमरसे बना हुवा शहनमें दरवाजा तीनो पर कथ्थइ कलर की टाइल्स लगी हुइ है। सात सीडी चडते आपको ख्याल आयेगा की हम रुहानी व शाही दरबारमें आ चुके है और हमारी हाजरी नसीब लेकर लाइ है। दरगाह शरीफ 55 फुट लंबी और 62 फुट चौडी बनी हुइ है और पुरी दरगाह शरीफ की इमारत 64 खंभो पर और छोटे-बडे 17 गुंबदे इस इमारत की खुबसुरती में इजाफा देते है। मेइन

दरवाजेसे दाखली होते है जहां गुंबदो के अंदर काच का काम कीया हुआ है जीसमें कुर्आने पाक की आयते और ख्वाजा दरियाइ सरकार के दुआओ अश्आर (काव्य) रंगबेरंगी काच से मढे है। इस काममें तकरीबन दो लाख उपर की रकम सरकार दरियाई दुल्हा के चाहक व दिवाने हाजी दिपसींगभाई राणा साहबने दिया है। जो मुकाम दरियाइ स्मृति मु.नापावांटा जी.आणंद के रहनेवाले है। यह रकम आपके तमाम मर्हुम और मुस्लिम मर्हुमोके इसाले सवाबके लीये दी है। सन 2003 के सालमें दरियाइ सरकारके सजजादानशीनोने ओइल पेन्ट कलर करवाया था उस वकत 65000 रु खर्च हुआ था। यह दरगाह शरीफ हजरत सहाब के मुरीद व खलीफा मलकुश शर्क मलीक इमदादुल मुल्क रहतमुल्लाह अलयहे जो सुलतान मुजजफरशाह हलीम रहमतुल्लाह अलयहे के वजीर थे। बारह साल इस दरगाह के पीछे और लाखो रुपीयों का खर्च करके इस दरगाह शरीफको तामीर कीया है आपकी कबरे अन्वार पर साडे बायीस अेरीया का गुंबद वर्तुळाकार है। सात सीडी उपर सवा बार फुट अेरीया गोळ गुंबद है और सवा मन वजन बराबर सोने का सोनेरी कलश है यह भी बरसो पुराना है। दरगाह शरीफ जाअेरीन के बेठ शके इस लीये 48 फुट लंबा व 18 फुट चौडे दो तरफ होल बने हुवे है। पुर्व पश्चिम की तरफ 30-40 फुट का होल बना हुवा है। अंदर जानेके बाद मजारो पास चारो तरफ चारो दरवाजो के उपर पांच फुट चोहडा व साडे पांच फुट उंचाइवाले दरवाजे पर सील्वर चांदी के नकशी काम कीये हुअे है। और मेइन दरवाजा भी चांदी के नकशी कामसे बना हुवा है और दरगाह शरीफ के मेइन दरवाजो पर काबा शरीफ के दरवाजो पर जो ताला लगता है वैसा ही यहं ताला लगता है। दरगाह शरीफके अंदर फातीहाख्वानी कुर्आन ख्वानी तीलावत वगेरे के बेठने के लिये 10-30 का होल है और इस गुंबद तले तीन मजारे पाक है (1) सुल्तानुल अवलीया, आशिकुल्लाह, माशुकुल्लाह, शानी गौषे आजम हजरत पीर सैयद ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे का है (2) उस्तादुल अवलीया, आरीफ बिल्लाह हजरत सैयदना हमीदुद्दीन चाहेलदा कादरी, सोहरवर्दी, हाशमी रदियल्लाहो अन्हो का है। ये हजरत दरियाइ सहाब के वालिद पीरो मुर्शीद व उस्ताद व रुहानी पेश्वा (3) कुत्बे दौरा गौषे जमा सैयदना ख्वाजा मौलाना अहमद रहमतुल्लाह अलयहे का है ये दरियाइ सहाबके बिरादर (भाइ) है।

अब दरियाइ सहाब के मजारो पाकके कदमो में दक्षिणवाले होलमें ख्वाजा महमुद दरियाइ के भाइ (1) शाह शरफुद्दीन (2) शाह मोहंमद गोहर (3) शाह मोहंमद वगेरे भाइओ के मजार और आपके फरजंद तोहफओ रसुल

शैखुल इस्लाम शाह लाड मुहंमद (रहमतुल्लाह अलयहे) ये आपके बडे शाहबजादे है और हजरत सैयदना शाह जमालुल्लाह उर्फ जमालुद्दीन (रहमतुल्लाह अलयहे) का मजार है। यह दरियाइ सहाब के तीसरे नंबर के सहाबजादे है। इन और मजारो के अलावा आपके पौते-परपौते के मजारात है। जो अपने-अपने वकत के गौष व कुतुबो, वलीओ, आलीमो, शायर और पीराने उजजाम आराम फरमा रहे है। इन्ही लोगो से आज तक पुरनुर सदा दरियाइ समंदर फैजाने करम चलता रहा है। खल्के मख्लुक में आज भी पुरी दुनिया के लोग आपकी औलाद में दुनिया के माने हुवे पीराने उजजाम व आलीमे दीन और मुफती ओ किराम मौजुद है यह सिलसिला कयामत तक जारी व सारी रहेगा। हम गुनहगार, खाकसारो, दुःखीयो का दुख दर्द दुर करने (करवाने) का रुहानी हेड कवार्टर रहेगा। दरगाह शरीफ के बहार आने के बाद दक्षिण जानीब की तरफ आपही के दरगाह शरीफ को लगकर मेइन खुल्ला शहन है उसके अंदर दरियाइ सहाब के नाना हुजूर सैयदना ख्वाजा समीउद्दीन उर्फ काजी साधन रहमतुल्लाह अलयहे का और आपकी नानीमा, मामु सहाब व ननीहाल वालो के मजारात है। आपके नाना हुजुर मुकाम अमथनी उर्फ जैनुलआबाद तालुका खानपुर जीला पंचमहाल के आप हाकेम व जागीरदार थे। यह गाम कारंटाशरीफ के नजदीक है। इसी बीचमें उर्स ख्वाजा दरियाइ के मौके पर मन्नते उतारने के लीये कांटा (तोलने) रख्खा जाता है। बहार आनेके बाद हजरत दरियाइ सरकार के बहेन और बहेनोइ के मजारात है। उस्के बाजुमें हजरत सैयदना शाह अली रजा दरियाइ कुत्बी रहमतुल्लाह अलयहे का मजार है। आप दरियाइ सरकारकी चौथी पुश्तसे है। आप अपने जमाने के जैयद आलीमे दीन और वलीओ कामील थे। आप कारंटा शरीफ दरगाह शरीफ हजरत सैयदना शाह कुतुब महेमुद दादा रहमतुल्लाह अलयहे के सजजादानशीन पर मनसब थे। आपको मुगलीयत सल्तनत के हाकिम शहेनशाहे हिन्दुस्तान शाहे आलम सानी ने परगणा ओ कारंटा शरीफ को एक हजार (1000) वीघा जमीन का फरमान हिजरी सन 1127 में दिया था इस फरमान उपर सनद बादशाहे हिन्दुस्तान ने भी शाह कुतुब महमूद दादा रहमतुल्लाह अलयहे के सजजादानशीन लीखा है और उसकी सनद हमारे पास अल हम्दो लिल्लाह मौजुद है। उसके बाजुमें एक खानकाह है और उस्के पीछे दरियाइ रहेमतुल्लाहे अलयहे के पेहले सजजादानशीन हजरत अबुमोहंमद उर्फ अशरफखान रहमतुल्लाह अलयहे का मजार है। यह दरगाह शरीफ करीब पंदरह साल पहेले हमारे खानदान के बुजुर्ग पीर हाजी नजमुद्दीन उर्फ हाजी बाबा जो होटल अल-सउदीया माहीम मुंबइवालोने तकरीबन तीन लाख रु.

खर्च करके शानदार रोजा बनाया था। दरवाजे में जो लकडी है उनमें बेहतरीन नककाशी की है और इर्द गिर्द बहेतरीन नकशीकाम वाली जालीयां मौजुद है। यह सफेद गुंबदवाली दरगाह शरीफ बहोत खुबसुरत लगती है। इस दरगाह शरीफ के पीछे नीम के पेड के नीचे हजरत मन्सुर बीन अबुमोहंमद रहमतुल्लाह अलयहे की कब्र है जो अब एक मकबरे की शकल में मौजुद है उन्होने हजरत दरियाइ सरकार के मल्फुजात (जीवन चरित्र) की किताब महेमुदे ख्वानी लीखी थी। दरगाह शरीफका कोट छोडनेके बाद हमारा कब्रस्तान है जीसमें हमारे छ पुस्तो के बुजुर्गोकी कब्रे मौजुद है। यह तमाम लोग अपने अपने वकत के आलीम, कामील, मोहद्दीस, पीरो, मशाइख वगेरे थे। और आठ फुट की चहोळाइ और चालीस मीटर लंबाइवाला रोड छोडकर सामने हजरत दरियाइ सरकार साहबकी वालेदा-माजेदाओके पककी गुंबद के मजारात है। यहां अब शानदार काम हो चुका है मजारात के इर्दगीर्द आरस के पथ्थरोसे नकशीकाम कीया हुवा कठेरा बना हुवा है ये कठेहरा व स्पार्टक टाइल्स जनाब पीरजादा इकबालबापु माहीम मुंबइवालोने बडी अकीदतसे दादी मां की सच्ची निस्बत रखके किया है। इस काम में उदयपुर के अपने एक चाहक व सवाली मोहनलाल सल्वी (वकील) सहाबने मकाम उदयपुर राजस्थानने अपनी एक मन्नत पुरी होने की अवेज में पुराना काम तुडवाकर करीब देठ लाख रु. खर्चवाकर बनवाया था। यह पंदरह साल पहेलेकी बात है यह कौमी एकता की मीसाल है और बुजुर्गोकी दरगाह में फैजेआम बख्शीश का यह सिलसिला जारी और सारी रहेता है हां धाबा भरने के बाद उस्का चारों तरफ दीवार- सेहन और धाबेका प्लास्टर वगैरा हजरत कमरुद्दीन बावा के हाथोंसे हुवा हय - यादी : इस दरगाह शरीफमें इन नामो के मजारात है (1) बीबी सैयदा फतेह मलक - जो दरियाइ साहब की सगे वालेदा माजेदा है (2) बीबी सैयदा बीबी मलक (3) बीबी सैयदा माह मलक (4) बीबी सैयदा राझे मलक के मजारात है। इस दरगाह शरीफ पर एक करामती पथ्थर है इसका वजन तकरीबन तीन-चार किलो का है। इस पथ्थर पे बेठने से तुम्हारी मन्नत और तमन्ना परु होनेवाली होगी तो यह पथ्थर गोल-गोल घुम जाता है और नही होने पर घुमता नहीं वल्लाहो तआला आलमो बिस्सवाब। इस दरगाहकी चारो और मुसलमान कबाइलो का कब्रस्तान है। अब हम हजरत दरगाह शरीफ के सामने आ जाते है यहां एक खिन्नी (रायण) का पैड है उसके नीचे दरियाइ साहबकी बीबी सहाब (पत्नी) राबीया-ओ-षानी मरियमे-जमानी-उम्मुल अवलीया सैयदा बीबी फतहमलक (अलैहिर्रहमा) आराम फरमा है और उनकी बगलमें दरियाइ साहब की चहीती बेटी सैयदा साहबजादी चांदबीबी (अलैहिर्रहमा) का मजारे पाक है। दरियाइ

साहबने अपनी इन बेटी के नाम चांदसागर नामे तालाब खुदवाया था और बनवाया था जो आज भी मौजुद है जो आज भी बीरपुर परगना के जमालपुर इलाके में पडता है बहुत बडा तालाब है। और इस आस्ताना के इर्द गिर्द और सजजादानशीनो के कब्र है सामने महमुदपुरा रास्ते में जानेके बाजु में बडे आलीशान दरवाजा वाली मस्जीदे जामअे-दरियाइ दुल्हा है। इसके बाजुमें पीपलके पेड के नीचे दरियाइ सरकारके खलीफा और दरगाह शरीफ तआमीर करवानेवाले मलीक इमदादुल मुल्क और आपके भाइ भतीजो की कब्र है। और इसीके सामने चोखुट स्लेब वाली दरगाह है। इसमे हजरत दरियाइ साहब के उस्ताद मौलाना अहमद साहब की कब्र है और मस्जीद के पीछे दरियाइ सहाब के चहीते कव्वाल मीर दाउद और मीर कालु की कब्र मौजुद है। अब हम नीचे उतर रहे है यहां पर बहोत बडा मैदान है जो एक जमानेमें फुल की खेती होती थी। गाडीयां वगेरे यहां पार्क की जाती है यानी की टांकी हेन्डपंप, कुआ वगेरे इसी मेदान पर है। डेमोइवाला परीवारजनाब हाजी मर्हुम अब्दुलभाइ वहोरा और जनाब मर्हुम गफुरभाइ वहोरा और जनाब आदमभाइ वहोरा और जनाब शेठ फिरोजभाइ अब्दुलभाइ वहोरा और उनकी वालेदा हजीयाणी राबीयाबीबी वगेरे उर्स के आठ दिन दिनरात मुफत पानी पीलाने की खिदमत अंजाम देते है। यह कामके लीये हमारे वालीद हजरत मर्हुम पीरजादा सैयद फतेहमोहंमद बीन मौलाना शाहबुदीन (सहाबुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे) ने चालु कराया था और इसी जगह दरियाइ भकत बंसीलाल (बबलाभाइ) चंद्रकांत पटेल मु.तारदेव मुंबइ में रहते है उनकी जानीब से उर्स दरम्यान 8 से 12 चांद तक दोनो वकत खाना लंगरखाने में मुफत खीलाया जाता है जो तकरीबन 20 साल से जारी है। यहां पर हमने बजमे दरियाइ कमीटी की जानीबसे लंगरखानेकी इमारत हमारे मुरीदैन मोतकदीन से बनाया है। इस लंगरखानेके सब खर्चकी रकम कमरुद्दीन बावाकी कोशीषों से हांसिल हुई है। जीसकी लंबाइ 45-65 है उस दश (10) रुम है जीसकी साइज 10-10 है और लंगरखाने की नीचे पांच रुम है। इस लंगरखानेमें हिन्दु-मुस्लीम साथ बेठकर सुब्ह दाल और चावल व सामको कढी खीचडी बनाकर खीलाइ जाती है यह मंजर देखने लायक है। इसीके सामने दश रुम वाला मुसाफीर खाना बना हुवा है जो 30 साल पुराना है उसके बाजुमे नइ प्लीनथ 20-100 की है मुसाफर खानेके लीये नीकालकर रख्खी है। और इसके कोने में 20-30 की दो रुम बनी हुइ है जीसे जनाब युसुफभाइ वहोरा स्टार डेकोरेशन मोडासा वालोने बनवाइ है। उर्स दरम्यान अपना मंडप व फरासखाना की ओफीस बनाते है। पुर्व की तरफ दुध की डेरी है यह मकान डेरीके लीये दरगाह शरीफकी जमीन दान दी गइ है। यह दुध घर उर्स के दौरान

आनेवालोके लीये दुध की जरुरियात पुरी करने के लीये काम आती है और पश्चिमकी तरफ इमली खट्टी के पेड के नीचे दरगाह शरीफ की तरफ से दान की गइ जमीन पर ख्वाजा महेमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे स्कुल है जो लघुमती स्कुल है जीसमें कलास 8-10 कक्षा है लेकीन अब यह स्कुल पानीमें बह गइ है। हमारी कम इल्मी छोटी नजरने इस खीलते फुल को पहेले ही पोधो को हमारे ही लोगोने काट दीया यह स्कुल फिलहाल बंध हो चुकी है। आप जान सकते है की हमने कौम के लीये, व आनेवाले जाइरीन के लीये, बेहिसाब काम कीया और हमारे जानीब से कीये गये कामोकी फेहरीस्त हम बादमें देंगे और उपर जानेके बाद दरियाइ सरकारने खुद अपने नाम से बसाया हुवा गांव महमूदपुरा आबाद है यहां पर मुसलमानोकी जयादा बसती है, इसमें कुछ हिन्दुभाइ भी रहते है इनको भी दरियाइ साहबने ही बसाया था जीसमें कुंभार, पंडया लोगोके मकान है। यह इलाकेमें 1 से 8 कक्षा की सरकारी स्कुल है यह स्कुलकी जमीन भी पीरजादा भाइओकी तरफसे भेट दी है। अब हम यहांसे मेइन रोड पर आ जाते है यह रोड दो-लाइन का बन चुका है एक रास्ता लीमडीया चार रास्ता तरफ जाता है। यही हाइवे रोड पर आगे और दरगाह शरीफ करीब आधा कीलो मीटर दुर बहोत बडा पहाड है जीसे प्रेमगली, कोहे अलत पर्वत कहा जाता है मौजुद है। यह पर्वत पर तकरीबन 800 फुट उंचाइ पर है उपर चढते टोची पर बहोत बडा मैदान है और वहां पर हजरत पीर सैयद कुत्बुद्दीन दरियाइ, कादरी रहमतुल्लाह अलयहे का मजार शरीफ है। यह दरियाइ साहब की सातवीं पेढी से है। यहां पर करामती दुध का तालाब (छोडा) है जीस औरत को दुध न आता हो उसकी मन्नत रखने से उन औरतो को दुध शुरु हो जाता है। अब हम नीचे उतरते है यहां पर एक खास हजरत दरियाइ सरकारकी गुफागार है। इसी गुफामें दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे ने अपनी जींदगी का अकसर वकत गुजारा है। आप छ-छ माह के रोजे रखते और फिर एक साल के रोजे रखते और अपने माबुद अल्लाह तआलाकी हम्द सना करते थे। इस बडी परहेजगारी पर अल्लाह तआलाने आपको महेबुबुल्लाह का खिताब दीया था इसका तजकीरा आप आगे पढ चुके है। इसी के बाजुमें (पहेले) जांजर देवी की भी गुफा है जो सात बहेने थी इस सातोने हजरत दरियाइ सरकारके हाथ पर इस्लाम कबुल करके मुसलमान बनी थी आपने इन्हे अपने बाजुमें ही जगह दी थी। इस पहाड पर थोडा उपर आप करामाती शेर की गुफा है पर्वत के पश्चिम तरफ नीचे उतरते वकत एक नीरमली का पेड है यह पैड के कुछ बीज जीसकी आंखोकी रोशनी कम है उसे चाहीये की यह बीज लेकर तांबा के बरतन पर घीस कर आंखो पर लगाने से फुल दुर हो जाता है। यह भी हजरतकी बडी

करामात है और अब पहाड की तरफ घुम जाने के बाद एक छोटी पहाडी पर मस्जीदे हलीमा जो मुजफफरखान फोजदार ने बनवाइ थी जो साडे पांचसो साल से शहीदी हालात में थी अलहम्दो लिल्लाह इसी साल याने के सन 2013 में उसे वापस नमाज पढनेके लायक मस्जीद बना दी गइ है। खुब महेनत करके खुबसुरत बना दी है और वहां पर एक तरासा हुआ पथ्थर भी लगाया है। इसी जगह पर हजरतने अपने मुरीद सुलतान मुजफफर शाह हलीम दोयम को यहां पर सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमकी जीयारत करवाइ थी। यहां पर सरकार सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के कदम मुबारक है। यहां पर कोइ गमजदा आदमी अपनी मुश्किल हल करनेकी निय्यतसे दो रकात निफल नमाज पढकर दुआ करे तो अल्लाह तआला इस दुआको जरुर कबुल करता है। गांव की चारो और अपने अपने वकत के वलीओ कामील और शहीदोके मजार है। उर्स के मौके पर हिन्दुस्तान भरसे व्यापारी लोग अपनी अपनी दुकाने लेकर आते है, इनमें हिन्दु, मुसलमान तमाम लोगोकी दुकाने लगती है जीनमें खाना-पानी-नास्ता, इलेकट्रोनिकस, कपडे और दिगर प्रकारके स्टोल लगते है और हिन्दु-मुसलमान कोमी-सदभावना के तौर पर 600 सालसे इस उर्सको कामीयाब बनाने के लिये अपनी-अपनी तरफसे खिदमत अंजाम देते है। इस उर्स के मौके पर दरगाह शरीफ के शहन मेदानमें भुतो, जीन, आसेब जदोके इलाज होते है। 9-10-11 चांद को तकरीबन चालीस-पचास हजार लोग औरते-मर्द हाजरी भरते है और सरकारसे सीफा पाकर अपने घर लोटते है। इन्ही लोगोमें जयादातर (98%) हिन्दु कौम के होते है। मगरीब की जानिब जमालपुर (बीरपुर) में दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे अपनी बेटीके नाम तालाब खुदवाया था जो चांद सागर नाम दिया था जो 600 सालसे आज तक अपनी गवाही देता है। यहां पे ही बालानाथ जादुगर को अपनी करामत दीखाइ थी और बाजुमें गंजशोहदाओके मजार है। यहां से अब एक नहेर इसे आजकी सरकारने खुदवाइ है इसे सुजलाम सुफलाम नाम दिया है ये भादर डेम से निकलकर उत्तर गुजरातमें खत्म होती है।

शाये की गइ किताबें

(1) करामते ख्वाजा महमूद दरियाइ भाग-1 (गुजराती)
प्रकाशन साल 29-09-1992 प्रत : 3000 हदिया-12.00
हि.स.1413 चांद 1 रबीउल आखर

(2) करामते गुलशने दरियाइ (गुजराती)
प्रकाशन : सुन्नी मुस्लिम कमीटी, गोंडल
प्रत : 5000 ओकटोबर 1991 इशाअत नं. 167 रबीउल आखर

(3) गुलस्त-ओ-ख्वाजा दरियाइ (गुजराती)
प्रकाशन : सुन्नी मुस्लिम कमीटी, गोंडल
प्रत : 8000 डीसेम्बर 1999 रमजान शरीफ हि.स.1420
इशाअत नं. 1420 संपादक - शमीम हिंमतनगरी हिंमतनगर.

(4) करामते ख्वाजा महमूद दरियाइ भाग-2 (गुजराती)
प्रकाशन : सुन्नी मुस्लिम कमीटी, गोंडल
प्रत : 5000 ओगष्ट 1995 रबीउल अव्वल हि.स.1416 इशाअत नं. 202

(5) करामते ख्वाजा महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे (गुजराती)
प्रकाशन - 30-10-90 मंगलवार - हि.स. 10 रबीउल आखर
प्रत : 1000 प्रेस ट्रीनीटी इम्प्रेशनस G.I.D.C. बीलीमोरा, जी.वलसाड.

(6) फयजाने खवाजा महमूद दरियाइ दुल्हा (गुजराती)
प्रकाशन साल सोमवार 2/9/1993 रबीउल अव्वल चांद 12 हि.स.1413
प्रेस : दरियाइ आर्ट प्रिन्टर्स पोलीस स्टेशन पीछे
वखार फळिया बीलीमोरा,396311 जी.वलसाड।

(7) आमिन मासिक विशेषांक स्पेशीयल नंबर (गुजराती)
रविवार ता.1/6/2003 सिरीज अंक 39 सालथ
29 रबीउल अव्वल हि.स.1424 तंत्री : उस्मानभाइ कुरैशी
प्रकाशन : फिरोजखान पठाण अहमदआबाद मकान नं. 1208
जानसहाबकी गली तीन दरवाजा, अहमदआबाद

(8) DIVINE PATH MONTHLY (ENGLISH)
APRIL -2005 VOL.5 NO.2 SAFAR-RABIUL AWWAL - 1426
Hon. Editor MAHMOOD EKHLAS P.I PUBLI BY IRFEKHIS
20-B V.P.NAGAR D.AMBEDKAR RD. KHAR MUMBAI-40052.

(9) QADRI TOHFA Ruhaani Duriya (URDU MONTHLY) (ENG.)
VOL. NO.1 - ISSUE NO.11 IDAARUHANI DUNIYA 90.S.V.P. ROAD
BACHVALI HOUSE MAZANINE FLN. DONGRI MUMBAI-9.

स्पेशीयल नंबर my.2005 रबीउल आखर 1425

(10) शाहे मदीना (मासिक) (गुजराती) अंजुमने सीरते मुस्तफा
सिवील कोर्ट गली सामे मु.पादरा, जी.वडोदरा-391440
तंत्री : मौलाना मुहम्मद साजीद अशरफी
वर्ष-2 अंक-4 सिरीज अंक 15 मे 2006 रबीउल आखर 1427
सुल्तानुल ओलिया (स्पेशीयल अंक)

(11) फलाहे इस्लाम वर्ष-2 सिरीज अंक 17 (मासिक) (स्पेशीयल अंक)
(गुजराती) माहे रबीउल अव्वल-रबीउल आखर ही.स.1425
तंत्री : काजी हजरत दरियाइ प्रकाशन : तश्ककीओ-इस्लाम
c/o. फलाहे इस्लाम (मासिक) कार्यालय आयशा पार्क तवककल सोसायटी पीछे, सरखेज रोड, अहमदआबाद-382210

(12) हजरत काजी महमूद दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे बीरपुर (गुजराती)
लेखक : पीरजादा यासीनमीयां इमाममीयां
प्रकाशन : 13 पहेली आवृत्ति
प्रकाशक : तरककीओ इस्लाम, मु.पो.तेलाव वाया सरखेज, ता.साणंद, अहमदाबाद-382210

(13) करामते बहारे दरियाइ लेखक पीरजादा यासीनमीयां साहीबमीयां सहाब (गुजराती)

(14) करामते ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा
21/03/2008, 12 रबीउल अव्वल 1429 उर्दु हिस्सा 1-2

(15) करामाते ख्वाजा महमूद दरियाइ अलयहिर्रहमा भाग 1-2
प्रकाशन : हुसैनी कमिटी (सुन्नी) लाती प्लोट मोरबी, जी.राजकोट
इशाअत नं. 286 (महबूब के पीलुडीया) प्रत : 6000 आवृत्ति दुसरी
12 रबीउल आखर हि.स. 1429 (गुजराती)

(16) गुलदस्त-ओ ख्वाजा दरियाइ (उर्दु) लेखक : शमीम हिंमतनगरी

(17) दास्ताने दरियाइ दुल्हा याने काजी महेबुबुल्लाह (लीपी उर्दु, गुजराती)
कोपी : 2000 हदिया 21.00 ता.7-4-1991
प्रकाशक : पीरजादा फतेहमहंमद हाजी अनवरमीयां सहाब दरियाइ, शोहरवर्दी बीरपुरी.

(18) हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ साहेब जीवन चरित्र भाग-1 लो
(गुजराती) लेखक और प्रकाशक : काजी सदरुद्दीन रजामीयां निजामी
प्रत : 1000 आवृत्ति : पहेली इ.स.1921 हि.स. 1921 किंमत-2.50

(19) हालाते ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा (गुजराती)
लेखक : हजरत सैयद नुरुद्दीन सहाब अशरफी
प्रकाशन : शेख समाज राजपुरी गेट बालासिनोर, जी.खेडा.
आवृत्ति : ता.30-10-1999

(20) शाने ख्वाजा दरियाइ दुल्हा भाग 1-2
ओडीयो कव्वाली की केसेट बनवाइ । इ.स.2000

(21) सवाबे हयात V.C.D. केसेट इ.स.2003
K.M.D. AUDIO-VIDEO GROUP, BIRPUR
VOICE : MOULANA M.IDARISH KHAN SAHAB
G.F.PEERZADA, Y.F.PEERZADA, H.M.PEERZADA,
M.HANIF-SINGER

(22) हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ MP3 C.D.
हम्द नात मन्कबत इ.स.2004

ये 1,2,4 से 11, 14, 15, 16 कीताबो के संपादक पीरे तरीकत आलीमे शरीअत अल्लामा, अल्हाज सैयद शाह पीर शफीयुल्लाह बाबा, अेफ दरियाइ, अशरफी, चिश्ती, सोहरवर्दी, कादरी (खलीफा-अे दरियाइ अशरफी-बगदादी कादरी) हैं.

सह संपादक : (१) पीर सैयद अल्हाज मो.मदनीबाबा अेफ. दरियाइ, कादरी
(२) पीर सैयद मो.युसुफ बाबा अेफ. दरियाइ, कादरी

ब हवाला - ये किताबोंसे मजमुन लीये है ।

अरबी : कुरआने पाक - मआरेफुल कुर्आन का तर्जुमा लिया गया है ।

फारसी (कलमी) : (1) **महातिहुल कुलुब** (2) **फवाइदे महमूदियह**, लेखक : हजरत सैयद शेख अब्दुलरझ्झाक जाफरी जैनबी (दामाद ख्वाजा दरियाइ दुल्हा) (3) **कन्जुल करामात**, लेखक : हजरत सैयद शाह काजी उमर मोहंमद रहमतुल्लाह अलयहे (4) **तोहफतुल कारी** लेखक : हजरत सैयदना शाह मनसुर बिन चांद मोहंमद बिन शाह हमीदुद्दीन चाहेलदा रहमतुल्लाह अलयहे (5) **महमूद ख्वानी** लेखक : हजरत शाह सैयदना मनसुर बिन ख्वाजा अबु मोहंमद उर्फे अशरफखान रहमतुल्लाह अलयहे

उर्दु : (1) तफसीरे नइमी (2) तारीखे सुफीयाओ दक्कन (3) मशाइखे अहमदाबाद (4) मीराते सिकंदरी (5) तबकातुंल औलिया (6) हिन्दो-पाक के ओलीया (7) तारिखे हिन्द (8) मज-मउल अवलिया (9) खजी-नतुल असिफीया (10) नुजहतुल खवातिर (11) आइने अकबरी (अबुल फजल) (12) अस्रारुल अबरार (13) तजकेरा-अे हजरत मखुम जहांनिया जहांगश्त (14) तजकाअे शाह रुकने आलम (15) तारीखे अबलियात (16) किताबे चिश्तीयां (17) तारीखे अदबे उर्दु (18) तारीखे तमदुने गुजरात (19) तारीखे जबाने उर्दु (20) हिन्दुस्तानी जबान (21) तजकेरतुल औलिया भाग 1-2 लेखक : सैयद इमामुद्दीन गुल्शनाबादी (22) मल्फुजाते औलिया (23) अख्बारुल अखियार, लेखक शेख अब्दुलहक्क मोहद्दीस दहेल्वी (अलयहिर्रहमा) (24) तारीखे सुफियाअे गुजरात लेखक : डोकटर जहुरुल हसन शारीब (25) सुखनवरा ने गुजात लेखक : सैयद जहीरुद्दीन मदनी (1981 नइ दिल्ही) (26) अकाबिरीने गुजरात 11 हयाते शाहे आलम लेखक : हजरत सुफी नजीर अहमद मुरादाबादी (2001) (27) मिराते अहमदी (28) औलियाअे गुजरात।

हिन्दी : (1) सीरते ख्वाजा गरीब नवाज (2) आप कया जानते है।

गुजराती : (1) करामते ख्वाजा महमूद दरियाइ भाग-1,2 (1992-1995) (2) फैजाने ख्वाजा हजरत महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे (2-9-1993) लेखक : सैयद पीर सफीयुल्लाह बावा अेफ. दरियाइ अशरफी कादरी सोहरवर्दी (3) दास्ताने दरियाइ दुल्हा याने काजी महबूबुल्लाह लेखक : हजरत पीर फतेह मोहंमद मौलाना हाजी अनवरमीयां जैनबी, दरियाइ सोहरवर्दी, बीरपुरी (4) अहमदाबादनां औलीया लेखक : अब्दुल्लाह अेम. पटेल (इ.स.1981) (5) हालते ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा लेखक : हजरत सैयद मौलाना नुरुद्दीन साहब अशरफी (30-12-1999) (6) गुजरातनुं पाटनगर अहमदाबाद (7) गुजराती जबान अने तेनी उत्पत्ति (8) रहमते खजानअे दरियाइ लेखक : पीरजादा सैयद यासीनमीयां इब्ने पीर मौलाना शहाबुद्दीन दरियाइ (9) गुजरातनो सांस्कृतिक इतिहास (इस्लामी युग) भाग 1,2 गुजरात

विद्यासभा (अहमदाबाद-1968) (10) गुलदस्त-अे ख्वाजा दरियाइ (उर्दु : 1197 गुजराती : 1999) लेखक : शमीम हिंमतनगरी (11) तजिकरअे औलिया अल्लाह और तारीखे नहरवाला पीराना पट्टन शिमाली गुजरात लेखक : सैयद तालिब अली कादरी (11 नवेम्बर 1963) मुकाम मीरांदातार, उंजा, जी.महेसाणा (12) शाने अेहले बैत और नुरानी केलेन्डर 1997 अहमदाबाद अेम.ओ.अेम. जी.पी. संपादको सरवर अशरफी, शैदा कुरेशी, अशरफ अहमदाबादी 16 जुन 1966 (13) हमारे नानाजान हजरत पीर अल्हाज कमालुद्दीन बिन सैयद मोहद्दिस हाफेज जैनुद्दीन दरियाइ कादरी रहमतुल्लाह अलयहे मुंबइवालाने 1981 से 1994 तक खत व लेख जो मुंबइ से आपने हमे लीख्खे थे ये भी कुछ इस कीताबमें सामिल है (14) (अे) जनाब प्रोफेसर बोम्बेवाला (बी) जनाब प्रोफेसर महमूद हुसैन शेख (सी) जनाब प्रोफेसर महमूद हुसैन अब्बासी के तोहफतुल कारी के दीबाचो में से भी कुछ फुटनोट सामिल है (15) हि.स. से इ.स. करने के लीये संदेश पेपर ता.23-2-2004 की थियरी का उपयोग कीया गया है (16) हयाते कुत्बे आलम (17) यादे अय्याम (18) फलाहे इस्लाम (मासिक 2004-जुन) (19) अकाबेरीने गुजरात (20) तारिखे-औलीया अे गुजरात (21) मिराते अहमदी (22) मीरांते सिकंदरी (23) भारतनुं गेजेटियर (24) नकशामां गुजरात-1991 (25) गुजरात स्टेट गेजेटीयर (खेडा, पाटण, अहमदआबाद) (26) मध्य युगनुं भारत (27) गुजरातनो राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहास 7-8-9 (28) फारसी शब्दो सार्थ (लोगत) भाग 1 से 4 (29) उर्दु-गुजराती शब्द कोष (30) नकशबंदी औलीया भाग-1 (31) मनाकिबे-अेहले बैत (32) पाटणनां औलिया किराम (33) गुजरातना सुफी अवलीयाओअे लखेला फारसी ग्रंथो (34) दस्तावेजो : सनदो, गर्वमेन्ट डोकयुमेन्ट, फुटनोटो (35) तयबाह मासिक

मन्कबत

इस्लाम के निगेहबां-महमूद ख्वाजा तुम हो

अज़ : नतीजये फिक्र शाइरे इस्लाम गनीमत बालासिनोरवी

महबूबे रब के जानां - महमूद ख्वाजा तुम हो
इस्लाम के निगेहबां - महमूद ख्वाजा तुम हो
महबूबे शेरे यज़्दां - महमूद ख्वाजा तुम हो
वल्लाह माहे ताबां - महमूद ख्वाजा तुम हो
फैलाया दीन तुमने - वीरान जंगलोंमें
लारैब शम्अे इरफां - महमूद ख्वाजा तुम हो
चमके हज़ारों तारे - दरबार से तुम्हारे
पुरनुर मेहरे ताबां - महमूद ख्वाजा तुम हो
बीमार को शिफाअे - कुल्ली मिली है तुमसे
हर ला-दवा के दरमां - महमूद ख्वाजा तुम हो
गुजरातकी है अज़मत - दमसे फक्त तुम्हारे
हम खादिमों के अरमां - महमूद ख्वाजा तुम हो
घबराअे क्युं गनीमत - खौफो खतर से कोइ
नाचीज़ के निगेहबां - महमूद ख्वाजा तुम हो

मन्कबत

शाहे महमूद दरियाई

नझरानअे हझरत मर्हुम मौलाना काझी अहमदमियां साहब, बालासिनोरवी

शाह महमूद बयां क्या करुं रुत्बा तेरा
पाकबाझों में सुना झिक्र है उंचा तेरा
हाशमी चांद कहुं क्या रुखे झैबा तेरा
दीनो दुनियामें दरख्शां है उजाला तेरा
कदे पूरनूर, शहे हाशमी दूल्हा तेरा
देखुं किस्मत से मलुं आंखोंपे तल्वा तेरा
पिदर, अफदरने शहेदीन की गोदमें उस दम
तिफले पुरनूरसा देखा कदे बाला तेरा
चारसो साल तक लगा तार तेरे रोझे पर
खैरो खैरात का बटता रहा बाडा तेरा
मझहबे गैबसे सरसाद की दाया अपनी
फस्ते उल्फत में जो चुलाथा उबाला तेरा
झिंदगी मेरी जहन्नम है तुझे बिन देखे
खुल्द पा जाउं अगर देखलुं जल्वा तेरा
खुल्क मशहूरे सरासर है लकब दरियाई
कैसे मायूस हो दरबार का मंगता तेरा
शाने महबूबी की यक हल्की नझर हो मुझ पर
झिल्लत झदह कब तक रहे बन्दा तेरा
अहमदे आसी के मुख्तार हो मालिको सरवर
सरपे आसीके हिमायत है पंजा तेरा

प्यारा मदीना

नूर का मर्कझ प्यारा मदीना, रबने नबीसे सजाया मदीना
रहमतवाला, बरकतवाला अजमतवाला सारा मदीना

दुःख के कांटे फूल बने हैं, देखा जब वो प्यारा मदीना
जन्नत की कयारी है सुहानी, जन्नत का आईना मदीना

नूरका दरिया, फैझका गुल्शन, अर्शे बरींका नझारा मदीना
जैसे झमींपे जन्नत उतरी, अैसा मेहके निराला मदीना

काफलेवालो ! झन्नत ले लो, मुझदा ये है सुनाता मदीना
जिसने जो भी मांगा, मिला है बख्शिश का है खझाना मदीना

दीनो दुन्या, नजात व उकबा देता नहीं है कया-कया मदीना
हुआ है मौला ! सार उम्मत देखे मेरे आकाका मदीना

कलियां, कलियां, गुल्शन, गुल्शन सबका तराना मदीना मदीना
तेरा वझीफा जो हो चाहे, मेरा वझीफा मदीना मदीना

जन्नतमें बेचैन है आशिक, ढूंढ रहा है प्यारा मदीना
देने पे गर आओ खुदा तो, मांगूंगा बस आका का मदीना

मुश्कसे झियादा खुश्बू इसकी, शहदसे झियादा मीठा मदीना
नूरी फिझा, बर्फीली हवाअें, खुल्द से जैसे उतरा मदीना

झर्रे सूरज, कतरे समन्दर कयासे कया है करता मदीना
मदनी के **मदनी** की हसरत, मदफन होवे उसका मदीना

बुझुर्गोके अकवाल...

सुफीयाअे किराम फरमाते है की हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम के जीस्मके हालात शरीयत हैं। दिल मुबारक के हालात तरीकत है। रुहे पाक के हालात हकीकत। शरे शरीफ के हालात मअरिफत है। इन्ही चार चिजो यानी शरीयत, तरीकत, हकीकत और मअरिफत का नमा दीन है। और हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम दीनुल्लाह है। (तफसीरे नइमी)

सरकारे मदीना सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम का कौल है जीसने मेरी वफात के बाद मेरी कब्रे शरीफ की जियारत की उसने गोया मेरी जींदगीमें मेरी मुलाकात की। (बुखारी शरीफ)

हजरत इमाम शाफई रहमतुल्लाहे तआला अलैहे ने ओहलेबैते रसुलुल्लाह की तारिफमें युं फरमाया है की ऐ ओहलेबैते रसुल, तुम्हारी मुहब्बत कुरआन की वजह से फर्ज है। तुम्हारी बडी शान के लिये यही काफी है कि जिसने तुम पर दरुद न पढा उसकी नमाज कबुल न हुई।(तफसीरे नइमी)

सरकार गौषे पाक रदियल्लाहो तआला अन्होने फरमाया जब तक शेख (पीर) में बारह खसलते न हों वह सज्जादे (सज्जादानशीन) (गादीनशीन) पर न बैठे। दो खसलतें खुदा की के सत्तार और गफ्फार हो। दो रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की के शफीक और रफीक हो। दो हजरत सिद्दीके अकबर रदियल्लाहो तआल अन्हो की के सादिक और मुसदिक हो। दो हजरत फारुके आजम रदियल्लाहो अन्हो की के नेकी का हुकम देनेवाला हो और बुराई से हटनेवाला हो। दो हजरत उस्माने गनी रदियल्लाहो त्आला अन्हो की के खाना खिलाए और रातभर बेदार रहे। दो हजरत मौला अली रदियल्लाहो तआला अन्हो की के आलिम और बहादुर हो। (लहबुल असरार)

अगर सय्यिद कीसी गैर सय्यिद औरतसे निकाह कर ले तो औलाद सय्यिद हैं कि उन्हे जकात लेना हराम है और अगर गैर सय्यिद किसी सय्यिद औरत से निकाह करे तो औलाद सय्यिद न होगी। उन्हे जकात हलाल। सैय्यिद की औलाद हर हालमें सैय्यिद है चाहे लोंडी से हो या गैर सैय्यिद औरत से। (अरकामुल करआन)

सैय्यिद गुनाह करे तो डबल मुजरिम है। अव्वल इस्लाम का मुजरिम, फिर नसबे रसुल का मुजरिम हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की औलाद होना बडे फख्र और इज्जत की बात है। मगर ईमान और नेक अआमाल की शर्त पर, हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम ने हजरत बीबी फातिमाह जहरा से फरमाया था कि ऐसा न हो कि कयामत के दिन दुसरे लोग ईमान लेकर आए और तुम गिरा नसब। (तफसीरे नईमी)

उलमाअे किराम फरमाते है कि दो जुर्मो के सिवा किसी गुनाह पर रब की तरफ से जंग का एलान नहीं किया गया। एक सुद लेना दुसरे ओलियाए किराम से दुश्मनी रखना। तफसीरे नईमी)

रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम ने फरमाया जब किसी काम में हैरान हो जाओ तो कब्रवालों से मदद तलब करो। (तफसीरे नईमी)

इमाम अहमद बिन हब्मल रदियल्लाहो अन्होसे किसीने पूछा की हुजूर

सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम का मिम्बर या कब्रे अनवर पुजाना कैसा है ? फरमया, कोई हर्ज नहीं इब्ने अबिस सिव्क ईमान रहमतुल्लाह अलयहे से जो कि मककए-मुकरेमह के शाफई उलमासे है मन्कूल है कि कुरआने करीम हदीसके औराफ, बुर्जुगाने दीन की कब्रे चूमना जाइज है। (तफसीरे नईमी)

मख्दुम जहांनियाँ जहांगश्त रहमुतल्लाह अलयहे ने (खजानएजलाली) में लिखा है कि नेकियां और बदियाँ में मकान की बुजर्गी जमाने की बुर्जुगी और इन्सान की बुजुर्गी का भी ऐतबार है मकान की बुजुर्गी जैसे कि मककए मुर्करमह कि एक नेकी का सवाब एक लाख के बराबर होता है जमाने की बुर्जुगी जैसे माहे रजब और जुमए का दिन कि ईस जमानेमें एक नेकी सतर नेकियां लाती है और एक बदी सत्तर बदियाँ के अजाब की बुनियाद बनती है। इन्सान की बुजुर्गी जैसे फातिमी सैय्यिद और उल्माकि अगर ये एक नेकी करें तो दुसरो के मुकाबले में दुगना सवाब पाएँ और एक गुनाह करें तो दुसरोसे बढकर अजाब पाएँ। (सबु सनाबिल शरीफ)

हुजूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम फरमाते है जो शख्स किसी आलिम के पास दो घडी बैठा या उसके साथ दो लुकमें खाए या दो बाते सुनी या दो कदम उसके साथ चला उसने अल्लाह तआला दो जन्नते देगा हर जन्नत दुनिया से दुगनी होगी। (मिश्कातुल अनवार)

निजात अमल पर मौकुफ है नसब पर नहीं

अेक मरतबा हजरत दाउदताइ रदियल्लाहो तआला अन्होने हाजीरे खिदमत होकर हजरत सैयदना जाफर सादीक रदियल्लाहो तआला अन्हो से अर्ज किया की आप चुंकी अहलेबैत रसुलुल्लाह से है और अहले बैतसे है इसलिये मुजको कोइ नसीहत फरमाये। लेकिन आप खामोश रहे और दोबारा हजरत दाउद ताइने कहा कि अहले बैत होनेके अेतबारसे अल्लाह तआलाने आपको जो फजीलत बख्शी है उस लीहाज से नसीहत करना आप पर फर्ज है। यह सुनकर आपने फरमाया की मुजे तो यही खौफ लगा हुआ है की रोजे महशर कहीं मेरे जद्दे आला हाथ पकडकर यह सवाब न कर बैठें की तुने खुद मेरी इत्तिबा क्यां नहीं की। इस लिये की नजात का ताअल्लुक नसब से नहीं बल्कि आमाले सालिहा पर मौकुफ है। यह सुनकर दाउद ताइको बहुत इब्रत हुइ। अल्लाह तआलासे अर्ज किया की जब अहले बैत पर खौफ के गल्बा का यह आलम है तो में किस गिनती में आता हुं और किस चीज पर फक्र कर सकता हुं।

अय इन्सानो खबरदार। सुफीओ के गिरोह की हर अेक बात व काम का इन्कार मत करो इनके हालत इन्ही के पर छोड दो। शरअ शरीफ के मामलात में मुखालिफत कोइ मसअला नझर आये तब भी तुम अैसी सुरत में शरीअत के पाबंद व खामोशी इख्तियार कर लो। (हजरत सैयद अहमद कबीर रहमतुल्लाह अलयहे - इराक)
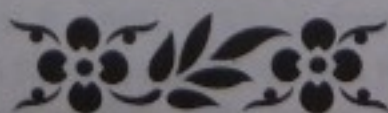
पूराने फोटा करीब 50 साल से भी पहेले
दरगाह शरीफ मु.बीरपुर

आस्तान-ऐ ख्वाजा महमूद महबूबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे

मु.पो.ता.बिरपुर शरीफ, जी.महीसागर (गुजरात)
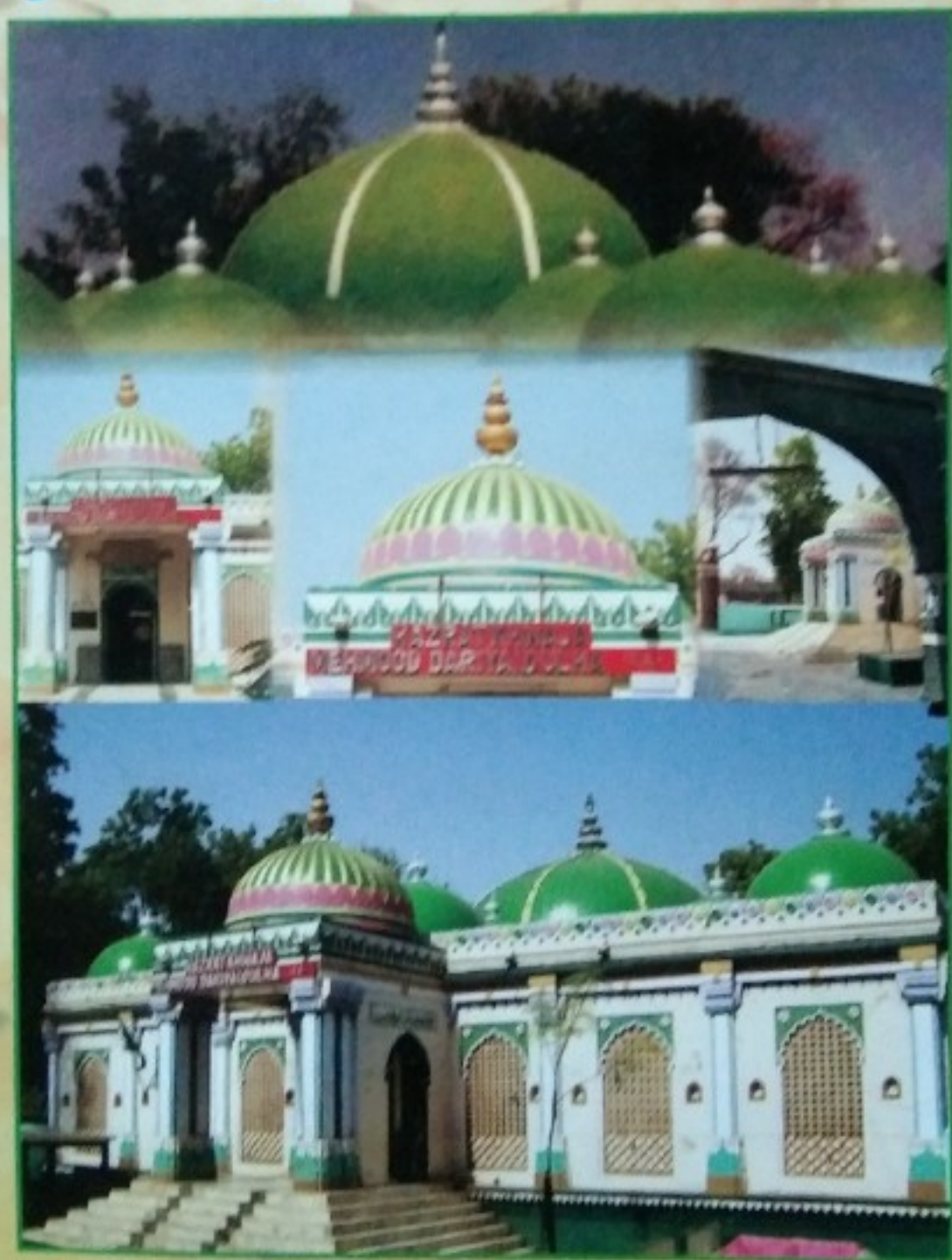
मेहबुबे सुब्हानी कुत्बे रब्बानी,

गौसुल हिन्द, हजरत पीर ख्वाजा

महमूद मेहेबुबे ईलाही दरियाई दूल्हा,

मझारे पाक हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे

हजरत ख्वाजा हमीदुद्दीन रहमतुल्लाह अलयहे
दरियाइ साहब के वालिद

हझरत मौलाना शाह अेहमद रहमतुल्लाह अलयहे
दरियाइ साहब के बिरादर

हझरत शैखुल इस्लाम
सैयदना लाडमोहंमद बीन
ख्वाजा दरियाइ रहमतुल्लाह अलयहे

हझरत शाह जमालुल्लाह
बीन ख्वाजा महमूद दरियाई

ख्वाजा अबू मोहंमद
बीन दरियाइ दुल्हा -मु.बिरपुर

दादी अम्मा - हजरत दरियाइ साहब के वालिदा
मु.बिरपुर
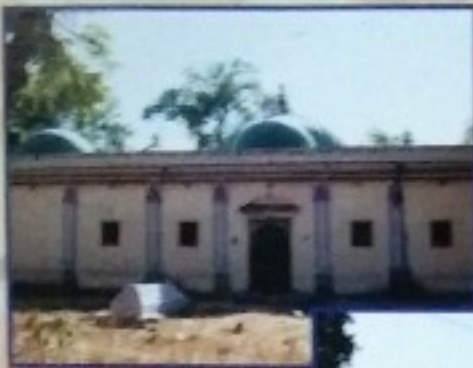
हजरत मनसुर बीन अबु मोहंमद
बीन दरियाइ दुल्हा - मु.बिरपुर

हजरत मनसुर बीन अबु मोहंमद
बीन दरियाइ दुल्हा - मु.बिरपुर

हजरत फतेहमलक - मु.बिरपुर
हजरत दरियाइ साहब के बीबी साहेबा
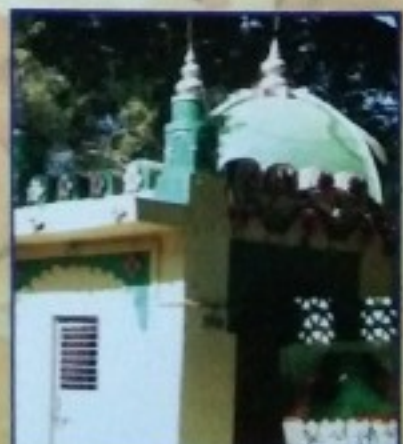
हजरत सैयदा चांद बीबी
दरियाइ साहब की शाहबझादी

हजरते शाह अली रझा
बीन हाजी याकुब दरियाइ

काजीखानका मकबरा
मु.बीरपुर

दरियाइ साहब के
बहन व बहनोई

मस्जीदे जामे दरियाई का मेइन गेट - दरगाह के सामने, बीरपुर शरीफ

हझरत इमदादुल मुल्क
वझीरे खजाना गुजरात
खलीफा व मुरीद ख्वाजा दरियाई

मौलाना शाह अहमद-उस्ताद
ख्वाजा दरियाई दुल्हा

संदल गसने का पथ्थर
दरगाह शरीफ बीरपुर

दरगाह शरीफ में जानेका रास्ता, नीचे से उपर तक... बीरपुर शरीफ

हजरत ख्वाजा महमूद दरियाई के शाहबझादो की खानकाहे - बीरपुर शरीफ

हजरत ख्वाजा महमूद दरियाई का लंगरखाना व पानी की परब- बीरपुर शरीफ

हझरत सैयदना कुत्बुद्दीन दरियाइ का मझारे मुबारक - प्रेमगली पहाड के उपर, बीरपुर.
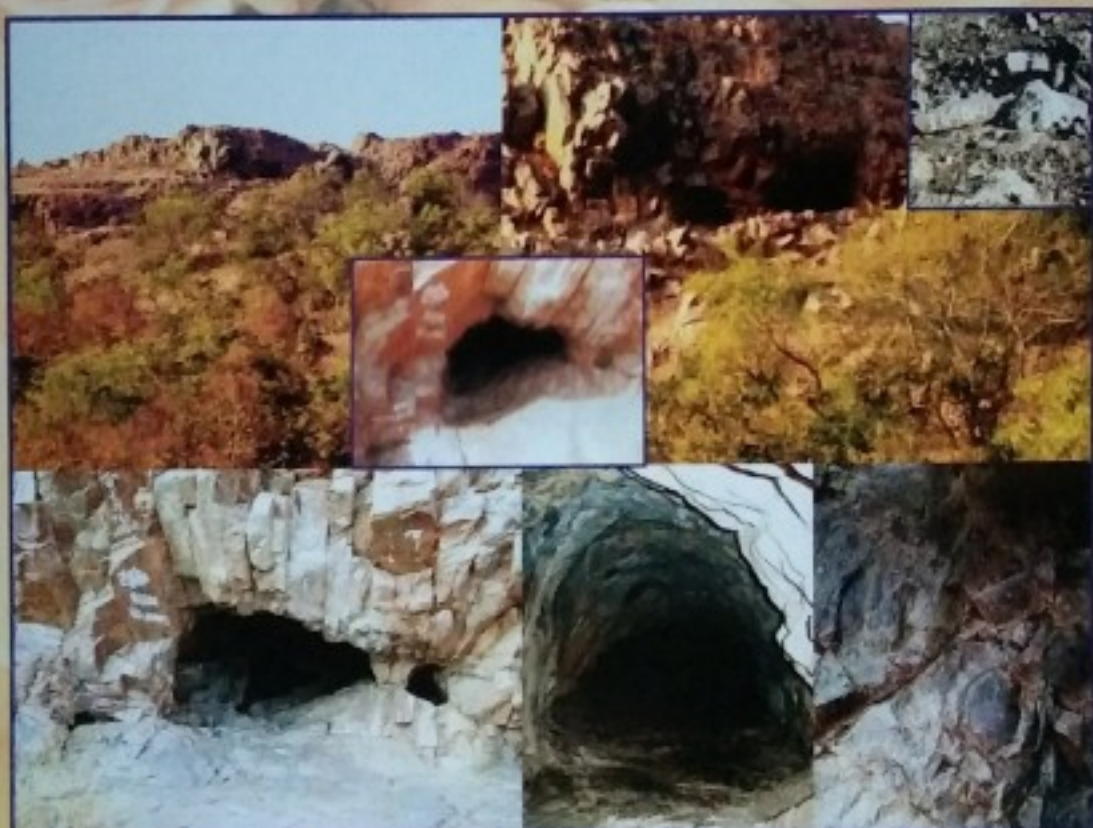
गारे दरियाइ, प्रेमगली पहाड - बीरपुर

मुजफ्फरखान फौजदार की मस्जीद - बीरपुर
ये जगह पर हजरत मुजफ्फरशाह हलीम बादशाह को ख्वाजा दरियाईने हुझूर सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लमके दिदार के लिये बिठाये थे और यहां आपको सरकार का दिदार हुआ था ।

बीरपुर शरीफ गांव की अलग अलग जगह
बुझुर्गो के मजारात व पुरानी मस्जिदे व ईदगाह

बीरपुर शरीफ गांव की अलग अलग जगह
बुझुर्गो के मजारात व पुरानी मस्जिद

बीरपुर शरीफ गांव की अलग अलग जगह के बुझुर्गो के मजारात व मद्रसा - मस्जिद

हजरत सैयद जबुदादा रहमतुल्लाह अलयहे व उनके फरजंदो के मजार

ये संपादक के वालिदा, नाना-नानी वगैरह के मजारात है

सैयद शाह अली सरमस्त कलंदर दरगाह शरीफ मु.पट्टन, उ.गुजरात.

हझरत सैयद मखदूम जहांनीयां जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे मु.उछ शरीफ
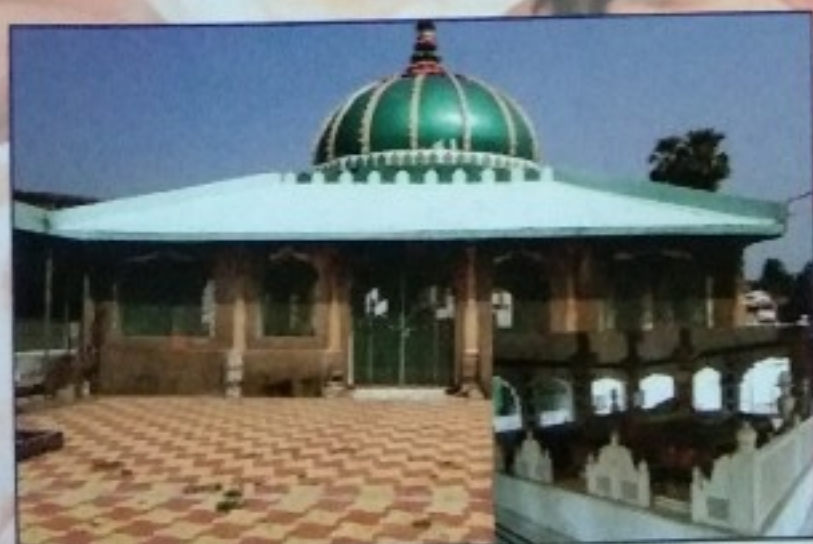
मखदुम सैयदना शरफुदीन शोहरवर्दी, मशहदी रहमतुल्लाह अलयहे
ये कुत्बे आलम के फुफा व फुफी के मजारात है ।
मु.मकतमपुर, भरुच, जी.भरुच
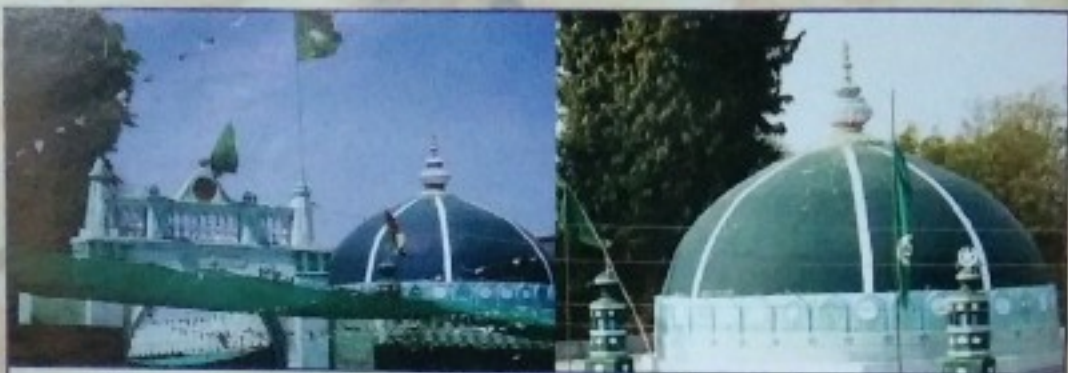
हझरत सैयदना शाह महेबूबे यझदानी कुत्बे रब्बानी गौसे झमानी, शानी उवैस करनी, शिब्लीओ जमानी, सैयदना शाह खतीब कुतुब महमूद कादरी सोहरवर्दी रहमतुल्लाह अलयहे मु.पो. कारंटा शरीफ, ता.खानपुर, जी.महीसागर ये दरियाइ साहबके चोथी पेढीके सगे दादा हैं

सैयदना शाह कुतुब इब्राहीम बीन कुतुब महमूद रहमतुल्लाह अलयह

सैयदना शाह कुतुब महमूद रहमतुल्लाह अलयह

सैयदना शाह कुतुब हसन बीन कुतुब महमूद रहमतुल्लाह अलयह

भादर नदी - जहां कुत्बे कारंटा व मखदुम जलालुदीन जहांनिया जहांगश्त रहमतुल्लाह अलयहे दोनो हझरातोकी चिल्लाकशी की जगह मु.कारंटा शरीफ, ता.खानपुर, जी.महीसागर

हझरत सैयदना शाह जैनुल आबेदीन रहमतुल्लाह अलयहे - कुत्बे कारंटा के ससुर मु.कारंटा शरीफ, ता.खानपुर, जी.महीसागर
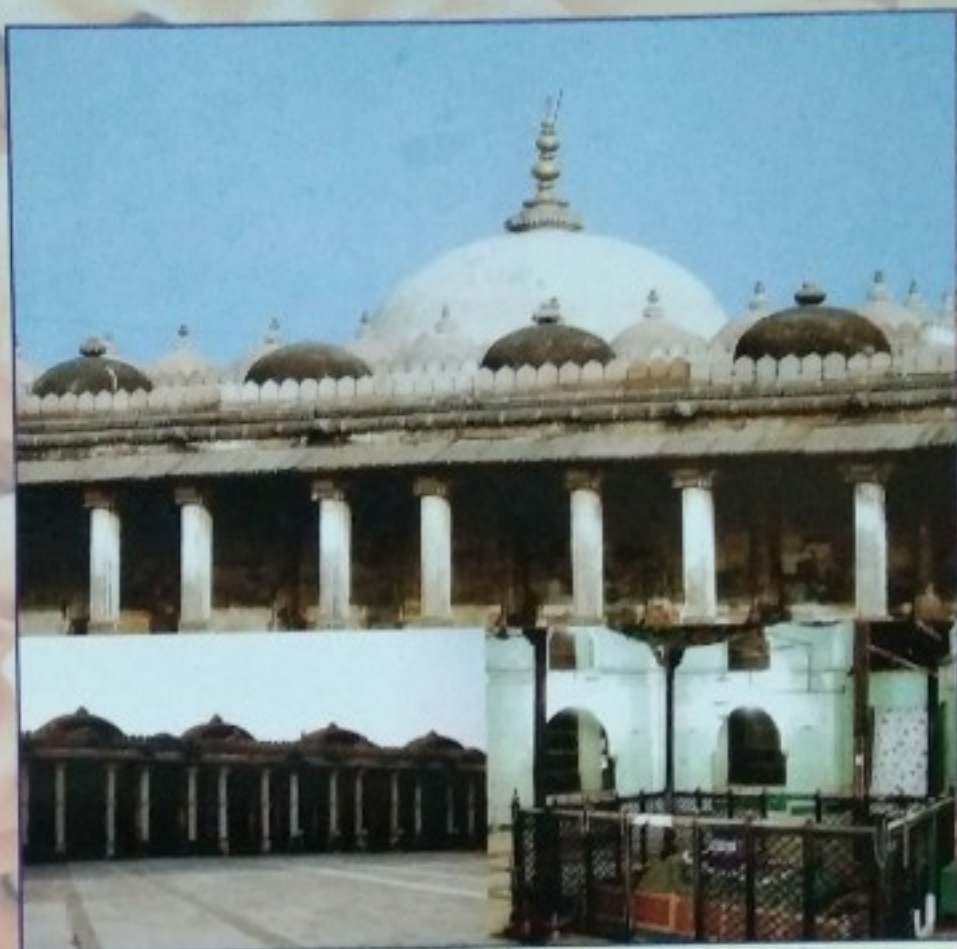
हझरत शेख अहमद खट्टु मगरबी - रहमतुल्लाह अलयहे का
मझार व मस्जिद - मु.सरखेज, अहमदाबाद.

हझरत महमूद बेगडा वगेरह... का मझार
मु.सरखेज रोझे के सामने, अहमदाबाद.

मुजफ्फरशाह हलीम
दरियाइ साहबके
मुरीद व खलीफा है
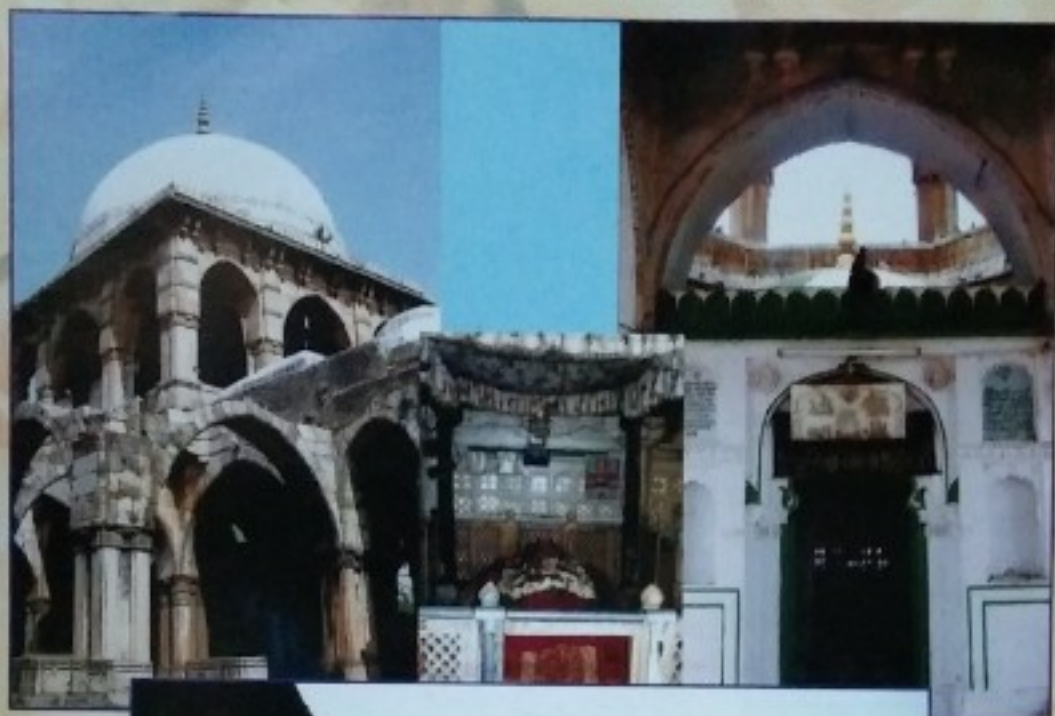
मझारे पाक व मस्जिद
हजरत सैयदना कुत्बे आलम रहमतुल्लाह अलयहे मु.वटवा, अहमदआबाद

मख्दुम जहांनिया का चील्ला मु.वटवा, अहमदआबाद
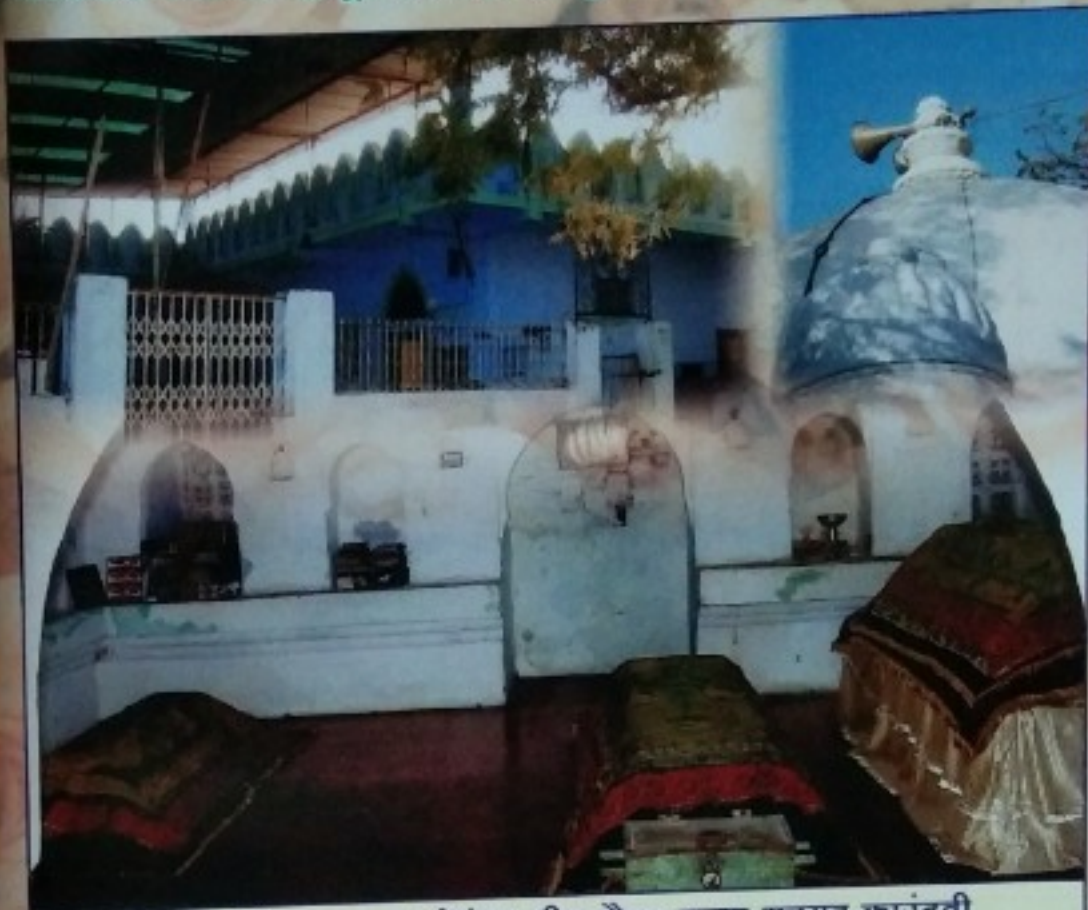
हजरत सैयदना शाह मोहंमद बीन सैयद कुतुब महमूद कारंटवी
रहमतुल्लाह अलयहे - ये दरियाइ साहबके सगे दादा है
हझरत सैयदना शाह हम्माद बीन शाह मोहंमद बनी कूतूब महमूद
रहमतुल्लाह अलयहे - ये दरियाइ साहबके सगे चाचा है
ठे सरसपुर, चारटोला कब्रस्तान, अंजर सिनेमाके सामने,
शाह हम्माद का रौझा - मु. अहमदाबाद.

हजरत सैयदना शाह हमीद शहीद
रहमतुल्लाह अलयह
दरियाइ साहबके सगे चाचा है
मु.मोहंमदाबाद, चांपानेर, पावागढ

हझरत शाह सैयद शेख फरीद रहमतुल्लाह अलैहे
दरियाइ सरकार के खालु व ससुर
मु.ओड, जी.आणंद
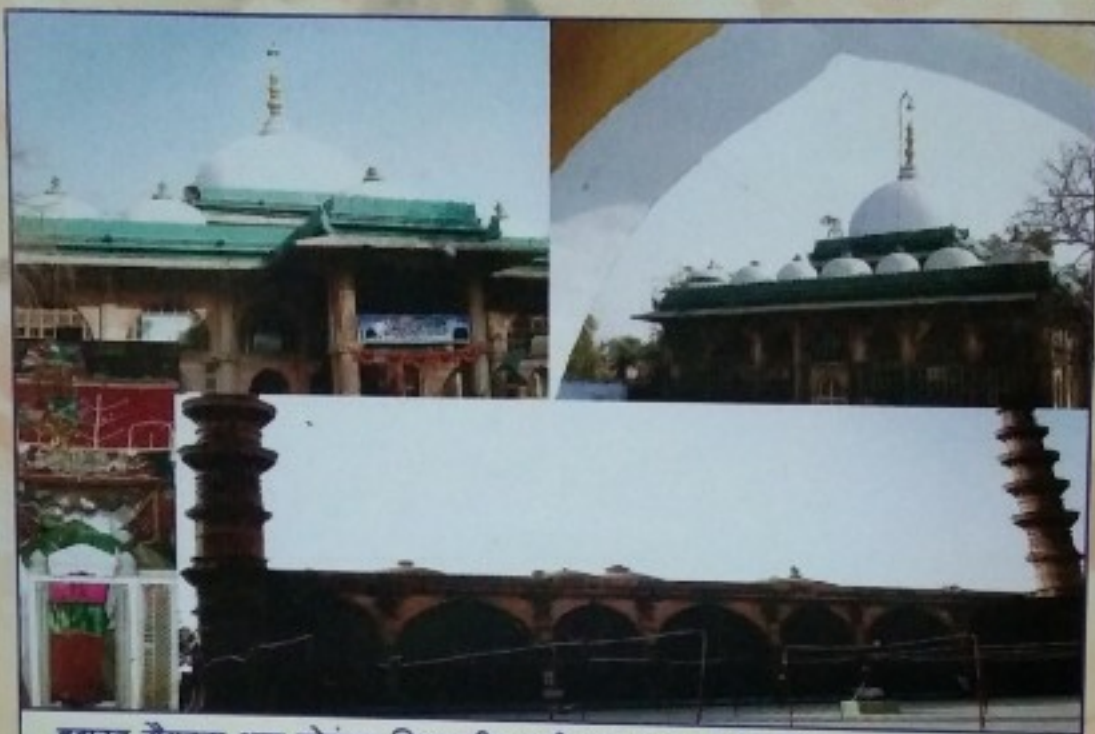
हझरत सैयदना शाह मोहंमद सिराजुदीन शाहे आलम महबूबे बारी रहमतुल्लाह अलयहे
आस्ताना व मस्जीद दादापीर हजरत ख्वाजा महमूद दरियाइ, शाहेआलम मु.अहमदआबाद

दरियाइ सरकारके दामाद
ख्वाजा अब्दुलरझझाक दरियाइ
व हझरत बीबी साहेबे जमाल
मु.बालासिनोर
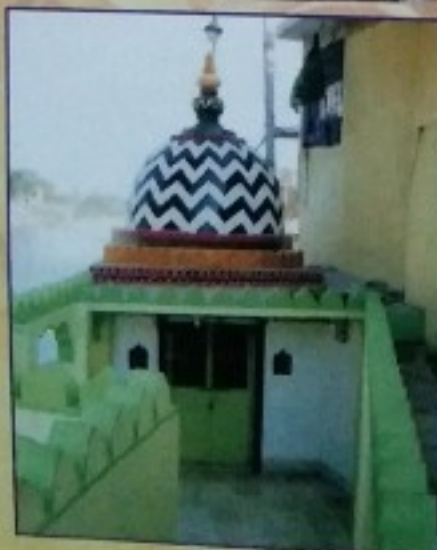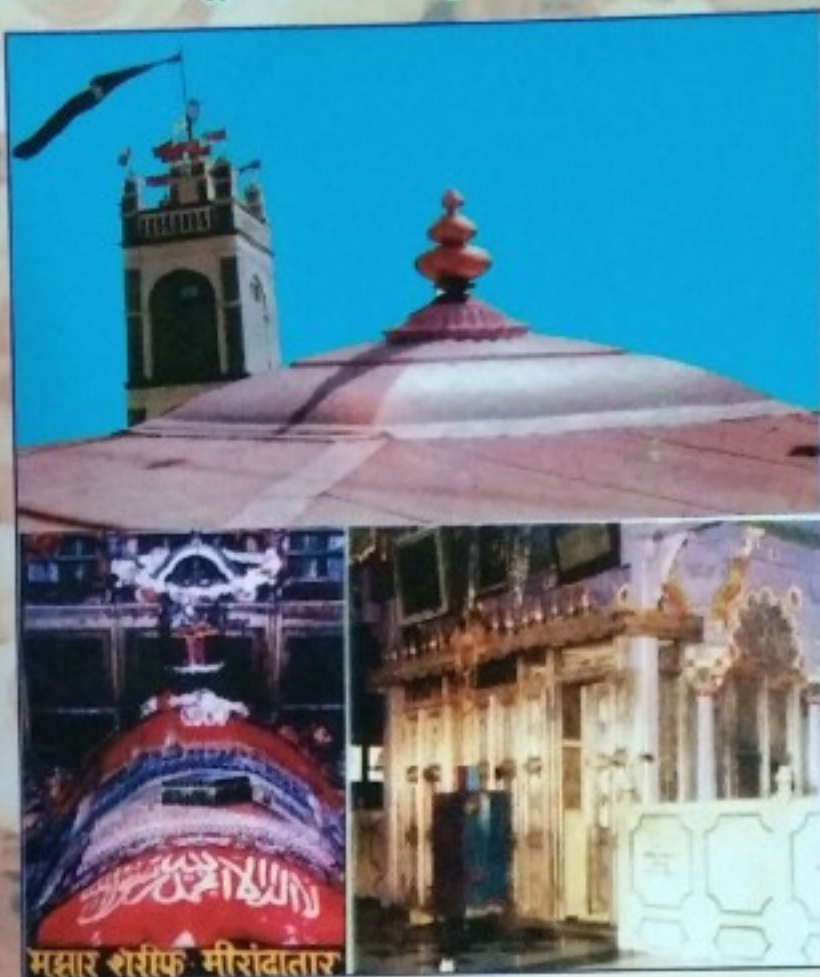
मुरीदे खास ख्वाजा दरियाइ दुल्हा
हजरत सैयदना शहीद मीरां अली दातार रहमतुल्लाह अलयहे
(उनावा, ता.उंझा, जी.महेसाणा)

हजरत पीर शाह जहांगीर रहमतुल्लाह अलयहे
खलीफ-ए अव्वल ख्वाजा महमूद दरियाइ, मु. मेघरज, जी.अरवल्ली
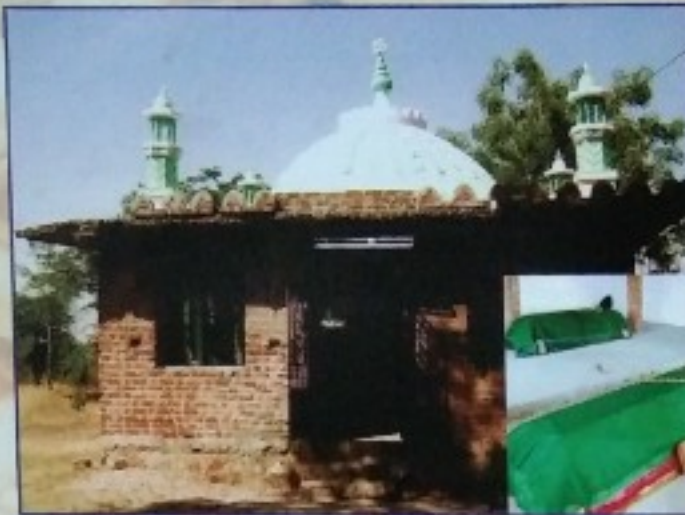
हझरत सैयद शाह पीर अली महंमद
रहमतुल्लाह अलयहे दरियाइ साहबके खलीफा
मु.पांडरवाडा ता.खानपुर जी.महीसागर

शाह अब्दुलकवी मु.भालेज, जी.आणंद

सैयदवा मनसुर बीन प्यारुल्लाह
बीन लाडमोहंमद बीन दरियाइ दुल्हा
ठे. बेडीवाका, मु.नवानगर, जामनगर.

हझरत सैयदवा शादुल्लाह बिन प्यारुल्लाह
बिन लाडमोहमद बिन ख्वाजा दरियाइ दुल्हा
मु.प्रांतिज, जी.साबरकाठा.

हजरत मोहंमद शरीफ उर्फे आसीफ मोहंमद बीन अबु मोहंमद बीन ख्वाजा दरियाइ - मु. सुत्रापाडा मस्जीद व दरगाह

दरियाइ सरकार के परिवारके मजारात - मु.अलीणा, जी.खेडा

दादीमां की दरगाह - सुत्रापाडा, जी.जुनागढ

हजरत शहिद सीदी व महमुदशा बाबा रहमतुल्लाह अलयहे, मु.बायड, जी.अरवल्ली

शाही व तारीखी मस्जीदे
मु.मोहंमदाबाद (चांपानेर), पावागढ, जी.बडौदा

दरियाइ साहबका चिल्ला
पेटलाद, जी.आणंद.

दरियाइ सरकार का चिल्ला
मु.कठलाल, जी.खेडा

दरियाइ साहब का चिल्ला
मु.बहीयल, ता.दहेगाम,
जी.अहमदआबाद

रायपुर, अहमदाबाद का
चिल्ला की जगह

मु.पो.पलाणा (नडियाद)
के चिल्ले का फोटो

मु.छाणी, जी.वडोदरा
दरियाइ सरकार का चिल्ला

मु.लसुन्द्रा, ता.सावली
दरियाइ सरकार का चिल्ला व मस्जीद

सुन्नी मस्जीदे मुस्तफा, मु.करचीया, ता.सावली
मस्जीदमें चिल्ला

मु.टुंडाव, ता.सावली
चिल्ला मुबारक
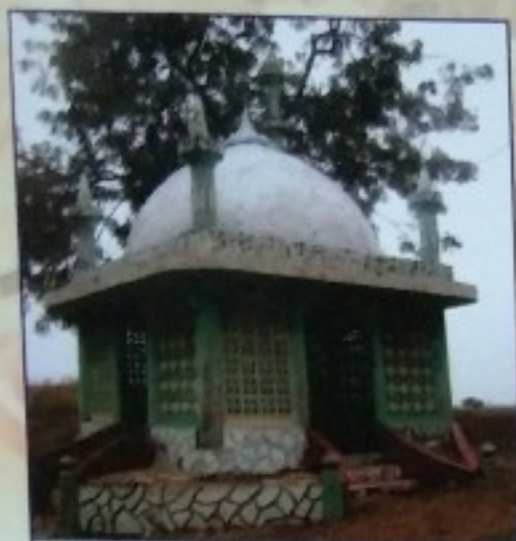
मु.सावली, जी.वडोदरा
दरियाइ सरकार का चिल्ला
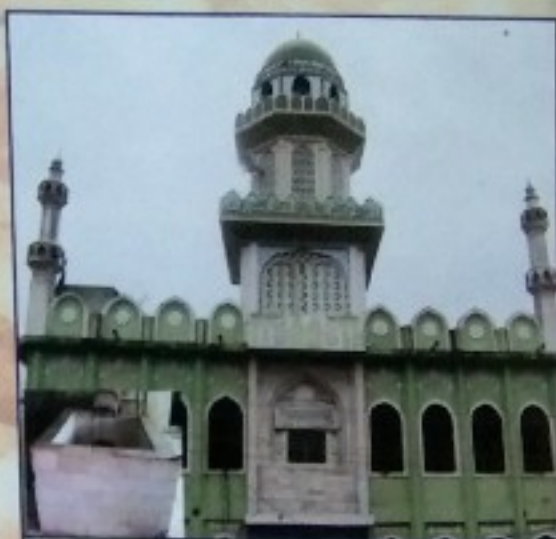
मु.करचीया, ता.सावली ये मस्जीदमें
दरियाइ सरकार के चिल्ला की जगह है

आदीत्य बिरला ग्रुप में गोधरा-हालोल
रोड पर चिल्ला की जगह

आदीत्य बिरला ग्रुप कंपनी
गोधरा-हालोल रोड पर

मु.डेसर, ता.सावली, जी.वडोदरा
दरियाइ सरकार का चिल्ला

दरियाइ सरकारके नाम मद्रस-ऐ गुलशने दरियाइ
मु.पो.डेसर, ता.सावली, जी.वडोदरा

मु.मेबपुरा, ता.ठासरा, जी.खेडा
दरियाइ सरकार का चिल्ला

मु.जरगाल, ता.ठासरा, जी.खेडा
दरियाइ सरकारका चिल्लाह

मु.अनारा, ता.कठलाल, जी.खेडा
दरियाइ सरकार का चिल्ला

दरियाइ सरकारका चिल्ला
मु.मुलेज, ता.नडीआद, जी.खेडा

दरियाइ सरकार का चिल्ला व मस्जीद - मु.भालेज, जी.आणंद

मु.सेगवा, नेशनल हाइवे नं.८,
ता.जी.भरुच दरियाइ साहबका चिल्ला

ख्वाजा दरियाइ सरकार का चिल्ला
मु.पो.अलीणा, ता.नडीआद, जी.खेडा

ख्वाजा दरियाइ साहब के चिल्ले की जगह, व वाव की जगह - मु.मोडासा, जी.अरवल्ली
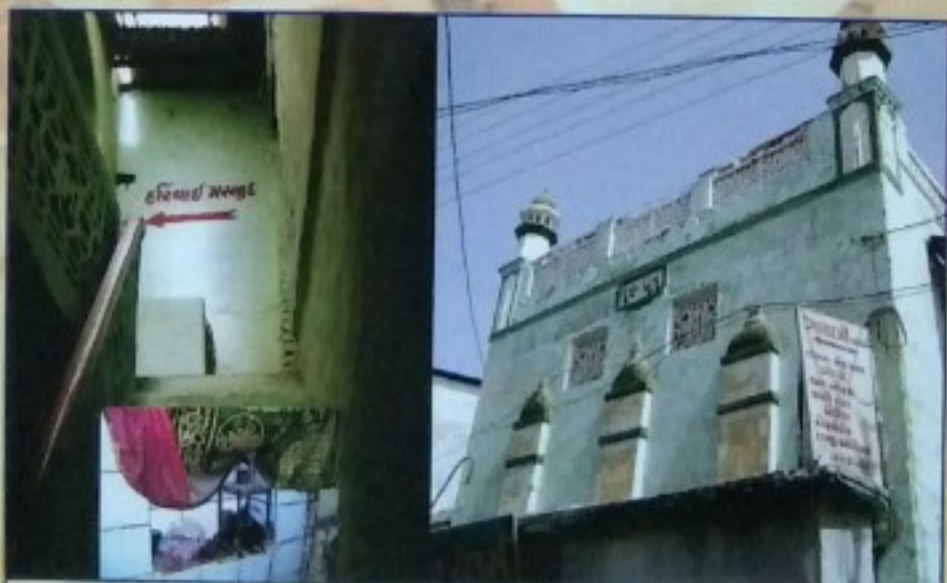
दरियाइ सरकार का चिल्ला व मस्जीद - मु.महुधा, जी.खेडा

दीन व दुनिया की कारआमद दुआओं

(1) अय हमारे रब हमको दुनिया व आखिरत में भलाई अता फरमा और दोझख के अझाब से बचा ले। (अल बकरह : 201)

(2) अय हमारे रब हमको न पकड अगर हम भूल जाअें या चोक जाअें, अय हमारे रब ! हम पर भारी बोझ न रख जैसा के तूने हमसे पहेलों पर रखा हमसे इतना भारी बोझ न उठवा जिसकी हममें सिकत (ताकत) न हो दरगुझर फरमा दे हमें बख्श दे और हम पर रहम फरमा तू हमारा हामी है तू हमारी मदद कर कुफ्फार के मुकाबले में। (अल बकरह : 286)

(3) अय हमारे रब ! हमारे कुलूब में कुजी (टेळहापन-वांका) न पैदा फरमा। इसके बाद के तू हिदायत फरमा चुका और अता फरमा हमें अपनी सरकार से महेरबानी बिला शुब्ह तू देनेवाला है। (आले इमरान : 8)

(4) अय हमारे रब ! हमको अता फरमा जो तूने अपने रसूलों के झरीअे वादा फरमाया हमको कयामत के दिन झलील न कर बेशक तू वादा खिलाफी नहीं फरमाता। (आले इमरान : 194)

(5) अय हमारे रब ! हमने अपनी जानों पर झुल्म किया अगर तू हमें न बख्शे या हम पर रहम न फरमाअे तो हम यकीनन झयांकार (गुनाहगार) हो जाअेंगे। (अल आराफ : 231)

(6) अय हमारे रब ! मुझको और मेरे मां-बाप को बख्श दे और सब इमानवालों को जिस दिन काइम हो हिसाब। (इबराहीम : 41)

(7) अय मेरे रब ! मेरा सीना खोल दे और मेरा काम मेरे लिये आसान कर दे और मेरी झबान से गिरह खोल दे। (ताहा : 27)

आमीन... आमीन... सुम्मा आमीन...

66 नाम और लकब

हजरत सैयदना ख्वाजा महमूद महेबुबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे

(1) मा'शुकुल्लाह (2) आ'शीकुल्लाह (3) शाहेदुल्लाह (4) मशहुदुल्लाह (5) महबुबुल्लाह (6) आयतुल्लाह (7) आरीफ बील्लाह (8) अमरुल्लाह (9) वलीयुल्लाह (10) नुरुल्लाह (11) सैफुल्लाह (12) कुदरतुल्लाह (13) बुरहानुल्लाह (14) पीरे खुदा रसीदाह (15) महेबूबे सुब्हानी (16) कुत्बे रब्बानी (17) कुत्बुल हिन्द (18) महेबुबे खुदावंद (19) रइसुल अवताद (20) गौसुल हिन्द (21) पीर मुसतजीबुद्दावात (22) कुत्बे औझे सआदत (23) फैझ दरजात (24) सदर मुल्के कुतबिय्यत (25) कुतबुल अकताब (26) गौसुल अनाम (27) कुत्बे आलम (28) कुत्बे अनाम (29) सानी गौसे आझम (30) इसओ गयहान (31) मसीहुझझमां (32) पीर कुत्बे झमान (33) गौसुल मुबीन (34) महेबुबुर्रहमान (35) महेबुबे अझीमुश्शान (36) काझीयल आलम कुन फयकुन (37) ताजुल मुहककेकीन (38) कुदवतुल वासेलीन (39) शमसूल आरीफीन (40) ख्वाजओ ख्वाजगां (41) गौसे बेमीसाल (42) महेबुबे झुलजलाल (43) महेबुबुल्लाह (44) महेबुबे इलाही (45) साहीबे राझो नियाझ (46) ख्वाजा (47) कुतबुल अकताब (48) कलीमुल असर (49) कुत्बे असर (50) गौसे अकबर (51) गौसे शबबेदार (52) हुझूर पूरनूर (53) महेबुब गौसे अकर (54) पीर दस्तगीर (55) सुल्तानुल अवलीया (56) अशदल मशाइख (57) कुत्बे अकताबुल आलम (58) वलीयुल्लाह (59) सदर मुल्के कुत्बीयत (60) पीर रोशन झमीर (61) महेबुबे झुलजलाल (62) महेबुबे रसूल (सल्लल्लाहो तआला अलयहे व सल्लम) (63) गौसुस्सकलैन (64) गौषुल मुबीन (65) मुरशेदुल आलमीन (66) अल-मुखातीब खतमुल मुताखेरीन.

अस्माऐ हुस्ना

हझरत सैयदना ख्वाजा महमूद महबुबुल्लाह दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे

अव्वल-आखिर ३ मरतबा दरुद शरीफ पढे.

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

या सैयदना	मियां महमूद अमरुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे
या शेख	मियां महमूद आशिकुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे
या महेबूब	मियां महमूद माशुकुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे
या गौस	मियां महमूद मश्हुदुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे
या कुतुब	मियां महमूद शाहेदुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे
या अब्दाल	मियां महमूद वलीयुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे
या सुल्तान	मियां महमूद सैफुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे
या बादशाह	मियां महमूद कुदरतुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे
या ख्वाजा	मियां महमूद कुरबतुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे
या मख्दूम	मियां महमूद बुरहानुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे
या मोहिब	मियां महमूद आयतुल्लाह	रहमतुल्लाह अलयहे

फझीलत : ये अस्माऐ हुस्ना हर फर्झ नमाझ बाद खुलूस दिलसे और साफ निय्यतसे पढते रहो तो हर जाइझ हाजत, मुराद पुरी होगी, बला, मुसीबत व परेशानीयां दुर होगी इन्शाअल्लाह. नेक जाइझ काम के लिये ये अस्माऐ हुस्ना पढके अल्लाहकी बारगाहमें ख्वाजा महमूद दरियाइ दुल्हा रहमतुल्लाह अलयहे का वसीला बनाकर आझीझी से दुआ मांगे, इन्शाअल्लाह कुबुल होगी.

सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की

देती अंजाम दीं की खिदमत है सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की
रब सलामत रखे, सलामत है सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की

सुन्नीयत का वो गढ है गोंडल में नजदियत को जो रद करे पल में
दीं के दुश्मन से ही अदावत है सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की

दुश्मने - दीं से ये न डरती है ये कलम से झिहाद करती है
और मुनाजिर सी रखती फितरत है सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की

देवबंदी-वहाबी और नजदी जो भी फैला रहे है गुमराही
उससे करती रही हिफाझत है सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की

इस तरह दीने-हक की खिदमत की तोहफतन सेकळों किताबें दी
पळके करना अमल ये किंमत है सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की

इन किताबों में झिक्रे-कुरआं है और हदीसे-नबी दरख्शां है
हनफियों की सही अलामत है सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की

हम्दे-रब, नअते-मुस्तफा इस में मनकबत और सलाम का इसमें
तोहफा करती ये पैशे-खिदमत है सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की

पैश तेर लाख और पिस्तालिस हझार उस पे भी तीनसो आठ बार
कर चुकी तख्तिओ-किताबत है सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की

सदका-फित्रा-झकात दो वरना याद तुम नझरो-न्याझ में करना
बस गुजारिश ये अेहले-सुन्नत है सुन्नी मुस्लिम कमिटी गोंडल की

प्रकाशक

सुन्नी मुस्लिम कमिटी

इमाम अहमद रझा मंझील, वेरी दरवाजा, गोंडल फोन : 02825-224786